॥ श्री ॥

बालकृष्णजी सदासहाय

चौरासी वार्ता

श्रीमद्

चार्य्याणा परमानु कंम्पा

स्यद भागदीय चतुरासी

ति संख्याक वैष्णावा नां

वार्ता

श्री युत मुन्शी नवल किशोर भार्गव

मालिक ग्रंथ समाचार पत्र कौसलानुसा

स्थान मथुरा

मुन्शी कन्हैयालाल सम्पादिक पत्र्यांधर

मंनजरके प्रबंध सेमुम्बे उल नवल नामशिला

यंत्र में छापी गई ॥ दूसरीबार १००० पुस्तक

नवम्बर सन् १९०३ ई०

श्रीकृष्णायनमोनमः।
श्रीगोपीजनवल्लभायनमोनमः

अथश्रीआचार्यजीमहाप्रभूनके सेवकनकीचौरासीवार्तालिख्य०

अथआचार्यजीमहाप्रभून के सेवकदामोदर दास हरसानीतिनकी वार्ता॥

सो एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभू पृथ्वी परिक्रमा कौं पधारे हुते तब तहांदामोदर दास श्री आचार्य जी महा प्रभून के साथ हे सो श्री आचार्य जी महा प्रभू आपदामोदर दास सों अपने श्रीमुख सों द्रमल्ला कहते, और कहते जो यह मार्ग तेरे लिये प्रगट कीनों हैं सो श्री आचार्य जी महा प्रभू आप ऐसे कहते सो पृथ्वी परिक्रमा करत श्री गोकुल पधारे सो श्रीगोकुल में एक चौंतरा श्रीगोविंद घाट ऊपर हुतो तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू आय विश्राम करते ता ठौर ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभू की बैठक है और श्रीद्वारिकानाथ जी को मन्दिर है तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू बैठे हुते ता समय श्री आचार्य जी महाप्रभून कों महाचिंता उपजी जो श्री ठाकुर जी ने तो आज्ञा दीनी है जो तुम जीवन कोंब्रह्म संबंध करावो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू अपने मन में विचारें जो जीव तो दोषवंत है और श्रीपुरुषोत्तमजी तो गुणनिधान हैं तातें जैसें कैसें संबंध होय तातें चिंता उपजी सो अत्यंत आतुर भए ता समय श्री ठाकुरजी आप तत्काल प्रगट होय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों पूछें जो तुम चिंता आतुर क्यों हो तब श्री आचार्य।

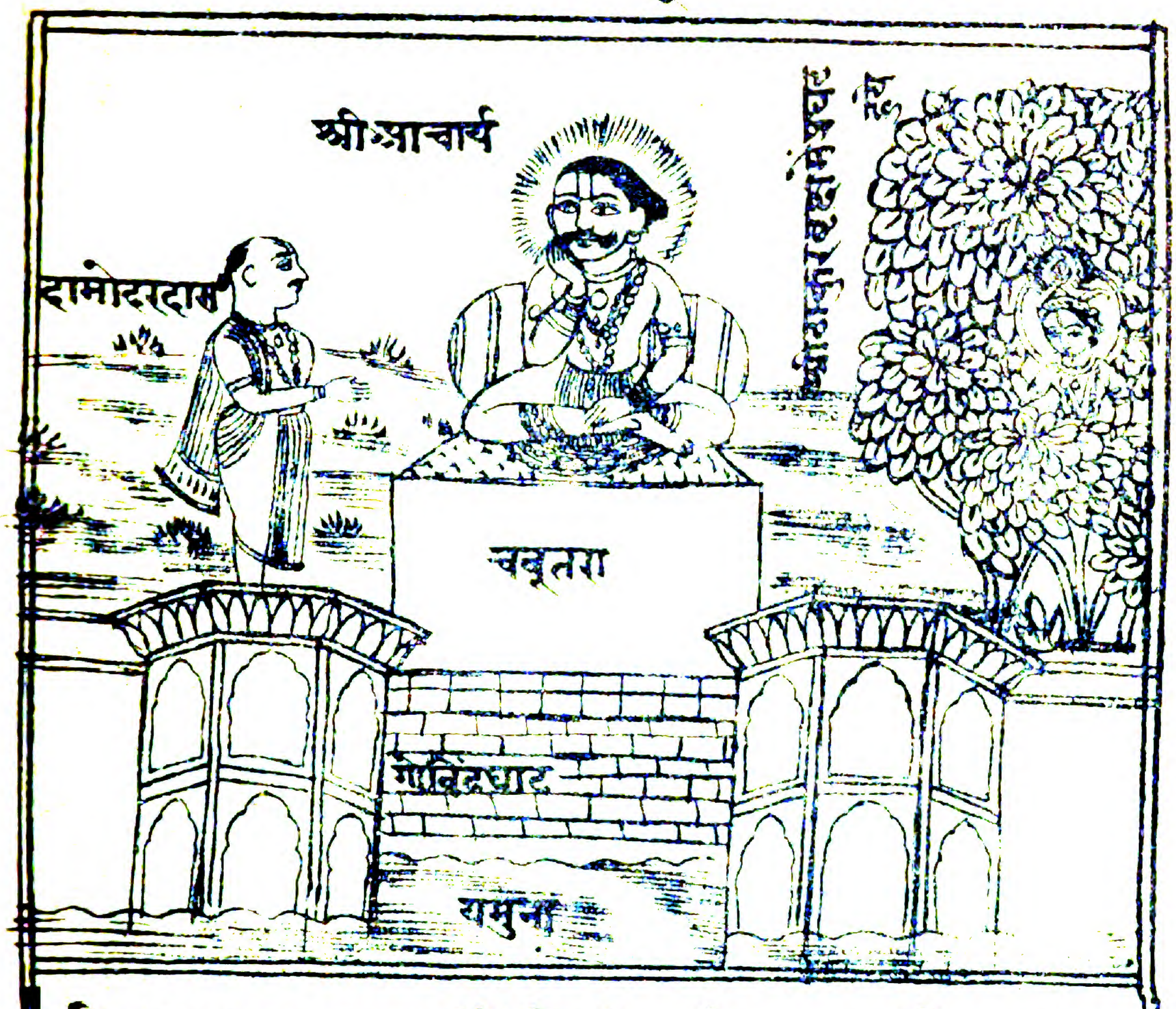

जी महा प्रभू आप कहैं जो जीव को स्वरूप तौ तुम जा
नत ही हौ दोषवन्त है सो तुम सों संबंध कैसें होय नव
श्री ठाकुर जी आप कहैं जौ तुम जीवन कों ब्रह्म संबंध
करावोगे तिन कौं हौं अंगीकार करूंगो तुम जीवन कौं
नाम देउंगे तिन के सकलदोष निवर्त होयंगे ये बातें-
आवणा शुदि ११ के दिन अर्द्ध रात्रि कों भई प्रातः काल
पवित्रा द्वादशी हुती ताते पवित्रा सूत कौं करि राख्यो हुतो
सो पवित्रा श्री पूरन पुरुषोत्तम जी कों पहरायो मिश्री भो
ग धरी ता समय के ये अक्षर हुते ताको श्री आचार्य जी
महा प्रभू आप सिद्धांत रहस्य ग्रंथ को ये हैं मो श्लोक २०
॥ श्रावणा स्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि
साक्षात भगवता प्रोक्तं तदक्षर मुच्यते ॥१

ता समय श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पूछो जो दमला ने कछु सुन्यो नवदामोदर दास नें बीनती करी जो महाराज श्री ठाकुर जी के वचन सुने तो सही परंतु कछु समझ्यो नहीं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कही जो मोको श्री ठाकुर जी ने आज्ञा करी है जो तुम जीवन को ब्रह्म संबन्ध करावो गे तिनको हों अंगीकार करूंगो तिन के सकल दोष निवर्त होंयगे तातें ब्रह्म संबंध अवश्य करनो ॥

वार्ता प्रसंग ॥ १

बहुर श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री ठाकुरजी के पास यह मांग्यो जो मेरे आगें दामोदर दास की देह न छूटे और श्री आचार्यजी महाप्रभू दामोदर दास सों कछु गोप्य न राखते और श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री भागवत अहर्निस देखते कथा कहते और मार्ग को सिद्धांत भगवद लीला रहस्य श्री आचार्य जी महाप्रभू आप दामोदर दास के हृदय में स्थापन कीयो ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २

और एक समय दामोदर दास और श्री गुसांई जी एकान्त में बैठे हुते तब श्री गुसांईजी नें दामोदर दास सों पूछो जो तुम श्री आचार्यजी महाप्रभून कों कहा कार जानत हो तब दामोदर दास ने कही जो हम तो श्री आचार्य जी महाप्रभून कों जगदीस जो श्री ठाकुर जी तिनहूं ते अधिक कार जानत हैं तब श्री गुसांई जी दामोदर सों कहे जो तुम ऐसें क्यों कहत हो तो श्री ठाकुर जी तें श्री आचार्यजी बड़े हैं तब दामो

दर दास नें कही जो महाराज दान वड़ो के दाना वड़ो
काहू के पास धन बहुत होय तो राज कहा करै जो दे
य ताकौं जानिये और श्री आचार्य जी महा प्रभून को
सर्वस्व धन श्री ठाकुर जी हैं सो हम जीवन कौं दान
किये नातें हम श्री आचार्य जी महा प्रभून कौं सब
ते बड़े करि जानत हैं ॥

वार्ता प्रसंग ३

और एक समें श्री आचार्य जी महा प्रभू तथा श्री
गुसांई जी अपनी बैठक में बैठे हुते पास दै चार वैष्ण
व हंसि वे खेलवे के बैठे हुते आप उन सों हंसते खे
लते मसखरी करते बहुत प्रसन्नता में उन सों खेल
वे की वार्ता करत हुते ता समय दामोदर दास आये ता

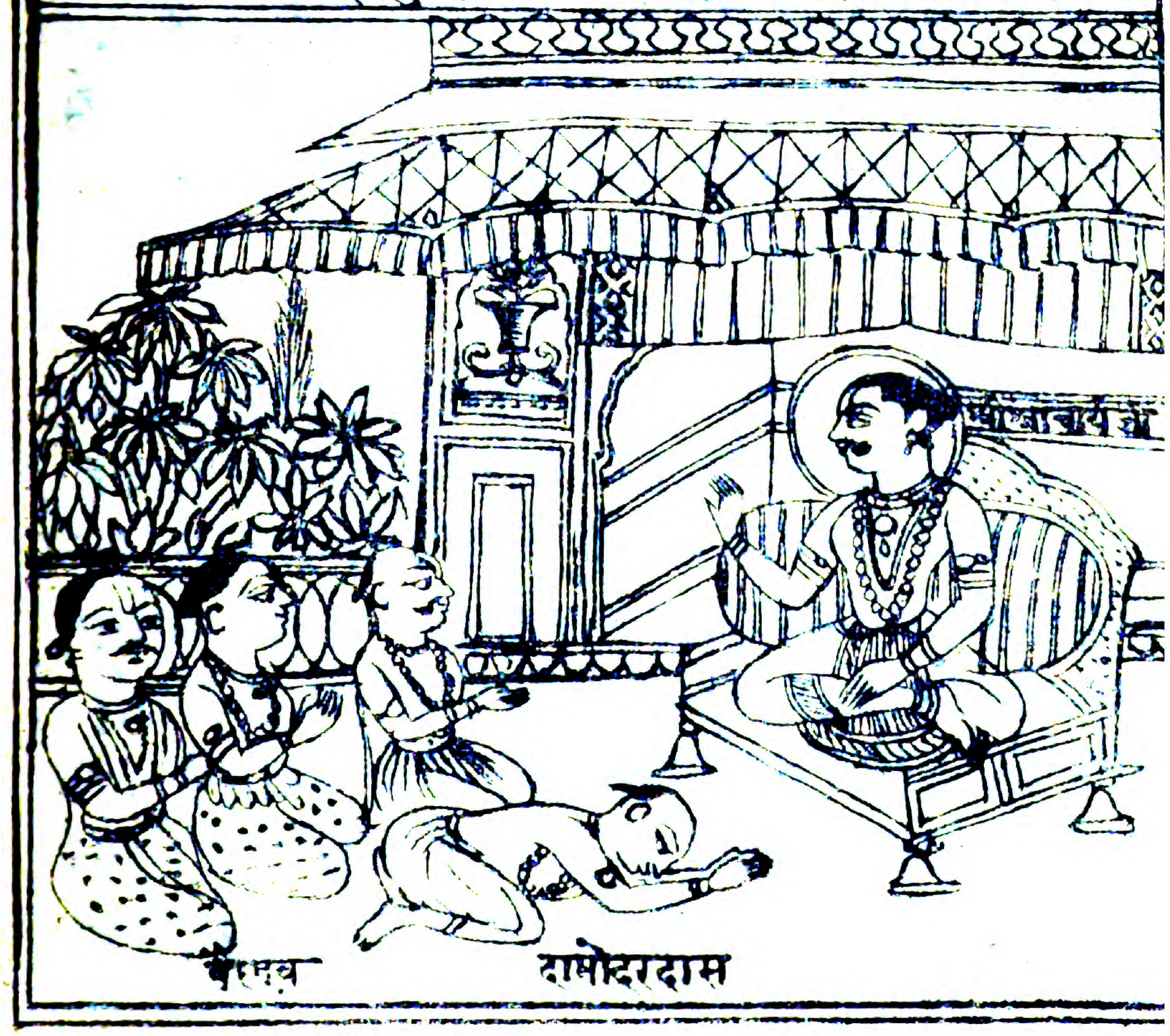

समय श्री गुसांई जी नें बहुत आदर सन्मान कियो पा-
छें दामोदर दास बैठे तब श्री गुसांई जी सों दामोदर दास
नें कही जो महाराज अपनो मार्ग निश्चय ताकों नाहीं
यह मार्ग अत्यंत कष्ट आतुरता को है तब श्री गुसांई
जी नें कही जो तुम साक्षी वात कहत हो परि हम कों
जब श्री आचार्य जी महा प्रभून की कृपा होयगी तब
कष्ट आतुरता होयगी यह मार्ग तो श्री आचार्य जी
महा प्रभून की कृपा तें नहोय तब दामोदर दास साष्टांग
दंडवत करि के वीनती की जो हम कोंतो एकवार राज
सों वीनती करनी है पाछें आप प्रभू हो भली जानोगे सो
करोगे पर यह मार्ग तो या भांति को है तब श्री गुसांई
जी वहुत प्रसन्न भए और कहैं जो हम को यह वार्ता श्री
आचार्य जी ढ्ढास है और कहैं जो तुमन कहो तो कोंनक
है हम तुम को देखत हैं तब अति प्रसन्न होत हैं आप श्री
आचार्य जी महा प्रभून के सेवक जानि कें दामोदर दास
कों सिक्षा मान न भये ताने वड़े सो वड़े ॥

वार्ता प्रसंग ८

और प्रथम श्री आचार्य जी महा प्रभू श्री ठाकुरजी
के पास यह भाष्यो जो मेरे आगे दामोदर दास की देह
न छूटे ताको हेत यह जो श्री आचार्य जी महा प्रभू सन्यास
ग्रहण करिवेको विचार मन में करें ता समें श्री गोपी
नाथ जी श्री गुसांई जी ये दोऊ भाई बालक हुते तातें
मार्ग को सिद्धान्त वार्ता श्री आचार्य जी महा प्रभू सन्या
स ग्रहण कीए तब कितनेक दिना पीछें श्री गुसांईजी
नें एक का नीरो पूछो जो श्री आचार्य जी महा प्रभून ने मा-

र्ग प्रगट कीयो है सो उच्छव को कहा प्रकार है हम तौ कछू जानत नाहीं तब श्री अक्का जी ने कह्यो जो मार्ग तथा उच्छव को प्रकार सब दामोदर दास सों कहे हैं सो तुम उन सों पूछो तुम सों दामोदर दास कहेगो तब श्री गुसांई जी दामोदर दास ने बहुत सन्मान करि भक्ति भाव सों घर में पधराये पाछें उच्छव को प्रकार श्री गुसांई जीनें पूछो सो दामोदर दास ने सब कह्यो ॥

वार्ता प्रसंग ५

और एक समय दामोदर दास के पिता को श्राद्ध दिन हुतो वा दिन श्री गुसांई जी दामोदर दास के घर पधारे और दामोदर दास कों श्राद्ध करवायो पाछें उ स्थापन के समें दामोदर दास दर्शन कों आये तब श्री गुसांई जी ने कही जो मोकों श्राद्ध करवाये की दक्षिणा दे तब दामोदर दास कहे जो दक्षिणा में एक बात कहूंगो सो सिद्धांत रहस्य के डेढ़ श्लोक को व्याख्यान कहे यह ऐसी बात है तब श्री गुसांई जी ने कही जो आगें कहो तब दामोदर दास ने कही जो मैनें तो इतनों ही संकल्प कियो है तब श्री गुसांई जी चुप कर रहे पाछें दामोदर दास ने गाये कीप्रनालिका श्री गुसांई जी के आगे कही श्री भागवत की सुबोधिनी श्री आचार्यजी महाप्रभून के ग्रंथ की टीका और रहस्य वानी श्री आचार्य जी महाप्रभू कहे हैं सो सब कही ना पाछें श्री गुसांई जी दामोदर दास को नमस्कार करन न दे यातें जो श्री गुसांई जी अपने मन में विचारे जो श्री आचार्यजी महाप्रभून को स्वरूप दामोदर दास के हृदय विषे मदा सर्वदा

विराजमान हैं तो इन पास दंडौत नमस्कार न करावनो
याने नमस्कार न करन देते पाछें श्री आचार्यजी ..
..... महाप्रभून नें दामोदर दास कों दर्शन दीयो सो
र आज्ञा दी जो अबतें तू श्रीगुसांई को चरणोदक नि-
त्य लीयो कर तब प्रातःकाल दामोदर दास श्रीगुसां
ईजी के पास आये और चरणोदक मांग्यो तब श्री गु
सांईजी ने चरणोदक को नाहीं कीनो तब दामोदर दा-
सनें श्री गुसांईजी सों कही जो मोको ..... श्री आचा
र्यजी महाप्रभून की आज्ञा भई है और दर्शन भए हैं सो
र कह्यो जातू श्रीगुसांईजी को चरणोदक नित्य लीजि
यो तब श्रीगुसांईजी ने चरणोदक दियो और दामोदर
दास को श्री आचार्यजी महाप्रभू तीसरे दिन दर्शन दें
मार्ग को रहस्य वार्ता कहते ऐसी कृपा करते और कदा
चित तीसरे दिन दर्शन न होतो ता दिन दामोदर दास
के पेट में पीडा होती अत्यंत कष्ट पावते पाछें जब
दर्शन होता तब तत्काल कष्ट निवर्त हो जातो ऐसे
करत कितनेक वर्ष पर्यंत दामोदर दास कों श्री गु
सांईजी ने दर्शन दीनों न या श्री आचार्यजी महाप्रभू
नने दर्शन दीनों ऐसी कृपा करते जो बात होती सो दा
मोदर दास श्रीगुसांईजी के आगे कहते और मार्ग के
प्रकार की वार्ता सहजनिसि कहते जो दामोदर दास के
हृदय में श्री आचार्यजी महाप्रभू आप विराजमान हैं
ताने दामोदर दास कों दंडौत न करन देते और कहते
जो दामोदर दास की वार्ता को पार नहीं ऐसे मार्ग के
टेक के कृपा पात्र हैं ॥

वार्ता प्रसंग ६

तब श्री आचार्य जी महाप्रभू दामोदर दास कों पूछे जो दामोदर दास तू श्री गुसांई जी कौ कहा करि जानत हौ तब दामोदर दास ने कही जो महाराज हम तो तुम्हारे पुत्र करि जानत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोदर दास कों आज्ञा दीनी जो जैसे तुम मोकों जानत हो तैसे इन कों स्वरूप जानिगों और श्री आचार्य जी महाप्रभुननें शृंगार रस मंडन ग्रंथ कीयो हैं तामें लिये हैं नाते ये दामोदर दास ऐसे कृपा पात्र भगवदी हैं ॥

वार्ता प्रसंग ७

और प्रथम श्री आचार्य जी महाप्रभू दामोदर दास सों कह्यो जो यह मांग तेरे लिये प्रगट कीयो है ताको हेत यह जो जहां लगि श्री आचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की स्थित है तहां तांई दामोदर दास की स्थित गोप्य है पाछें दामोदर दास ने कह्यो जो में श्री ठाकुर जी के वचन तो सुने पर कछु समझो नहीं तब तबै श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो आजहू दश जन्म कौ संचय है ताको हेत यह जो जब लग श्री आचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की स्थित है तहां तांई दामोदर दास के आगळ फेर फेर है मार्ग के स्थंभ प्रथमया नें कहें श्री आचार्य जी महाप्रभूननें दामोदर दास के हृदय में भगवद लीला स्थापी संपूर्ण सृष्टि कौं सम्बोधन करि दे कों ताकों यह हेत जो जब लगि श्री आचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की स्थित है तब लगि दामोदर दास की हू स्थिति है सो वे दामोदर दास ऐसे टेक के कृप

पात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कौ पार नहीं तातें इन की वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ८

॥ वैष्णव १ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के से- ॥

वक कृष्ण दास मेघन छत्री तिन्की वार्ता

सो एक समें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परि क्रमा करी तब कृष्ण दास मेघन साथ हे सो बद्री नारायण के परली ओर किरनी नाम पर्वत है सो तहां ते एक बड़ी शिला गिरी सो कृष्ण दास ने हाथ सो थांभी तब श्री आचार्य जी महाप्रभू प्रसन्न भये तब कृष्ण दास सों कह्यो

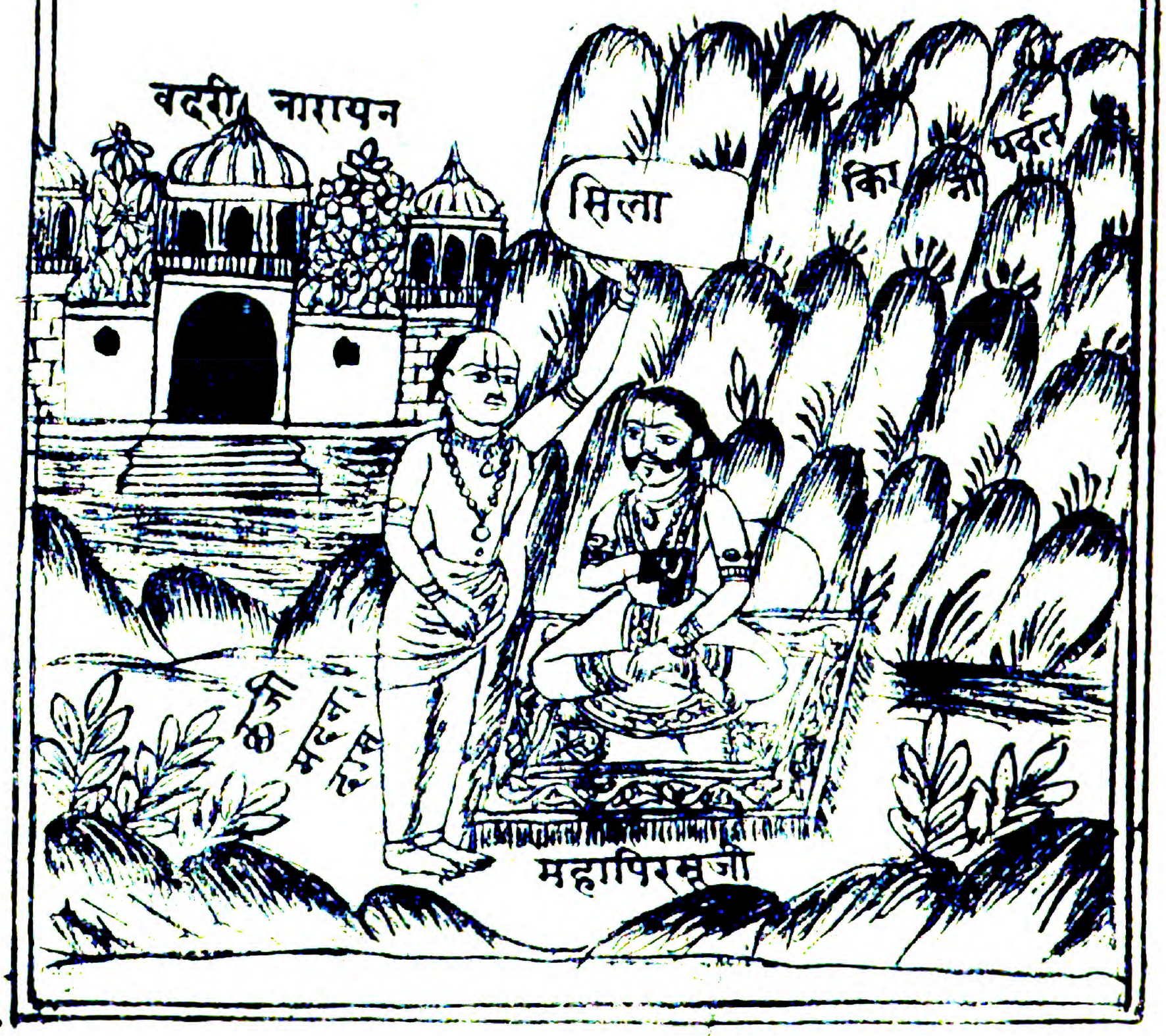

जो मांगि कहा मांगत है तव तीन वस्तु मांगी एक तो
मुखरना को दोष जाय दूसरे मार्ग को सिद्धांत समझें
तीसरे मेरे गुरू के घर पधारो तामें दोय वस्तु दीनी-
गुरू के घर पधारवे की नाहीं कीनी वद्र वाद्रिकाश्र-
म ते आगें पधारे जहां जीव की गम्य नाहीं है तहां वेद
व्यासजी को स्थान है तहां पधारे तव कृष्णदास सों
कह्यो जो तू ठाढ़ो रहियो तव श्री आचार्य जी महाप्रभू
आगें पधारे तव वेद व्यास जी सामहें आये सो श्री आचा
र्य जी महाप्रभून कों अपने धाम में ले आए पाठें वेद।
व्यासजी ने श्री आचार्यजी महा प्रभून सों कह्यो जोतु
मनें श्री भागवत की टीका कीनी है सो मो को सुनावो
तव श्री आचार्य जी महा प्रभून ने जुगल गीत के अ-
ध्याय को एक श्लोक कह्यो सो श्लोक

वाम वाहु कृत वाम कपोलो वलित भ्रूर
धरार्पित वेणु ॥ कोमलां गुलि भिराश्रित
मार्ग गोप्य ईरयति यत्र मुकुन्दः ॥१॥

या श्लोक को व्याख्यान कह्यो सो तीन दिन में संपूर्ण
भयो तव वेद व्यास जीने वीनती करी जो में या भागवत
के व्याख्यान की स्तव धारणा करि सकत नाहीं तातें अव
क्षमा करो पाछें श्री आचार्य जी महा प्रभूनने वेद व्यास
जी सों कह्यो जो तुम वेदांत के जैसे सूत्र कहा कीये जो
माया वाद पर अर्थ लाये तव व्यास जीने जो में कहा क
रूं मोकों आज्ञा ही ऐसी हती जो जैसे अर्थ करियो तव
श्री आचार्य जी महा प्रभूनने कही जो में ब्रह्म वाद
पर अर्थ कियो है सो व्यासजी कों सुनायो सो व्यास

जी सुन कर बहुत प्रसन्न भए ना पाछें वेद व्यास जी सों विदा होय के तीसरे दिन पधारे तब कृष्ण दास सों कह्यो जो तू गयो नाहीं सो काहे ने तब कृष्ण दास ने कह्यो जो महाराज हों कहां जाऊं मो कों तुम्हारे चरणारविंद बिना और आश्रय नाहीं है तब यह सुनके श्री आचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भए तब कह्यो जो मांगि तब वेही तीन वस्तु मांगी एक तो मुखिया को दोय जाय दूसरे मार्ग को सिद्धांत समझों तीसरे मेरे गुरू के घर पांव धारो सो तामें दोय वस्तु दीनी गुरू के घर पधारवे की नाहीं कीनी ॥

वार्ता प्रसंग १

बहुर एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू गंगासागर पधारे तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू पोढ़ रहे तहां कृष्ण दास पावदाब रहे तब श्री आचार्य जी महाप्रभू मन में विचारे जो धान के मुरमुरा होंय तो लीजिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून के अंतःकरन की कृष्ण दास मेघन नें जानी इतने में श्री आचार्य जी महाप्रभून कों निंद्रा आई तब कृष्ण दास उठि के गंगासागर ऊपर आए तब देखे तो पार .. एक दीया वरत है ताकी अटकर ले पैर के गंगाजी पार आये तहां गांव हो सो खेत में ते धान कटवाये तहां गांव में जाय के भरचूजा कों टका की जगह चार टका दे कें मुरमुरा सिद्ध करवाए तब लेकें आये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून के चरणारविंद दाब के जगाये और मुरमुरा आगें धरे तब कह्यो राज आरोगो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू

ननैं पूछ्यो जोतू कहां ते लायो तव समाचार कह्यो जो म
हाराज मैं पार ते लायो तव श्री आचार्य जी महाप्रभू
वहुत प्रसन्न भये तव कह्यो जो मांगि तव वेही तीनू व
स्तु मांगी मुखरता को दोय जाय मार्ग को सिद्धांत मेरे हृ
दय में आवे तीसरे मेरे गुरू के घर पाव धारो तव श्री
आचार्य जी महाप्रभू ने कह्यो सो जीव कहा मांगि
जानैं या समें जो मांगतो सोई देतो जो कहतो तो श्री
ठकुर जीको स्वरूप दिखावतो तहांते श्री आचार्य
जी महाप्रभू मोरा पधारे तव कृष्ण दास ने वीनती क
रिकें कह्यो जो महाराज मेरे गुरू है सो बुलाय लाऊं
तव श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो तू खेद पावे
गो पाछें कृष्ण दास अकेले गुरू के पास आयो तव कृ
ष्णदास कों गुरू ने देख्यो तव कृष्ण दास सों गुरू नें क
ह्यो जो अरे नेनें और गुरू कीयो तव कृष्ण दास ने क
ह्यो जो मेनें तो और गुरू नाहीं कीयो मेरे गुरू तो तुमहीं
हो पर तुम्हारी कृपा ते मेनें पूरण पुरुषोत्तम पाये है तव
गुरू ने कही जो पुरुषोत्तम कों जानियें तव गुरू के आ
गें अग्नि की अगीठी धक धकाती हुती तामैं ते कृष्ण
दास ने दोऊ हाथ की अञ्जुली भरि कें अंगार हाथ
में लिये और कह्यो जो श्री आचार्य जी महाप्रभू जो
पूरण पुरुषोत्तम होय तो मेरे हाथ मति जरियों और
जो और भांति होय तो मेरे हाथ भस्म होय जइयों सो
एक मुहूर्त लो अग्नि हाथ में राखी तव गुरू नें भयखाई
और कह्यो जो अग्नि डार देउ पाछें उन गुरून ने कृष्ण
दास के हाथ में सों अपने हाथ सों पकरि कें अग्नि

डर बाय दीनो तब कुम्भ दास उहांते खेद पाय के उठि आयो यह प्रसंग सब श्री वल्लभाष्टक की टीका में श्री गोकुलनाथ जी ने विस्तार करि कें लिख्यो है ॥*

प्रसंग २

बहुर मार्ग हृदयारूढ़ भयो पाछें कदाचित गोप्य वार्ता होय सो सबन के आगें कहें पाछें काहू वैष्णवनें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो कुम्भ दास स बन के आगें गोप्य वार्ता कहत है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कुम्भ दास सों कह्यो जो कयारे तू सबन के आगें गोप्य वार्ता कहत है तब कुम्भ दास ने कह्यो जो महाराज आप उनही सों पूछिये जो मैंनें कहा कह्यो

हैं तव उन वैष्णवन सों श्री आचार्य जी महा[illegible]न नें पूछो जो तुम सों कृष्णदास नें कहा वार्ता कही है तव वैष्णवन नें कही जो महाराज हम को तो सुधि रही नाहीं तव श्री आचार्य जी महाप्रभू मुसिकाय के चुप करि रहे॥

प्रसंग ॥३॥

और एक समय श्री ठाकुर जी की रूक्का ते श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कृष्णदास ने प्रश्न पूछो जो महाराज श्री ठाकुर जी कों प्रिय वस्तु कहा है सो मोसों कहौ सो ताको प्रति उत्तर श्री आचार्य जी महा प्रभू कहें जो श्री ठाकुर जी उत्तम वस्तु के भोगता हैं परंतु गोर शब्देन वानी कहीयतु हैं गोरस अति प्रिय है ताके भाव अति वचनी यहैं और सवन ते भक्ति को स्नेह प्रभाव अति प्रिय है ता ते भक्ति वत्सल कहावत हैं तव कृष्णदास ने फिर प्रश्न पूछो जो महाराज श्री ठाकुर जी कों अप्रिय वस्तु कहा है तव श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो श्री ठाकुर जी कों धूंआं समान अप्रिय वस्तु कछू नाही और नाते अप्रिय भक्तन के द्वेषी हैं फिर कृष्णदास नें प्रश्न पूछो जो महाराज श्री रघुनाथ जी संम्पूर्ण सृष्टि कों लेकें स्वधाम में पधारे हैं और राजा दशरथ कों स्वर्ग दीयो सो काहे ते ताको प्रति उत्तर श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो श्री रघुनाथ जी परम दयाल हैं तातें स्वर्ग दीयो नातर दशरथ कों स्वर्ग की योग्यता न हती यातें अपनो वचन सत्य करिवे कों वनवास पठाय दीये ऐसो कर्म कीयो॥

प्रसंग ॥४॥

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कृष्ण

दास ने प्रश्न पूछो जो महाराज भक्त होय के श्रीठाकुर जी
की लीला को भेद नाहीं जानत सो काहेतें तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें कह्यो जो ए विधि पूर्वक समर्पण जो
कह्यो है सो नाहीं करत अनुभव क्यों जानें और भग
वद भक्त को संग करें तो श्री ठाकुर जी की लीला को
भेद जानें सो तो आप कों योग्यता मान काहू को संग
नाहीं करत और कछू करत हैं सो अंतःकरन पूर्वकना
हीं करत हैं मोतें श्री ठाकुर जी के स्वरूप को तथा लीला
को भेद नाहीं जानत उत्तम भक्तन को संग करें श्रीभा
गवत श्रीसुबोधिनी ग्रंथन को अहर्निस अवगाहनक
रें तब भगवद भाव उत्पन्न होय श्री ठाकुर जी भक्तन
के हृदे विषें सदैव रहत हैं तथा सेवा करि कें बंधे हैं
तहां एक अन्य मार्गी वैष्णव जाके हृदय में श्रीठाकुर
जी विराजत हैं ताको संग करनो तहां गऊन धावन वै
ष्णव को दृष्टान्त दिए हैं जिन जिन भाव पूर्वक सेवा क
री तिन के सकल निवर्ते भए तातें श्रीआस्थ व्रज भक्तन
के भाव को विचार करनों जे वैष्णव श्री ठाकुर जी को स्व
रूप जानत हैं तिनको स्वरूप अलौकिक दृष्टि सों जानो
जाय जो आज्ञा होय सो जानों जे वैष्णव श्री ठाकुर जी
कों जानत हैं सो जो कछु कारज करत हैं और श्री ठाकुर
जी सों विरह भावना करत हैं अपनों स्व दोष भाव वि
चार करत हैं अपनो स्वरूप जानें जो हौं कौन हों पहलें
कहा हुतो भगवद संबंध कियेते कहा भयो अब मोको
कहा करतव्य एवं दिवस ऐसो विचार करत रहे तब अ
पनों स्वरूप जानें ए प्रागट्य व्रज भक्तन के अर्थ तथा ए

तन्मार्गीय के अर्थ तातें उत्तम संग होय तौ एतन्मार्ग के ए ठाकुर जानें और प्रस्न पुराण अनेक सिद्धान्त इतिहास हैं तातें व्रजराज के घर प्रगटे सो श्री ठाकुर जी न जानें जाय ए श्री ठाकुर जी कों तबही जानें तातें भगवद भक्त कों संग करनौ सेवा कौ प्रकार एतन्मार्गी वैष्नव जानत हैं तिन सों मिलि तिन कौ भाव पूछि के सेवा करनी तब भगवद भाव उत्पन्न होय श्री ठाकुर जी की सहज युक्ति सेवा कीं जो श्री ठाकुर जी वा कों सब जतावै ॥

प्रसंग ॥ ५ ॥

और एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभू श्री बद्रीनाथ जी के मन्दिर में पधारे तब वेद व्यास जी साथ हे तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें वेद व्यास जी सों पूछी जो भमर गीत की अध्याय में उद्धव जी कों ब्रज भक्तन के पास पठाए हैं ता प्रसंग में श्लोक आधौ घटत है तब वेद व्यास जी नें श्लोक आधौ कह्यौ ॥

श्लोक ॥ आतम त्वात् भक्त वत्सल्यात्
सत वक्तात् स्वभावत: ॥+

या की टीका श्री आचार्य जी महा प्रभूनन नें पहलेही की नी हैं सो सुनि के वेद व्यास जी बहुत प्रसन्न भए तापा छें श्री आचार्य जी महा प्रभू बद्रीनाथ जी के मन्दिर पधारे ता दिन वामन द्वादशी कौ दिन हुतौ सो ता दिन श्री आचार्य जी महा प्रभून कौ विचार मन में दृढ करिवे कौ हुतो तब श्री बद्री नाथ जी ने श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यौ जो मैनें फलाहार कौ सब योज कीनौ

परि पाइयत नाहीं ताने तुम समोई करि श्रीठाकुरनी
कों भोग धरि भोजन करो श्रीठाकुर जी की इच्छा गमी
दीखतहै इतने में श्रीकुम्भदास नें आय कें कह्यो।
जो महाराज यहां तो कछू पावत नाहीं पाछें ना दिन
ते वामन द्वादशी के दिन दूध न करते तुम्हारो तें च
पारणां ऐसो वचन है पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू
वद्रीनाथ जी ते विदा भये तब कुम्भदास आयहीहे

॥ वार्ताप्रसंग ॥ ६ ॥

प्रथम श्री आचार्य जी महाप्रभू वेदव्यास जी के मंदि
र में पधारे तब कुम्भदास सों कह्यो जो तू ठाडो रहियो।
तब कुम्भदास ठाडे रहे पाछें आप तीसरे दिन पधारे
तब कह्यो जो तू गयो नाहीं सो काहे ते तब कुम्भदा
स कह्यो जो महाराज तुम्हारी आज्ञा न मानों तो
सेवक काहे को सेवक को आज्ञा में चलनों सो कु
म्भदास ऐसे कृपा पात्र भगवदीय प्रभून की आज्ञा
मानते ताते श्री आचार्य जी महाप्रभू कुम्भदास के।
ऊपर सदा प्रसन्न रहते पाछें मुखता को दोय मनमें
न लावते ऐसे आप उदार गय जीवन को और नहे
खते दया राखते और आपनी ओर ते दया करिजी
वन को अंगीकार करते जीवन की ओर को विचा
र न करते कुम्भदास मार्ग तथा घर में सदैव रहते सो
वे कुम्भदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृ
पापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं
सो अब कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ताप्रसंग ॥ ७ ॥ वेदव्य ॥ २ ॥ सम्बध ॥ १८ ॥

॥अथश्री आचार्य जी महाप्रभून के ॥
सेवक दामोदर दास सज्जन चारण की
कन्नौज के वा सीनिन की वार्ता है
सो दामोदर दास कों एक पत्र तामें को पायो और ए
पत्र में वामें कह्यो जो या पत्र को वांचनाकी तू मत
जैयो सो वह पत्र काहू सों वांच्यो न जाय सो कितेक
दिन पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू कन्नौज पधारे
तहां गांव के वाहिर आय उतरे और कृष्णदास मेघन
कों गाव में पठायो और कह्यो जो सीधो सामग्री ले
आउ परि काहू सों कहियो मती जो श्री आचार्य जी मह
प्रभू यहां पधारे हैं तब कृष्णदास गांव में जाय सीधो साम
ग्री सब लीनों सो लेकें जब चलन लागे तब दामोदरदा
स ताही समय राजद्वार से आवत हते सो मार्ग जान
कृष्णदास को देख्यो तब दामोदर दास घोड़ा ते उतर
कें कृष्णदास के पास आये और दंडवत की ये पाछें
पूछो जो तुम कहां ते आये और श्री आचार्य जी महा
प्रभू पधारे हैं तब कृष्णदास नें कह्यो जो आज्ञा नाहीं
तब दामोदर दास नें कह्यो जो ये श्री आचार्य जी महाप्र
भून विना काहे कों आवें सो जब कृष्णदास चले तब पा
छें २ दामोदर दास आये और घोड़ा हो सो पठाय दी
यो सो कृष्णदास कों दूर ते आवत श्री आचार्य जी म
हाप्रभून नें देख्यो पाछें दामोदरदास कों देख्यो तब दामो
दर दास नें दंडवत कीनी तब कृष्णदास सों श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें पूछो जो तेनें या सों क्यों कह्यो तब कृ
ष्णदास नें कह्यो जो महाराज मेनें तो इनसों नहीं कही

तब

दामोदर दास ने वीनती कीनी जो महाराज इन भोंसों
नाहीं कह्यो हूंतो इन के पाछें पाछें चल्यो आयो हूं जो
र श्री आचार्य जी महाप्रभू नाही कीए मोयानें कन्नौज
पधारेंगें तब यावत करनें हैं तब श्री आचार्य जी महा
प्रभू मन मों विचारे जो आज्ञा भई है सो आयही होयगी
नाक लिये नाहीं कही हुती पाछें श्री आचार्य महाप्र
भून नें दामोदर दास सों पूछो जो पत्र ल्यायो है तब दामो
दर दास नें वीनती कीनी जो महाराज पत्र को कहा काम
है मोकों शरण लीजिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभू
ननें कही जो तोकों आज्ञा भई है जो यह पत्र वाचे ता
कीतू शरण जइयो नातें तू पत्र लाउ तब पत्र मगायो
तब श्री आचार्य जी महा प्रभून ने पत्र वाच्यो पाछें वा
पत्र को अभिप्राय दामोदर दास सों कह्यो दामोदर दा
स कों पाछें नाम सुनायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू
न कों दामोदर दास ने अपने घर पधराये पाछें दामोदर
दास तथा दामोदर दास की स्त्री दोउ जने स्नान करि कें
श्री आचार्य जी महाप्रभू की शरण आये तब दामोदर
दास कों समर्पण करवायो और दामोदर दास की स्त्री
कों प्रथम नाम सुनायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू
ननें समर्पण करवायो तब दामोदर दास ने वीनती की
नी जो महाराज अबहम कों कहा आज्ञा है अबहम क
हा करें तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें आज्ञा करीजो अ
बहम सेवा करों तब दामोदर दास ने कही जो महाराज
सेवा कोन भांति करें तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें
कही जो कहूं श्री ठाकुर जी कों स्वरूप देखो सो एक

दरजी के घर श्रीठाकुर जी को स्वरूप हुतो सोताको दा
मोदरदास द्रव्य देकें लै आये पाछें सब घर पोंचा पाछें
सब वदलाये पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून ने बाल
रूप को पंचामृत में स्नान करवायो श्री द्वारकानाथ जी
नाम धरयो पाछें सिंहासन बैठाये तब दामोदर के माथे
सेवा धराय के पाछें भोग समर्प्यो समयानुसार भोग
सराय बीड़ा समर्पन लागे तब देखें तो पान हरे हैं तब
श्री महाप्रभून नें कह्यो जो दामोदर दास हरे पान कबहूं
नहीं समर्पिये उत्तम सामग्री होय सो श्री ठाकुर जी को
समर्पिये श्री ठाकुरजी तो उत्तम वस्तु के भोक्ता है पाछें
स्त्री पुरुष भली भांति सों सेवा करन लागे तब श्रीद्वारि
का नाथ जी की सेवा भली भांति सों होन लागी और श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें आज्ञा दीनी जो उतरयो पर
कालो होय सो श्री ठाकुर जी कूं कबहूं न समर्पिये वह
काम न आवे सारे पर काले में ते प्रथम श्री ठाकुर जी
कों लीजिये और उत्तम कोमल वस्त्र होय सो श्री ठाकु
रजी के काम आवें पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
और आज्ञा दीनी जो उत्तम सामग्री होय सो श्री ठाकुर
जी के लिये अपने घर लै आइये श्री ठाकुर जी की सा
मग्री में ते और ठौर खर्च न करिये तब दामोदर दास स्त्री
पुरुष दोऊ जने भली भांति सों सेवा करन लागे और सा
मग्री उज्जल होती जो रूपान के कटोरान में धरयो
रखते सो ऐसी उज्जल कोई जानतो नाहीं जोया
में सामग्री है या भांति सों सेवा करन लागे ॥

॰ वार्ता प्रसंग १

और दामोदर दास श्रीठाकुर जी कों जल आप
अरते सो एक दिन वा को सुसर दामोदर दास के
घर आय कें दामोदर दास सों कहन लागयो जो तुम
जल भरि ल्यावन हो सो हम कों जाति में लाज्या आ
वत है नातें तुम जल मति भरो लौंडी के हाथ जल
भरावो तब दामोदर दास ने एक घड़ा श्री आपनी
को और एक घड़ा स्त्री के हाथ में दीयो तब दोऊ
जने घड़ा लेकें वाकी हाट के आगें होय कें निकसे

तब जलभरि कें घर आये पाछें दामोदर दास
को सुसर आयो सो आय कें दामोदर दास के
पावन पर्यो और बीनती करि के कह्यो जो मैं चूक्यो

श्रवते तुमहीं जल भरो परि स्त्री पास जल मतिम
गवो श्राज पाछें हम कबू न कहेंगे नव श्रापही
जल भरन लागे जो चाहिये सो श्री द्वारकानाथ जी
दामोदर दास से मांग लेने वातें करने सेवा करि कें
श्रीठाकुर जी कों श्रेसे प्रसन्न कियें तव श्री श्राचा
र्यजी महाप्रभू श्रपने श्री मुखते कहें जो जिननें राजा
श्रंवरीष न देख्यो होय सो दामोदर दास कों देखें श्र
राजा श्रंवरीष तो मर्य्यादा मार्गीय हुते श्रोर यह पु
ष्टि मार्गीय हैं इनमें इतनी श्राधिकता है ॥ श्र३

वार्ता प्रसंग ३

श्रोर एक दिन उष्ण काल के दिन हुते नव श्री द्वार
कानाथजी कों पौढ़ाये श्राप दामोदर दास नाथ कें
चौवारे में सोये सो वादिन गरमी वहुत भयी तव श्री द्वा
रिका नाथ जी नें लोंडी कों श्राज्ञा दीनी जो किवाड़ खो
ल मोकों गरमी वहुत लागत है तव लोंडी नें किवाड़ खो
ले तव श्री द्वारिका नाथ जी नें लोंडी सों कह्यो जो पंखा
करि तव लोंडी नें पंखा कीयो सो घड़ी १ लों पंखा कि
यो पाछें लोंडी सों कह्यो जो तू श्रव जाय कें सोय रहि श्र
तव सवारो भयो तव दामोदर दास देखे तो किवाड़ खुले
पड़े हैं तव पूछो किवाड़ किन खोले तव लोंडी नें कही
जो मोकों श्री ठाकुर जी नें किवाड़ खोलन की श्राज्ञा
करी है तव खोले हैं तव दामोदर दास लोंडी ने वहुत
खीजे श्रोर कह्यो जो तेनें किवाड़ क्यों खोले जो मो
कों श्री ठाकुर जी नें किवाड़ खोलन की श्राज्ञा क्योंन
करी श्राप क्योंन खोले श्रोर लोंडी सों क्यों कर्यो पर प्रभु

श्र तव लोंडी किवाड़ खोलन लगी किवाड़

बड़े दयालु हैं ता विषें स्नेह होय ताहीसों संभाषण करैं श्री आचार्य जी महाप्रभून के अंगीकार में सब समान हैं लौकिक में कोऊ उच्च ..... नीच कहि लेउ श्री ठाकुर जी तो स्नेह के वस हैं पाछे श्री ठाकुर जी ने कह्यो जो मैंने किवाड़ खुलाए हैं तब इन खोले हैं तू तो चौबारे में जाय सोयो और मोकों भीतर सुवायेो मोकों गरमी बहुत लगी ताते खुलाए हैं तू लौंडी सों क्यों खीजत है सो कहि के बहुत खीजे तब दामोदर दास नें कह्यो जो प्रसाद तब लेउ जब मन्दिर सम्हराऊं तब। स्त्री ने कह्यो जो प्रसाद न लेउ तो जैसो क्यो बनै यहतो पांच सात दिन को काम नाहीं प्रसाद लीये विना क्यों चलैं तब कह्यो जो प्रसाद तो नाहीं लेउं फलाहार करूंगो तब ऐसे करत २ मन्दिर सिद्ध भयो तब श्री द्वारका नाथजी के मन्दिर में पाठ बैठाये तब उत्सव कीयो वैष्णव कों प्रशाद लिवायो ता पाछें आपनें प्रशाद लीयो ॥२॥ ४ महा

प्रसंग ॥३॥

और एक दिन दामोदर दास श्री ठाकुर जी कों राज भोग समर्पि के सइया मन्दिर में समारन गये तब देखें तो दुलीचा ऊपर विस्त्री ने बिगार दीयो है तब दामो दर दास नें कही जो श्री ठाकुर जी अपनी सेवा हू रा खसकत नाहीं ऐसें कह्यो तब श्री ठाकुर जी नें पार चौकी ऊपर सों लात मारि के डार दीनी और दामोदर दास सों श्री ठाकुर जी नें कह्यो जानू कैसो सेवक है सेवक होय के याभांति कहत है ऐसे बहुत खीजे

पाछें दामोदर दास नें वीनती कीनी मनुहार बहुत करी सामग्री सिद्ध करवाय के श्रीठाकुर जी कों भोग समर्प्यो तब श्रीठाकुर जी आरोगे पर तोहू मास दोय लों बोले। नांही तब दामोदर दास नें वीनती बहुत कीनी तब फेर वो खन लागे ॥३॥

वार्ता प्रसंग ४

बहुर एक समय दामोदर दास हरसानी इनके घर पाउंने आए सो दामोदर दास संवत्त वार के घर पांच सात दिन रहे तब इन ने भली भांति सों समाधान कीयो पाछें दामोदर दास हरसानी इन सों विदा होय कें अडेल आये तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें दामोदर दास सो कह्यो जो दमला तू कहां उतस्यो हो और कहां प्रसद लीयो हो तब दामोदर दास हरसानी ने श्री आचार्य जी महाप्रभू न सो वीनती कीनी जो महाराज कन्नोज में दामोदर दास संवत्त वार के घर उतस्यो हो परन्तु सखड़ी महा प्रशाद लेतो सखड़ी न लेतो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू दामोदर दास संवत्त वार के ऊपर अप्रसन्न भए और कह्यो जो यह मेरो अंतरंग सेवक याकों सखड़ी महा प्रशाद क्यों न लिवायो सो यह बात श्री आचार्य जी महा प्रभून के अंतः करन की दामोदर दास संवत्त वार नें घर बैठे जानी जो श्री आचार्य जी महा प्रभू आप अप्रसन्न भए मेरे ऊपर तब स्त्री सों कह्यो जो तू श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करियो और मैं तो श्री आचार्य जी महाप्रभून के चरन दरसवे कों अडेल जात हों सो तब नहात

चले सो अड़ैल जाय पहोंचे तब श्री आचार्यजी महा
प्रभून के दर्शन करिकें साष्टांग दंडवत कीनी तब श्री
आचार्य जी महाप्रभू पीठिदै बैठे तब दामोदर दास
संवलवार ने श्री आचार्यजी महाप्रभून सों बीनती
कीनी जो महाराज मेरो अपराध कहा है और जीव
तो अपराध करत ही आयो है परि अपराध
जानियें तो भलो है तब श्री आचार्यजी महाप्रभू
ननें कह्यो जो तेने दामोदर दास हरसानी को अपने
घर महाप्रशाद अनसरवड़ी क्यों लिवायो सरवड़ी
क्यों न लिवायो तब दामोदर दास संवलवार ने बीन
ती कीनी जो महाराज दामोदर दास सों आप पूछियें
जो सरवड़ी क्यों न लीनी तब श्री आचार्यजी महाप्रभू
ननें दामोदर दास हरसानी सों कह्यो जो तेनें सरवड़ी
महाप्रशाद क्यों न लीनों तब दामोदर दास ने कह्यो
जो महाराज श्री ठाकुरजी प्रातःकाल बाल भोग श्रृं
गारने पाछें पकवान मिठाई दूध पाक बहुत लेतो सो
सरवड़ी की रुचि रहती नाहीं तातें न लेतो तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभू ननें कह्यो जो तूतो अपनी इच्छा
ते न लेतो परि मोकों तो याके ऊपर बड़ी खुन्स भई
हुती सो भक्तन के अंतःकरन की वृत्ति देखवे कों प्रभू
न कों प्रागट्य है काहे ते जो दामोदर दास संवलवार
नें अपने घर कन्नोज में श्री आचार्यजी महाप्रभून
के अंतःकरन की जानी तो श्री आचार्यजी महाप्रभू
तो भक्तन के हृदय में सदा स्थिति हैं तो भक्तन के हृ
दय की वात क्यों न जानें परि भक्तन की परीक्षा यह

प्रभून को प्रागट्य है पाछें दामोदर दास सवल वार के बहुत सन्मान करि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभूनें वा कों अपने घर कों पठायो तब दामोदर दास अपने घर कन्नौज में आए तब दोउ स्त्री पुरुष भली भांति सों सेवा करन लागे ॥ ४॥

वार्ता प्रसंग ५

और सिंह नंद के वैष्णव श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास जाते सो सब कन्नोज में दामोदर दास कों मिलि कें जाते जो वैष्णव आवते तिन सबन कों कन्नोज में अपने घर आदर सन्मान करि कें उतारते सबन कों महाप्रशाद लिवावते पाछें जब अडेल विदा होने तब तिन वैष्णव प्रति एक एक मोहर एक एक श्री फल आचार्य जी महाप्रभून की भेट पठावते काहे ते जो मेरी दंडोत खान्यो हायन कैसें करेंगे ऐसे श्री आचार्य जी महाप्रभू इन पर सदा प्रसन्न रहते ॥५॥

वार्ता प्रसंग ६

बहुर दामोदर दास को सुसर बहुत प्रसन्न हतो तिननें १०० सो लोंडी बेटी के दायजे में दीनी जो मेरी बेटी बैठी रहेगी काम काज सब लोंड़ी करेंगी परि ऐसे न करती सेवा सम्बन्धी कार्य्य सब आपु करती सो वह ऐसी भगवदीय ही ॥

वार्ता प्रसंग ७

बहुर एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू आप दामोदर दास के घर पोढ़े हुते और दामोदर दास पांव दावत हुतो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोद

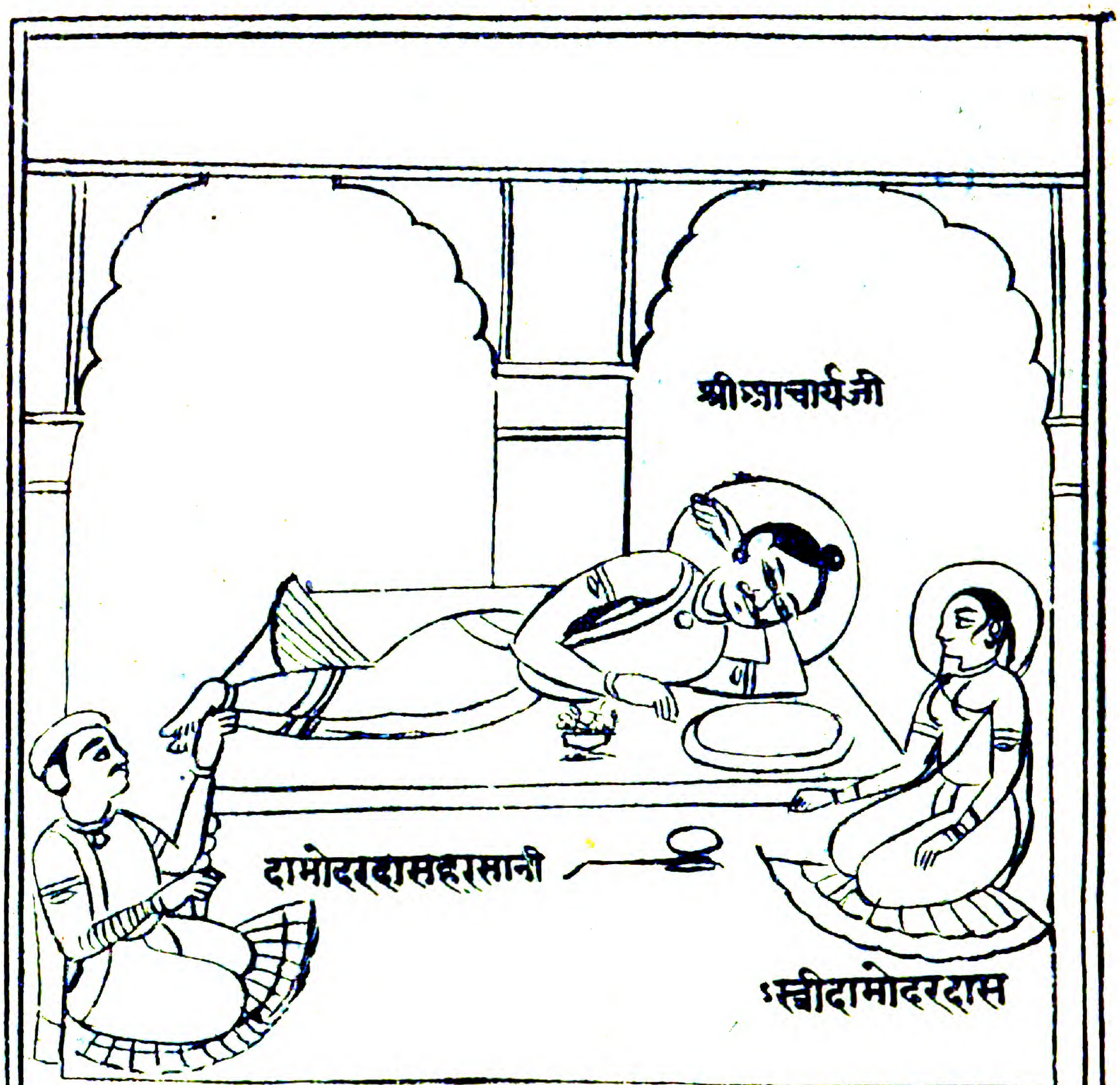

र दास सों पूछो जो दामोदर दास तेरे मन में काहू वात
को मनोरथ है तव दामोदर दास नें कह्यो जो महाराज
मोकों तो काहू वात को मनोरथ नाय के अनुग्रह ते र
ह्यो नांही तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जा तू
अपनी स्त्री सों पूछि आउ जो तो कों काहू वात को मनोरथ
है तव दामोदर दास जाय कें अपनी स्त्री सों पूछो जो ते
रे काहू वात को मनोरथ है तव स्त्री नें कह्यो जो कोई वा
त को मनोरथ र ह्यो नाहीं एक पुत्र को मनोरथ है एक
पुत्र होय तो भलो तव यह वात दामोदर दास नें जा
य कें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो महाराज

स्त्री को मनोरथ है जो एक पुत्र होय तो भलो है तब श्री आचार्य जी महाप्रभू आप कहें जो हां होयगो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप तो श्री नाथ जी द्वार पधारे पाछें जब वाके समय भयो तब स्त्री गर्भ स्थित भई पाछें वा बारबर में कितनेक दिन में एक डांकोतिया आयो तब वाकों सब साथ की स्त्री पूछन लागी तब तामें ते काहूनें दामोदर दास की स्त्री सों कही जो अमुकी तू हू पूछि देखि जो कहा होयगो बेटा होयगो कै बेटी होयगी पाछें वाकी लौंडी ने जाय कै वा डांकोतिया सों पूछी जो दामोदर दास की स्त्री कें कहा होयगो बेटा होयगो कै बेटी होयगी तब वा डांकोतिया ने कही जो बेटा होयगो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू कितनेक दिन में कन्नौज में पधारे तब दामोदर दास चरण छूवन लागे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो मोको छूवे मति तो कों अनाश्रय भयो है तब दामोदर दास ने कह्यो जो महाराज में तो कछू जानत नाहीं हौं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो तू अपनी स्त्री सों पूछि आउ तब दामोदर दास ने स्त्री सों पूछो जो तेनें कछू अनाश्रय कीनों है सो स्त्री ने जो प्रकार भयो हुतो सो सब कह्यो सो बात श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कही तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो या के पेट में म्लेछ होयगो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप तो अडैल पधारे पाछें यह बात दामोदर दास की स्त्री ने सुनी तब ते श्री ठाकुर जी के पात्रादिक सेवा सम्बन्धी वस्तु स्पर्शन करती और कहती जो मेरें पेट में म्लेछ है ताते श्री ठाकुरजी के पा

सतथा सामग्री कैसें करूं या भांति सों कहती पाछें जब प्रसूत के दिन आए तब दामोदर दास की स्त्री ने अपनी महतारी सों कहवाय पठाई जो मेरें पुत्र होयगो सो होत मात्र तू अपने घर लै जैयो हम वाकों मुख न देखेंगे जो ह मत्रा कों मुख देखेंगे तौ हमारो धर्म नष्ट होयगो तातें हम वाको मुख न देखेंगे सो उपाय तू करियो पाछें वा की महतारी ने वैसेंही कीयो प्रसूत मात्र होत अपने घर लै गई पाछें धाय कों देकें वड़ो कीयो ॥७॥

वार्ता प्रसंग ८

वहुर किननेक दिन पाछें दामोदर दास की देह छूटी तब वाकी स्त्री ने छिपाय राखी पाछें वा स्त्री नें एक वैष्णव सों कही जो तुम अड़ैल कों एक नाव भाड़े करि ल्यावो सो वह वैष्णव भाड़े करि ल्यायो ता नाव में श्री द्वारिका नाथ जी और घर में की सामग्री तिनूका पर्य्यंत कछू घर में राख्यो नाहीं घर में जो हतो सो सब नाव में भर्यो तब वा वैष्णव सों कह्यो जो यह नाव अड़ैल कों लै जाउ श्री आ चार्य जी महा प्रभून के मन्दिर में पहुंचाय आवो सो वह वै ष्णव नाव लैकें चल्यो सो कोस तीस पर नाव गई ता पा छें स्त्री ने प्रगट करी जो दामोदर दास की देह छूटि गई है तब वैष्णव जुरि आये दामोदर दास कों संस्कार कीयो पाछें दामोदर दास को वेटा तुरक भयो हतो सो आयो आय के घर में देखे तो कछू नाहीं जल को भर्यो कल घर में धर्यो है सो देखि के मूड़ पीट रह्यो पाछें दामोदर दास को सुसर आयो तिननें अपनी वेटी सों कह्यो जो वेटी तुमने घर में कछू राख्यो नाहीं सो तू अब कहा खा

यगी तव ज्ञानें कही जो तुम देउगे सो मैं खाउंगी स्त्री-
लोगन के पास में सगे मौदरे कछू देत हैं ऐसी ग्याति की
कछू रीति है तव दामोदर दास की स्त्री ने अन्न जल कौत्यौ
ग कीयो सो थोरे से दिन में वाकी हू देह छूटी तव कृत्य दो
उन कौ साथ ही भयो वह ऐसी भागवदीय ही सो यहवा
त कितनेक दिन पाछें काहू वैष्णव नें श्री आचार्यजी म-
हा प्रभून के आगे आय कही तव श्री आचार्यजी महा
प्रभून ने कही इन कौं योंही चाड़िये वे दोउजने ऐसे
भगवदीय हैं उन की सराहना श्री आचार्यजी महाप्रभू
श्री मुखते करते तातें इन की वार्ता अनिर्वचनीय है-
इन की वार्ता कहां तांई लिखिये ॥८॥

वार्ता प्रसंग ८ संवद ॥ २४ ॥

अव श्री आचार्यजी महा प्रभून के सेवक पद्मनाभ दास कन्नौजि या ब्राह्मण कन्नौज में रहत ते तिन की वार्ता ॥

सो एक समय श्री आचार्यजी महा प्रभू कन्नौज पधा
रे तव पद्मनाभिदास श्री आचार्यजी महा प्रभून के द-
र्शन कौं आए तव पद्मनाभिदास नें श्री आचार्यजी म
हा प्रभून के श्री मुखते भागवत वार्ता कौ प्रसंग सुन्यो
नव जानी जो एतो साक्षात् ईश्वर हैं ऐसें श्री आचार्य
जी महा प्रभून के दर्शन भये प्रथम पद्मनाभि दास व्या
स आसन बैठते सो कन्नौज में अपने घर कथा कहत
ऊंचे आसन बैठने श्रोता बहुत कथा सुनिवे कौं आ
वते काहू के घर जानौं न पड़तो इत घर बैठे चली

आवती याभांति सों रहते सो पद्मनाभि दास श्री आचार्य जी महा प्रभून के श्रीमुखते भगवत् प्रसंग सुन्यो तब ते जान्यो जो ए साक्षात् पूरन पुरुषोतम हैं सो पूरन पुरुषोत्तम जानि कें पद्मनाभि दास श्री आचार्य जी महाप्रभून की सरण आये नाम पायो पाछें समर्पण करवायो तब उत्थापन के समय श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पोथी खोली तहां दामोदर दास संवलवार के घर बैठे हते ता समय पद्मनाभि दास अपने घर ते आये श्री आचार्य जी महा प्रभून कों दंडवत करि कें बैठे तब श्री आचार्य जी महा प्रभून ने पोथी खोली और श्लोक निबंधन कों कह्यो ॥

॥ श्लोक ॥

पठनीयं प्रयत्नेन सर्व हेतु विव
र्जितं ॥ वृत्यर्थं नैव भुंजीत प्राणैः
कण्ठ गतै रपि ॥ तद्भावे तथै
वस्या तथा निर्वाह सांचरेत् ॥

यह श्लोक पढ़ सो पद्मनाथ दास ने सुन्यो पाछें दशमस्कंध की कथा कही सो सुनी तब श्री आचार्य जी महा प्रभू कथा कहि रहे तब पद्मनाभ दास नें जल की अंजुली भरि कें संकल्प कीयो जो अबते कथा कहिवे कों वृत न करूंगो ऐसे श्री आचार्य जी महा प्रभून के आगें संकल्प कीयो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें श्रीमुखते कह्यो जो श्री भागवत वृत्त रथन कहनो और तो तुम्हारी वृत्य है तुम ब्राह्मण हो और पुराण महाभारथी तो इत्यादिक कहनो तब पद्मनाभ दास ने कह्यो जो महा

राज हमने अब तौ संकल्प कीयो सो तो कीयो यातें क
हून कहनों तब श्री आचार्य जी महा प्रभू कहें जो तुम ग
हस्थ हौ सो कौन भांति निर्वाह करोगे तब पद्मनाभ दास
ने कह्यो जो महाराज भिक्षा मांगि कें निर्वाह करूंगा
पाछें एक जिजमान के घर वृत्यर्थ गए तिन तब बहुत
आदर सन्मान कीयो तब पद्मनाभ दास के मन में व
हुत ग्लानि आई जो कबहूं पहलें तौ भिक्षा वृत्य करी
नाहीं और अब वैष्णव भये ताकौं तौ यह भिक्षा हू उ
चित नाहीं तब फेर संकल्प कीयो जो अबतो भिक्षा क
तहूं न करूंगो तब फेर श्री आचार्य जी महा प्रभून नें क
ह्यौ जो अब निर्वाह कौंन भांति करोगे तब पद्मनाभदास
नें कह्यो जो अब वैष्णव कृत्य करि निर्वाह करूंगो पाछें
कोड़ी बेचने लकड़ी लैं आवते पर और बात न विचारी
या भांति देहादि पर्य्यंत निर्वाह कीनो ऐसे टेक के कृपा
पात्र भागवदीय हैं ॥

वार्ता प्रसंग १

अब श्री आचार्य जी महा प्रभू प्रयाग में पधारे हैं
तब पद्म नाभ दास आय हैं रात्रि पहर १ गई ही तब श्री
आचार्य जी महा प्रभून नें पद्मनाभ दास सों कही जो श्री
अक्काजी कों पार ते पधराय लावो सो सुनत ही पद्म
नाभदास उठि चले तब पांच सात वैष्णव तहां बैठे
हते सो कहन लागे जो यह ब्राम्हण बावरो भयो है ये
वेर कहां जायगो नाव सब बंधी हैं घटवार सब घर
गये हैं नातें यह विरियां जाइवे की नहीं पार या को
तौश्री आचार्य जी महा प्रभून को आज्ञा है ना कौ वि

स्वामजोयहकाम अधिक अवस्य होयगो सो घाट
ऊपर आये तव इत उत देखन लागे इतने में देखें तो
अकस्मात एक लरिका वर्ष दस को एक डोंगी लेकर
आयो सोवानें पद्मनाभ दास कौं पूछो जो तू पार जाय-
गो तव पद्मनाभदास नें कह्यो हांहो जाऊंगो तव उन

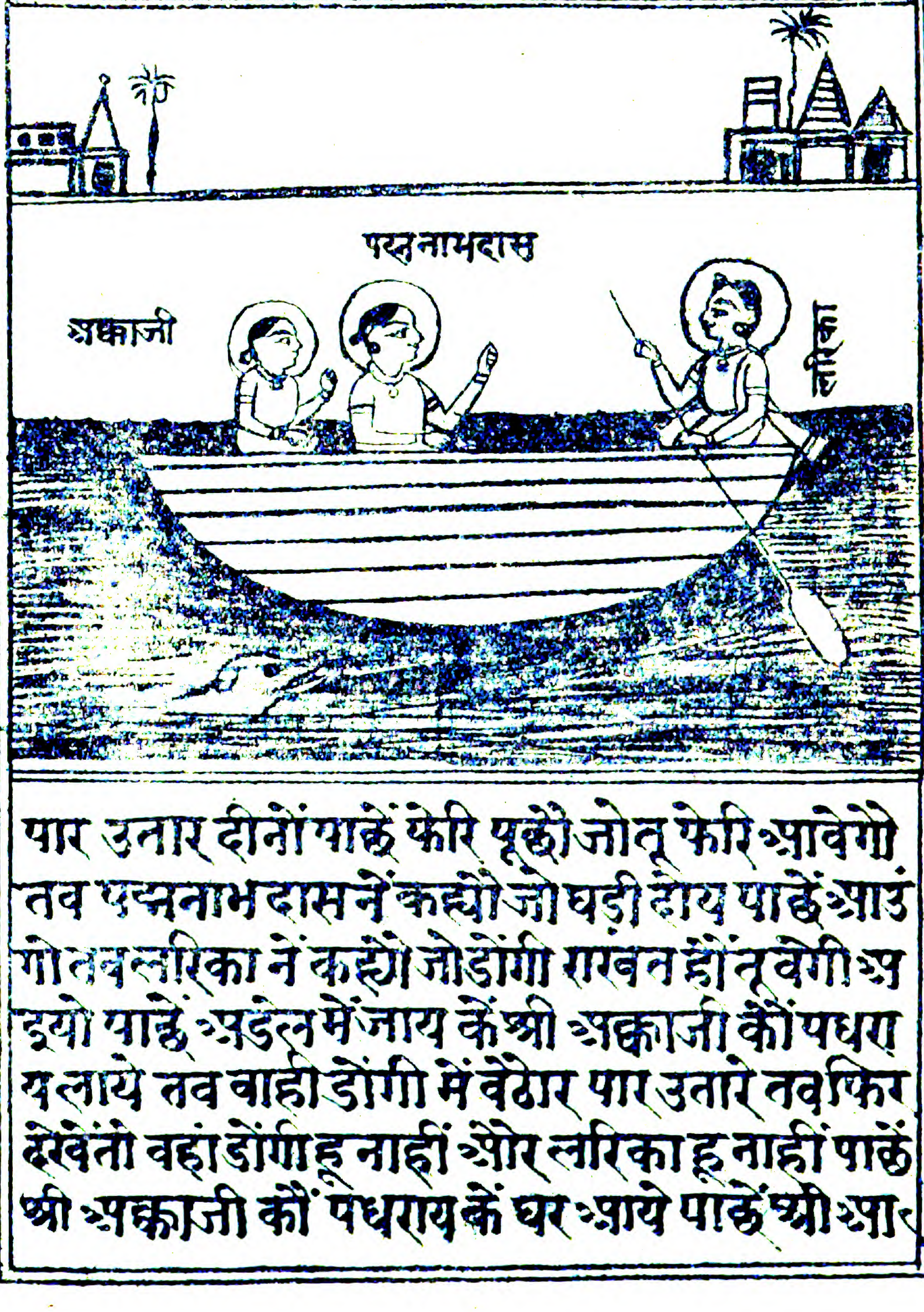

पार उतार दीनों पाछें फेरि पूछो जो तू फेरि आवेगो
तव पद्मनाभदास नें कह्यो जो घड़ी दोय पाछें आउं
गो तव लरिका नें कह्यो जो डोंगी रावन दोंगी तू वेगी आ
इयो पाछे अडैल में जाय के श्री अक्काजी कौं पधरा
य लाये तव वाही डोंगी में बैठार पार उतारे तव फिर
देखें तो वहां डोंगी हू नाहीं और लरिका हू नाहीं पाछें
श्री अक्काजी कौं पधराय के घर आये पाछें श्री आ

चार्यजी महाप्रभून नें पद्मनाभि दास कों आज्ञा दीनी
जो जाउ सोय रहो जब जहां वैष्णव सोये हते तहां आ
ये तब वैष्णव सब पूछन लागे जो तुम कहा करि आये
तब पद्मनाभि दास नें सब समाचार कहे तब वैष्णवन
नें कह्यो जो तेनें श्री ठाकुरजी कों श्रम बहुत करवायो
पाछें वैष्णवन नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों पूछो
जो महाराज पद्मनाभ दास नें श्री ठाकुरजी कों श्रम
बहुत करवायो तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें क
ह्यो जो यह जो भयो है कछू सो मेरी इच्छा ते भयो है ता
ते तुम पद्मनाभि दास सों कछू मति कहो॥

वार्ता प्रसंग २

बहुर एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू श्रीगो
कुल ते अडेल कों जात हते तब एक व्योपारी कछू
सामुलें के साथ में चल्यो और श्री आचार्यजी महाप्र
भू कन्नौज के बीच पधारे तब व्योपारी पोढ़ें रह्यो तां
के ऊपर चोर आय पड़े सो वस्तु सब लूट लीनी और
श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तो दामोदर दास संच
लवार के घर पधारे सो वहां उतरे रसोई करि श्री ठाकु
रजी को भोग समर्प्यो इतने में वह व्योपारी रोवत पी
टत आयो तब पूछो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू कहे
करत हैं तब पद्मनाभि दास ने कह्यो जो भोजन करत
होंयगे तब वा व्योपारी ने कह्यो जो हमारो माल सब
लुटि गयो है और श्री आचार्यजी महाप्रभू भोजन
करत हैं तब पद्मनाभ दास ने अपने मन में विचार्यो
जो श्री आचार्यजी महाप्रभू सुनेंगे तो भोजन न करेंगे

घड़ी दोय की अवार होयगी तातें पद्मनाभदास वा
व्योपारी की वाह पकिर कें एक साह की दुकान पर
लेगये ता साह नें पद्मनाभदास कौ वहुत आदर सन
मान कीयो तव वानै कह्यो जो आज्ञा करो कैसें पधारे
हो तव पद्मनाभ दास नें वा साह सों कह्यो जो या
व्योपारी कों इतनों द्रव्य दियोचाहिये या द्रव्य कौ ख
त पत्र व्याज हम लिख देयंगे तव साह ने कह्यो जो प
द्मनाभ दास जी तुम कौं जितनों द्रव्य चाहिये तितनों
लेउ खत पत्र की कहा वात है तव पद्मनाभ दास नें
कह्यो जो पहिले तौ खत पत्र लिखेंगो पीछें द्रव्य
लेउंगो विना खत लिखे तौ लेउंगो नाहीं तव साह ने
कही जो तुम्हारी इच्छा पाछें पद्मनाभ दास ने खत
लिख दीनो तव साह नें वा व्योपारी कों द्रव्य दीयो त
व वह व्योपारी तौ अपनो द्रव्य लैकें अपने घर गयो
तव पद्मनाभदास अपने घर आये तव पद्मनाभद
स सों श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पूछो जो पद्मनाभ
तू कहां गयो हो तव पद्मनाभदास ने कह्यो जो महा
राज एक काम गयो हो सो श्री आचार्य जी महाप्रभू
आप तौ साक्षात ईश्वर सो तत्काल जानि गये तव प
द्मनाथ दास सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें क
ह्यो जो हम वा व्योपारी कों संग तौ लीनों न हतो
जो वा कों माल देनो वह पीछें रह्यो तौ हम कहा क
रें पर तेंनें वहुत बुरी करी सो रुपया काढि कें पेलें
दीनों तव पद्मनाभदास नें कही जो महाराज सो तो
सांच पर वह व्योपारी पुकार तो तौ राज भोजन मंदो

य घड़ी की अवार होती तौ मेरौ जन्म सब वृथा जा
तौ और वरण तौ कान्ति देउंगो यह कितनी कवात
है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो तेंनें
धर्म गहने लिखदीनी सो काहे तें तब पद्मनाभ दास
नें कह्यो जो महाराज ऐसो गादो लिख दीयो जो बिना
दिये न जाय पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू तो अड़ेल
पधारे पाछें पद्मनाभ दास एक राजा हुतौ ताके पा
स गए तब पद्मनाभ दास कौ वा राजा ने बहुत आदर
सनमान कीयो पाछें राजा ने कह्यो जो मो कों कृपा
करिकें कछु सुनावो तब पद्मनाभ दास ने कह्यो जो रा
जा श्री भागवत तौ नाही सुनाउं कहो तौ महाभारत
सुनाउं सो राजा ने कह्यो जो महाभारत ही सुनावो
सो महाभारत ही कहन लागे सो जब युद्ध को प्रसंग
आयो तब सबन के हथियार छुड़ायधरे तब आगें
कहन लागे सो कथा कहत में कोई वीररस ऐसो
उफज्यो सो आपस में सब स्नात मुक्कान सों लरन ला
गे पाछें .... कितेक दिन में महाभारत सम्पूरण
भयो तब राजा बहुत दक्षिणा देन लागयो तब पद्मना
भदास नें कह्यो जो इतनों तौ में नाहीं लेउंगो मेरे मांथे
ऋण है तितनो लेउंगो पाछें वा साह कों मूल ब्याज
देनो हुतौ तितनों लीनों बाकी कौ फेर दीनो पाछें सा
ह कौं द्रव्य देकें स्वत फारि डारो ॥ २॥

वार्ता प्रसंग ३

और पद्मनाभदास कें एक बेटी कुमारी हुती ता
के निमित्त एकवर श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ सेव

कचाहियत हुतो सों वैष्नवन सों पूछन लागो तववै
ष्नवन नें कह्यो जो एक वा श्री आचार्य जी महा प्रभू
को सेवक है परि सनोढिया ब्राह्मण है सो पद्मनाभ
दास कों लौकिक त्याग में विवहार की सुधि रही ना
हीं वैष्नवन कह्यो जो भलो वैष्नव है सो या कों वे
टी दीजिये तव पद्मनाभदास ने कह्यो जो भलो सो
पद्मनाभदास नें वा वैष्नव कों तिलक कीयो विवाह
सही करि कें अपने घर आये तद तुलसा वड़ी वेटी
हुती तासों कह्यो जो अपनी वेटी कों विवाह अमुक
वैष्नुव सों सही कर आयो हूं तव तुलसा ने कही जो
वह तो सनोडिया ब्राह्मण है और आपुन कनोजिये
ब्राह्मण हैं सो अैसें कैसें होय तव पद्मनाभदास नें
कही जो अब तो भई सो भई तव तुलसा नें कह्यो जो
सगाई फेरो तव पद्मनाभ दास ने कही जो सगाई
कैसे फेरी जाय पाछें पद्मनाभदास ने कही छुरीला
वो मेरो अगूंठा काटो तव तुलसा नें कह्यो जो अगूंठ
कैसें काट्यो जाय तव पद्मनाभ दास ने कह्यो जो स
गाई कैसें फेरी जाय जो अगूंठा काटे तो सगाई फेरी
जाय पाछें पद्मनाभदास नें विवाह कर दीयो ज्यात
के सव मुखमार रहे वैष्नव के कहे कों विस्वास ता
ते सगाई न फेरी ॥३॥

वार्ता प्रसंग ४

और एक क्षत्राणि पद्मनाभ दास के घर नित्य
आवती तव एक दिन तुलसा नें कह्यो जो क्षत्राणि
जो तू नित्य कों आवत है तव वा क्षत्राणी ने कही जे

पद्मनाभदास बड़े भागवदीय हैं और महा पुरुष हैं और मेरे संतति नाहीं होत है तातें आवत हौं ताते तुम पद्मनाभ दास सों मेरी बीनती कीजो तब पद्मनाभ दास सों एक दिन तुलसा ने कही जो पद्मनाभ राम एक क्षत्राणी कें संतति नाहीं होत है ताके लियें तुम सों बीनती करत हौं तब पद्मनाभ दास नें कह्यो जो तुलसा जल लाउ तब तुलसा नें जल लाय कें आगें धर्यो तब जल लैकें अंगूठा कौ चरणोदक करिकें पद्मनाभ दास ने क्षत्राणी कों चरणोदक दियौ और कह्यो जो जा तेरे पुत्र होयगो ता कौ तू मथुरादास नाम धरियो पाछें वाकें पुत्र भयो ॥

वार्ता प्रसंग ५

और एक समें बड़े रामदास जी अपने सेव्य ठाकुरजी कौं पद्मनाभ दास के घर पधराय कें आप श्रीनाथजी की सेवा करन लागे श्रीनाथजी के भीतरिया भये तब पद्मनाभ दास श्री ठाकुरजी की सेवा करन लागे सो कितेक दिवस पाछें मुग़ल की फौज आई ताने गांव लूट्यो सो श्री ठाकुरजी कौं मुग़ल लैगये तब पद्मनाभ दास वा मुग़ल के पीछे सात दिन लों रहे जल पान न कियो तब वा मुग़ल सों वाकी मुग़लानी नें कह्यो जो यह ब्राह्मण जल पान हूं नाहीं करत याकों सात दिन भये हैं अन्नजल छोड़ें सो जो यह ब्राह्मण मरेगो तो तेरे माथें हत्या चढ़ेगी तौ तेरो संग छोड़ देउंगी नातर देव याके तेरे पास हैं सो तुम देव याके देउ तब वा मुग़ल नें पद्मनाभ दास कौं श्री ठा

कुर जी दीये सो लेकें पद्मनाभदास अति आनन्द पा
य कें अपने घर आए पाछें आप स्नान करि श्री ठाकु
र जी कों पंचामृत सों स्नान कराये अंग वस्त्र करि शृं
गार कीयो रसोई करि भोग समर्प्यो पाछें समयानु
सार भोग धराय अनोसर करि पाछें महा प्रशाद
आपु लीयो और जा दिन ते वा कन्नौज में श्री ठाकुर
जी मुगल के हाथ परे सो ता दिन रामदास नें हूं यह
बात जानी सो ता दिन ते बड़े राम दास ने हूं सात दिन
ताईं महा प्रशाद लीनों नाहीं परि श्री नाथजी की
सेवा सावधानी सों करत रहे यह बात पद्मनाभदा
स नें घर बैठे जानी जो रामदास हू या बात के ऊपर
बहुत दुख पायो सात दिन लों जल पान हूं नाहीं
लीयो यह जानि पद्मनाभ दास श्री नाथ जी के द
र्शन तथा रामदास जी सों मिलिवे कों श्री नाथ जी
द्वार आये तब श्री नाथ के दर्शन कीये पाछें राम
दास जी सों मिले तब रामदास जी ने पद्मनाभदास
सों कह्यो जो तुमनें बहुत दुख पायो तब पद्मनाभ
दास नें कह्यो जो हूं तो दुख पायो सो तो न्याव है
परि तुम मेरे मांथे सेवा पधराय आये और तुमनें सै
त दिन लों महा प्रसाद नाही लीयो सो काहे तें तब
रामदास ने कह्यो जो तुम कहत हो सो तो सांच है परि
मैं हूं तो बहुत दिन लों सेवा कीनी है ताते इतनों तो
सहन्य चाहिये पाछें कितनेक दिन लों उहां रहि कें
पद्मनाभ दास श्री नाथ जी सों तथा रामदास जी सों
विदा होय कें अपने घर आए पाछें सेवा करन लागे

वार्ता प्रसंग ६

और एक समय पद्मनाभ दास अपने सेव्य श्री ठाकुर जी श्री मथुरा नाथजी तथा अपनो कुटुम्ब लेकर अैड़ल आय रहे परंतु द्रव्य को संकोच बहुत हुतो ताते श्री ठाकुर जी कों भोग समर्पते सो छोला तलि के समर्पते सो छोला आछी रीति सों बान कें पहिले दिन भिजोय राखते दूसरे दिन नाकी भांति सों तलि कें परोसते एक मुट्ठी भरि कें कहैं जो यह दारि एक मुट्ठी भरि कें धरों और कहैं जो यह रोटी है या भांति जितने सालन होंय तितनेन को नाम लेकें एक एक मुट्ठी समर्पते या भांति सों नित्य करते सो श्री ठाकुरजी सोई आरोगते पाछें एक वैष्णव नें श्री आचार्य जी महाप्रभू न के आगे कह्यो जो महाराज पद्मनाभ दास श्री ठाकुर जी कों याभांति समर्पत है सो एक दिन श्री आचार्य जी महाप्रभू भोग समर्पिवे की विरियां आप पद्मनाभ दास के घर पधारे सो जैसें नित्य भोग समर्पते तैसेई पद्मनाभ दास ने भोग समर्प्यो हो सो जब भोग उसरायो तब पद्मनाभ दास नें कह्यो जो महाराज यह खीर है यह भात है यह दारि है यह साक है यह मिखरन है यह रोटी है यह वरा है अैसें कहि के सब सामग्री न के नाम लेकें छोला न की ढेरी बनाई तब श्री आचार्य जी महाप्रभून कों हृदय भरि आयो और कह्यो जो द्रव्य को संकोच है ताके लिये ऐसें करत है पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप तो घर कों पधारे तब श्री अक्का जी सों कह्यो जो पद्मनाभ दास के घर नित

रसोई की सामग्री पठावति रहियो तब दूसरे दिन श्री
आचार्य जी महा प्रभून नें पद्मनाभदास के घर सीधो
सामग्री पठायो तब पद्मनाभदास नें तुलसा सो कह्यो
जो इहांते प्रभू काढ़न हार भये हैं तब पद्मनाभदास
ने दिन दोय चारि को सामान करि पाछें अपने सब्य
ठाकुर जी श्री मथुरा नाथ जी सों कही जो महाराज
कों मन होय तो श्री आचार्य जी महा प्रभून के पास
पधराय आऊं तहां सकल सामग्री सिद्ध है तब श्री
मथुरा नाथ जी नें कह्यो जो मोकों तेरो ही कीयो भा
वत है तातें तेरे यहां बहुत प्रसन्न हों तू कछु संकोच
मति करे ऐसे श्री मथुरा नाथजी आप कहे तब पद्म
नाभदासनें नाव भाड़े कीनी तामें श्री ठाकुरजी पधरा
ये और सब कुटुम्ब नाव में बैठाय के आप श्री आचार्य
जी महा प्रभून सों विदा होन गये और सीधो सामग्री
दिन दोय चार को आयो हुतो सो भंडारी कों फेर देके
आप श्री आचार्य जी महा प्रभून के पास विदा होय
के दर्शन करिके दंडौत करि के कह्यो जो महाराज
हम तौ चलत हैं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पूछो
जो श्री मथुरा नाथ जी कहां हैं तब पद्मनाभ दास ने
कह्यो जो महाराज श्री ठाकुर जी तौ नाव में विराजत
हैं श्री ठाकुर जी कों नाव में पधराय कें, हौं महाराज
के पास दर्शन करिवे कौं तथा विदा होयवे कौं आ
यो हूं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पद्मनाभ
दास कों विदा कीयो पाछें भंडारी नें आचार्य जी म
हा प्रभून सों आय कें कह्यो जो महाराज पद्मनाभ

दास के घर सीधो सामग्री दिन दैचार की पठाई हुती सो पद्मनाभ दास फेरि दे गए हैं तब श्री आचार्यजी महा प्रभून नें कह्यो जो सीधो सामग्री पठाई तानें प द्मनाभदास गयो नातर न जानो यह वात आप श्रीमु खतें कही सो पद्मनाभदास की वार्ता श्रीगोकलुना थ जी श्री सर्वोत्तम की टीका में लिखे हैं सो पद्मनाभ दास सो विरला कोटि स्वपी दुर्ल्लभ हैं सो वे पद्मनाभ दास श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक ऐसे पर म कृपा पात्र भगदीय हैं तानें इनकी वार्ता को पा एगहीं पद्मनाभ दास की ऐसी ऐसी कितनीकवा तीहैं ॥६॥

वार्ता प्रसंग ७

वैष्णव ४ सम्बन्ध ॥३१

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक पद्म नाभ दास की बेटी तुल्सा तिनकी वार्ता लि० ख्यते

सो एक समय एक वैष्णव श्री आचार्य जी महा प्रभू नको सेवक तुलसा के घर आयो सो श्रीठाकुर जीकों दर्शन कीयो तब राज भोग समर्प्यो हो तब तुलसा नें वा वैष्णव सों कह्यो जो उठो स्नान करो महा प्रशाद ले उ तब वा वैष्णव नें कह्यो जो हूं तो घर जाय कें महा प्रशाद लेउंगो तब स्नान करूंगो तब तुलसा चुप

ह्वै रही पाछें वह वैष्नव उठि कें अपने घर गयो तब तुलसा के मन में बहुत खेद भयो जो देखो मेरे घर तें वैष्नव भूखो गयो बहुरि मन में आई जो ग्याति व्यवहार के लिये सखड़ी न लीनी होगी पर भलो सत्कार पूरा करि महा प्रशाद लिवाउंगी पाछें मेदा छानि सिद्ध करवाई तब सोई पाछें गवि कों मथुरा नाथजी पद्मनाभ दास के सेव्य ठाकुर तिनने स्वप्न में तुलसा सों जनायो जो सकारें वा वैष्नव कों सखड़ी महा प्रसाद लिवाइयो वह वैष्नव अपने घर प्रशाद नाहीं लेइगो पाछें वा वैष्नव सों स्वप्न में कही जो सकारे तू सखड़ी महा प्रसाद तुलसा के घर लीजियो पाछें प्रातः काल स्नान करि तुलसा नें पूरी करी श्री ठाकुर जी कों जगाय सेवा करन लागी इतने में वह वैष्नव आयो श्री ठाकुर जी के दर्शन कर बैठि रह्यो तब तुलसा भोग समर्पि कें बाहर आई तब वा वैष्नव सों कह्यो जो उठो स्नान करो महा प्रशाद लेउ तब वैष्नव नें कह्यो जो भलो तब वा वैष्नव ने स्नान करि तिलक मुद्रा करि कें स्मरन कीयो इतने में राज भोग सर्यो तब वा वैष्नव नें दर्शन कीयो पाछें तुलसा नें श्री ठाकुर जी कों अनोसरि करि तुलसा बाहर आई तब पूरी वृंदो समाधो वा वैष्नव के आगे धर्यो और कह्यो जो महा प्रसाद लेउ तब वा वैष्नव नें कह्यो जो यह तो नाहीं लेउंगो हूं तो सखड़ी महा प्रशाद लेउंगो तब तुलसा ने कह्यो जो कछु संकोच मानि करो यह तो जाति व्यवहार है तब

वा वैष्णव नें कह्यो जो सोनो सांच पहिले तो ऐसें
हीं मन में आई इतो परि अब तो आज्ञा भई है पा
छें वा वैष्णव नें सरवड़ी महा प्रशाद लीयो तब दो
उजने परस्पर प्रसन्न भये ॥१॥

वार्ता प्रसंग १

बहुर एक दिन तुलसी के घर श्री गुसांई जी
पधारे तब तुलसी ने भली भांति सों सेवा कीनी
ताते श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भये और एक दि
न श्री गुसांई जी भोजन करि के पोढ़े हुते तब तुल
सी ने भगवद वार्ता करी अति प्रसन्नता में श्री गुसां
जी कही जो पद्मनाभ दास की संतति ऐसी हीचा
हिये पाछें श्री गुसांई जी ने तुलसी सों पूछो जो श्री
ठाकुर जी सानु भावता जनावत हैं तब तुलसी ने
कह्यो जो महाराज अब तो पेट भरि खाइयत है
और नींद भरि सोइयत है और श्री आचार्य जी
महाप्रभून के ग्रंथन को पाठ करि यत हैं तब श्री
गुसांई जी बहुत प्रसन्न भये वह तुलसी ऐसी भ
गवदीय हुती ताते श्री ठाकुर जी अति सहि न
सके तातें वा तुलसी के ऊपर श्री गुसांई जी बहुत
प्रसन्न रहते ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये
॥

वार्ता प्रसंग २

वैष्णव ५ सम्बन्ध ३३॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के।
सेवक पद्मनाभ दास को बेटा।
ताकी बहू पार्वती की वार्ता

सो पार्वती श्रीठाकुर जीकी सेवा नीकी भांतिकर
ती और पुरुषोत्तम दास मेहरा इनकों नीकी भांति
सों जानतो जब कन्नोज जातो तब पार्वती के घर उ
तर तो तब किनहेक दिन पाछें पार्वती के हाथ पांव
सूजत है गो तब ते श्री ठाकुर जी की रसोई करत त
था स्नान करत बहुत बहुत ग्लानि आवती तब पु
रुषोत्तम दास महरा कों पार्वती नें पत्र लिख्यो तोंम
लिख्यो जो मेरी बानती श्री गुसांई जी सों कहियो
मेरी देह कों यह प्रकार भयो है तातें मोकों सेवा कर
त पाक करत बहुत ग्लानि आवत है सो मैं कहा क
रूं सो पुरुषोत्तम दास महरा ने पार्वती कों लिखो
पत्र श्री गुसांई जी कों वांचि सुनायो और बानती
कीनी भेट की मोहर ही सो आगें राखी पाछें श्री
गुसांई जी ने पुरुषोत्तम महरा कों आज्ञा दीनी जा
दिन है चारि में कहांगो पाछें दिन द्वै चार बीते तब श्री
गुसांई जी नें पुरुषोत्तम दास महरा कों आज्ञा दी
नी जो पार्वती कों पत्र लिख तामें लिखियो जोतू
श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करियो काहू
बात की ग्लानि मति लाइयो श्री ठाकुर जी तेरो रोग
सब आपही ते दूर करेंगे तब पुरुषोत्तम दास मह
रा ने पार्वती कों पत्र लिख्यो तामें श्री गुसांई जी ने
श्री मुख ते वचन कहे सो लिख पठाये सो वह पत्र
पार्वती पै पहुंचो सो पत्र वांचि के श्री गुसांई जी
की आज्ञा ते सेवा प्रसन्नता सों करन लागी कछू
ग्लानि मन में नहीं लावती पाछें महीना तीन चारि में

हाथ पांच नीके भए तब पार्वती बहुत प्रसन्न भई सो प्रसन्न तासों सेवा करन लागी बहुर श्री गुसाईं कों पत्र लिख्यो भेट पठाई और कह्यो जो महाराज के प्रताप तें नीका भई हो सो पत्र बांचि कें श्री गुसांईजी बहुत प्रसन्न भए सो वह पार्वती बड़ी कृपा पात्र भगवदी हुती प्रभून के प्रमान चलती ता ते श्री गुसांईजी इनके ऊपर सदा प्रसन्न रहते यह वार्ता सब पद्मनाभ दास के कुटुम्ब की भई तातें पद्मनाभ दास बड़े भगवदीय है तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग १॥

वैष्णव ॥६॥ सम्बन्ध ३४॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक पद्मनाभ दास को नाती पार्वती को बेटा रघुनाथ दास ताको वार्ता।

सो रघुनाथ दास बनारस में बहुत शास्त्र पढ़ि कें श्री गोकुल आयो तब श्री गुसांईजी कों दंडौत कीनी सो गुसांईजी बड़ेन की कानि तें इन के ऊपर कृपा करते कथा कहते सो रघुनाथ दास सुनते सोएक दिन परमानन्द सों नीमे इन सों पूछो जो रघुनाथ दास तुम तौ बहुत शास्त्र पढ़े हौ पण्डित हौ आज श्रीगुसांईजी नें कहा कथा कही हुती सो कहौत व रघुनाथ दास ने परमानन्द सों नी सो कह्यो जोतु मतौ सांच पूछत हौ परि इनौ कछु समझत नांही

नव यह वात परमानन्द सोनी ने श्री गुसांईजी के
आगे कही जो महाराज रघुनाथ दास तो कछु
समझत नाहीं पाछें श्री गुसांईजीनें रघुनाथ दास
कों ग्रंथ होय चार पढाए और मार्ग की प्रनालिका
कही पाछें रघुनाथदास समझनलागयो बडो पंडित
भयो सो कित नं क दिन पाछें अपने घर कन्नोज
में आयो तव माता सों कही जो हूंतो न्यारो होयगो
श्री ठाकुरजी की सेवा करगो तव माता नें कही
तो भलेंई तू सेवा करि पाछें न्यारो भयो वाकी।
माता जल भर लावती पार्वती पात्र मांजती श्री
ठाकुरजीकी सेवा नीकी भांति सों करती पर चार
गी सव करती जव राज भोग सरतो तव अपनें घर
अकेली लीटी करि श्री ठाकुरजी कों भोग समर्पि
भोग सराय आप प्रशाद लेती या भांति सों करती
ऐसें करत दिन पांच सात वीते तव अपने सेव्य
श्री ठाकुर जी नें कह्यो जो अरी पार्वती मेरो गरो
खरखरात है अकेली लीटीन नें नातें तू दारि तो
कस्यो करि तव पार्वती ने कह्यो जो महाराज तुम
तो दारि भात सालन सों आरोगत हो तव श्री ठाकुर
जीने कह्यो जो मेंतो तेरो कीयो आरोगत हों पाछें
दार भांत सव सालन करन लागी तातें पार्वती वड़ी
कृपा पात्र भगवदीय हती ये वार्ता सव पद्मनाभदा
स के परिवार की भई नातें वे पद्मनाभ दास श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है
सो इनकी वार्ता ऐसी ऐसी कित नीक है नातें अव

कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१

वैष्णव १ ॥ सम्बन्ध ॥ ३५

श्री श्री आचार्य जी महा प्रभून
की सेवक रजो क्षत्राणी
अडैल में रहती।

ताकी वार्ता

सो व रजो क्षत्राणी नित्य पकवान सामग्री करि श्री आचार्य जी महा प्रभून के लिये ले आवती सो श्री आचार्य जी महा प्रभू आरोगते वाको नित्य नेम हुतो सो एक दिन लक्षमन भट्ट जी को श्राद्ध दिन आयो सो श्री आचार्य महा प्रभून नें ब्राह्मण भोजन कों बुलाए हुते तहां घृत थोरो सो चहियत हुतो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें एक वैष्णव सों कही जो रजो कैसें घृत ले आउ तब वा वैष्णव नें रजो सों कही जो रजो श्री आचार्य जी महा प्रभून नें घृत मंगायो है तब रजो ने वा वैष्णव सों कह्यो जो घृत काहे कों चहियत है तब वा वैष्णव नें कह्यो जो आज श्री लक्षमन भट्ट जी को श्राद्ध दिन है सो ब्राह्मण भोजन कों बुलाए गये हैं सो थोरो घृत र सोई में घट्यो है तातें मंगायो है तब रजो ने कह्यो जो मेरें तो घृत नाहीं है तब वह वैष्णव फिर आयो आय कें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो महाराज रजो कें घृत नाहीं है तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जोन फेरि जा और वीज कें

कहियो जो श्री आचार्य जी महा प्रभून नें घृत
मंगायो है तब वह वैष्णव फिर गयो और रजो
सों कह्यो जो श्री आचार्य जी महा प्रभू खीजत हैं
तबहू रजो ने घृत नाहीं दियो तब वह वैष्णव फिर
आयो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो
महाराज रजो घृत नाहीं देत तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून नें कह्यो जो अब कें फेरि जा और क
हियो जो श्री आचार्य जी महा प्रभू खीजत हैं ता
ते घृत देउ तबहू नाही दियो तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून सों कह्यो जो महा राज रजो घृत नाहीं दे
त तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें और ठौर ते कै
मंगायो तब रात्री कौं रजो पकवान लैकें आई
तब रजो कों देखि क श्री आचार्य जी महा प्रभू पीठ

रजो का पकवान लेकर श्री आचार्य जी महा प्रभू के पास आना और श्री
॥ महा प्रभू का पीठ दे बैठना ॥

है बैठे तब रजो ने कही जो महाराज मेरो अपराध
कहा है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो
जो तें घृत न हुतो तौ सामग्री कहां ते करतो तब
तब रजो ने कह्यो जो हूं लक्षमन भट्ट की बेटी नों
नाहीं मेरे घृत न हुतो ताने न दीनों ताते तुम्हारे घृ
त हुतो सो क्यों न दीनों तब श्री आचार्य जी महाप्र
भून नें कह्यो जो में श्री ठाकुर जी कों घृत क्योंकर
के देउं तब रजो नें कही जो में श्रीठाकुर जी कों
घृत क्योंकर कें देउं तब आप बोले नाहीं तब रजो
नें सामग्री आगें राखी और कही जो राज आरोगो
तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो आज
श्राद्ध दिन है ताते दूसरी वार लेनों नाहीं तब रजो
ने कही जो महाराज तुम्हारे घर कों होय सो मनि
लेउ यह तौ लीयो चाहिये तब रजो के आग्रह ने
श्री आचार्य जी महा प्रभून नें आरोगी रजो श्री आचा
र्य जी महा प्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदीय हुई
ताते इन रजो की वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग १

वैष्णव ८ सम्बन्ध ३६

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक सेठ पुरुषोत्तम दास क्षत्री बनारस में रहत तिन्की ॥ वार्ता ॥

सो सेठ पुरुषोत्तम दास को श्री आचार्य जी महाप्र

न की आज्ञा हुती जो तुम पास कोई नाम लेन आवे
ताकों तुम नाम दीजियो तातें सेठ पुरुषोत्तम दास ना
मदेते और अपने घर श्री मदन मोहन जी की सेवा क
रते परि कबहू विश्वेश्वर नाथ महादेवजी के दर्शन
कों न जाते ऐसें करत बहुत दिन बीते तब एक दिन
विश्वेश्वर नाथ महादेव जाने सेठ पुरुषोत्तम दास सों
कह्यो जो सेठजी तुम हम सों गांव कों नाचो तो गावेंगे
कबहूं हम कों प्रशाद तो दियो करो ऐसें स्वप्न में
कही तब सवारे सेठ पुरुषोत्तम दास उठि सेवा सोंप
हुच कें बाहर आये तब वस्त्र पहर कें बीडा दोय प्र
शादी लेकें इक्का प्रशाद को लेकें विश्वेश्वर नाथ मह

देवजी के दर्शन कों चले तब गांव के लोग आश्च
र्य भए जो सेठ पुरुषोत्तम दास कबहूं दर्शन कों न आ
वते सो आज क्यों आये सो सब लोग साथ आए सो
सेठ पुरुषोत्तम दास ने देवालय में जाय कें विश्वे
र नाथ महादेवजी के आगे बीड़ा दोय धरि प्रणाम के
डवा धरि श्रीकृष्ण स्मरन करि कें उठि चले तब व
े बड़े पंडित ब्राह्मण इनें तिननें सेठ पुरुषोत्तम दास
सों कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम दास दंडोत नमस्कार
कछू न कीनों श्रीकृष्ण स्मरन करि कें उठि चले
सो तो तुम कों उचित नाहीं तब सेठ पुरुषोत्तम
दास ने उन ब्राह्मणान सों कह्यो जो तुम महादेव
जी कों पूछि लीजियों तुम सों महादेव जी कहेंगे
पाछें उन ब्राह्मणान में एक महादेव जी को बड़ो भ
क्त पापाचू भगवदीय इनों नासों महादेव जी ने स्व
में कह्यो जो हमनें इन सों महा प्रसाद मांग्यो हो
सो देन आये हैं हमारो इन को व्यवहार जैसो लौ
कों है ताते तुम इन सों कछू मति कहो पाछें सेठ
पुरुषोत्तम दास बड़े उत्सव को प्रसाद कबहू क
बहूं ले जाते तब एक दिन महादेव जी नें काल
भैरव सों कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम दास वैष्णवन के
घर ते अबेरो सबेरो आवत है ताते तू इन के घर कों
चौकी पहरा नित्य देत रहियो सो काल भैरव नित्य
इन के घर कों चौकी पहरा देतो सो एक दिन सेठ
पुरुषोत्तम दास वैष्णवन के घर ते अबारे आवत
हे सो सेठ पुरुषोत्तम दास घर के द्वार आये तब

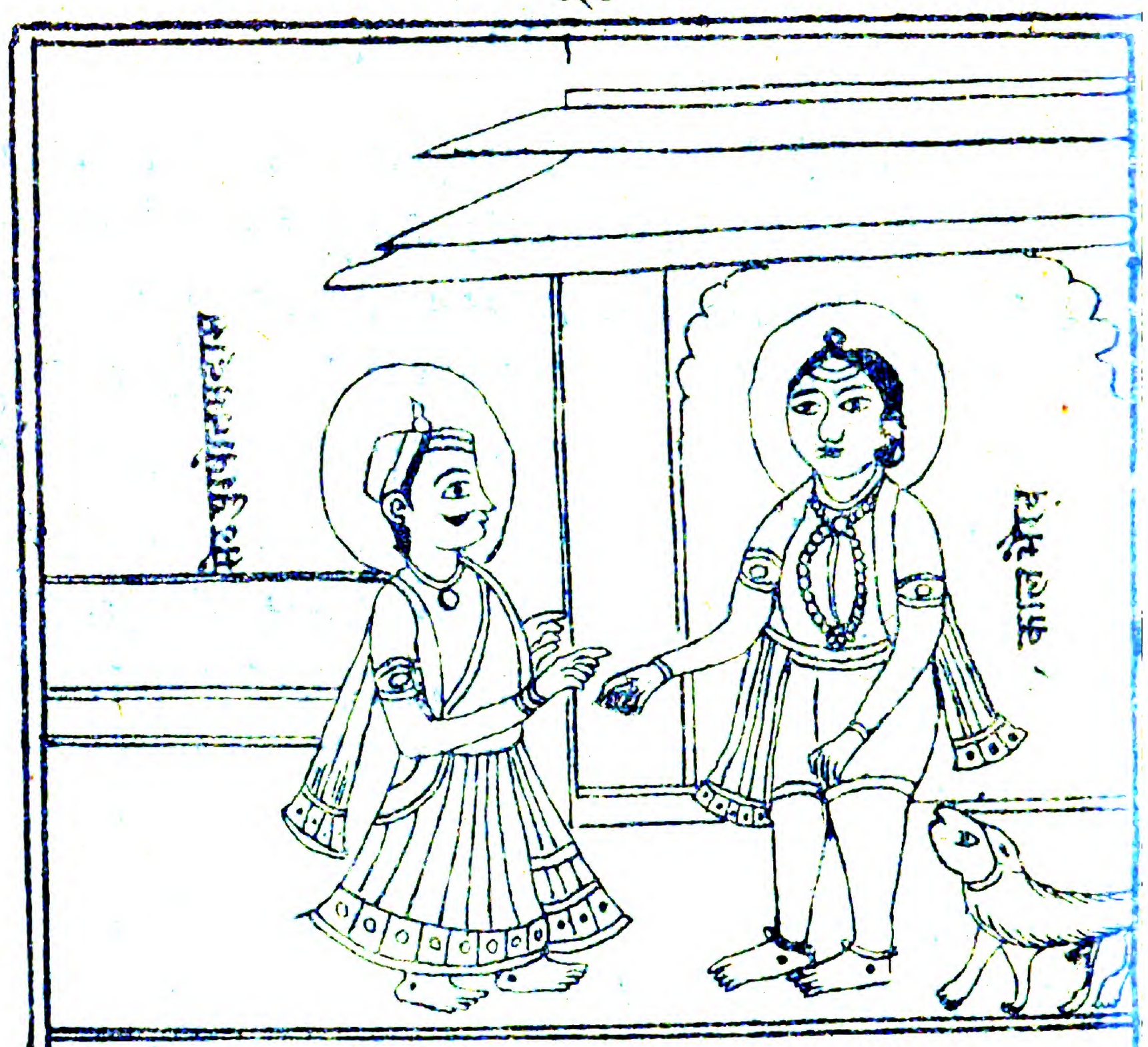

फिर कें देखें तौ काल भैरव एक ठौर ठाडो हैं तब से ठ पुरुषोत्तम दास नें ब्रा सों पूछो जो तू कौन है तब वह बोल्यो जो हूं काल भैरव हों मोकों महादेव जीने आज्ञा दीनी है नाने तुम्हारे घर की चौकी पहरा देन हौं तब सेठ पुरुषोत्तम दास सिवकी दें कें भीतर गए ॥१॥

वार्ता प्रसंग १

बहुर एक दक्षिण देषाकी ब्राह्मण सेवा हुतो सो बडो पंडित महादेव जी को कृपा पात्र हुतो सो ब्रा ब्राह्मण कों महादेव जी को साक्षात दर्शन हो तौ सो वह ब्राह्मण नित्य प्रति महादेव जी के दर्शन करतो तब जल पान करतो एसो महादेव

जी कौ भक्त हुतौ सो एक समें जन्माष्टमी कौ उत्स
व आयौ सो विश्वेश्वर नाथ महादेव जी सेठ पु-
रुषोत्तम दास के घर गये जन्माष्टमी कौ उत्सव
देखन कौं सो वा ब्राह्मण ने जन्माष्टमी के उत्सव
के दिना दर्शन नपायौ और नवमी के दिना दुपहर
लों जब सेठ पुरुषोत्तमदास के घर से महादेव जी
विदा होय के आये तब वा ब्राह्मण ने महादेवजी
कौ दर्शन पायौ तब वा ब्राह्मण नें महादेवजी
सों पूछो जो काल्हि और आज हम दर्शन दुपहर
लों नाहीं पायौ सो काहे तें तब वा ब्राह्मण सोम
हादेव जी नें कह्यौ जो हम काल्हि सेठ पुरुषोत्तम
दास के घर उत्सव देखन गए हे सो अबही सेठ
पुरुषोत्तम दास के घर ते विदा होय के आवत हों
तब वा ब्राह्मण ने कही जो सेठ पुरुषोत्तम दास
कौन है जिन के घर तुम उत्सव देखन कौं जात हौ
तब महादेव जी ने कह्यौ जो बड़े भगवद भक्त हैं
तब वा ब्राह्मण ने कही जो मोहू को भगवद भक्त
करौ तब महादेव जी ने कह्यौ जो सेठ पुरुषोत्तम
दास के पास तू जाय के नाम लै आउ तब वा ब्रा
ह्मण नें कही जो तुमहीं मोकों नाम देउ तब म
देव जी ने कही जो मैंतो तोकौं नाम देउंगो सही
परि मेरो दीयो नाम तोकों फलेगो नाहीं ताते तू
सेठ पुरुषोत्तम दास के पास नाम लै आउ वे तोकों
नाम देयंगे तब वह ब्राह्मण सेठ पुरुषोत्तम दास
के पास नाम लेवे गयो सो जाय के भीतर खबर

कर वाई जो एक ब्राह्मण आयो है तब सेठ पुरुषो
त्तमदास नें कही जो बैठाऐं माथो खाली करन
आयो होयगो तब सेठ पुरुषोत्तम दास सेवा
मो पहुंचि कें बाहर आये तब वा ब्राह्मण ने दंडौत
कीनी तब सेठ पुरुषोत्तम दास नें कही जो ऐसो स
मुचित क्यों करत हो हम सभी तुम ब्राह्मण ऐसें
योंन घटै है तब वा ब्राह्मण ने सेठ पुरुषोत्तमदास
सों कही जो हमकों नाम देउ तब सेठ पुरुषोत्तम
ने कह्यो जो हंतो नाम नाहीं देउंगो बहुरि ब्राह्मण
ने बहुत आग्रह कीनो पारि पुरुषोत्तम दास नें नाम
न दीनो तब वह ब्राह्मण महादेव जी के पास आयो
तब कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम दास नाम नाहीं देत
तब महादेव जीनें कह्यो जो तू फेरि जा हमारो नाम
लीजियो जो मोकों श्री महादेवजीने पठायो है तू
सों महादेव जीनें कह्यो है तब वह ब्राह्मण फेरि से
ठ पुरुषोत्तम दास के पास आयो और कह्यो जो
मोकों महादेव जीनें पठायो है नातें मोकों नाम दे
उ तब सेठ पुरुषो त्तम दास नें वा ब्राह्मण कों नाम
दीयो नाम सुनाय कें साथ जोरि कें श्रीकृष्णस्मरन
कह्यो तब वा ब्राह्मण ने कह्यो जो अब मोकों प्र
नाम क्यों करत हो तब सेठ पुरुषोत्तमदास ने कह्यो
जो अब तुम भगवद भक्त भये मेरे तुम वंदनीय हो
तुम्हारे और हमारे वंदनीय श्री आचार्य जी महा
प्रभू हैं मैंनो श्री आचार्य जी महा प्रभून की कृपातें
नाम दत हौं पाछें वह ब्राह्मण श्री आचार्य जीम

हाप्रभून के पास अंड्यल आयो तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून के पास नाम समर्पणा करवायो पाछें
कितनेक दिन रह कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के
संग पढ़े ॥*

वार्ता प्रसंग ॥२॥

वहुरि एक समय सेठ पुरुषोतम दास बैठे बैठे मंदि
र वस्त्र करते हुते इतने ही में गोपाल दास बेटा श्री
ठाकुर जी कों संन भोग सरायवे कों मन्दिर में न्हाय
कें आयो तब देखें तो सेठ पुरुषोतम दास बैठे
बैठे मन्दिर वस्त्र करत हैं तब गोपाल दास के
मन में आई जो अब तौ सेठजी वृद्ध भए हैं ताते
में सेवा में तत्पर में होउ तौ आछो तब यह बात गो
पाल दास के मन की सेठ पुरुषोतम दास ने जानी
तब कह्यो जो बेटा आगें आउ तब गोपाल दास
जाय कें ठाढ़ें तौ वर्ष बीस तथा पच्चीस के बैठे हैं
तब पुरुषोतम दास नें कह्यो जो बेटा यह भाव
दीयन की मन में न लावनी भगवदीय सदा तरुन
हैं परि अवस्था होय ताकों मान दीयो चाहिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥३॥

वहुर एक समय सेठ पुरुषोतम दास झाड़ खंड
में मदार मधु सूदन ठाकुर हैं सो पर्वत ऊपर
मन्दिर है पर्वत को नाम मंदार पर्वत है ता ऊ
परते मनुष्य गिरे तौ चोट न लगे और अपने स
वे पाप कहि कामना करि गिरे तौ देह छूटे पा

पदूर होंय और जो कामना करी होय सो दूसरे
जन्म में सिद्ध होय वह ऐसो स्थल है तहां एक
समय श्री आचार्य जी महाप्रभू पधारे हते तहां
सेठ पुरुषोत्तम दास और एक ब्राह्मण श्री आ
चार्य जी महाप्रभून को सेवक सोदोउ जने मंदार
मधु सूदन जी के दर्शन कों पर्वत ऊपर चढ़े सो

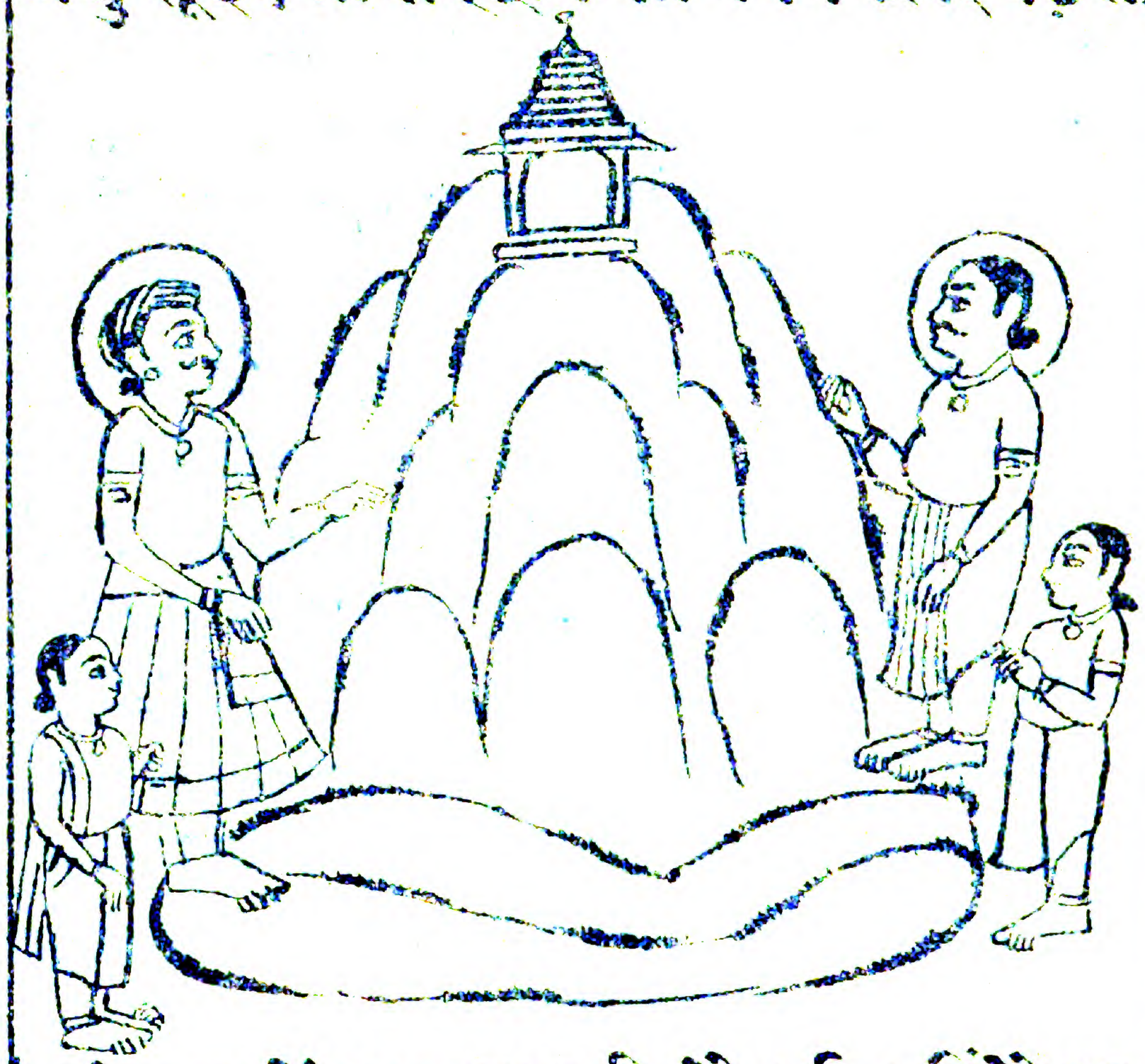

उहां जाय कें मधुसूदन जी को दर्शन कीनो पा
छें रात्रि पर गई ताते उहां हीं सोय रहे पाछें रा
त्रि कों एक सिद्ध आयो वह जाति को ब्राह्मण हु
तो वाने सेठ पुरुषोत्तमदास के साथ के ब्राह्मण
सों पूछो जो तुम कौन हो तब वह बोल्यो हम वै
ष्णव हैं श्री आचार्य जी महा प्रभू के सेवक हैं

तव वा सिद्ध ब्राह्मण ने कह्यो जो मेरे पास एक म
णि है सो तुम लें जाउ तो लेउ तव वा वैष्णव नें क-
ह्यो जो यह मणि कौन काम आवत है तव सिद्ध ब्रा
ह्मण नें कही जो यह मणि ऐसी है जो मांगे सो देत
है तव वा ब्राह्मण नें कही जो मैं तो विरक्त हौं मैं म
णि लेकें कहा करूं परि मेरे साथ एक छत्री है सो
वह गृहस्थ है सो वह सावत है जो वाकौं देउ तौ ज
गाऊ तव वा सिद्ध ब्राह्मण ने कही जो जगावो तव वा
वैष्णव ने सेठ पुरुषोत्तम दास कौं जगायो और कही
जो यह ब्राह्मण मणि सो तुम लेउ तव सेठ पु
रुषोत्तम दास नें कही जो यह मणि कौन काम आ
वत है तव वा मणि कौं प्रभाव कह्यो तव सेठ पुरुषो
त्तम दास नें कह्यो जो यह मणि हमारे काम की
नाहीं ताते हूंतो न लेउंगो तव सिद्ध ब्राह्मण फिर
गयो तव सेठ पुरुषोत्तम दास के संग ब्राह्मण हूतो
ताने सेठ पुरुषोत्तम दास सों कह्यो जो तुम तौ गृह
स्थ हो बहुत कुटुम्बी हो तुम्हारे माथे सेवा है तुम
नें मणि कैसें लीनी तुम को तौ मणि लेनो उचित
हो तव सेठ पुरुषोत्तम दास नें कह्यो जो अरे ब्रा
ह्मण वावरे में श्री ठाकुर जी कौ त्याग श्री आचार्य
जी महा प्रभून कौ आश्रय छांडि कें कहा मणि को
आश्रय करूं तैनें मणि कैसें लीनी तव ब्राह्मण क-
ह्यो जो मैंतो विरक्त हौं मैं मणि लैकें कहा करूं
मोकों जगदीस सेर चून देयगो तव सेठ पुरुषोत्तम
दास नें वा वैष्णव सों कह्यो जो मोकों जगदीस सेर

चूनदेयगो तो मोकों कहा जगदीसदास चूनन देयगो जगदीस कें काहू बात की न्यूनता है ऐसें कहि कें दोउ जनेन नें दो मोहन लीनी वे सेठ पुरुषोतम दास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भावदीय हैं ॥ ३ ॥

॥ वार्ताप्रसंग ४ ॥

बहुरि एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू सेठ पुरुषोतम दास के घर पधारे तब दामोदर दास हरिसानी श्री आचार्यजी महाप्रभून के साथ हैं सो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें सेठ पुरुषोतम दास के सेव्य श्री ठाकुर जी मदन मोहन कों पंचामृत स्नान करवायो और आप पाक करि श्री ठाकुरजी कों भोग समर्प्यो भोग सराय अनोसर करि श्री आचार्यजी महाप्रभून नें आप भोजन कीये तब दामोदर दास हरिसानी नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों पूछो जो राज यह कहा तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो यह मेरी आज्ञातें नाम देतहै तथापि ताकों याकी इतनी मर्य्यादा राखनी चाहिये सो वे सेठ पुरुषोतम दास श्री आचार्यजीमहाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भावदीय हैं तातें इनकी वार्ता को पार ना ही सो अब कहां तांई लिखिये ॥ ४ ॥

॥ वार्ताप्रसंग ५ ॥

वैष्णव ॥ ८ ॥ ॥ सम्बध ४१

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून

के सेवक सेठ पुरुषोतम दा स की बेटी रुकमनी२ ताकी वार्ता॥

सो एक समय श्री गुसांईजी कासी में पधारे हु ते तब तहां सूर्य्य ग्रहण आयो तब श्री गुसांई जी मन करिणिका स्नान कों पधारे तब रुकमनी हू श्री मदन मोहन जी कों स्नान कराय कें आप म नकरिणिका स्नान कों गई श्री गुसांईजी पधारे जान कें तब श्री गुसांईजी सों वैष्णवन नें कह्यो जो म हाराज सेठ पुरुषोतम दास की बेटी रुकमनी आ ई है तब श्री गुसांईजीनें कह्यो जो रुकमनी आगें आउ तब अपने पास बुलाय लीनी तब श्री गुसांई जीने पूछो जो तू कितेक दिन पाछें गंगास्नान कूं आई

है तब रुक्मनी नें कह्यो जो महा राज चौदाम वर्ष पर्यंत पाछें आई हों तब यह सुनि कें श्री गुसांई जी कों हदो भरि आयो और कह्यो जो ऐसो भगवदीय जिन को एक दाणा हू अदकापा नाहीं है जो गंगास्नान को आवें श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भये और रुक्मनी को देखि कें श्री गुसांई जी कहते जो याके श्री ठाकुर जी आवेगा कब होयगो ॥

वार्ता प्रसंग १

बहुर क्षत्री नाग सब कार्तिक मास में गंगास्नान करन तब रुक्मनी नें सेठ पुरुषोत्तमदास सों कह्यो जो तुम आज्ञा करो तो मैहू कार्तिक स्नान करूं तब सेठ पुरुषोत्तमदास ने कह्यो जो भलेंदं स्नान करि जो चाहिये सो लीजिये तब रुक्मनी नें कह्यो जो खांड घृत दिवाय देउ मेरा नौ घर मैंहे तब सेठ पुरुषोत्तमदास नें खांड घृत दिवाय दीयो तब रुक्मनी पहर रात्रि पिछली रहे जब उठे सोनो तब सामग्री करि कें समयराज भोग लों श्री मदन मोहन जी कों समर्पि फिर उत्थापन सों सामग्री करै सो सेन भोग लों समर्पि ऐसे कार्तिक मास में करै और वैशाख में शीतल सामग्री करै श्री ठाकुर जी कों आरोगावे सो प्रशाद वैष्णवन कों लिवावे या भांति सों करे सो एक दिन सेठ पुरुषोत्तमदास नें रुक्मनी सों कही जो रुक्मनी तू स्नान कब करत है तोकों जात कबहू देखियत नाहीं तू कार्तिक कौन वेर न्हाति है तब रुक्मनी ने क-

ह्यौ जो मोकों स्नान सों कहा काम है मैं तौ या भां-
ति सों करत हौं तब यह सुनि कें सेठ पुरुषोत्तमदा
स बहुत प्रसन्न भए श्री गुसांई जी आप श्रीमुख
ते सराहना करते रुक्मनी ऐसी कृपा पात्र भाव
दीय ही ॥

वार्ता प्रसंग २

बहुरि कितेक दिन में रुक्मनी की देह आसक्ति
भई तब रुक्मनी ने कह्यो जो अब यह देह छूटै तो
भलो है श्री ठाकुर जी की सेवा न होय आवै तो य
ह देह कौन काम की है तब कितेक दिन पाछें रु-
क्मनी देह छूटी सो एक वैष्णव नें श्री गुसांई जीसों
कही जो महाराज रुक्मनी नें गङ्गा पाई तब श्री गु-
सांई जी श्री मुख ते कहे जो ऐसें मति कहो जो रु-
क्मनी नें गङ्गा पाई ऐसें कहो रुक्मनी गङ्गा ने पा-
ई वह रुक्मनी श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी
कृपा पात्र भाव दीय ही तातें इनकी वार्ता अनि-
र्वचनीय है सो कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग २।

वैष्णव ॥ ८ ॥ सम्बन्ध ४४

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक सेठ पुरुषोत्तमदा सकौ बेटा गोपालदास ताकी वार्ता ॥

सो गोपालदास सों श्री मदन मोहन जी सानु भा
वहते जो चहिये सो मांगि लेते ऐसें सदैव कृपा क

ते वहुरि गोपाल दास कीर्तन वहुत करते औ
र गोपाल दास की देह आसक्ति भयी तव भगव
दनाम को उच्चारण करते तव श्री मदनमोहन जी
आप हुंकारी देते ऐसी कृपा करते श्री आचार्य
जी महाप्रभून के ग्रंथ सुबोधनी जी श्री भागवत
निवंध और रहस्य ग्रंथ सो सव पाठ करते भग
वद लीला में मग्न रहते सदैव लीला को विचार
करते ऐसें करि कें सर्व काल व्यतीत कीयो॰
पाछें देह छूटी तव श्री गुसांई जीनें सुनी जो गो॰
पालदास की देह छूटी है तव आप श्री मुखते
कही जो गोपालदास की सराहना करी सोवे गो
पालदास ऐसें भागवतीय है सो ये वार्ता सव
सेठ पुरुषोत्तम दास के परिवार की भई तातेइन
की वार्ता को पार नाहीं सो अव कहां तांई लिखि
ये ॥ * ॥ * ॥

वार्ताप्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥११॥ सम्बंध ॥४५

अव श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक रामदास सार
स्वत ब्राह्मण ना॰
की वार्ता है

सोवे रामदास श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भां
ति सों करते अपरस में जल भरते वीड़ा ह अप
रस में राखते या प्रकार सों करते सो रामदास के
पास द्रव्य वहुत हुतो सो कितेक दिन पाछें वह॰
द्रव्य खरच भयो थोरो सो द्रव्य आय रह्यो तव

मन में विचारी जो कछु आवत होय तौ भलो है न
व तादिन ते वह द्रव्य तातीन कौं व्याजू दीनों तव
व्याज वहुत आमन लाग्यो लोभ के लिये तातीन-
कौ व्यौपार कीयो पूरब देश में फटे वस्त्र वुनत हैं
तिन सों ताती कहत हैं तव राम दास जी के सेव्य श्री
ठाकुर जी श्री नवनीत प्रिया जीने कह्यो रामदास
तूतौ हम कौं तातीन पर राखत है तव रामदास जी
यह वात सुनि कें चौंकि उठे और कह्यो जो महारा
ज मोसों चूक परी तव रामदास जी तातीन पर गए
और कह्यो जो मेरो द्रव्य देउ तव उन तातीन नें-
रामदास जी सों पूछो जो यह कारन कहा है सो द्रव्य
मांगत हो तव रामदास जी नें कह्यो जो मैं कहा क-
रूं मो कों तौ लरिका संग काम पस्यो है तातें लरि
का कौ मन राख्यो चाहिये तव तातीन नें कह्यो-
जो हम द्रव्य इक ठौरो करत हैं तव कितेक दिन-
पाछें उन तातीन नें द्रव्य दीयो सो द्रव्य लैकें घर आ
ए फेर वैसें हीं सेवा करन लागे सो सव द्रव्य निवसो
तव वनियांन की दूकान ते उचापति करन लागे त
व ऋणि वहुत है गयो तव उचापति वनियां की
दूकान ते दूर कीनी और वनियां की दूकान ते उ-
चापति करन लागे परि वा वनियां कौ हाट आगे
होय कें निकसते नाहीं और गेल होय के जाते तव
एक दिन वनियांनें राम दास सों कही जो भलो तुम
मेरी दुकान के आगे होय कें नाहीं निकसत हौ और
उचापति नाहीं करत तौ मेरो लेखो करि कें मेरो

पैसा चुकाय देउ तगादा बहुत करौ कीयो तब
श्री ठाकुर जी राम दास जी को स्वरूप धरि के वा
बनिया की हाट ऊपर गए और श्री मुख तें कह्यो
जो लेखो लाउ पैसा चुकाय देउं तब वा बनिया
ने वही देखि लेखो करि कें पैसा चुकाय दीनों रुपें
या एक सो अधिक दाग श्री ठाकुर जी आप श्री ह
स्त सों लिखि आये परि यह बात रामदास जी नें न
जानी तब एक दिन राम दास जी कों बुलाय वे वै
ष्णव आए तब उन वैष्णवन के पाछें पाछें रामदा-
स जी गए सो रामदास जी वा बनियां की दुकान के
आगें होय कें निकसे तब आना कानीं दें कें निकसे
इतने में वा बनियां नें कही जो रामदास जी तुम मे
री हाट ते उचापति नाहीं करत सो तौ मेरो अभा-
ग्य है परि तुमारो मांगे अधिक द्रव्य है सो लो उठा
य लेउ तब रामदास जी ने कह्यो जो उहां ते फिर
आवत हौं तब रामदास नें मन में विचारयो जो
मैंनो याकूं कछु दीयो नाहीं और यह कहत है जो
तुम्हारो अधिक द्रव्य है सो तौ उठाय लेउ यह का
रन कहा है परि जानि यत है जो यह श्री ठाकुर जी
की ओर ते काम भयो है पाछें रामदास जी वैष्ण-
वन के घर ते आये तब वा बनियां की हाट पै जा
य कें लेखो मांगो जो लेख्यो लाउ तब वा बनिया
नें कह्यो जो कहा लेखो देखांगे तब वा बनियां नें
वही दिखाउ तब वा वही में रामदास जी ने श्री ठा
कुर जी के हस्ताक्षर देखे तब चुप करि रहे तब घर

आय रामदास जी नें स्त्री सों कही जो हूं तो घर में
नाहीं रहूंगो चाकरी करूंगो तब सिपाहगीरी कौ
विचार कीयो तब घोड़ा मोल लीयो सब हथियार
बांधन लागो तब जल और बीड़ा अपरस में लेन हे
सो अपरस छूटो बिना अपरस में लेन लागो सो किन
कदिन पाछें रामदास जी अड़ेल आये सो हथिया
र बांधेही जाय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के

दर्शन कीने दंडवत कीनी तब श्री आचार्य जी म
हाप्रभून नें श्री मुख ते धन्य धन्य कह्यो जो राम
दास तू धन्य है तब और वैष्णव पास बैठे हे सो क
हन लागे जो महाराज अब याकों धन्य क्यों कह
तहो अब तो यह अपरसता में नाहीं रहत हे सि-

पाहीन में चाकरी करत है तव श्री आचार्ये जी म
हाप्रभून ने कही जो यह धन्य याते है श्री ठाकुर
जी कों श्रम नाहीं करवावत याकी बराबर काउ
धीरज वेत नाहीं श्री आचार्य जी महाप्रभू आप ता
समें गंगास्नान कों पधारे तव मार्ग में एक खाड़
देख्यो तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो
यह खाड़ अजहू भस्यो नाहीं सो इतनों कहत ही
वैष्णव सव खाड़ भरन लागे वागो पहरें ही तव रा
मदास जीहू एक टोकरा लैकें खाड़ भरन लागे त
व श्री आचार्य जी महा प्रभू स्नान करि कें पधारे
तव नांई खाड़ भर दीनों तव रामदास जी कों देखि
कें श्री महा प्रभू जी वहुत प्रसन्न भए ॥

वार्ता प्रसंग २

और रामदास जी कें कछु संतत न हुती तव
स्त्रीनें रामदास जी सों कह्यो जो तुम और विवाह
करौ तौ तुम्हारे वालक होय तव रामदास जी नें क
ह्यो जो हम को तो वालक की इच्छा नाहीं तव स्त्री
ने कह्यो जो मोकों तो वालक की इच्छा है तव रा
मदास जी नें कह्यो जो तो कों वालक की इच्छा है
तौ हमारे श्री नवनीत प्रिया जी की वाल भाव सों
सेवा करि जैसें वालक कूं खवाइये प्याइये खि
लाइये हित करिये तैसे तुम श्री नवनीत प्रियाजी
कों लडावो तव तेरें वालक होयगो तव रामदास
जी की स्त्री नें श्री नवनीत प्रिया जी की वाल भा
व सों सेवा करी सो या प्रकार सों सेवा करि जो वा

लक भयो है सो वे रामदासजी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं सो इन की वार्ता अब कहां तांई लिखिये ॥

वार्ताप्रसंग २

वैष्णव ॥ १ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू नके सेवक गदा धर दास० सारस्वत ब्राह्मण कंडा में रहते तिनकी वार्ता।

सो गदा धर दास के मांथे श्रीमदन मोहन जीकी सेवा हती सो श्री ठाकुर जी बडे गौर हते सो नित्य

प्रीत जैसो उनके जिजमान के में आवनो तैसो श्री ठाकुर जी कों समर्पते सो एक दिन जिजमान के में कछू आयो नाहीं तब जल ही छान के समर्प्यो परि मन में बहुत खेद भयो छाती में आगि सी उठी ऐसें करत रात्रि पर गई तब एक जिजमान द्वार पै आ य पुकार्यो और कही जो किवाड़ खोलो तब गदा धर दास नें किवाड़ खोले तब वा जिजमान नें एक वागो और चार रुपैया और कछू सामग्री गदाधर दास कों दीये और कह्यो जो आज मेरे पिता को श्रा द्ध दिन हतो ताकी यह दक्षिणा लेउ तब गदाधर दास नें लीनी सो वागा सामग्री घर में धरि कें श्री पवाज़ार में गये सो एक हलवाई मिठाई आछी क रत हुतो ताकी हाट पै गए तब जाय कें वा हलवाइ सों पूछ्यो जो तेरे मिठाई अछी है तब वा हलवाई नें कही जो मिठाई जलेबी अबही कीनी है या मेंते बेची नाहीं तब जलेबी तुलाय मोल दे कें घर आए त ब गदाधर दास आप कें स्नान करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो समया नुसार भोग सराय अनो सर करकें पाछें वैष्णवन कों बुलाय महा प्रशाद सबन कों लिवायो सो अति अलौकिक स्वाद भयो ऐसो जो कछु कह्यो न जाय सो सब महा प्र शाद वैष्णवन कों लिवाय और आप भूखे ही सो य रहे पाछें सवारे उठि माधौ सामग्री स्नाए नवस्ना न करि रसोई करी श्री ठाकुर जी सेवा शृंगार करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो भोग सराय वैष्ण-

व फेर बुलायें जब वैष्णव प्रशाद लेवे कों आगे बैठे तब पूछन लागे जो राघि कों मद्दा प्रशाद ह मनें दीनों सो बहुत स्वाद भयो सो क्यों कीर सम प्यों तब गदाधर दासनें सब प्रकार कह्यो तब स ब वैष्णव बहुत प्रसन्न भए और कह्यो जो गदाध र दास नें सत्य कह्यो ॥

॥ वार्ता प्रसंग १

बहुर एक दिन गदाधर दास नें सब वैष्णव महा प्रसाद कों बुलाए हुते पाछे साक सजन कछु न हुतो तब गदाधर दास नें कही जो गेमो कोउ वै- ष्णव है सो साक लै आवे तब तिन में एक वैष्ण व वेणीदास कों भाई माधोदास सो बड़ो विषयी हुतो ताते वेश्या घर में गारबो हुतो तिन नें कह्यो- जो मैं ले आऊंगो तब गदा धर दास नें कह्यो जो भ लें लै आवो तब माधोदास गयो सो वधुवा की- भाजी लै आयो सो माधो दास नें नीकी भांति सों दोनी रसोई में पाछें रसोई सिद्ध भई तब श्रीठा- कुर जी कों भोग समर्प्यो पाछें भोग सराय अनों सर कर के वैष्णवन कों महा प्रशाद लेन वेठारा पाछें वह भाजी अति स्वाद भई तब गदाधर दास ने माधोदास कों आशीर्वाद दियो जो तू हरि भक्त दृढ़ होयगो पाछें गदा धर दास के आशीर्वाद ते माधोदास भला वैष्णव भयो सो वे गदाधरदास श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे कृपा पात्र भ गवदीय हुते ताते इनकी वार्ता कौ पार नाहीं ताते

इनकी वार्ता अब कहां तांई लिखिये॥

वार्ता प्रसंग १॥

वैष्णव॥८॥ सम्बन्ध॥४८

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक वेणीदास माधौ दास दोऊ भाई ति० न की वार्ता

सो बड़े भाई वेणीदास छोटे भाई माधौदास सो माधोदास वही जो गदाधर दास के घर वधुवा की भाजी लै आयो हो सो माधोदास बड़ो विषयी हतो ता नें घर में वेश्या राखी हती ताने सब वैष्णव माधो दास की निंदा करते सो बात श्री आचार्य जी महा प्रभून नें सुनी जो माधोदास बड़ो विषयी भयो है घर में वेस्या राखी है सो एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभून नें माधौ दास सों पूछो जो क्योरें माधो दास तेनें घर में वेश्या राखी है तब माधौ दास नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो महाराज मेरो मन आसक्त भयो है तासों राखी है तब श्री आचार्य जी महा प्रभू आप चुप कर रहे सो तीन वेर आपने माधो दास सों पूछो तब तीन्यो वेर माधो दास ने योंही कही जो महाराज मेरो मन वासों आशक्ति भयो है तासों राखी है तब वैष्णवन नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कही जो महाराज अब तों तो आप की कानि ही परि अब तो तुम्हारे आगें कहेगो तासों तुमनें तो कछू न कही तब श्री आ

चार्य जी महा प्रभून नें उन वैष्णवन सों कही जो वा
कों मन वासी आसक्त भयो है सो श्री ठाकुर जी कों
फेर तें कितनी वार लागेगी और गदाधर दास नें
वाकों आसीर्वाद दियो है जो ताकों दृढ भक्ति होय
गी सो यह माधो दास है तब कितेक दिन पाछें मा
धोदास की बुद्धि श्री ठाकुर जी ने फेरी तब तौ वानें
वेश्या दूर कीनी पाछें श्री आचार्य जी महा प्रभून
की कृपा ते माधोदास भलो वैष्णव भयो॥

वार्ता प्रसंग १

वहुर कितेक दिन पाछें एक माला मोतीनकी
वहुत सुन्दर वहुत मोल की विकवे कों आई सो दे
ख कें माधोदास नें वड़े भाई वेणी दास सों कह्यो
जो यह माला श्री ठाकुर जी के कंठ लायक है त
व वड़े भाई वेणी दास नें कही जो यह माला कौन
हाई हमारे पास जो है सो सब श्री नवनीत प्रिया
जी कौ है ऐसें कहि कें वात टार दीनी तब माधो
दास नें कही जो अपने घर में है सो सब ठाकुर जी
कौ है तौ माला क्यों न लेउ तब वड़े भाई वेणीदा
स ने कही जो हम गृहस्थ हैं हम को विवाह का
ज सब करनों है ऐसें क्यों वनें तब छोरे भाई मा
धोदास नें कही जो हूं तो न्यारो होउंगो सो न्यारो
भयो द्रव्य सब वांट लीनी सो द्रव्य की वस्तु लैकें
दक्षिण गयो तब वस्तु सब बेची तब व्यवहार क
र कें द्रव्य वहुत उपज्यो तब एक माला मोतीन
की पहिले मोल ले उत्तम मानम लीनी सो माला ले

कें घर कों चले सो आवत वाट में एक वड़ी नदी आई तव नाव में वैठे तव नवनीत प्रिया जी ला ल छड़ी हाथ में लेकर आये और कहो जो नाव डुवाऊं तव माधौदास नें कह्यो जो निजे छातः करि ष्यति: तव श्री ठाकुर जी नें कही जो तू क्यों गयो

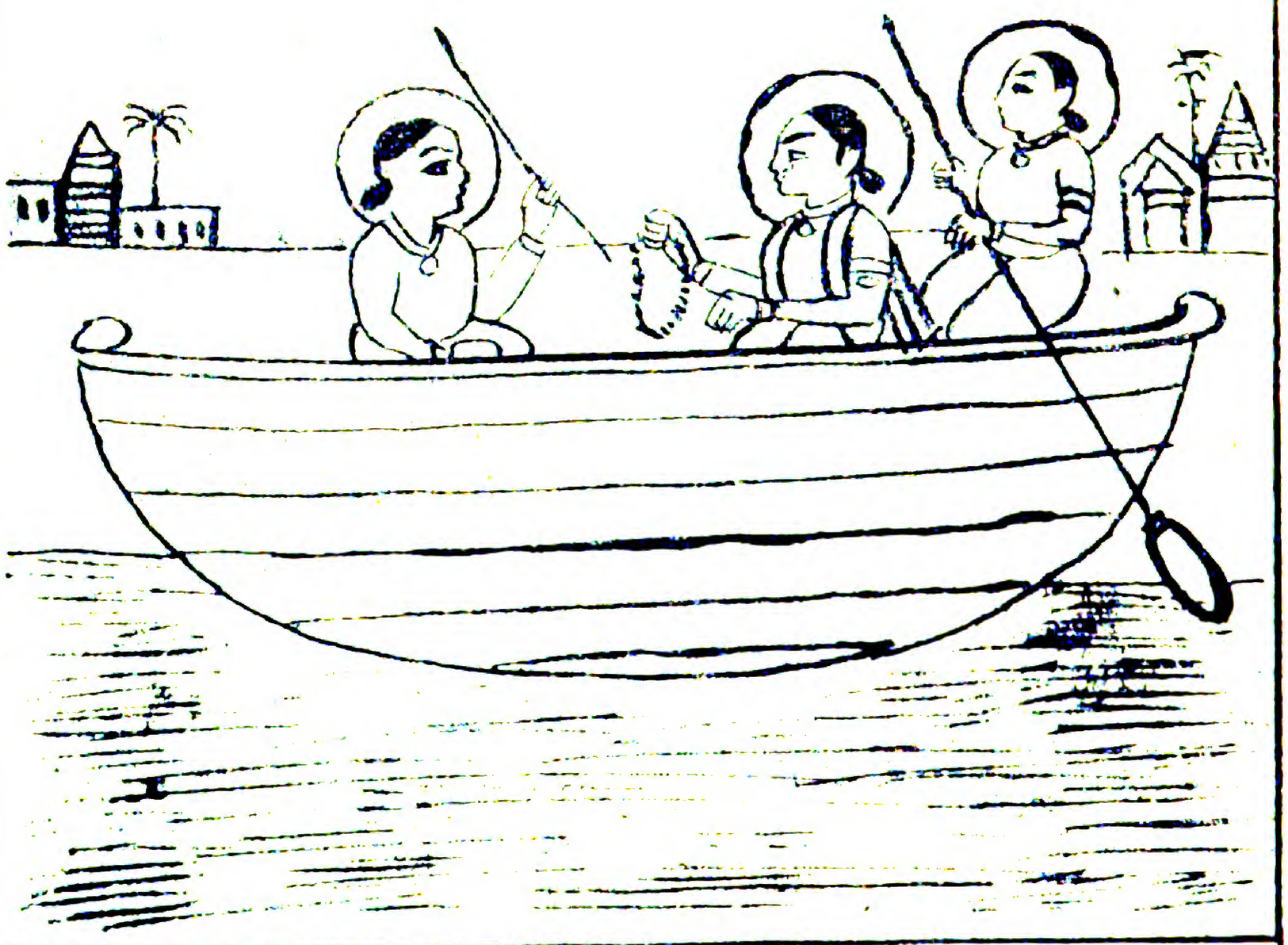

हो तव माधौ दास नें कही जो महा राज में माला लेन गयो हो तव श्री नवनीत प्रिया जी नें कही जो हमारे का माला न हती हमारे माला वड़ेरी हैं तव माधोदास नें कह्यो जो तुम्हारें माला व डेरी हैं पर सेवक कों तो उपाय करनो तव ना वड़वते ते रही जितने मनुष्य नाव में वैठे हुते ते सव हलकल करन लागे और माधोदास कों।

मन प्रसन्न हतो तब मदन के मन में आई जो एव
ड़ महा पुरुष हैं पाछें माधौदास उहांते घर आये
तब श्री आचार्य जी महा प्रभून कों दंडवत कीनी
और हाथ में माला दीनी तब श्री आचार्य जी म-
हा प्रभून नें कही जो नाव डूबते ने कैसें रही तब मा
धौदास ने सब समाचार कहे तब और वैष्णव पा
स बैठे हुते तिननें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों
कही जो वही माधौदास है जो श्री महा प्रभून की
कृपा ते श्री ठाकुर जी ने माधौदास कों मन फेरयो
और भगवद भाव उत्पन्न भयो आप्त ऊपर आ
सक्ति नाहुतो सो श्री ठाकुर जी के ऊपर भई सो
माधौदास ऐसे भगवदीय हैं ताते इन वर्णादा-
स माधौदास की वारता कौ पार नाहीं सो इनकी
वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥२॥ वैष्णव ॥८॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक हरिवंश पाठक सारस्वत ब्राह्मण व-नारस में रहत ॥ तिनकी वार्ता

सो वे हरिवंश पाठक पटना में गये हे सो वहां
के हाकिम सों बहुत मिलाप हतो सो वा हाकिम
अपने मन में कहे जो ए मेरे पास कछु मांगे तो मैं
इन कौं देउं परि वे कछु मांगे नहीं यों करत डोल
उत्सव के दिन है रहे तब अपने सेव्य ठाकुर जी इ

ते तिनने स्वप्न में जताई जो तू मोकों डोल वृक्ष
लावेगा तव हरिवंश पाठक नें मन में विचारयो जो
अव कहा करू तव हरि वंश पाठक हाकिम पास
गये सो जाय कें कही जो आप के पास कछू मांग
न आयो हूं सो मोकों दीयो चाहिये तव राजा ने क
ही जो कहा चाहिये तव हरि वंश पाठक ने कह्यो
जो मोकों दिन दूं में वनारस पहुंचनों है तव हाकि
म नें कह्यो जो भलो तव हाकिम नें घोड़ा और मनु
ष्य साथ दीये पेंडे में डांक चौकी वनाई ऐसे कर
त अपने घर आये पाछें आप मन्दिर में आय कें
डोल सिद्ध कीयो डोल की सामग्री सव सिद्ध क
रकें पाछें श्री ठाकुर जी कों डोल में वैठाये वहत-

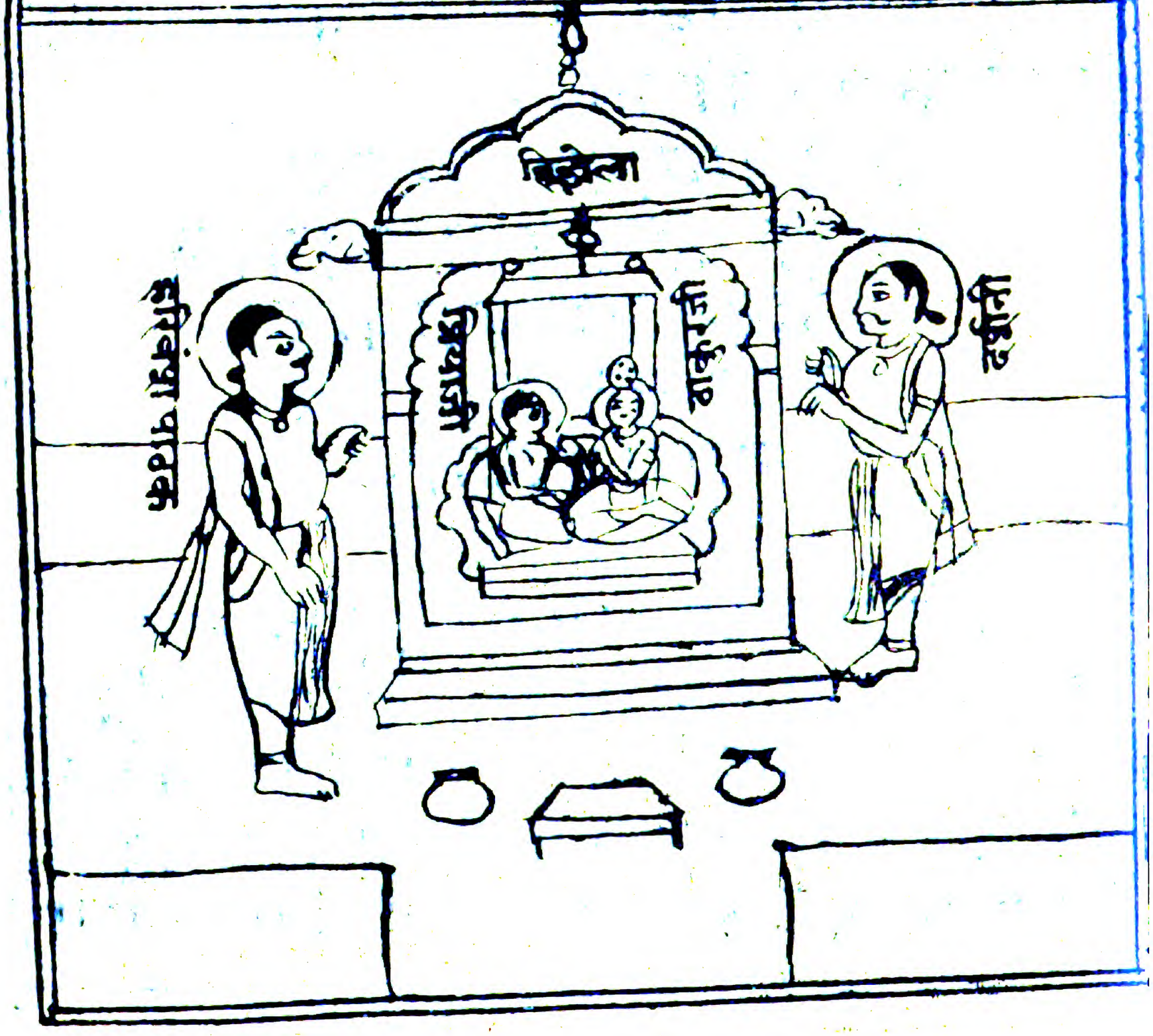

सुख भयो सो थोरे सेदिन पाछें फिर यटना गयेत
व हाकिम ने कही जो तुम को ऐसी कहा जलदी
हुती तव हरि वंश पाठक नें कही जो कछु काम
हुतो परि मन की वात कछु न कही सोवे हरिवं
श पाठक श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे कृ
पापात्र भागवदीय हे नाते इनकी वाती अनिर्वच
नीय है सो कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव १०॥ संवंध ५२

अव श्री आचार्य जी महा प्रभू न के सेवक गोविंद दा स भल्ला ताकी वार्ता

सो गोविंद दास भल्ला की गांठि में द्रव्य वहुत हुतो सो श्री आचार्य महा प्रभून के सेवक भये त व गोविंद दास ने श्री आचार्य जी महा प्रभून सों पूछो जो महा राज मेरी गांठि में द्रव्य है सो मैं क हा करूं तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो श्री ठाकुर जी की सेवा करि तव गोविंद दास ने कह्यो जो महाराज सेवा कैसें करूं स्त्री अनु कूल नाहीं तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नैं क ह्यो जो तू स्त्री को त्याग करि तव गोविंद दास ने स्त्री को त्याग कीयो पाछें कह्यो जो महा राज द्र व्य को कहा करूं तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो अवद्रव्य को चार विभाग करि तव गोविंद दास नें द्रव्य के चार वट कीये तव फेरि क ह्यो जो महाराज कहा आज्ञा है तव श्री आचार्य

जी महा प्रभून ने कह्यो जो विभाग तो श्री नाथ जी
कों समर्पि और एक विभाग अपनी स्त्री कों दे
और एक विभाग सेवा के लिये तू राखि तब गोविं
द दास नें कही जो महा राज कछू आप अंगीकार
करिये तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो
जो भलो एक विभाग हमें दे तब सब विभाग जहां
के तहां देकें अपने घर को द्रव्य लेकें आपु महा
वन आय रहे सो महा प्रसाद वैष्णवन कों लिवा
वते वैष्णव न मिले तौ गायन कों खवावते तामें
ते आप रंचक हून लेते आप न्यारी रीटी करि
भोग समर्पि के लेते ऐसी भांति सों सेवा करते
सो सब द्रव्य निवट्यो तब श्री गोवर्द्धन नाथ जी
की सेवा में आय रहे तब श्री गोवर्द्धन नाथजी
की परि चारणी करते रसोई की टहल सब कर
ते दोउ वार के पात्र मांजते और रात्रि इढ़ तथा
सवा पहर पाछली रहती.. तब उठते सो गागरि
तहां ते लेकें चलते सो मथुरा में विश्रांत घाट पै
स्नान करि कें श्री यमुना जल की गागरि भरि कें
चलते सो राज भोग पहिले आय पहुंचते बहारि
पाय मांजि रसोई पानि अपनी सब सेवा सों प
हुंच कें नीचे आवते पाछिं तिलक पोछि माला
उतार गांठि बांधि कें आस पास के गामन तें भि
क्षा मांगि लावते सो सेर चार पांच की आहार क
रते सो आहार माफ़िक जुर तौ तब आवतौ तब
आप पास रीटी करि श्री नाथ जी की ध्वजा कें

सन्मुख दिखाय तामें चरणोदक मिलाय प्रसाद ले
ते ऐसें निर्वाह करते तव ऐसी भांति करत बहुत दि
न बीते परि यह बात श्रीनाथ जी कों न भावे तव श्री
नाथ जीनें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो
तुम्हारो एक सेवक मोकों बहुत दुख: देतहै तव श्री
आचार्य जी महाप्रभू उदेल नेचले सो आगरे में
आए तव तहां के वैष्णव सों श्री आचार्य जी महा
प्रभून नें पूछो जो श्री ठाकुर जी किन रुठाए हैं तव
उन वैष्णवन नें कही जो महाराज हम तो कछू जा
नत नाहीं तव वहां ते श्री आचार्य जी महाप्रभू म
थुरा पधारे तव मथुरा के वैष्णवन सों श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें पूछो जो श्री ठाकुर जी किन-
रुठाए हैं तव तहां के वैष्णवन नें कह्यो जो महा
राज हम तो कछू समझत नाहीं तव श्री आचार्य
जी महाप्रभू उहांते श्री जीद्वार पधारे तव श्रीनाथ
जी के दोऊ कपोल हाथन सों छुई के कह्यो जो-
बाबा अनमने कैसें हो तव कही जो तुम्हारो से
वक मोकों बहुत खिजावत है तव श्री आचा-
र्य जी महाप्रभूननें सब सेवकन सों पूछो जो तुम
कहा कहा सेवा करत हो और कहा प्रसाद लेतहो
तव सबने अपनी अपनी सेवा कही और प्रसाद
लेवे को प्रकार कह्यो पाछें गोविंद दास सों पूछो
जो तू कहा सेवा करत है तव जो सेवा करत हतो
सो सब कही और प्रसाद लेवे को प्रकार कह्यो
सो सब श्री आचार्य जी महाप्रभूनें सुनो तव अ-

यने मन में जानी जो इन ठठाए हैं तव श्री आचार्य
जी महा प्रभून नें गोविंद दास भय्या सों कही जो
तुम श्री ठाकुर जी की रसोई में प्रसाद लेउ तव गो
विंद दास नें कह्यो देव अंस कैसे लेउ तव श्री आ
चार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो तू हमारी रसोई
में प्रशाद लै तव गोविंद दास ने कह्यो गुरु अंस
कैसें लेउ तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो
जो तू सेवा मति करे तव गोविंददास सब्बी अहंकार
सों सेवा छोड़ि कें मथुरा गए सो केसोराय जी
की सेवा को इजारो पठान के पास ते लीयो तव
सेवा करन लागो सो एक वार श्री केसोराय जी
की सिज्या निवार ते वनाई सो सिज्या वहुत अ
द्भुत भई तव श्री केसो राय जी वा सिज्या के ऊप
र पौढन लागे तव तैसी ही निवार वा गाम के हा
किम नें वुनवाई परि वह निवार वैसी न भई तव
वा कारीगर नें कही जो वह निवार तो श्री ठाकुर
जी की है तव हाकिम नें कही जो वह निवार मैं
देखूंगो पाछें हाकिम श्री ठाकुर जी कें दिवाले
में जाय के सिज्या ऊपर चढ़ि वैठ्यो सो गोविंद
दास नें सुनी तव गोविंददास नें आय कें गुस्सी लै
कें हाकिम को गारी दीनी जो तू कौन है सो हमारे
श्री ठाकुर जी की सिज्या ऊपर वैठ्यो है अैसें वा
हाकिम कौं ठौर मार्यो तव हाकिम के मनुष्यन
में गोविंददास को ठौर मार्यो सो यह वात श्री आ
चार्य जी महा प्रभून के आगे काहू वैष्णवनें जाय

कही और कहोजो ऐसी गति वैष्णव को क्यों व्
झिये तव श्री आचार्य जी महा प्रभून ने कह्यो जोया
के परलोक में तो कछु हानि नाहीं परि इन मेरी आ
ज्ञा न मानी तासों याकी देह या भांति सों छूटीहै
यह गोविंद दास पहिले जन्म में श्री नंदरायजी को
भेंसा हुतो याने माटी पानी वहत दोयो सो वे गोवि
द दास भल्ला श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे
कृपा पात्र भागवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कौपार
नाहीं सो कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग १ ॥

वैष्णव ॥११॥ सवन्द्य ॥५३

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून की सेवक अम्मा क्षत्राणी जो। कड़ेमें रहती तिन की वार्ता

सो अम्मा के दोय बेटा हुते सो दोऊ परम वैष्णव हु
ते आप वैष्णव हुती और वांके लरिका वासों अ
म्मा कहते और श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भां
ति सों करती सो वाके सेव्य ठाकुर जी श्री बालकृ
ष्ण जी वासों अम्मा कहते सो कितेक दिन पाछेए
क बेटा वाको मर गयो तब श्री ठाकुर जी की रसो
ई करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्पे समयानुसार
भोग सराय पाछे रावन लागी तब अम्मा कों रावन
देखि कें श्री ठाकुर जी खेद पावन लगे श्री ठाकुर
जी कहैं अम्मा तू रोवे मति परि वह रावन ते रहेनाहीं

ऐसें करत वाकौ दूसरोहू बेटा मरगयो तब तौ
घहुत रोमन लागी तब श्री ठाकुर जी वाकौरो
वेते सों राखें और कहें अम्या तू मति रोवें तब
अम्या रोवन ते रहे नाहीं तब श्री ठाकुर जीने श्री
गुसांई जी सों कह्यो जो अम्या रोवति है सो मैं व
हुत खेद पावत हौं तब श्री गुसांई जी अम्या के
घर पधारे और कह्यो जो अम्या तू मति रोवे श्री
ठाकुर जी खेद पावत हैं तब रोवन ते रही और
अम्या सेवा को सब साज करि कें पाछें स्नान करि
कें पाछें मन्दिर में जाय कें दोऊ हाथ सों सोधों लगा
य कें श्री ठाकुर जी कें लगावे या भांति सों सेवा
आछी तरह करती ॥

वार्ता प्रसंग १

बहुर एक दिन दूध कौ कटोरा श्री ठाकुरजी
के आगे धरि राखो हुतो ता समय श्री गुसांई जी
अम्या के घर पधारे मन्दिर कौ टेरा सरकाय कें
दर्शन करन लागे तब श्री गुसांई जी देखें तौ ठाकुर
जी दूध पीते हैं तब श्री गुसांई जी देखि कें पाछें फि
र आये तब अम्या नें कही जो बाबा पाछें क्यों फि
र आए तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जो श्री ठाकुर जी
दूध पावत हैं तब अम्या नें कही जो श्री ठाकुर जी
तौ लरिका हैं तुम कहा जानत नाहीं तब श्री गुसांई
जी दर्शन करि कें पाछें फिरे और अम्या सों श्री गु
सांई जीनें कह्यो जो यह दूध हमारे घर पठायदी
जियो तब अम्या नें कह्यो जो राज आपही तौ दी

श्रीठाकुरजी

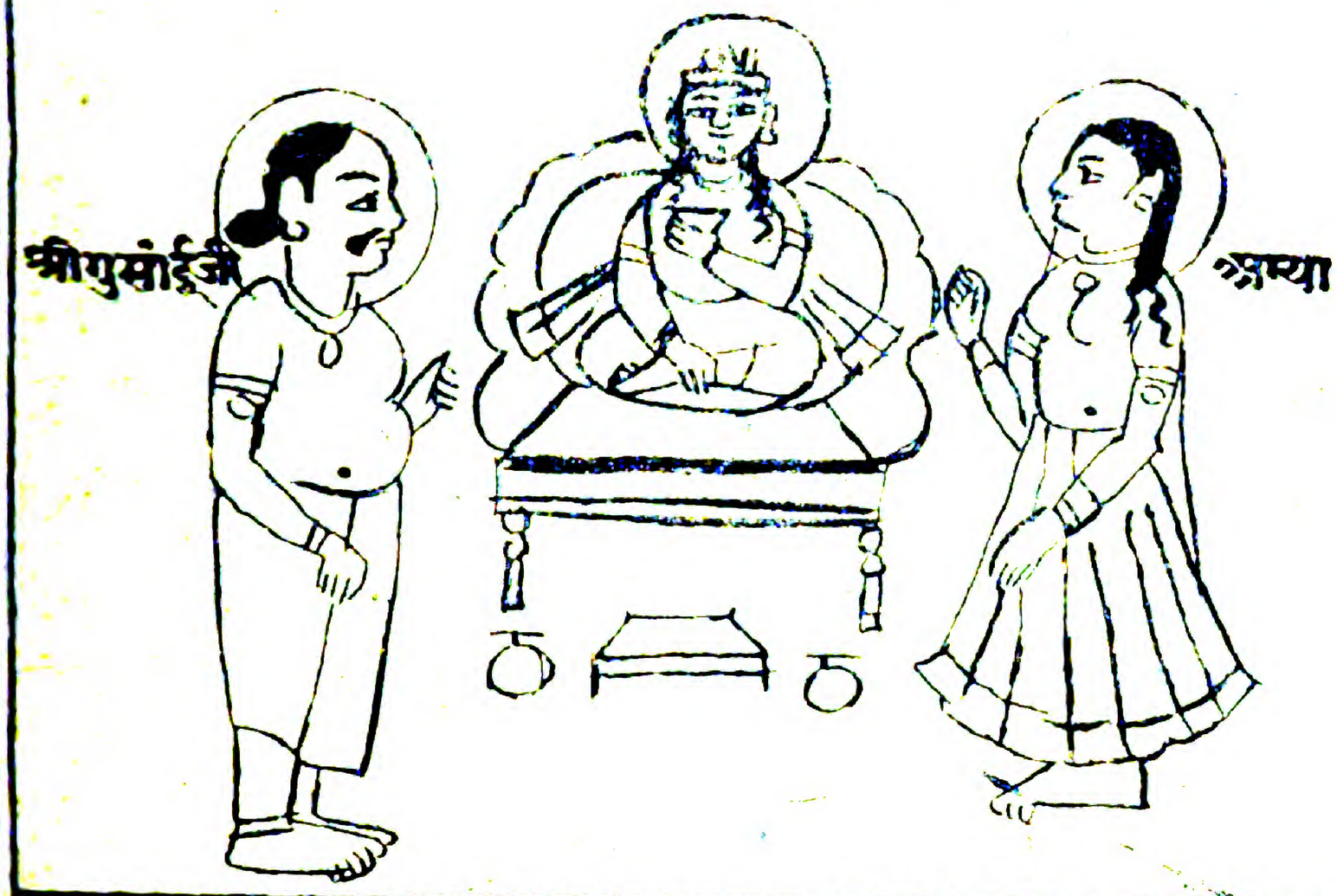

रोगन वारे भावे तो इहां आरोगो भावे उहां आरो
गो पाछें श्री गुसांई जी आप तो घर पधारे तब
अम्या नें वह दूध श्री गुसांई जी के घर पठायदी
यो सो अम्या सों श्री ठाकुर जी ऐसें सानु भाव-
हुते प्रत्यक्ष वार्ता करते जो वस्तु चहिये सो मां
गि लेते सो अम्या श्री आचार्य जी महाप्रभून की-
ऐसी कृपा पात्र भावदीय ही ताते इनकी वार्ता
को पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग २

वैष्णव ॥१२॥ सम्बन्ध ५४

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक गज्जन धावन

दासी आगरे की वा।
मीतिन्की वार्ता
सो गज्जन धावन श्री नवनीत प्रिया जी की से
वा नीकी भांति सों करते श्री ठाकुर जी सानु भाव
हुते गज्जन के साथ श्री नवनीत प्रिया जी खेलते
गज्जन कों कबहूं गाय करते कबहूं वक्षरा करते
तब गाय को मुख अपने पीताम्बर सों पोंछ ते तब
वक्षरा करते तब पकर राखते चलन न देते और
जब घोरा करते तब पीठ ऊपर असवारी करते
जब हाथी करते तब ग्रीवा ऊपर असवारी करते

श्री ठाकुर जी का गज्जन धावन को गाय करना॥

ऐसें करत गज्जन के घटरु घिसि गये ऐसी कृपा
श्री नवनीत प्रिया जी गज्जन धावन के ऊपर ऐ

सी करने भोग सामिग्री जो चहिये सो मांगि लेनें श्रै-
सी कितनीक वार्ता हैं सो कहां नांई लिखिये श्रोर-
एक दिन श्री नवनीत प्रिया जी ने गज्जन धावन सों-
कही जो मोकों श्री गुसांई जी श्री आचार्य जी महा-
प्रभून के घर पधराय ना समय श्री आचार्य जी महा-
प्रभू गोकुल मेंहते ताहां गज्जन आय कें श्री आचा-
र्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो महाराज श्री नवनीत
प्रिया जी की ऐसी आज्ञा भई है जो मोकूं श्री आ-
चार्य जी महाप्रभून के पास पधराय तव श्री आचा-
र्य जी महाप्रभून नें कही जो भलो पधराय तव ग-
ज्जन धावन नें श्री नवनीत प्रिया जी श्री आचार्यजी
महाप्रभून के मन्दिर में पधराये तव श्री आचार्य जी
महाप्रभून नें जैसो प्रस्ताव वन्यो तैसें पधराय भोग
समर्प्यो पाछें रात्रि कों आप वहुत सोंधो लगाय कें
श्री नवनीत प्रिया जी कों अपनी सिज्या ऊपर ले
पोढ़े दूसरे दिन नई सिज्या करवाई ता ऊपर पोढ़े
परि वह सिज्या छोटी भई तव श्री नवनीत प्रिया
जी नें कह्यो जो हूं तो या सिज्या ऊपर न पोढ़ूंगो तव
श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो ऐसे कैसें
वनें तव श्री नवनीत प्रिया जी नें कह्यो जो कछू वाध
क नाहीं है तव श्री आचार्य जी महाप्रभू आप सों-
धों लगाय कें पास ही ले पोढ़े पाछें दूसरे दिन-
सिज्या वड़ी करवाई ता पर पोढ़ाए तव पोढ़े ता
पाछें थोड़े से दिन रहिकें श्री आचार्यजी महाप्रभू श्री
गोकुल तें अड़ैल कों पधारे तव गज्जन हू साथ ग

यो गज्जन धावन विना श्री नवनीत प्रिया जी एक क्षण हूं न रहते ऐसें हीं नवनीत प्रिया विना गज्जन एक क्षण न रहते तब एकदिन श्री नवनीत प्रिया जी के लिये श्री अक्का जी ने गज्जन धावन को पान लेवे पठायो कह्यो जो पान लै आवो तब गज्जन ऐसें तो कह न सक्यो जो श्री नवनीत प्रिया जी मोसों हित हैं सो मैं कैसें जाऊं ताते अन बोल्यो पान लेन को उठि चल्यो सो थोरी सी दूर गयो इतनें में ज्वर चढ़ आयो सो उहीं ही पड़ि रह्यो और इहां श्री अक्का जी ने श्री नवनीत प्रिया कों भोग समर्प्यो तब अक्का जी सों नवनीत प्रिया जीनें कह्यो जो गज्जन कों बुलावो मेरो गज्जन आवैगो तब भोजन करूंगो तब श्री अक्काजीनें मनुष्य होय बुलावन कों पठाये तब वे मनुष्य दे खेंतो गज्जन थोरी सी दूर पै परयो है ज्वर चढ़ र होरे मनुष्यन्तहां ते बुलाय ल्याये तब गज्जन आप स्नान करि मन्दिर में गयो तब तत्काल ज्वर उतर गयो तब गज्जन नें श्री नवनीत प्रिया जी सों कह्यो जो बाबा भोजन क्यों नाहीं करत अब भोजन करो तब भोजन श्री नवनीत प्रिया जीनें कीयो गज्जन धावन सों श्री नवनीत प्रिया जी ऐसे मानुभावहु ते श्री नवनीत प्रिया जी ने एक क्षण न्यारो भयो जो तत्काल ज्वर चढ़ आयो और जब निकट आयो तब तत्काल ..... ज्वर उतर गयो तातें गज्जन धावन श्री नवनीत प्रिया जी के सदा

पास रहते सोऊ गज्जन धावन श्री आचार्यजी महा
प्रभून के ऐसे कृपा पात्र भावदीय है नाते इनकी
वार्ता को पार नाहीं सो कहां तांई लिखिये ॥ +

वार्ता प्रसंग १ ॥

वैष्णव १३ सम्बन्ध ५५

अब श्री आचार्यजी महा प्रभू
न के सेवक नारायण दास
ब्रह्मचारी सारस्वत ब्रा
ह्मण महावन मेंर
हते तिन्की
॥ वार्ता ॥

सो नारायण दास के सेव्य श्री ठाकुर जी श्री गो
कुलचन्द्रमा जी सों नारायण दास श्री गोकुल
चद्रमा जी की नीका भांति सों सेवा करते और गा
यन कों घास खवावते सो धोय पोंछि के खवा
वते ताको तात्पर्य्य यह जो श्री ठाकुर जी दूध
आरोगत हैं जो मति दूध में रज आवै ऐसें करते
और श्री आचार्य जी महा प्रभू जब श्री गोकुल
पधारते तब नित्य प्रातः काल श्री गोकुल तें म
हाबन पधारते श्री गोकुलचन्द्रमा जी की सेवा
करिवे कों सो सेवा कीर भोग समर्पि कें पाछें
श्री गोकुल पधार ते और नारायण दास जहां
हाथ पांव धोयवे कौ वरहे में जाते जा ठौर ते मां
टी खोदते ता ठौर द्रव्य निकसतो ता ऊपर मांटी

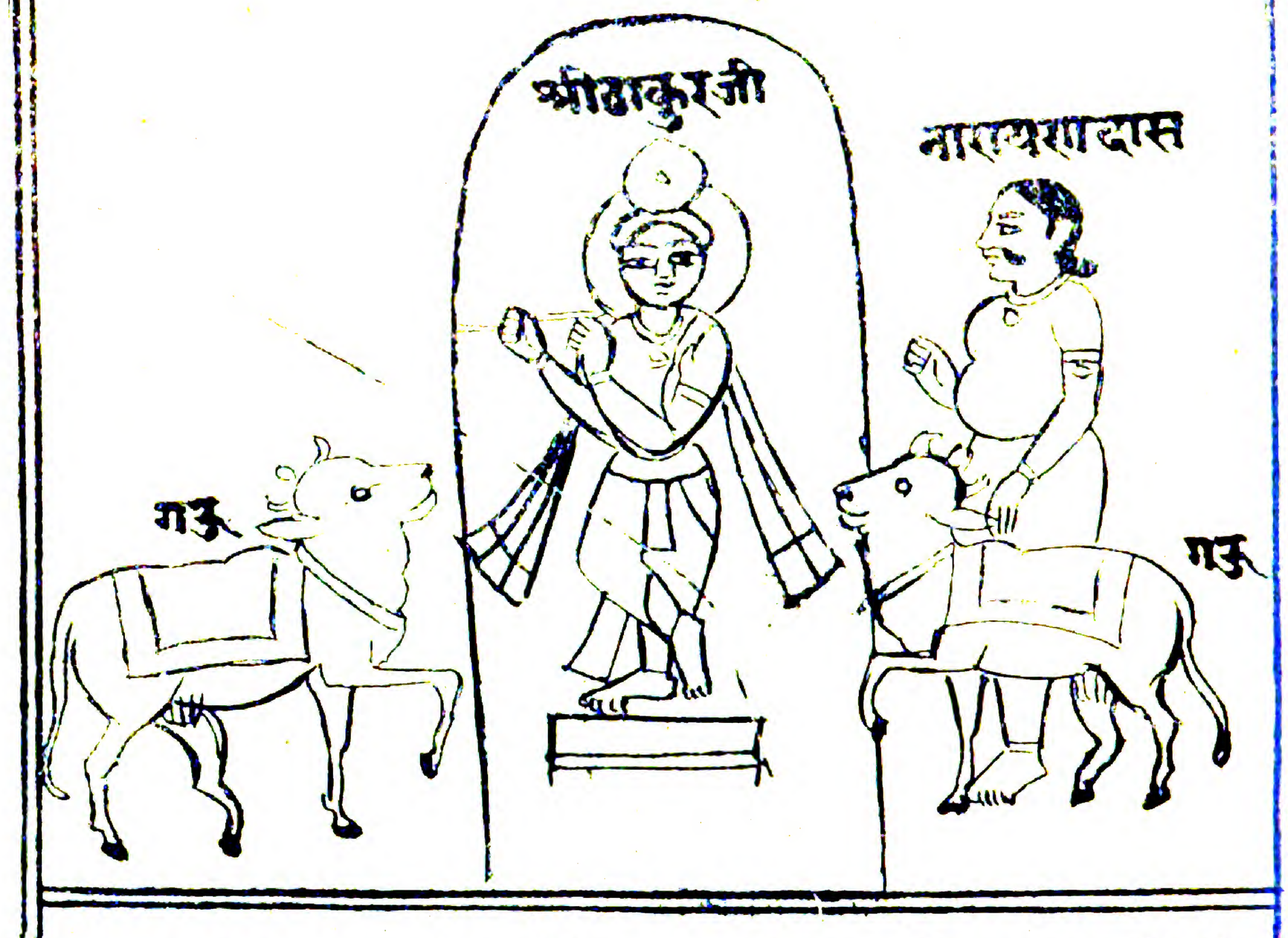

डारि उठि आवते परि द्रव्य कों स्वाधीन करते सो
नारायण दास ऐसे त्यागी हुते सो नारायणदा
स एक दिन सोवत हुतो तहां खाट के आसपास
द्रव्य के ढेर भये हुते तब नारायणदास देखे तो ख
ट के आस पास द्रव्य के ढेर भये हैं तब नारायण
दास ने भतीजी सों कही जो बेटी वेगि उठि ....
घर में बिगार बहुत भयो है बुहारि कें कूरो सब
बाहर डारि आउ तब नारायणदास तो बाहेमें
देह कृत को गये पाछें भतीजीनें सोई कीयो स
ब बुहार कें कूडे की नांई बाहर डार दीनों जो
सब लीप डारी पाछें नारायणदास स्नान करि
मन्दिर में गये तब सेवा सिंगार सब करि कें श्री

ठाकुर जी के सामेंहे देखें सो श्री ठाकुर जीनें नारायण दास कों अति सुन्दर दर्पान दीनो तब अति प्रसन्न श्री ठाकुर जी कों देखि कें नारायण दासनें कह्यो जो महाराज यह घटा काहे कों उनहीं हैं न जानें कहां बरसेंगी पाछें आपही कह्यो जो यह घटा श्री आचार्य जी महा प्रभून कों सरवस्व हैं उहां बरसेंगी पाछें नारायण दास श्री गोकुलचन्द्रमा जी कों राज भोग समर्पि कें बाहर आय बैठे तब हदो भरि आयो जो श्री ठाकुर जी कौन भांति सों आरोगत हैं ऐसो विचार मन में आए तब भतीजी ने कही जो श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक जहां भोग समर्पित हैं सो श्री आचार्य जी महा प्रभून की कानितें आरोगत हैं सो तुमतौ श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक परम कृपा पात्र भागवदीय हो ताते तुम्हारो समर्प्यो कों न आरोगेंगे तुम सन्देह कों करत हो तब नारायण दास नें कह्यो जो बेटी आरोगें जब जानियें तब कोई वैष्णव अपने घर आय अचानक महा प्रसाद लेय तब जानियें जो श्री ठाकुर जी आरोगे होंयगे वैष्णव ऊपर नारायण दास को ऐसो भाव हतो ॥१॥

वार्ता प्रसंग १

बहुरि एक दिन नारायण दास श्री गोकुलचंद्रमा जी कों शृंगार करि रसोई में गये तहां शृंगार भोग कों सिद्ध करि कें सरायवे कों बार धरयो इतने में एक वैष्णव नें नारायण दास के पास आय कें वधाई दीनी जो श्री आचार्य जी महा प्रभू गोकुल ने पधा

रत हैं सो नारायण दास सुनत ही तानी खीर कों दूध
गमें मेलि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्पि उतावले
श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आय तव
आय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कर
कें दंडवत कीनी सो श्री आचार्य महाप्रभून के
चरणारविंद ऊपर माथो मेलि रह्यो तव नारायण दा
स कों माथो पकरि आप श्री हस्त सों उठायो और
पूछो जो श्री गोकुलचन्द्रमा जी के यहां कहा समय
है तव नारायण दास नें कही जो महाराज अवहीं
सिंगार भोग समर्पि कें आयो हूं सो सुनि कें श्री
आचार्य जी महाप्रभू तत्काल पधारे तव जानहीं
स्नान करि कें मन्दिर में हाथ धोय आचमन की
झारी हाथ में लेकें भोग सराय वे कों मन्दिर में प
धारे तव भीतर जाय कें देखें तो श्री गोकुलचंद्र
मा जी के श्री हस्त खीर में भरे हैं और श्री हस्त कम
ल खेंचि रहे हैं तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री
गोकुलचन्द्रमा जी सों कही जो महाराज श्री हस्त
कों क्यों खेंचि रहे हो तव गोकुलचन्द्रमा जी नें क
ही जो तुम कों आये जानि के मोकों नारायणदा
स तानी खीर समर्पि कें तुमारे पास गयो सो खीर
मेरे हाथ सों तानी लागी सो मेनें थोरी सी चाट के
हाथ झटके सो सब मन्दिर में छींट लागीं हैं और
मेरे हाथ और मुख राते भए हैं सो श्री गोकुलच
न्द्रमा जी के हाथ और मुख अजहूं लाल हैं पाछें
श्री आचार्य जी महाप्रभूननें खीर पंखा सों सीरी

करि भोग समर्पि कें बाहर आये तब नारायणदा
स सों खीजे और कह्यो जो तेनें श्रीठाकुर जी कों त
नीर्वीर समर्पी तब नारायणदास नें श्री आचार्य
जी महा प्रभून सों बीनती कीनी जो मेंराज कोप धा
रेजानि उताव लो राज पाम आयो तब श्री आचार्य
जी महा प्रभून नें कही जो आज पीछें ऐसो काम
मति करियो पाछें समय भयो तब श्री आचार्य
जी महा प्रभून नें भोग सरायो तब श्री गोकुल च
द्रमा जी नें श्री आचार्य जी महा प्रभून के दोउ श्री
हस्त पकरि कें कह्यो जो तुम बीर महा प्रसाद लेउ
तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो महा
राज जानि व्यवहार को कठिन है तब श्री गोकुल

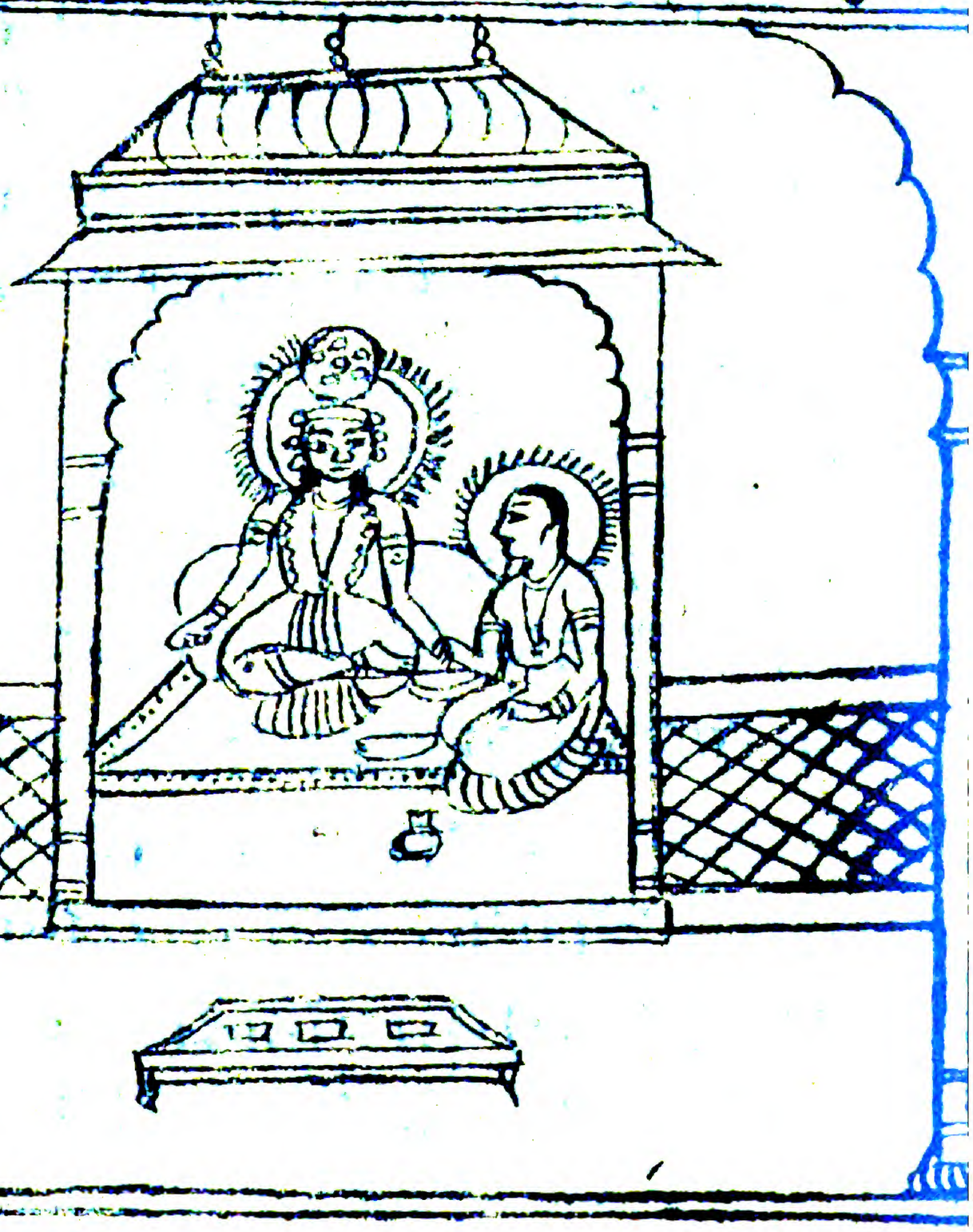

चन्द्रमाजीनें कह्यो जो यह मेरी आज्ञा है तातेनुम
कछु विचार मति करौ रवीर को महा प्रसाद लेउ-
तब श्री गोकुलचंद्रमाजीनें रवीर को महाप्रसाद हो
मो अपने आगेही श्री आचार्य जी महा प्रभून कों
लिवायो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें लीनो-
तादिन ते रवीर अनसखड़ी में होत है नारायणदा
स सों श्री गोकुलचन्द्रमा जी ऐसी भांति सेवा कर
वावते वे नारायणदास ऐसे भागवदीय है ताते श्री गो
कुलचन्द्रमा जी ऐसी कृपा करते ॥

वार्ता प्रसंग ॥२॥

वहुरि कितने क दिन पाछे नारायण दास की देह
थकी सो वहुत आशंकि भई तब एक दिन श्री गो
कुलचन्द्रमाजीने नारायणदास सों कह्यो जो नारा
यन दास तू कछु मांगि तब नारायन दास ने कही जो
महाराज हूं यह मागत हूं जो तुम श्री गुसांई जी के
घर पधार सेवा करवावो नारायन दास के मन में यह
जो श्री ठाकुर जी और कहूं सुख न मानेंगे सेवा आ
छी भांति सों न होयगी सो नारायणदास नें अंत समें
श्री ठाकुर जी के पास यह मांग्यो पाछे कितनेक दि
न में नारायणदास की देह छूटी तब श्री गोकुल-
चन्द्रमा जीने कितेक दिन तांई कृष्णदास स्वामी के
पास सेवा करवाई पाछे श्री गुसांई जी के घर मथुरा
में पधारे सो श्री गुसांई जीने श्री रघुनाथ जी के माथे
पधराय दीए सो वे नारायण दास ब्रह्मचारी श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय

है तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥*

वार्ता प्रसंग ३ ॥

वैष्णव १४ ॥ सम्बन्ध पृष्ट

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेव क एक क्षत्राणी महावन में रहती ताकी वार्ता है

सो एक समें श्री आचार्य जी महा प्रभू पृथ्वी परि क्रमा करत करत महावन पधारे सो वा क्षत्राणीकों चारि स्वरूप प्राप्त भए हैं सो चारों स्वरूप श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें आनि राखे सो तिन चारों स्वरूपन के नाम एक तो श्री नवनीत प्रिया जी दूसो र एक श्री गोकुल चन्द्रमा जी तीसरा एक श्री त्रिभंगी जी तीसरा एक श्री लाडले जी ये चारों स्वरू प श्री आचार्य जी महा प्रभून नें चार वैष्णवन के माथे पधराय दीए सो या भांति श्री गोकुल चन्द्रमा जी तो नारायण दास ब्रह्मचारी के माथे पधराये दूसो र श्री लाडले जी जीय दास क्षत्री के माथे पधराये तीसरा श्री त्रिभंगी जी देवा क्षत्री के माथे प धराये तीसरा श्री नवनीत प्रिया जी गज्जन धावन के माथे पधराये या भांति चारों स्वरूप चार वैष्णवन के माथे पधराय दीए तब चारों वैष्णवन सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो यह मेरो सर्वस्व हैं सो स्वरूप तुम्हारे माथे पधराये हैं सो इनकी से वा तुम नीकी भांति सों करियो और तुम सों जब सेवा न होय आवै तब हमारे घर पधराय जैयो॰

पाछें नवनीतप्रिया जीने तो कछुकदिन गज्जन धा
वन के मांथे सेवा करवाई पाछें श्री आचार्य जी म
हाप्रभून के घर पधराये सो सब तो गज्जन धावन
की वार्ता में लिख्यो है और श्री गोकुलचन्द्रमा जीने
किनेंकदिन तांई नारायणदास ब्रह्मचारी के माथे
सेवा करवाई पाछें कृष्णदास स्वामी के पास सेव
करवाई पाछें श्रीगुसांई जी के घर पधारे पाछें श्री
गुसांई जीने श्री रघुनाथदासजी के माथे पधराये
सो प्रकार नारायणदास ब्रह्मचारी की वार्ता में लि
ख्यो है और श्री लाडलेजी को प्रकार सब जीयदास
की वार्ता में लिख्यो है सो अब श्री आचार्यजी के
कुलमें विराजत हैं सो ललित त्रिभंगी जी अंतर
ध्यान भए सो प्रकार देवा क्षत्री कपूर की वार्तामें
लिख्यो है सो वह क्षत्राणी श्री आचार्य जी महा
प्रभून को ऐसी कृपा पात्र भगवदीय ही ताकी
वार्ता कहां तांई लिखिये ॥*

वार्ता प्रसंग ॥२॥ वैष्णव १५ सम्बंध ४८ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक जीयदास का
श्री मूरतिन को वा
तौं लिख्यते

सो जीयदास के माथे श्री आचार्य जी महाप्रभू
नें श्री लाडिले जी की सेवा दीनी सो जीयदास के
पास श्री लाडिले जी ने चार पहर सेवा करवाई सो
जीयदास के चार बेटा हुते तिनमें पुरुषोत्तमदास

कवील दास इन दोऊ भाईन नें कोई एक दिन सेवा कीनी पाछें दोऊ भाईन के संतति न भई तब इन के पाछें इन के मामा कृष्णदास चौपड़ा हुते तिन के माथे श्री लाडले जी पधारे सो कितेक दिन तांई कृष्ण दास चौपड़ा सों सेवा करवाई सो भली भांति सों सेवा कीनी सो एक समय महामरी आई सो कृष्णदास कैं घर के सब कुटुम्ब की देह छूटी तब कृष्णदास अकेले रहे तब कृष्णदास के मित्र हरजी तथा मथुरामल्ल खत्री हुते सो कृष्णदास तहां आय रहे सो कितेक दिन तांई कृष्णदास और हरजी दोऊ मिल कें सेवा कीनी पाछें कृष्ण दास की देह छूटी तब हरजी भाई नें डेढ़ बर्ष लों सेवा-

कीनी पाछें श्री गुसांई जी के घर पधारे सो श्री न
इत्ने जी अब विराजत हैं सो वे जीय दास श्री आ
चार्य जी महा प्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भग
वदीय हैं सो इनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो कहां
तांई लिखिये ॥+

वार्ता प्रसंग ॥१॥

वैष्णव ॥१६॥ सम्बन्ध ६०

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून
के सेवक देवा क्षत्री कपूर
तिनकी वार्ता लिख्यते

सो देवा कपूर के माथे श्री आचार्य जी महा प्रभू
ननें श्री ललित त्रिभंगी जी की सेवा पधराय दीनी

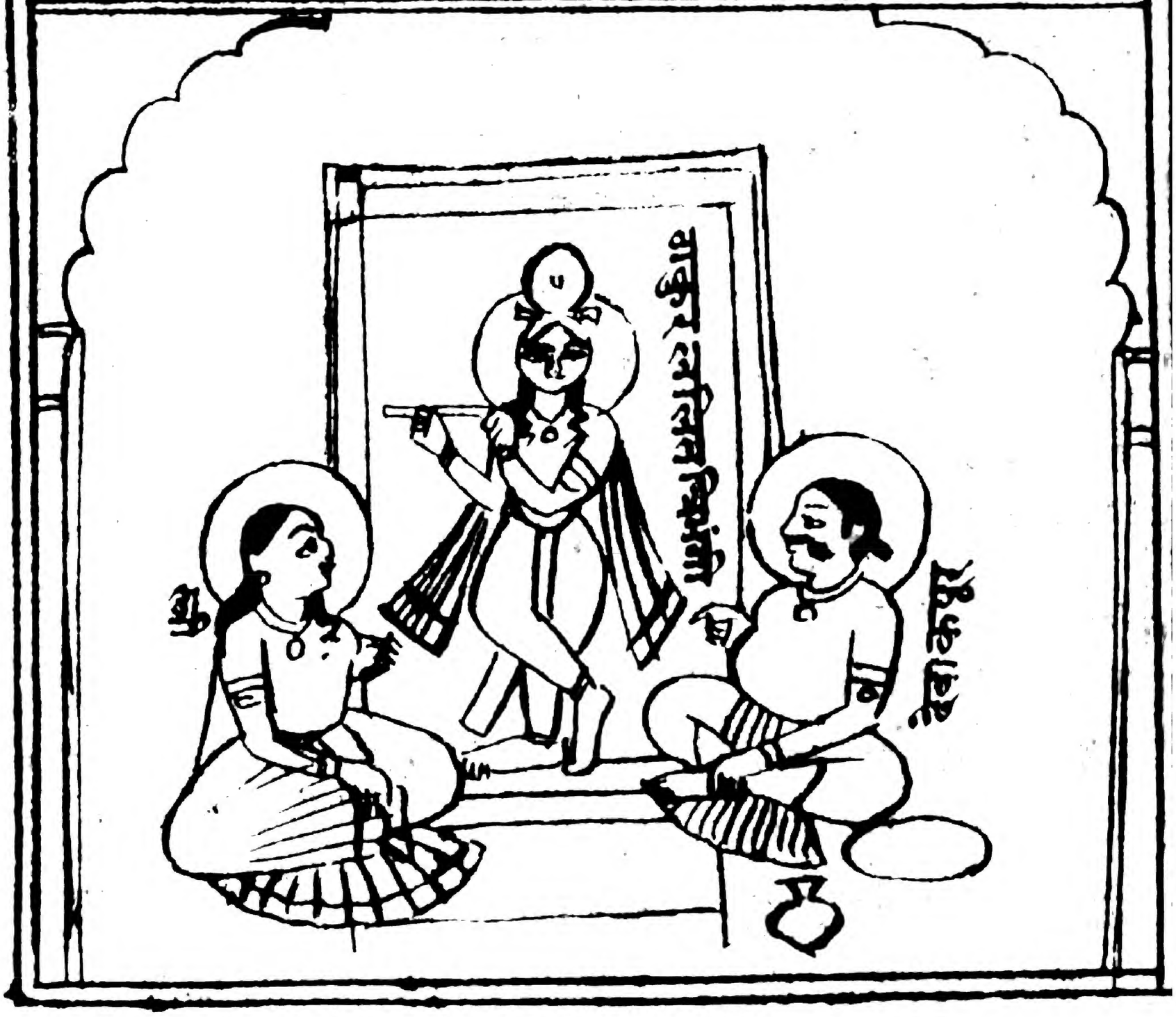

सो देवा कपूर की जब लों देह रही तब लों सेवा की
नी ता पाछें देवा कपूर की स्त्री की देह छूटी ताको
संस्कार कर आये ता पाछें मन्दिर उघार कें देखेंतो
श्री ठाकुर जी नाहीं और सामग्री सब धरी है एक
श्री ठाकुर जी नाहीं हैं सो जानें कहां अन्तर ध्यान
भए यातें यों जानी परी जो देवा कपूर के चार बेटा
हते पर उनके पास सेवा न करवाई श्री ठाकुरजी
तो स्नेह के वस हैं सो भगवद इच्छा ऐसी ही भई
ताते देवा कपूर तथा देवा कपूर की स्त्री श्री आ
चार्य जी महा प्रभून की ऐसे कृपा पात्र भगवदी
य हे ताते इनकी वार्ता कहां लों लिखिये॥
॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव १७॥ सम्बन्ध ६१॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक दिन कर दास सेठ तिनकी वार्ता लिख्यते॥*

सो दिन कर दास को कथा के ऊपर बहुत रुचि हुती सो श्री आचार्य जी महा प्रभू आप अडेल में कथा कहते तहां दिन कर दास नित्य सुनते सो एक दिन दिन कर दास रसोई करत हुते सो श्रा टो सान्यो हुतो ऊपरा बराय दीने है लीटी करि रा खी हुती इतने में श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेव क जल घरिया जो श्री ठाकुर जी कों जल भरिवे कों आयो तब दिन कर दास ने पूछो जो श्री आ चार्य जी महा प्रभू कहा करत हैं तब वा जल घ

रिया नें कह्यो जो पोथी खोली है अब कथा कहें
गें तब दिन कर दासनें काची ही अंगाकरी लीनी
सेकी नाहीं वेगि उठि वस्त्र पहर के आयो आय
के कथा सुनी श्री आचार्यजी महाप्रभू कथा कह
रहे हैं तब वाजलघरियानें श्री आचार्यजी महाप्र

भून सों कह्यो जो महाराज दिनकर दासनें काची
अंगाकरी लीनी सेकी हू नाहीं तब दिनकर दास
सों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कही जो तू काची
अंगाकरी कों खाय आयो है तब दिनकर दासनें
कही जो महाराज अंगाकरी तो नित्य लेउंगो परि य
ह अमृत कथा कब सुनूंगो तब श्री आचार्यजी महा
प्रभूननें कह्यो जो अब ते तू रसोई करि श्री ठा...

कुरजीकौं भोग समर्पि प्रसाद लेइ पहुंचि केंजब आवैगौ तब पोथी खोलूंगो तेरे आगे विनाकथा न कहेंगे आजते हमारी कथा को श्रोता तू तातें तू निश्चंत होयकें आइयो तब लौदिन ते दिनक दास वेगही सोई करि भोग समर्पि प्रसाद लेकें जब कथा के समय आवते तब श्री आचार्यजी महाप्रभू पोथी खोलते सो वे दिन कर दास सेठ श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भागवदीय है सो इनकी वार्ता को पार नाहीं ताते अब कहांतांई लिखिये ॥*

॥वार्ता प्रसंग॥१॥वैष्णव १८॥संबंध ६२॥

अब श्री आचार्यजी महाप्र
भून के सेवक मुकन्द दा
स कायस्थ तिनकी
वार्ता लिख्यते

सो मुकन्द दास आप कवि हुते सो कवित कर ते सो कवित बहुत कीये है श्री आचार्यजी महा प्रभून के तथा श्री गुसांईजी के तथा श्री ठाकुर जी के बहुत कवित कीये हैं और मुकंद सागर एक ग्रंथ कीयो सो एक समय मुकन्द दास उ जैन के कार कुन होय कें आए तब तहां के पंडि त सब आय मिले तब पंडितन नें मुकन्द दास सों कह्यो जो तुम हमारे पास श्रीभागवत सुनो तो सुनावें तब मुकन्ददास नें कह्यो जो तुम हमा रो भागवत जानत हो तब उन पंडितन नें कह्यो तुम

कहा भागवत न्यारो है तव मुकन्ददास नें एक श्लो
क को व्याख्यान कीयो पाछें महीना लों सुनायो
परि आप काहू पास कथा न सुनी कोई पंडित क
दाचित व्याख्यान करतो ताकों बहुत भांति दूषण दे
के आवते जो काहे ते सुबोधिनी में बहुत प्रवेश हो
मुकन्ददास कों श्री आचार्य जी महाप्रभून के चर
ण कमल पर दृढ़ता हुती ताते सुबोधिनी स्फुर्त
रूप हुती ऐसें करत करत कितनेक दिन में उज्जै
न में मुकन्ददास की देह छूटी तव काहू वैष्णव नें
श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें आय कही
जो महाराज मुकन्द दास नें अवंतिका पाई तव
श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कही जो ऐसे मति
कहो ताते ऐसें कहो जो मुकन्द दास कों अवंति
कानें पाए सोवे मुकन्ददास श्री आचार्य जी मह
प्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भागवदीय हे ताते
नकी वार्ता कौ पार नाहीं सो कहां तांई लिखिये॥
वार्ता प्रसंग १॥ वैष्णव १८॥ सम्बन्ध ६३॥

अव श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक प्रभू दास जलोटा।
छत्री मोह नन्द के।
वासी तिनकी।
वार्ता।

सो प्रभूदास के सेव्य ठाकुर श्री मदन मोहनजी
सो राज नगर सिकन्दर पुर में बैठे हैं सो जव श्री आ
चार्य जी महाप्रभू मथुरा पधारे तव प्रभूदास माथुर

तव एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभू आप संध्या वन्दन करि कें स्नान करत हुते विश्रांत के ऊपर तहां दोचार वैष्णव और बैठे हे तव तहां रूप सनां

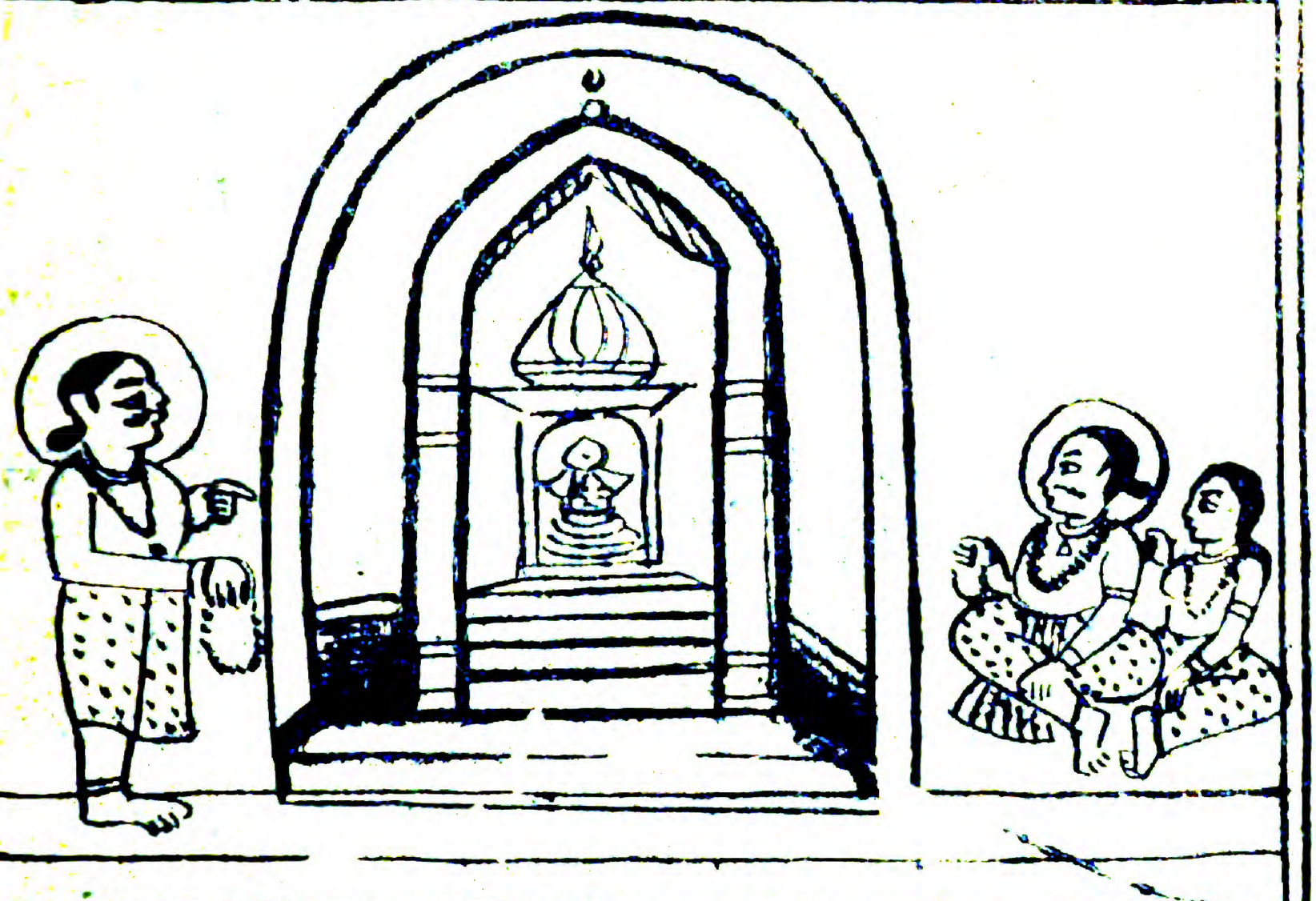

तन कृष्ण चैतन्य के सेवक नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों पूछो जो यह वैष्णव कौन हें तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो ये हमारे सेवक हें तव रूप सनांतन नें कह्यो जो ऐसे दुर्लभ कों रहत हें तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो मैं इन को वहुत वरजे जो तुम या मार्ग में मति परो पर इन मेरो कह्यो न मान्यो ताको फल ये भोगत हें पर रूप सनातन कछू समझे नाहीं तव श्री आचार्य जी महा प्रभून के दर्शन करि कें रूप सनांतन तो गए पाछें

कितनेक दिन में एक वैष्णव रूप सनातन के साथ
को श्रीजगन्नाथजी के दर्शन को गयो तहां कृष्ण
चैतन्य मिले तब कृष्णचैतन्य नें वा वैष्णव सों श्री
आचार्यजी महाप्रभून के कुशल समाचार पूछे सो
वा कह्यो जो वे कहां मिले हुते कहा करत पाये
हुते तब वा वैष्णव नें कृष्णचैतन्य सों कह्यो जो
श्री आचार्यजी महाप्रभू मथुरा पधारे हुते और
विश्रांत ऊपर मिले हुते बहुत नीके हैं और श्री
आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन को रूप सनातन
हू गए हुते विश्रांत ऊपर सो श्री आचार्यजी महा
प्रभूनसों रूप सनातन नें और वैष्णवन की वात पू
छी जो ये ऐसे दुर्लभ कोंन हैं तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें कही प्रभूदास की वात कही जो
में इनकों बहुत वरजे परि इन मेरो कह्यो न मान्यो
ताको फल ये भोगत हैं सो यह वात सुनिकें कृ
ष्णचैतन्य कों मूर्च्छा आई सो एक मुहूर्त लों मूर्छा
रही पाछें सावधान भये तब फेरि पूछी जो तुमनें
कहा वात कही तब वा वैष्णव नें फेरि कह्यो जो
श्री आचार्यजी प्रभूननें कह्यो जो या मार्ग में मेंम
ति परो तब कृष्णचैतन्य कों फेरि मूर्च्छा आई सो
दोय मुहूर्त लों रही पाछें फेरि सावधान भए ऐसें
तीन वार पूछी सो तीनों वार मूर्च्छा आई चौथी वा
र फेरि वा वैष्णव सों पूछी जो कहा कही तब वा
ने कृष्णचैतन्य सों कही जो अब मोपे कही न जाय
जो यह वात ऐसी है जो केवल विरही होय सो जा

ने रूप सनातन कहा जानें ॥+

॥वार्ताप्रसंग ॥१॥

श्रौर एक समय प्रभूदास नें वेगी रसोई करी सो दार तौ काची रही श्रौर श्रंगाकरी जरगई तब प्रभूदास के मन में श्राई जो श्रैसी सामग्री श्रीठाकुरजी कूं कहा समर्पूं सो चरणोदक मेलवे कूं प्रसाद लीयो श्रौर श्रीठाकुर जी तौ वाट देखत ही रहे जो प्रभूदास भोग समर्पेगो श्रौर में श्रारोगूंगो श्रौर प्रभूदास नें तौ विगरी सामग्री जानि के न समर्पी तब श्रीठाकुर जी नें श्री श्राचार्यजी महाप्रभून सों क ही जो श्राज मोकों प्रभूदासनें भोग समर्प्यो नाहीं मेनें वाट देखी जो श्रब मोकों प्रभूदास भोग समर्पेगी श्रौर में श्रारोगूंगो पीछे प्रभूदास नें भोग समर्प्यो तब उत्थापन के समय प्रभूदास दर्शन कों श्राये तब श्री श्राचार्यजी महाप्रभूननें प्रभूदास सों कह्यो जो श्राज तेनें श्रीठाकुर जी के विनै समर्पे प्रसाद लीयो तब प्रभूदासनें सांची वात कही जो महाराज दार तौ काची रही श्रौर श्रंगाकरी जरगई ताते ऐसी सामग्री जानि भोग समर्प्यो नाहीं चरणोदक मेलि प्रसाद लीयो तब श्री श्राचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो श्रैसी रसोई क्यों करी श्री ठाकुर जीने तौ वडी वार लों वाट देखी जो प्रभूदास भोग समर्पेगो श्रौर में श्रारोगूंगो ताते तेंने श्रैसी रसोई कों करी सावधान ह्वैकें क्यों न करी पाछें सावधान ह्वैकें रसोई करनी तो

वार्ता प्रसंग २

और एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभू व्रज में पावधोर हते तब प्रभू दास साथ हे तब एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभून नें व्रज में श्री गोवर्द्धन के निकट स्थल भोग धरायो पाछें भोग सरायो तब प्रभू दास सों श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो प्रसाद लेउ तब प्रभूदास नें कह्यो जो महाराज मेनें स्नान नाहीं कीनों तब श्री आचार्य जी महा प्रभूननें प्रभू दास सों कही जो तू देखि तब श्लोक करि कें दिखवायो ॥ मो

श्लोक

वृक्षो वृक्षो वेणु धारी पत्रे पत्रे
चतुर्भुजः ॥ यत्र वृन्दावनं तत्रे
लक्ष्या लक्ष कथा कुतः ॥१॥
जलादिभिः रजः पुष्पैरजः मो
पि जत्वंवरं ॥ पत्र वृंदावनंत
त्र स्नानां स्नान कथा कुतः ॥२॥

यह श्लोक पढ़ि कें प्रभू दास कों दिखायो व्रज को स्वरूप वृक्ष वृक्ष बिषें वेणु धारी पत्र पत्र विषें चतुर्भुज देखे या भांति कों प्रभूदास कों दर्शन करवायो ऐसो सादृष्य व्रज को स्वरूप दिखायो पाछें प्रभू दास नें प्रसाद लीयो दंडवत करि कें प्रभूदास के ऊपर श्री आचार्य जी महा प्रभून की ऐसी कृपा दृष्टी मो आप नें कृपा करि कें व्रज को स्वरूप दिखायो ॥*॥

वार्ता प्रसंग ॥३॥

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू आप मन्दिर में हुते तब ऐसी मन में आई जो श्री ठाकुरजी को भोग समर्पिये सो दही को भोग समर्पिये ता समें प्रभूदास बाहिर हुते सो प्रभूदासनें श्री आचार्यजी महाप्रभून के अंतःकरन की जानी तब प्रभूदास बाहिर गये तब गांव में जाय कें एक अहीरी मिली तासों पूछो जो तेरें दही है तब वा अहीरी नें कह्यो जो हां दही है तब प्रभूदास ने कह्यो जो लाउ तब अहीरी दही लै आई तब प्रभूदास नें कह्यो या कों मोल कहि तब वा अहीरी नें कही जो तू मोकों का हा देयगो तब प्रभूदासनें कह्यो जो तू मांगगी सो देउंगो तब वा अहीरी कही जो एक टका दे और कछा मुक्ति देयगो तब प्रभूदास नें कही जो यह तो टका लै और तोकों मुक्ति दीनी तब वा अहीरीनें कही जो तू मोकों लिख दे जो मुक्ति दीनी तब प्रभू दासनें लिख दीनी और दही लैकें घर आए सोद ही भीतर दीयो तब श्री आचार्य जी महा प्रभूननें वह दही भोग समर्प्यो सो श्री ठाकुर जी आरोगे सो वह दही अति स्वाद भयो पाछें गुसांई जी जब सांझ के समय दर्शन कों आये तब यह वात श्री आचार्यजी महा प्रभून सों कही जो महाराज प्र भूदासनें दही के ऊपर मुक्ति दीनी सो लिखि आ ये तब श्री आचार्य जी महा प्रभूजीने प्रभूदास सों पूछी जो प्रभूदास वह दही अति स्वाद भयो हुतो

सो तेनें वाकों मोल कहा दीयो हुतो तब प्रभुदास
नें कह्यो जो महाराज वा अहीरी नें एक टका और
मुक्ति मांगी सो एक टका और मुक्ति दीनी तब श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो तेनें कछु नदी
नों तब प्रभुदास नें कही जो महाराज हूं कहा कहूं
जो मोपै मांग्यो हुतो सो दीनों जो भक्ति मांगती तो
भक्ति देतो पाछें वा अहीरी की सखी नें कह्यो जो
तोकों तो ठग लीनी तब वा अहीरी नें सखी सों
कह्यो जो तू कहा जानें ये बड़े भागवत भक्त हैं इन
को क्वन सत्य हैं तब कितनेक दिन में वा अहीरी
की देह छूटी तब यमदूत आए इतने में विष्णुदूत
हू आए सो आपुस में झगरन लागे तब यमदूतन
सों विष्णुदूतन नें कही जो याकों तो श्री आचार्य
जी महाप्रभून के सेवक प्रभुदास नें मुक्ति दीनी है
सो कागद याकी साड़ी की खूट ते बंध्यो है सो यह
बात वा अहीरी के संग सोदरन नें सुनी परि शांति
न देखे पाछें वा अहीरी कों विष्णुदूत ले जानि
लागे तब वा अहीरी नें विष्णुदूतन सों कह्यो
जो मेरी सखी कौं दर्शन देउ वाकों अविश्वास
है पाछें विष्णुदूतन नें वाकों दर्शन दीनों तब
वह कहन लागी जो मोहू कों ले जाउ तब विष्णु
दूतन नें कह्यो जो हमारो हाथ कहा है हम तो श्री
आचार्य जी महाप्रभून के सेवक प्रभुदास सों कहि तब वह स
खी प्रभुदास के पास आई तब प्रभुदास नें वाकों
श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास नाम दिवायो

नव वाहू को कार्य भयो पाछें विल्वमंगल वा अही
री को लै गये नव वाकी मृत्यु भई पाछें वा अही
री के सगे कुटुम्ब नें वाकी साड़ी के खूंट ते कागद
खोलि कें देखो नव बांचि के गोवनले रहे सो प्रभू
दास कों श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा तेंसी
सी सामर्थ्य हती सो वे प्रभूदास बड़े भागवत्तीय हे
ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ *

वार्ता प्रसंग ४ बैष्णव २० सम्बन्ध ६७

अथ श्री आचार्य जी महाप्रभू न के सेवक प्रभूदास ॥

भाट सीहनन्द ॥

के तिनकी ॥

वार्ता ॥

सो वे प्रभूदास भाट श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करते सो बहुत दिन सेवा करत बीते पाछें वृद्ध भयो तब बहुत आपुत्ति भए तब जानी यह देह दिन चार पाँच में छूटेगी तब सावधान ना छूटी असावधान भए तब सगरे मिल कें प्रभूदास कों प्रयोदक तीर्थ है तहां ले गये जब प्रयोदक आयो तब सावधान भए आंखि खोल कें देखें तो प्रयो दक तीर्थ है तब प्रभूदास ने कह्यो जो मोकों इहां क्यों लाए हौ तब सगरे जनेन नें कह्यो जो यह प्र योदिक तीर्थ है तुम्हारी अंत अवस्था देखि कें लाये हैं तब प्रभूदास ने कही जो मोकों प्रयोदिक में कहा काम है मैंतो श्री आचार्य जी महा प्रभून

कौ सेवक हों मोकौं प्रथोदक कहा कृतार्थ करोगो
मोकौं दास १ लों इहां राखोगे नोऊ मेरी देह यहांन
छूटैगी ताते मोकौं सीहनन्द ले चलो जब अपने श्री
ठाकुर जी के चरण देखूंगो तब देह छूटैगी तब दिन
पांच सात लों राखे पीछे दिन दिन प्रभूदास को शरीर
नीको भयो सावधान भए तब फिर सीहनन्द लै गये
तब अपने सेव्य श्री ठाकुर जी को देखें दर्शन करि
के दंडवत कीनी तब प्रभूदास नें श्री ठाकुर जी सों
कह्यो जो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें तुम कों मेरे
साथे पधराए हैं और ये तो बावरे लोग तुम्हारो आ
श्रय छुड़ाय के मोकों तीर्थ आगें ले गये पीछे श्री
आचार्य जी महाप्रभू ऐसो क्यों करें जो मेरी देह
तीर्थ पै छूटे पाछें श्री ठाकुर जी की सेवा सिंगार क
रिकें वेगिवेगि भोग समर्प्यो भोग सराय अनोसर
कीयो पाछें सबन ते कह्यो जोतुम वेगिवेगि प्रसाद
लेउ ता पाछें मेरी देह छूटैगी तब सब प्रशाद लेचु
के तब सबन सों प्रभूदास नें जै श्री कृष्ण कह्यो औ
र प्रभूदास नें तत्काल देह छोड़ी पाछें सीहनन्द में
एक कायस्थ चौधरी हतो सो प्रभूदास की निन्दा क
रन लागो और कह्यो जो प्रभूदास प्रथोदिक ते उ
लटो फिर आयो और सीहनन्द में देह छोड़ी ऐसी
निन्दा करतो सो एक दिन रात्रि कों सोयो हतो तहां
कोऊ चारि जने हाथ में मुद्गर लेकें आये सो कीर्तचौध
री कों बहुत मारयो तब कीरत चौधरी नें कह्यो जो
तुम मोकों क्यों मारत हो तब उन नें कह्यो जो प्र

भूदास की निन्दा तू क्यों करत है तब कीरत चौध
री नें कह्यो जो अब मैं निन्दा न करूंगो और वह
त मनुहार करी तब उन कह्यो जो तू फेरि निंदा करै
गो तौ तोंकों याही भांति सों मारेंगो तब कीरत चौ
धरी नें कह्यो जो अबतें निन्दा न करूंगो भक्ति
करूंगो पाछें स्तुति करन लागे तब प्रभूदास की
बात चले तब कीरत चौधरी कहै जो वे बड़े महा
पुरुष हैं तब और लोग कहन लागे जो पहले तौ
तुम प्रभूदास की निन्दा करत हुते और अबस्तुति
क्यों करत हौ तब सबन कों कीरत चौधरी
ने अपने देह की व्यवस्था दिखाई और कह्यो
जो रात्रि कौं कोऊ चारि जने आय के मार मार हा

ङ्चरन कीयो नातें भगवदीय की निन्दा सर्वथा न करनी
और जो करै तो या लोक में यही हाल होय और परलो
कमें अघोर नर्क में जाय सोवे प्रभूदास भाट श्री आ
चार्य जी महा प्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय है
नाते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ *

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥२१॥ *

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के
सेवक पुरुषोत्तम दास आग
रे में राज घाट ऊपर र
हते हते तिनकी
वार्ता है ॥ *

सो एक समय श्री गुसांई जी आगरे पधारे हते तब
पुरुषोत्तम दास के घर उतरे तब पुरुषोत्तम दास की
स्त्री छिप रही तब पुरुषोत्तम दास सों श्री गुसांई जी
नें पूछो जो तेरी स्त्री कहां गई है तब पुरुषोत्तम दास
नें कही जो जनेउ टूटी होयगी पाछें श्री गुसांई जी बे
गि वेगि रसोई करि दार भात साक चार पांच करे
तब रोटी बेलिवे की वार पुरुषोत्तम दास की स्त्री
आई तब श्री गुसांई जी ने पूछो जो अबलों तू कहां
ही तब पुरुषोत्तम दास की स्त्री ने कही जो राज काज
काम करत हुती पाछें पुरुषोत्तम दास की स्त्री ने रोटी
बेल बेल दीनी तब रसोई सिद्ध भई तब श्री गुसांई
जी ने श्री ठाकुर जी को भोग समर्प्यो पाछें समया
नुसार भोग सराय पाछें वही चार कटोरा पडगीस
व उन पात्रन में श्री गुसांईजी सों कही जो भाजन

करिये तब श्री गुसांई जीनें कह्यो जो येनो श्रीठाकुर
जी के पात्र हैं इन में भोजन कैसें करें नातेहम इन पा
त्रन में भोजन न करेंगे तब पुरुषोत्तम दास हास नथा उस
की स्त्री ने कह्यो जो महाराज की कृपा तें कछु दुख्य
निवदयो नाहीं और पात्र नये मंगावेंगे आप इनमें
भोजन करिये तब श्री गुसांई जी भोजन करन कों
बैठे तब पुरुषोत्तम दास को स्त्री गुसांई जी के पास बै
ठिकें पंखा करन लागी और कह्यो जो महाराज
और सामिग्री आवेगी तब श्री गुसांई जी ने कह्यो
जो मोकूं रुचेगी सो मैं आरोगूंगो तब पुरुषोत्तमदास
नें कह्यो जो महाराज श्री नन्दराय जी के घर कैसें
आरोगत हो ऐसें कहि कें स्त्री पुरुष दोऊ जने श्री
गुसांई जी कों बहुत सामग्री निवाय सोतिन के संका
च के लिये श्री गुसांई जी कहैं जो तुम कहोगे सोक
रेंगे तब भोजन कीये पाछें अपने सेव्य श्री ठाकुरजी
की सैया ऊपर पिछोरा बिछाय श्री गुसांई जी कों
पौढ़ाये पुरुषोत्तमदास चरण सेवा करन लागे स्त्री
पंखा करन लागी पाछें घड़ी एक रहि कें श्री गुसांई जी
नें दोउन सों कह्यो जो अब तुम जाय कें महाप्रसाद ले
उ तब उन कह्यो जो महाराज महाप्रसाद तो नित्य
लेत हैं पर तुम्हारी सेवा कब करेंगे सो ले स्त्री पुरुष
दोऊ जने श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे कृपा
पात्र भगवदीय है तातें इन की वार्ता अब कहां
ताईं लिखिये ॥*

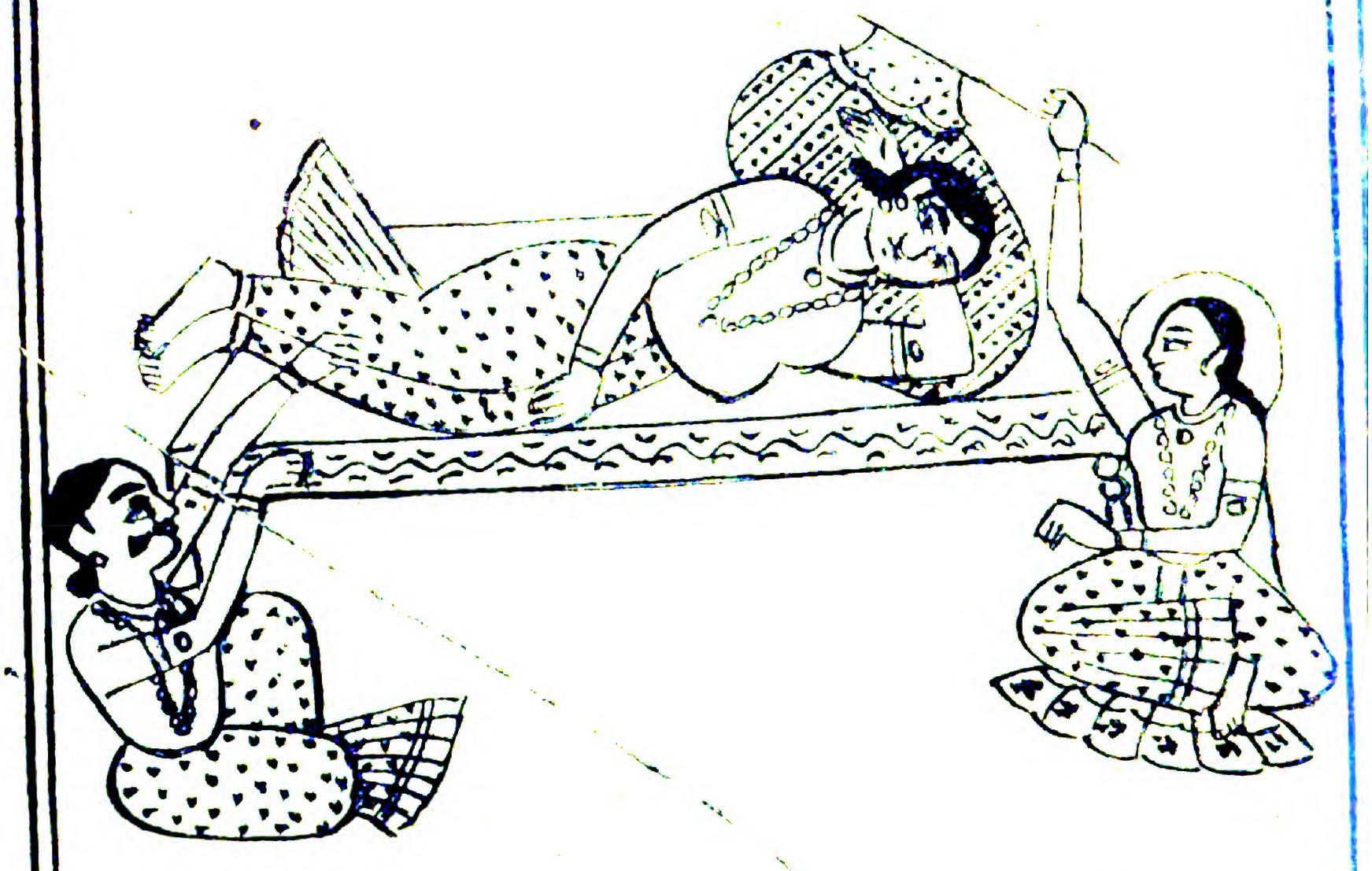

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥२॥

श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक भपुरदास का
यस्थ पोरगढ़ कें ॥
वासी हुतं ॥
तिनकी
वार्ता

सो चपुरदास को श्री आचार्य जी महाप्रभून ऊप
र तथा श्री गोवर्द्धननाथ जी के वियें बहुत समस्व
हुतो जहां बैठते जहां ठाड़े होते तहां श्रीनाथ जी
को पीठ न दैकें बैठते पीठ दैकें ठाड़े न होते सो च
रदास एक तुरक कें चाकरी करते परगना बहुत

कमायो जो कछु वस्तु आवती सों पहिलें श्रीनाथ
जी कों पहुंचावते और सालन साक पहुंचावतेथे
सें सदां सर्वदा खाते सो एक दिन वा तुरक नें त्रपुर
दास कों बन्दी खाने में दीए और कह्यो जो तेंनें मे
रो द्रव्य बहुत खायो है सोजब वह तुरक सोवो तब
काऊ चार जनें हाथ में मुगदर लैकें आए सो आय
के वा तुरक को खाट ते औंधों पटकि बहुत मारे
तब वा तुरक नें कह्यो जो तुम मोकों क्यों मारत हो

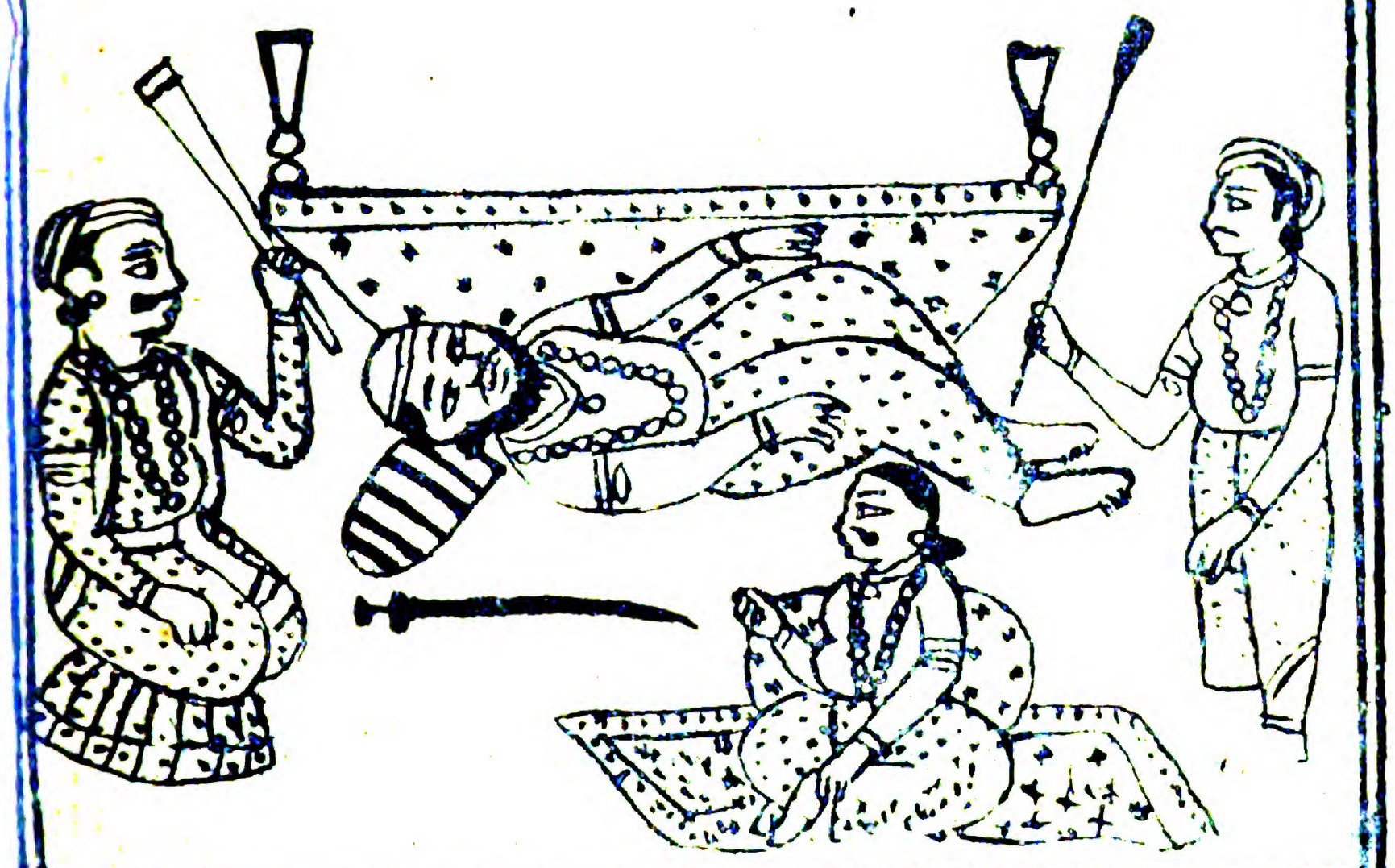

तब उन नें कह्यो जो तेंनें त्रपुरदास कों बन्दीखानें में
क्यों दियो है तब वह तुरक बहुत बिलबिलानो
हाहा करिकें नाक भूमि में घिस कें उनसों कह्यो
जो मोकों तुम मारो मति में अबही त्रपुरदास कों

छोड़त हों तब उन कह्यो जो त्रपुरदास कों न छोड़ेगो
तौ हम याही भांति सों नित्य मारेंगे ऐसें कह्यो न
व वेतो गये तब वा तुरक नें त्रायकें त्रपने जागन
सों कह्यो जो त्रपुरदास कों पन्दीखाने में ते त्रवही
छोड़ देउ तब मनुष्य त्रपुरदास को छोड़न गए तब
त्रपुरदास नें उनसों कह्यो जो त्रबतो रात्रि बहुत
गई है सवारें छोड़ियो तब वे मनुष्य फिर त्राये त्रौर
वा तुरक सों कह्यो जो साहिब त्रिपुरदास कहत
हैं जो त्रबतो रात्रि बहुत गई है सवारे छोड़ियो न
वबा तुरक नें त्रपने मनुष्यन सों कह्यो जो तुम त्र
वही त्रिपुरदास कों छोड़ लावो तब वे मनुष्य वेग
ही जाय कें त्रिपुरदास कों छोड़ लाए तब वा तुरक
ने त्रिपुरदास सों कह्यो जो तुम त्रापने घर जाउ
तब त्रिपुरदास नें कह्यो जो त्रबतो रात्रि बहुत
गई है सवारे जाउंगो तब वा तुरक नें त्रिपुरदास
सों कह्यो जो तू कहा काऊ कों जीव लेयगो तातें
तू त्रबही इतनी वेर त्रपने घर जाउ तब त्रिपुरदास
त्रपने घर त्राये॥

❋ वार्ता प्रसंग ॥१॥

बहुर कितनेक दिनपाछें त्रिपुरदास वाही तुरक
के साथ त्रटक गये पाछें एक दिन रसोया ने त्रपु
रदास सों कह्यो जो चरणोदक महाप्रसाद निवट्यो
है रंचकहू नाहीं तब त्रिपुरदास नें रसोइया सों क
ह्यो जो पांडे तैंने हम सों पहिलें क्यों न कह्यो हम
चरणोदक महाप्रसाद मगाय देते त्रब कहा

करियं तव रसोइयाचुपि कर रह्यो तव सवारे उठि
कें त्रिपुरदास तुरक के दरवार जान लगे तवक
ह्यो जो पांदे रसोई करि श्रीठाकुर जी कों भोग सम
र्पि प्रसाद लीजियो मेरी वाट मति देखियो मेरो
आवनों न वनेगो और मन में यह निश्चे कीयोजो
जवलों यहँ चलेगी तव लों काम काज करूंगो और
देह जव नचलेगी तव पड़ रहूंगो पी चरणोदक
महा प्रसाद लीये विनाजल पान न करूंगो यह नि
श्चय करि कीयो तव तुरक के दर्वार गये तव रसोइया
ने स्नान करि रसोई करन लागो तव आधी रसोई
भई दुतने में एक लोका वर्य दस को नान थैली
लायो सो एक थैली में तो चरणामृत और एक

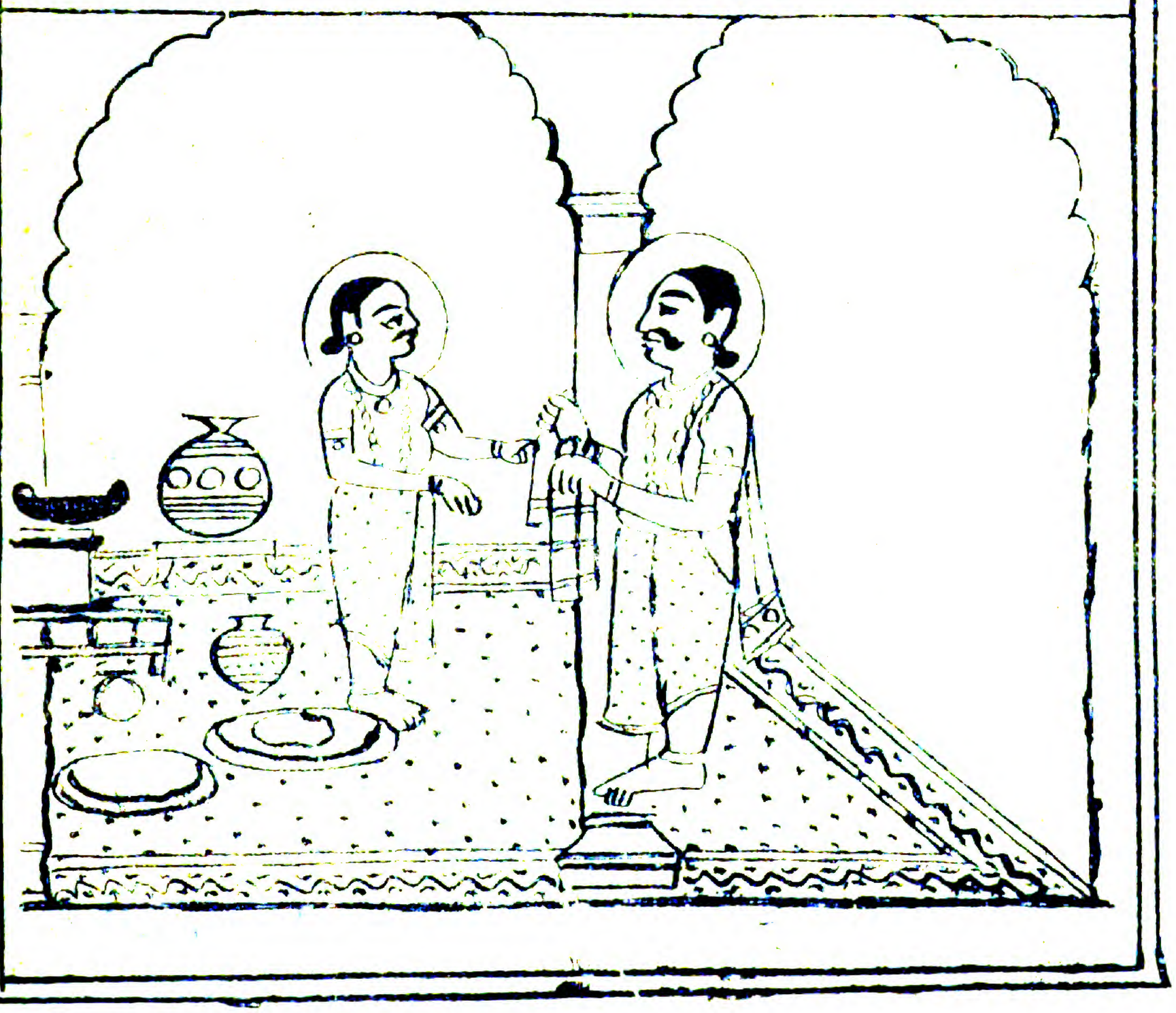

थैली में श्री आचार्य जी महाप्रभू को चरणामृत और एक थैली में श्री नाथजी को महाप्रसाद सो वे तीनों थैली रसोइया को दीनी और कह्यो जो ये तीनों थैली त्रिपुरदास नें पठाई हैं सो थैली देकें वह लरिका तुरं तही चल्यो गयो पाछें रसोई सिद्ध भई तब श्री ठाकुरजी कों भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सरायो तब रसोईया नें त्रिपुरदास कों बुलाय वे कों मनुष्य पठायो पर त्रिपुरदास आये नाहीं तब दोय तीन वार मनुष्य बुलाय वे कों पठायो तब त्रिपुरदास ने रसोइयें सों कह्यो जो पांडे तुम मोकों काहे कों बुलावत हो मैंतो चरणामृत महाप्रसाद लीये विना जल पान न करूंगो तब रसोइया नें त्रिपुरदास सों कह्यो जो चरणामृत महाप्रसाद की थैली तो तुमही नें पठाई है एक लरिका वर्ष दश को हतो सो तीन थैली दीगयो है तब त्रिपुरदास नें कह्यो जो वह लरिका कहां है मोकों दिखाय तब रसोईया नें कह्यो जो वह लरिका तो तुरतही थैली देकें चल्यो गयो तब त्रिपुरदास नें जान्यो जो ये श्री ठाकुर जी के काम हैं तब आप को धिक्कार करन लाग्यो जो मैंनें ऐसो हठ क्यों कियो जो श्री ठाकुर जी कों श्रम करनों पड्यो सो आप धिक्कार बहुत करन लागो जो मैंनें श्री ठाकुर जी कों श्रम बहुत क्यायो पाछें स्नान करि चरणामृत महाप्रसाद लीये पाछें समर्प्यो महाप्रसाद लीयो ॥ +

वार्ता प्रसंग २

बहुरि कितनेक दिन में त्रिपुरदास की चाकरी छूटी

सो शीतकाल के दिन आए तब श्री नाथ जी कों कप
य पठावे सो कपरों ने पठावे कितनो रसोघर में भाजी
चपुरदास की कवाय हुती जासी सो श्री नाथ जी
आप अंगीकार करते तब चपुरदास नें कह्यो जो म
व कहा कीये तब एक द्रोन पीतर की हुती सो
ची ताके दामन की गजी मंगाई सो रंगाई तापकी क
वाय वनवाय कें श्री नाथ जी कों पठाई सो रंगी
रि कें भंडारी नें भंडार मेंडार दीनी तब कितनेक दि
नमें श्री गुसांई जी श्री नाथजी द्वार पधारे सो जब श्री
नाथ जी को शृंगार करन लागे तब श्री गुसांई जी सों
श्री नाथजी ने कह्यो जो मोकों शीत बहुत लागतहै
तब श्री गुसांई जीनें कह्यो जो दूसरी अँगीठी लावो
तब दूसरी अँगीठी लाए तोहू कही जो मोकों सीत
बहुत लागतहै तब श्री गुसांई जीनें गद्दल उठायो
तबहू श्री नाथ जीनें कही जो मोकों सीत लागतहै त
ब श्री गुसांई जीनें तीसरी अँगीठी मंगाई तबहू कही
जो मोकों शीत लागतहै तब श्री गुसांई जीनें भन्डारी
कों बुलायो और वासों पूछो जो कौन कौन वैष्णवन
की कवाय आई हुती तब जाजा वैष्णव की आई हु
ती ताना वैष्णव को नाम लीयो तब श्री गुसांईजीने
कही जो चपुरदास की कवाय नाहीं आई तब भ
न्डारी ने कह्यो जो चपुरदास की एक रंगीन कवाय
आई है सो भंडार में पडी है तब श्री गुसांई जी नें क
ह्यो जो वह रंगीन कवाय लै आवो तब भंडारी वह
रंगीन कवाय लै आयो तब श्री गुसांईजी देखें तो मे

ली मरगजी सी होरही है तब वाकों झार पोंछि केंत
कात दरजी बुलाय कें फरगुल सिद्ध करवाई तब
वह फरगुल श्री नाथ जी कौं उढ़ाई तब श्री नाथ
जी नें कह्यो जो अब मेरो मीत निर्वत भयो ऐसें
श्री नाथ जी भक्ति के पक्षपात जो भक्ति भाव की
वस्तु कों यांभांति अंगी कार करें सो वे चतुर दासश्री
आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय
है तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ *

वार्ता प्रसंग ॥३॥ वैष्णव २३॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक पूरनमल क्षत्री।
* तिनकी वार्ता लिख्यते

सो पूरन मल्ल की गांठि में द्रव्य बहुत हुतो सो पूरनम
ल्ल कों श्री नाथजीकी आज्ञा भई हुती जोतू मेरो मन्दि
र समराउ तब पूरनमल्ल श्री आचार्य जी महाप्रभू
के पास आयो और आय के कह्यो महाराज मोकों
श्री नाथजीकी आज्ञा ऐसी भई है जो तू मेरो मन्द
र समराउ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो
जो मन्दिर वेगा समरावो तब पूरन मल्ल नें श्री आचार्य
जी महाप्रभून सों नाम पायो पाछें मन्दिर उठावनला
ग्यो सो द्रव्य हुतो सो सब नाव खोदवे में लाग्यो जब
सब द्रव्य निवट्यो पाछें पूरनमल्ल पूरब चाकरी कों
गये तब राज सी लोगन नें श्री आचार्य जी महाप्र
भून सों पूछो जो महाराज आज्ञा देउतो हम मन्दिर स
मरावें तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री नाथजी
सों पूछो जो महाराज ये राजसी लोग मन्दिर सवरा
वन कहत हैं सो समरावें तब श्री नाथजी नें श्री आ
चार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो पूरनमल्ल आवेगो
तब मन्दिर समरावेगो तब राजसी लोगन सों श्री आ
चार्य जी महाप्रभून नें नाहीं कीनी तब वे फिर गये
तब कितेक दिन में पूरनमल्ल पूरबते बहुत द्रव्य क
माय कें लायो तब पूरनमल्ल नें कितेक दिन में मं
न्दिर समराय कें सिद्ध करवायो पाछें श्री आचार्य
जी महाप्रभूननें आछो मुहूर्त दीयव कें श्री नाथजी
के मन्दिर में पाठ बैठाये तब पूरन मल्ल ने बहुत द्रव्य
खरचो ॥ +

वार्ता प्रसंग १

बहुर श्री गुसांई जी श्री नाथ जी द्वार पधारे तब
पूरनमल्ल श्री नाथ जी के दर्शन कों आयो सो अति
आनन्द सों दर्शन कीयो तब श्री गुसांई जी नें कह्यो
जो पूरनमल्ल तेरे मन में और कछु मनोरथ है सो
सोइ मोंते तब पूरनमल्ल ने श्री गुसांई जी सों कह्यो
जो महाराज मेरे मन में एक मनोरथ है जो अ
ति सुन्दर अति सुगन्ध को अरगजा अपने हाथन
सों मैं समर्पू तब श्री गुसांई जी नें आज्ञा दीनी जो
ना समर्पि तब पूरनमल्ल ने अत्युत्तम सुगन्धि को
अरगजा करि कें श्री नाथ जी कों समर्प्यो तब पू
रनमल्ल नें आपने मन में अति आनंद पायो ता
पाछें पूरनमल्ल श्री नाथ जी के पास तें श्री गुसांई
जी के पास आयो तब श्री गुसांई जी पूरनमल्ल के
ऊपर बहुत प्रसन्न भए तब श्री गुसांईजी आपपो
ढ़े हैं सो उपरना पूरनमल्ल को उढायो तब पूरनम
ल्ल ने अति आनन्द पायो पाछें श्री गुसांई जी ने श्री
नाथ जी कों पंचामृत सों स्नान करवायो पाछें
अंग वस्त्र करि कें सेवा शृंगार करि कें रसोई करि
भोग समर्प्यो समय नुसार भोग सराय के पाछें
श्री गुसांई जी नें श्री नाथ जी को प्रसादी गहल
पूरनमल्ल कों दियो पाछें प्रति वर्ष प्रसादी गहल
श्री गुसांई जी पूरनमल्ल कों देते सो पूरनम
श्री गुसांई जी के तथा श्री आचार्य महाप्रभून के
ऐसे परम कृपापात्र भावदीपहे तातें इनकी वा
ती कहां तांई लिखिये॥ ❋ श्री

॥वार्तांप्रसंग॥२॥वैष्णव॥२४सम्बन्ध॥※

अथ श्री आचार्यजीमहाप्रभू

नके सेवक पादवेन्द्र

दास कुम्हार॥

तिनकी

वार्ता

सो श्री आचार्यजी महाप्रभू तथा श्रीगुसांईजी जब परदेश कों पधारते तब पादवेन्द्रदास इनके साथ सामग्री लैकैं चलते झड़वाई कनात विना बांस की छोटी रावटी तथा एक दिन को सीधो सा मग्री इतनों बोझ लैकैं संग चलते और रसोई की चाकरी सब करते रात्रि कों पहरोदेते॥

वार्ता प्रसंग॥१॥

बहुरि श्री गुसांईजी श्री गोकुल में हुते तब रात्र पहर एक गई हुती तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जो या विरियां मन्दिर की नींव खोदी जाय तो मंदिर में लो दृढ़ होय अब भलो मुहूर्त्त है ऐसें कहि कें श्री गुसांईजी तो पौढ़े पाछें पादवेन्द्रदास ने एक पहर में नींव खोदी सो खोदि सिद्ध कर राखी सो जब पिछली रात्रि कौं श्री गुसांई जी पौढ़ के उठे न व देखें तो माटीन के ढेर पड़े हैं तब पूछो जो यह माटी कैसी है तब वैष्णवन नें कह्यो जो महाराज पादवेन्द्र दास ने खोदी है तब श्री गुसांई जी ने पादवेन्द्र दास सों पूछो जो यह नींव तेनें खोदी है तब पादवेन्द्र दास ने कह्यो जो महाराज रात्रि कौं

वा वेर आपने आजा करी हुती ताही वेर खोदी है सो नीव ऐसी वड़ी खोदी जो महीना एक लों राज म- जदूर दए पन्द्रह लगें तोहू भीन जाय सो ऐसी सामर्थ पादवेंन्द्र दास में हुती ॥ ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और पादवेन्द्र दास ने श्रीनाथ जी द्वार को कूआ अपने ही हाथन सों खोद्यो सो मांटी निकसी ताकी ईंट पकाई अपने हाथन हीं कूआ चिन्यो परि जल

पाद वेन्द्रदास

खारी निकल्यो तब पादवेन्द्र दास सोरा गयो श्रीगड़ जी मेते जल लैकें अंजुली भरि भरि केदारे ओर क है जोवा कूआ कोजल आपसो करो ऐसें कहिकें तर्पण कीयो ऐसें करत जब जान्योजोजल मीतो

भयो तब श्री गंगाजी में ते निकस्यो पाछें श्री नाथ जी द्वार आए तब द्वा कृआ को जल श्रीनाथ जी कों अंगीकार करवायो सो पादवेन्द्र दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के परम कृपा पात्र भगवदीय हैं ना तेइनकी वार्ता कहां तांई लिखिवये ॥*

॥ वार्ता प्रसंग ॥२॥ वैष्णव २४॥

अथ श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक गुसांई दास सार स्वत ब्राह्मण तिनकी

॥ वार्ता॥

सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून कों श्रीगोकुलजी को स्वरूप प्राप्ति भयो सो स्वरूप गुसांई दास के माथे सेवा को पधराय दीये और कही जो इनकी सेवा तू नीकी भांति सों करियों सो गुसांई दास सेवा नीकी भांति सों करन लागो सो गुसांई दास सों श्री ठाकुर जी मानुभाव भए बोलन लागे पाछें कितेक दिन में एक वैष्णव सो गुसांई दास नें कही जो तुम इहां रहो तो हम कों सहायता होय हम तुम मिलि कें सेवा करें परि वह वैष्णव हांन करें पाछें एक दिन श्री ठाकुर जी नें गुसांई दास सों कह्यो जानू मांकों वा वैष्णव के माथे पधराय पाछें वा वैष्णव सों गुसांई दास नें कह्यो जो श्री ठाकुर जी की आज्ञा तो ऐसी भ ई है जो तू मोकों वा वैष्णव के माथे पधराय नाने भ वद इच्छा ऐसी ही दीसत है तब वा वैष्णव ने गुसां ई दास सों कह्यो जो तुम कहा करोगे तब गुसांई दास

नें कह्यो जो हूंतो वद्रिकाश्रम जाऊंगो उहां मेरो दे-
ह छूटेगो तव वा वैष्नव नें गुसांई दास सों कह्यो जो
श्री ठाकुर जी की गति नाहीं जानी जात है जो तुम्हा
री देह उहां न छूटै और तुम इहां फिर आवो तो में-
श्री ठाकुर जी कौ देउंगो नाहीं तव गुसांई दास नें
कह्यो जो श्री ठाकुर जी ऐसी तो न करेंगे और क-
दाचित करेंगे तो तुम्हारो द्वार पौरिया रहूंगो श्री ठ
कुर जी के दर्शन करो करूंगो तव वा वैष्नव नें श्री
ठाकुर जी पधराये सोनी की भांति सों सेवा करन
लागयो पाछें गुसांई दास तो वद्रिकाश्रम गये सो-
वद्रिकाश्रम में उहां गुसांई दास की देह छूटी पाछें
वा वैष्नव ने गुसांई दास की देह छूटी की खवर-
पाई तव वह वैष्नव सुख सों सेवा करन लागयो-
तव वह वैष्नव श्री आचार्य जी महा प्रभून की कृ-
पा ते भलो वैष्नव भयो सो वे गुसांई दास श्री आचा
र्यजी महा प्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भागवदीय
हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखवेये ॥ +

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्नव ॥२६॥ सम्बंध ॥ *

अव श्री आचार्य जी महा प्रभून
के सेवक माधो दास भट्ट
काश्मीर के वासी।
तिनकी वार्ता।
लिख्यते।

सो माधो भट्ट प्रथम केशव भट्ट के सेवक हुते सो-
केशव भट्ट श्री आचार्य जी महा प्रभून के पास श्रा

ये सो बहुत दिन रहे सो श्री आचार्यजी महाप्रभू कथा
कहते सो केशव भट्ट सुनते सो माधौ भट्ट श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के सेवकन में जाय बैठने तब भगव
दवार्ता कहते सो प्रथम प्रसंग चले तब माधौभट्ट
सों केशव भट्ट ने कह्यो जो तू मेरो संग छांड़िके उ
हां के सेवकन में क्यों जातहै वहां जाय के हांसी ठ
ठोरी करतहै तब माधौ भट्टनें केशवभट्ट सों कह्यो
जो मोकों तुम्हारो संग तथा तुम्हारी कथा ते उहां
की हांसी अच्छी लागत है तातें हौं जात हौं तब केस
वभट्टनें जान्यो जो अब यह हमारे काम को नाहीं
अब हमारे काम ते गयो पाछें केसव भट्टने श्री
आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो मैंने श्रीभाग
वत तुम पास ते सुन्यो पर मोकों कछू बोध न भयो
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो तुम
मेरी बराबर बैठि कें सुनो और ज्ञानि को भाव राखो
तातें बोध न भयो और माधो भट्ट की भागवत की
स्फुर्ति भई यह दैवी सृष्टी को प्रकार जान्यो तब
श्री भागवत की कथा सम्पूर्ण भई तब केसव भट्ट
ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कही जो कछु गु
रु दक्षिणा लेउ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने
कह्यो जो हम कछु लेत नाहीं तब केसव भट्टनें क
ह्यो जो मैं तुम कों एक सेवक समर्पित हों सो माधो
भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून कों सौंपे पाछें के
सव भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास तेवि
दा होय कें अपने देश कों गयो पाछें माधौ भट्टनें

श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास नाम पायो पाछें समर्पणा करवायो ॥

वार्तोप्रसंग १

और जा गाम में ..... माधो भट्ट रहत हुतो ता गांम में एक बड़ो गृहस्थ रहत हुतो ताके एक बे टा हुतो सो मरगयो तब वह गृहस्थ बहुत रोवन ला गयो विलाप करन लागयो और कहन लागयो जो कोउ याकों जिवावेगो तो मेंहू जीउंगो नाहीं तो मेंहू मरूंगो ऐसें कहि के बहुत सोक करे तब ए क वैष्णव पेंडे में जात हुतो तब वा गृहस्थ कों वि लाप करतो देखि के वाने कह्यो जो या गाम में माधो भट्ट करि के भगवदीय रहत हैं वे बड़े भगवदी य महा पुरुष हैं तिन के पास तू जा वे कृपा करेंगे तब तेरो लरिका जीवेगो तब वह गृहस्थ माधो भट्ट के पास आयो और बहुत विलाप करन लागयो और माधो भट्ट सों कह्यो जो यह लरिका मेरो जीवेगो तो मेंहू जीउंगो नातर मेंहू मरूंगो या भांति सों बहुत विलाप करे और रोवे तब वा गृह स्थकों देखि के माधो भट्ट को दया आई तबमन में विचार करने लागो जो याको बेटा जीवे तो आ छो है यह गृहस्थ भलो है यह बहुत विलाप कर त है बहुत दुख पावतहै यह विचार के माधो भट्ट के मन में बहुत खेद भयो और कह्यो जो याको दु खदूर होयतो भलोहै पाछें माधो भट्ट मन्दिर मेंजा य कें श्री ठाकुर जी सों बिनती कीनी एक श्लोक-

करि के श्री ठाकुर जी के आगें कह्यो ॥ सो
श्लोक ॥ +
दया सर्व समर्थस्य दुरवारो व
दयालुता ॥ विश्वोद्धारण दक्ष
स्य उत्तवे कस्य सोभने ॥१॥
यह श्लोक श्री ठाकुर जी ने सुनि कें कह्यो जो यह
कितनीक बात है जो तुम कों दया आई तो बासों क
हो जो जा तेरो बेटा जीवेगो पाछें माधौभट्ट श्री ठा
कुर जी कों पोढाय कें बाहर आये तब बागमहस्य
सों कह्यो जो जा तेरो बेटा जीवैगो परि बागमहस्य
कों विस्वास न परै मन में विचारे जो हूं घर जाउंगो
और जो कदाचित न जीयो होय तो कहा करूं मुख
ते तो कछु कह्यो न जाय परि मन में विस्वास परै
नाहीं इतने में घर के लोग दौरि कें आय बासों क
ह्यो जो तेरो बेटा जीयो है ताकी बधाई देउ त ब
वह गमहस्य माधौ भट्ट कों दंडवत करिकें अपने
घर आयो पाछें बधैया कूं बधाई दीनी और बहु
त हर्षित भयो पाछें माधौ भट्टनें अपने मन में वि
चार कीयो जो बहुत अनुचित कीयो अब ये लोग
याही भांति सों नित्य दुख देयंगे याते अब या गां
समें रहिवे कौ काम नाहीं ऐसो विचार कें रात्रि
जब आधी गई तब श्री ठाकुर जी कों जगाय संपु
टमें पधराय कें तुरत ही गांव छोड़ि कें चले सो
अडेल में श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास आ
य रहे दया आये ते स्यल छूटो श्री ठाकुर जी कों

आधीरात्रि के समय भाजनों परोतातें भावदीय कों जो काम करनों सो विचार कें करनों विना विचारें सर्व था नहीं करनों ॥

वार्ता प्रसंग २

और श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री भागवत की सुबोधिनी कहते सो माधौ भट्ट वेगी वेगि लिखवत जाते और जा ठौर न समझ परै ता ठौर लेखनी छोड़ कें बैठि रहते तब श्री आचार्य जी महाप्रभू माधौभट्ट कौं समझाय कें अर्थ कहते तब माधौ भट्ट समझ के आगे लिखते और श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें माधौ भट्ट या भांति सों बैठते सो पावन दीसें ऐसी सावधानी सों रहते ॥

वार्ता प्रसंग ३

और एकसमय श्री आचार्य जी महाप्रभू प्रदेस कों पधारें तब माधौ भट्ट साथ हे तब श्री आचार्य जी महाप्रभू पेंडे में एक गांम में उतरे तब रात्रि पहर डेढ़ गई हुती तब माधौ भट्ट उठि कें लघुवा धा कों गाम में आए तहां चोरन नें तीर चलायो सो माधौ भट्ट कें लाग्यो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून कों नाम लेत माधौ भट्ट नें देह छोड़ी तब इतने में श्री आचार्य जी महाप्रभून के साथ के वैष्णव आय गये तब देखें तौ माधौ भट्ट की देह छूटी है तब वैष्णवन के मन में सन्देह भयो जो माधौभट्ट सारि के वैष्णव की ऐसी गति क्यों वृझिये तब साथ के वैष्णवन नें श्री आचार्य जी महाप्रभून

सो पूछो जो महाराज यह बात कैसें होय जो मा धौ सा
रि के वैस्नव की ऐसी गति क्यों वूझिये तब श्री आ
चार्य महाप्रभून नें उन वैस्नवन सों कह्यो जो मा धौभ
दनें तौ श्री ठाकुर जी के चरणारविंद चांपे सो इन को
कछु कर्तव्यता रही नाहीं यह बड़ो भगवदीय हो प
रंतु सौ एक भागवद अपराध परयो हो तब वैस्नव
नै पूछी जो महाराज कैसो कहा अपराध परयो हो त
ब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो यह पहलें
अपने सेव्य श्री ठाकुरजी की सैया ऊपर फूलन की
वत हो सो एक दिन विना जानें फूलन में सुई रह गई
सो माधौभट्ट नें नाहीं कीनी सोवा सुई को श्री ठाकु
रजी के श्री अंग में स्पर्शी भयो सो ना अपराध तें
ऐसें भयो पीर याकी देह सावधानता सों छूटी है
भागवद नाम लेत छूटी ताते यह श्री नाथजी कृपा
सहै मेरी कान ते श्री नाथजी बुरी गति कबहू न
करेंगे अपने पास ही राखेंगे यह श्री आचार्य जी म
हाप्रभून नें अपने श्री मुख सों कह्यो ताते वैष्णवन
कों श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करनी
बहुत सावधानी सों वे माधौदास भट्ट श्री आचार्य
जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भागवदीय हे ताते
इन की वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ✤

वार्ता प्रसंग २ वैसाख ॥२७॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक गोपाल दास
तिनकी वार्ता ॥

सो गोपाल दास नें मार्ग चलन वारेन कों अपने
घर के पास विश्राम के लीये अस्थल करि राखे
हतौ जो मार्ग में विश्राम करे ताकों हेत यह जो
कोई भगवद भक्त आय रहे तासों भगवद वार्ता
करें ता कारन अस्थल करि राख्योहतो सो वहां
क समय पद्मावत उज्जैन के वासी सो द्वारिका
आवतेहे सो रात्रि को वा गाव में आय रहे सो गोप
लदास सेवा सों पहुंचि कें पद्मावत के पास आ
ए और पद्मावत सों पूछो जो तुम कहां ते आए
हो तब पद्मावत नें कह्यो जो हम श्री द्वारिका ते
आए हैं तब गोपाल दास नें श्री रणछोड़ जी के
कुशल समाचार पूछे तब उहां के समाचार पद्म
ावत नें गोपाल दास सों कहे पाछें पद्मावत की
जो बालपने ते अवस्था हुती सो बात चाली जो
पद्मावत द्वारिका में बहुत रहते श्री रणछोड़
जी के दर्शन बहुत करते सो जब खरची निवड़ती
तब अपने घर आवते सो पद्मावत के जिजमान
मावजी पटेल आजन कुनबी गांव के देसांई हु
ते सो पद्मावत द्वारिका जीते आवते तब मावजी
पटेल खरची देते सो लेकें जब पद्मावत द्वारिका
जी कों जाते तेमें वरष दिनमें तीन वार जाते पद्म
ावत को श्री रणछोड़ जी के विषें बहुत आसक्ति
हुती सो श्री रणछोड़ जी की वार्ता पद्मावत नें
गोपाल दास के आगें कही तब गोपाल दास नें अप
ने मन में कही जो जैसी इनको श्री रणछोड़ जी के

दर्शन में आसक्ति है तैसी इनको श्री महाप्रभून के
विषें आसक्ति होय तो इनको कार्य होय नातर इन
सों कछु कहिये तब गोपालदासनें पद्मनाभदास
सों पूछो जो तुम सों कबहू श्री गुसांईजी बोलत
हैं कछु कहत हैं कछु मांगत हैं तब पद्मनाभदासनें
कही जो मो सों तो कबहू कछु कहत नाहीं तब
पद्मनाभदास नें गोपालदास सों पूछो जो कहा श्री
गुसांईजी काहू सों बोलत हैं तब गोपालदास
नें कही जो हांहा बोलत हैं तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून की वार्ता कही जो तुमनें एते दिन श्री
गुसांईजी सेवा हैं सो श्री गुसांईजी प्रगट भए हैं
तब पद्मनाभदास नें पूछो जो वे कहां हैं तब गोपाल
दासनें कही जो वे अडैल में हैं तब पद्मनाभदास नें
कही जो जैसो दर्शन श्री गुसांईजी देत हैं तैसो द
र्शन श्री आचार्य जी महाप्रभू देयंगे तब गोपालदा
सनें कही जो हांहां देयंगे तब पद्मनाभदास के मन में
विश्वास आयो जो यह बात सत्य ताही दिन ते पद्म
नाभदास कों आतुरता भई जो कब में जाऊं और क
ब श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन पाऊं सो रात्र
कों वहां ही रहे ता पाछें सवारे गोपालदास सों वि
दा होय कें तहांते चलो सो मार्ग में विचार करत
जाय जो में कब जाऊं और कब श्री आचार्य जी मह
प्रभून के दर्शन पाऊं ऐसें विचार करत घर अपने
दरबान में आए परि चित्त उदास में रहो पाछें माव
जी पटेल सों मिले तब मावजी पटेल नें पूछो जो

गुरुजी अब कें तुम्हारो मन प्रसन्न देखियत नाहीं
सो काहे तें तब पद्मावल्लनें गोपालदास सो सुनीहै
सो सो बात कही जो श्री गोकुलेशजी अडैल में प्रगट
भए सो मेरो मनोरथ दर्शन करिवे को है सो जानों हौं
कब जाउंगो तब भावजी पटैल नें कह्यो जो तुम
गोकुलेशजी के दर्शन कों जात हौ सो मोहू कों अपने
साथ लेचलो तब पद्मावल्लनें कही जो तुम गऊ
की लोग हो तुम्हारी साथ बहुत मनुष्य होंयगे और
यह दर्शन तो एकांत स्थल को है तातें यह बात तो
मोकों भावत नाहीं तब भावजी पटैल नें कह्यो जो
हूं तो सर्वथा तुम्हारे संग अकेलोही चलूंगो तब प
द्मावल्लनें कह्यो जो भलो तब यह समाचार अपनी
स्त्री सों कहे और कह्यो जो मैं तो पद्मावल्लके संग
अडैल दर्शन कों जात हौं तब स्त्रीने कह्यो जो वहां
कहा है तब भावजी पटैल नें कह्यो जो वहां श्रीव
ल्लभाचार्य जी प्रगट भए हैं सो साक्षात श्री गोकु
लेशजी प्रगट भयेहैं और जैसो दर्शन श्री गोकुलेश
जी देत हैं तैसो दर्शन श्री आचार्य जी महाप्रभू देत
हैं सो यह बात सुनिकें भावजी पटैल की स्त्री के
मनमें बहुत उत्साह भयो और कह्यो जो आप के
संग मैं हूं चलूंगी तब भावजी पटैल नें कह्यो जो
मैंतो पावन चलोंगो तू कैसें चलैगी तब स्त्रीने
कही जो मैहूं पावन चलूंगी मेरें कछू लगेका तो
है नाहीं तब पैरी भावजी पटैल नें कह्यो तो हम
तुम दोऊजन चलेंतो घर कौन के भरोसे न हटा

स्त्री नें कह्यो जो मेरो घर ते कछु प्रयोजन नांही है
हों सर्वथा तुम्हारे साथ चलूंगी। तब मावजी पटै
लनें अपने मन में विचारयो जो याकों बहुत आतु
रता भई दर्शन को बहुत मनोरथ है तब कह्यो जो
भलो तूहू चल तब मावजी पटैलनें अपनो घर
काहू भले मनुष्य के हवालें करदीनो तब पट्म
ावत्ल मावजी पटैल तथा उसकी स्त्री विरजोये
तीनों चले सो जब प्रयाग पहुंचे तब अडैल को
दर्शन ... भयो तब बहुत आतुरता भई जो श्री
यमुनाजी होय के चल्यो जैये ता समें श्री ....
... आचार्य जी महाप्रभू श्री यमुना जी ऊपर प
धारे हुते सो सन्ध्यावन्दन करत हुते तहां सेव

क दोय चार साथ हुते तब इन तीनोंन कौं श्री आचा
र्य जी महाप्रभून कौ दर्शन भयौ तब तौ बहुतही आ
तुरता भई ता समें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें इन
कों देख्यौ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सेवक न
सों कह्यौ जो यह नाव पार लै जाउ पद्मनाभदास श्री र
णछोड़ जी के सेवक आये हैं सो इन तीनोंन कूं ना
व में बैठारि कें वेगि लै आउ सो नाव लैकें वैष्णव
पार आए तब उन वैष्णवन नें कह्यौ जो पद्मनाभदास
तीनोंजने होंय सो आवौ श्री आचार्य जी महाप्रभून
नें नाव पठाई है तब पद्मनाभदास और माधवजी पटैल
तथा उनकी स्त्री विरजा इन तीनों जनेन कों नाव में
बैठाय के लै आए तब श्री आचार्य जी महाप्रभून
कौ दर्शन भयौ सो जैसौ गोपालदास नें कह्यौ हुतौ
तैसौई दर्शन भयौ सो दर्शन करि कें मन में बहुत प्र
सन्न भये पाछें पद्मनाभदास नें श्री आचार्यजी महा
प्रभू पास नाम पायौ सो नाम पाय कें उठे तब पद्म
नाभदास नें बीनती करिकें कह्यौ जो महाराज अंगीक
र करिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें प्रसन्न
होय कें कह्यौ जो तू कहा कहत है तब पद्मनाभदास
नें कह्यौ जो मोकों गोपालदास नें कह्यौ है तासों
निवेदन करवाइये और पद्मनाभदास नें बीनती करि
कें कह्यौ जो महाराज माधवजी पटैल और माधवजी
पटैल की स्त्री विरजा ये दोऊजने आप की सरणागे
ये हैं तिन कौं नाम निवेदन करवाइये तब श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें कृपा करके नाम समर्प

णाकरवायो पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू आपभो
तर पधारे तव श्री आचार्यजी महाप्रभूननें पद्मरा
वल सों कह्यो जो तुम महाप्रसाद इहांई लीजि
ये तव पद्मरावल नें वीनती करिकें कह्यो जो महा
राज मोकों तुमनें श्री रणछोड़ जी को दर्शन दीनों
है सो स्वरूप आप कृपा करिकें आरोगोगे तव
श्री आचार्यजी महाप्रभून कों दर्शन भोजन कर
तमें पद्मरावल कों श्री रणछोड जी को दर्शनभयो
सो साक्षात श्री रणछोड़ जी भोजन करत हैं तव प
द्मरावल कों दृढ विस्वास भयो तव श्री आचार्यजी
महाप्रभू आपभोजन करि कें विराजे तव महाप्र
साद को पातर पद्मरावल कों कृपा करकें दीनी
पाछें पद्मरावल नें वीनती कीनी जो महाराज मो
कों कहा आज्ञाहै तव श्री आचार्य जी महाप्रभून
नें आज्ञा दीनी जो तुम श्री ठाकुर जी की सेवा करो
तव पद्मरावल नें कह्यो जो जैसो मेरो मन महारा
ज के स्वरूप में लग्यो है तैसो मन सेवा में लगे तो
सेवा करूं तव श्री आचार्य जी महाप्रभूननें कह्यो
जो तुम श्री ठाकुर जी की सेवा सो करो जो तुम्हरो
मनोरथ श्री ठाकुर जी सब पूरन करेंगे तव पद्मरा
वल श्री आचार्य जी महाप्रभून सों विदा होयकें
अपने देश कों गये तव पद्मरावल अपने देस में
जायकें श्री ठाकुर जी की सेवा करन लागो तव अ
पने सेव्य श्री ठाकुर जी को सेया वनवाई सो सेया
छोटी भई तव श्री ठाकुर जी नें कह्यो जो या सेया

पे मोपै सोयो जाय नाहीं पाछें पद्मावल नेंदस
री सेवा वडी करवाई नाके ऊपर श्रीठाकुर जी
पौढन लागे श्रौर श्री ठाकुर जी सानुभाव जनावन
लागे श्रौर एक समय पद्मावल की स्त्री ने श्री ठा
कुरजी कों भोग समर्प्यो तामें खीर नाती समर्पी
तव श्रीठाकुर जी नें खीर में श्री हस्त मेल्यो तव खी
र वहुत नाती लागी सो श्री ठाकुर जी ने श्री आचा
र्यजी महा प्रभून सों कह्यो श्रौर श्री हस्त कमल दि
खायो सो लाल परि गयो तव पद्मावल श्री आ
चार्यजी महा प्रभून के पास वैठे हते तव पद्मा
वल सों श्री आचार्यजी महा प्रभून नें कह्यो जो त
वी खानें श्री ठाकुर जी कों नाती खीर समर्पी सो

श्रीठाकुरजी कों तातो खीर न समर्पिये तव पद्म
रावल ने श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो
श्रीठाकुरजी ने एक मुहूर्त्त लों सेरी कयों न होंनें
दीनी तव श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो
श्रीठाकुरजी तो बालक हैं श्रीठाकुरजी कों भोग
धरे पाछें विलंब न सहि सकें याते जो भोग धरि ये
सो बहुत तातो न धरियें सो पद्मरावल कों श्री आ
चार्य जी महाप्रभून नें ऐसी आज्ञा दीनी आज्ञा
दैकें श्रीठाकुरजी कों ऐसो अनुभव जतायो पाछें
पद्मरावल अपने घर आये तव यह बात अपनी
स्त्री सों कही पाछें पद्मरावल बहुत सावधानी
सों सेवा करन लागे श्री आचार्यजी महाप्रभूनकी
कृपाते श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे
जोचहियेसो मांगिलेते अपनी सववात कहतेसोवे
पद्मरावल गोपाल दास के संग ते ऐसे भगवदीय हैं
ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥

वार्ता प्रसंग १ वैष्णव २८

अव श्री आचार्यजी महाप्रभू न के सेवक पद्मरावल सों चौरा ब्राह्मण उज्जै न के वासी ति नकी वार्ता लिख्यते

सो पद्मरावल अडेल में आय कें श्री आचार्यजी
महाप्रभून के सेवक भए सो गोपाल दास वांसवाडा

के तिनकी वार्ता में लिख्यो है विस्तार करि कें पाछें
अपने देस कौं चलन लागे तब श्री आचार्य जी म
हाप्रभून सों बीनती कीनी जो महाराज हों तो अति
मूर्ख हौं जड़ हों कछु जानत नाहीं और मेरी जाति
के ब्राह्मण महा कर्मी जड़ हैं स्माती हैं सो मोकों
दुख देत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें अ
पने चरणारविंद कौ चन्दन और चरणामृत दीनों
और कह्यो जो तोकों सब सिद्धांत स्फुरेगो सो च
रणामृत लीनो सो इतने ही में सब सिद्धांत स्फुर्द भयें
पाछें देश उज्जैन में आए पाछें बड़े २ ब्राह्मण प्रति
दिन पूछन लागे तब जितनेन ने पूछो तिनकूं प्र
ति उत्तर दैकैं सब विदा किये सो पद्मनाभदास कों
श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते ऐसी वि
द्या स्फुर्द भई जो बड़े पंडित जीत कें विदा कीये वे
पंडित प्रति उत्तर दैन सके ॥ +

वार्ता प्रसंग १

और पद्मनाभदास द्वारिका श्री रणछोड़ जी के द
र्शन कों चले तब श्री रणछोड़ जीनें स्वप्न में कह्यो
जो राज नगर में एक सेवक हमारो है ताके घर तू
जैयो और पाक उहांई करियो तब पद्मनाभदास
नें कह्यो जो महाराज मैंतो जानत नाहीं और वि
ना बुलाए में कौन के घर जाऊं तब श्री रणछोड़
जीनें कही जो वह तोकों आपही बुलावन कों
आवेगो पाछें श्री रणछोड़जीने अपने सेवकन
सों कह्यो जो पद्मनाभदास इहां आवेंगो सो उनकीसे

वातू नीकी भांति सों करि यों औरु अपने घर प-
धराय पद्मरावल कों रसोई भली भांति सों करि
यों तव वा सेवक नें श्री रणछोड़जी सों कह्यो जो
महाराज मैं उन कूं कैसें जानूंगो तव श्री रणछोड़
जीने कह्यो जो वे तो प्रसिद्ध हैं तू आपहीने जानें
गो तव कितनेक दिन में पद्मरावल उहां आये
सो वा गांव के वाहिर उतरे सो पद्मरावल के सा
थ विद्यार्थी एक हुतो तासों पद्मरावल ने कह्यो
जो तू गांम में जाय कें कोरी भिक्षा मांग लाउ तव
वह विद्यार्थी गांव में गयो सो चार पांच ठौर ते कोरी
भिक्षा मांग लायो तव पद्मरावल ने वा विद्यार्थी सों
कह्यो जो तू अन्न जाजा कैसें लायो है ताता कैसें उल
टों फेर आउ तव वह विद्यार्थी जाजा को अन्न लायो
हो सो ताकों फेरन लाग्यो तव एक ने कह्यो जो तुम
लेगये हे अव फेरन क्यों आए हो तव वा विद्यार्थी ने
कह्यो जो मैं कहा करूं हमारे वड़े गुरू हैं तिनकी
आज्ञा मानी चाहिये तव वा विद्यार्थी सों कह्यो जो
तुम्हारे गुरू को नाम कहा है तव वा विद्यार्थी ने क
ह्यो जो मेरे गुरू को नाम पद्मरावल है तव वह श्री
रणछोड़ जी को सेवक विद्यार्थी के साथ चलो आ
यो सो आय के पद्मरावल सों कह्यो जो मेरे घर पधा
रौ तव पद्मरावल नें कह्यो जो हूंतो काहू के घर जा
त नाहीं तव वा ने कह्यो जो मोकों श्री रणछोड़जी
ने आज्ञा दीनी है जो तू पद्मरावल कों अपने घर प
धराइयो सो रसोई भली भांति सों करवाइयो तव

पद्मरावल कों अपने घर पधराए रसोई भली भां
ति सों करवाई सो पद्मरावल ने रसोई करि श्रीठा
कुर जी कों भोग समर्प्यो पाछें प्रसाद लीयो और
रात्रि कोंउहांही सोय रहे तब सबों पद्मरावलव
लन लागो तब श्री गोकुलेश जी कों सेवक राखन ला
गो तब पद्मरावल रहे नाहीं ॥

वार्ता प्रसंग ॥२॥

बहुर एक दिन आटो बहुत मिल्यो और घृत थो
रो मिल्यो तब जितनी रोटीवा घृतमें चुपड़ी गई
सोतो ऊपर धरी और कोरी हुती सो नीचे राखी त
ब श्रीठाकुर जी को भोग समर्प्यो और कह्यो जो
महाराज विनु चुपरी रोटी तो रहन दीजियो और
चुपरी रोटी आगारियो तब श्री ठाकुरजीनें तो
सबही रोटी आरोगी पाछें पद्मरावल सों कह्यो जो
तेने मेरे आगे काहे कों धरीं मेरे आगो जो तू धरै
गो सो आरागूंगो पाछें महाप्रसाद लेन कों बैठे तब
रोटी बहुत अद्भुत स्वाद भयी तब पद्मरावलने क
तनीक रोटी बची सो साथ बांधि लीनी सो नित्य
जब पाक करि भोग समर्प पाछें प्रसाद लेन कों
बैठते तब रोटी मेंते एक टूंक मोलि लेते तब महा
प्रसाद लेते पाछें कितनेक दिन में द्वारका जाय
पहुंचे तब श्री गोकुलेशजी कों दर्शन कीयो दिन
पांच सात रहि कें श्री गोकुलेशजी सों विदा होय
कें चले तब मार्ग में गोपाल दास वास वाड़ा के घ
र आये तब रात्रि कों उहांही रहे तब पद्मरावल

ने गोपालदास सों कह्यो जो तुम्हारी कृपा ते मोकों श्री आचार्यजी महाप्रभून कौ दर्शन भयो और तुम्हारी कृपा ते मोपै श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कृपा करी सो पद्मनाभन श्री आचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपा पात्र भागवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां ताई लिखिये ॥

वार्ताप्रसंग ॥३॥ वैष्णव ॥२९

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक पुरुषोत्तमजोसी माध्योरा ब्राह्मणकी वार्ता लिख्यते ॥

सोरठक समय पुरुषोत्तमजोसी वनारस कों चले सो मार्ग में उज्जैन आयो सो उज्जैन आय के पूछो जो पद्मनाभ के बेटा कहां रहत हैं .... सो पद्मनाभ के बेटा चारि हुते सो तीन बेटा तो इकठोरे हुते और बड़े बेटा कृष्णभट्ट सों न्यारे हुते सो पुरुषोत्तमजोसी जहां पद्मनाभ के तीन्यो बेटा इकठोरे हुते तिनके घर गये तिननें पुरुषोत्तमजोसी कों देखो सो अन्न दीयो सो कछू भूखे रहे तब मन में कह्यो जो पद्मनाभ के बेटा ऐसे क्यों बूझिये वे तो सूधे ब्राह्मण है पा हैं कृष्णभट्ट नें सुनी जो पुरुषोत्तमजोसी आए हैं तब कृष्णभट्ट ने पुरुषोत्तमजोसी कों अपने घर पधराय तब भली भांति सों प्रसाद लिवायो तब

पुरुषोत्तम जोसी वहुत प्रसन्न भये दिनचार राखे तव पुरुषोत्तम जोसी चलन लागे तव कृष्ण भट्ट साथ चले सो मजल जाय उतरे तव रात्रि कों जव कृष्णभट्ट सोये तव पुरुषोत्तम जोसी ने अपनी स्त्री सों पूछो जो कृष्णभट्ट सोये तव स्त्री ने कहीजो हां सोये तव पुरुषोतम जोसी नें श्री आचार्यजी महाप्रभून की वार्ता कही पाछें कृष्णभट्ट ने मन में विचारयो जो पुरुषोत्तम जोसी नें मेरे आगें श्री आचार्यजी महाप्रभून की वार्ता नाहीं कही परि हौं अव कछू चर्चा वार्ता चलाउं सो जव श्री गोकुल मजल पांच सात रह्यो तव कृष्णभट्ट ने प्रसंग चलायो सो पुरुषोत्तम जोसी घोड़ा पे हुते सो वे तो विह्वल भए तव कृष्ण भट्ट नें पुरुषोत्तम जोसी की

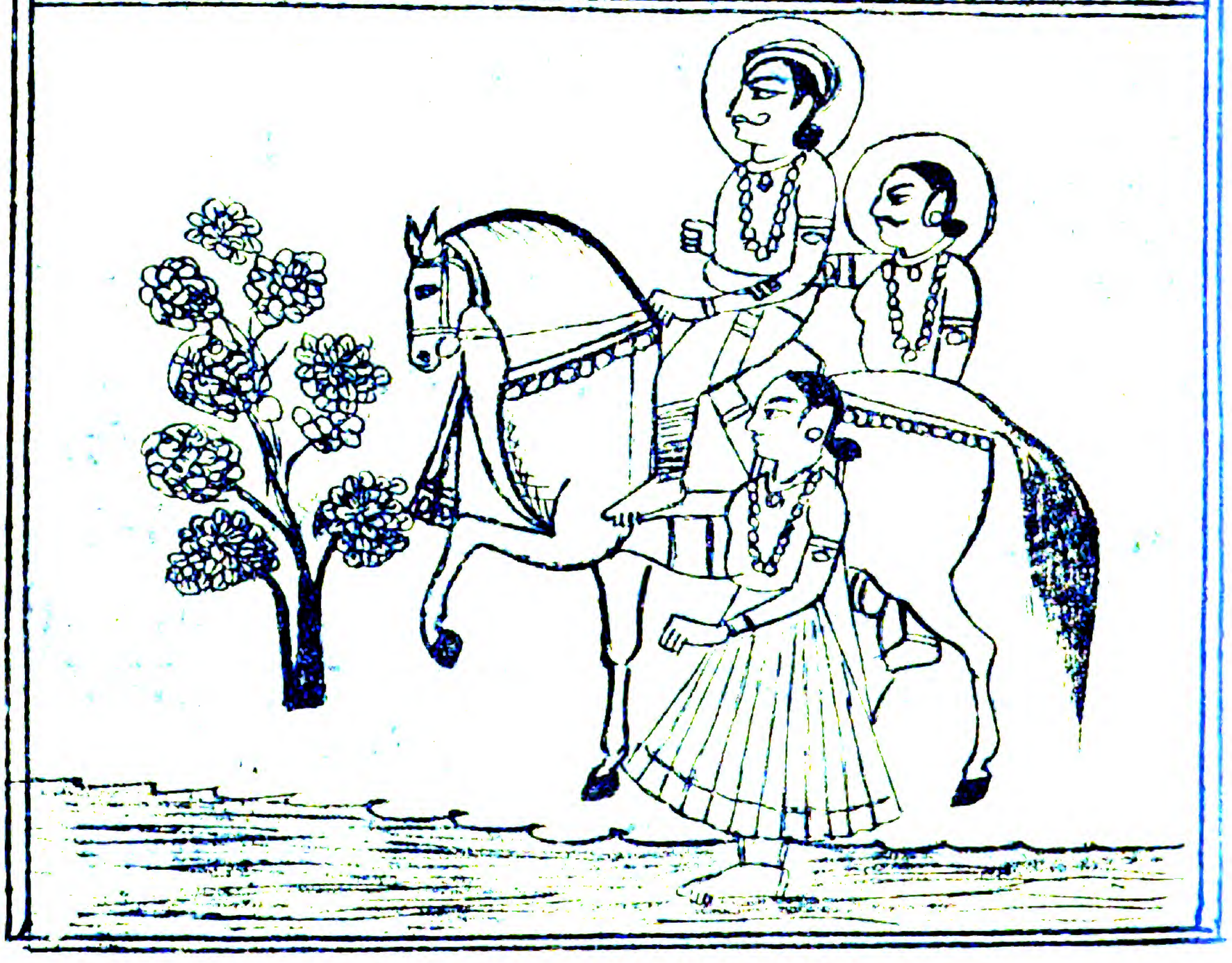

स्त्री सों कह्यौ जो एक ओर ते तुम थांमे रहो और एक
ओर तें मैं थामत हौं तब कृष्णभट्ट ने वार्ता चलाई
सो भगवद वार्ता में पुरुषोत्तम जोसी तो विह्वलभ
ये सो घोड़ा ऊपर रह्यौ न जाय तब दोउ जने श्रम पा
स थामें जाय ऐसे करत मजल आय उतरे तब घो
डा ऊपर ते उतारन लागे तब पुरुषोत्तम जोसी ने
कह्यौ जो मोकों तुम क्यों उतारत हो तब कृष्णभ
ट्टनें कह्यौ जो मजल कौ मुकाम आय पहुंचो है
ताते उतारत हैं पीरे पुरुषोत्तम जोसी कों मंजल
आयवे की खबर नाहीं भगवद वार्ता में रसाविष्ट
भए सम्पूरण दिवस भयो पीरे प्रसाद लेवेहू की
कछु सुधि रही नांही ऐसें करत कितनेक दिनमें
श्री गोकुल आय पहुंचे तब पुरुषोतम जोसी ने
श्री गुसाईजी कौ दर्शन कीनों और श्री गुसाईजी
सों पूछ्यौ जो महाराज कृष्णभट्ट के ऊपर ऐसी कृपा
काहे ते भई है तब श्री गुसांई जी ने कह्यौ जो याकों
चाचा हरिवंस जी कौ संग है ताते ऐसो भयो तब
पुरुषोतम जोसी कौ गर्भ निवर्त भयो और अति
प्रसन्न भये और कृष्णभट्ट सों आप वार्ता पूछन
लागे पाछें कितनेक दिन रहि कें श्री गुसाईजी सों
विदा होय के चले सो उज्जैन आये मार्ग में भागवद
वार्ता करत चले आये और दोउ जने अति प्रसन्न
भए सो वे पुरुषोतम जोसी श्री आचार्यजी महाप्र
भून के ऐसे कृपा पात्र भागवदीय हे ताते इनकी
वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥वार्ताप्रसंग॥१॥ वैष्णव ३०॥ संबंध ८७॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न सेवक जगन्नाथ जोसी
तिनकी वार्ता

सो जगन्नाथजोसी ने श्री ठाकुर जी कों वा
गो पहराय सब सिंगार करि कें राज भोग कों यार
आगो आन राख्यो तब जगन्नाथ जोसी के मन
में आई जो श्री ठाकुर जी वागे पहरेंही आरोगत
हैं ताते यार छूट जायगो तब श्री ठाकुर जी ने जग
न्नाथजोसी के मन की जानी तब यार में लात मा
रि केंडार दीनों तब जगन्नाथ जोसी ने और पाक
वेगिवेगि करिकें यार परोसि श्री ठाकुर जी के

आगें आनि राख्यो तब श्रीठाकुर जी के मनमें आ
ई जोवैसेही फोरि लीत मार के डार दीनों तब फेर
तीसरीवेर पाक करिके श्रीठाकुर जी के आगें
आनि राख्यो तबहू श्रीठाकुर जी ने लात मारि कें
डारि दीनों तब चौथीवार पाक करन लागे तब
जगन्नाथजोसी बहुत श्रमित भये पाछें नीचौमा
थो करिकें विचार करन लागे जो कौंन अपराध
ते श्रीठाकुर जी आगेगात नाहीं थार डार देत हैं
पाछें बहुत बीनती कीनी तब श्री ठाकुर जीने यह
बात जताई जो तू थार छुइ वेते डरमत है तौनू
हमारे आगे काहे कों आनि राखत है इतनों व
चन श्री ठाकुर जी को सुनि कें जगन्नाथ जोसी
चौंक उठे तब नाक भूमि में घिस बहुत मनहार
करिकें कह्यो जो महाराज मैंतो कछू जानत ना
हीं अब मेरो अपराध क्षमा करियें पाछें श्रीठा
कुर जी आगेगे परि मास दोय लों बोले नाहीं के
र बहुत बीनती कीनी तब बोलन लागे ऐसो सरल भाव
हुतो॥ ✻॥ ✻॥ ✻॥ ✻॥

वार्ता प्रसंग १॥

और जगन्नाथ जोसी श्रीठाकुर जी कों भोग
समर्पिते तामें ताती खीर बहुत समर्पित सो श्री
ठाकुर जी वैसीही तानी खीर आगेगाते सो कि
तनेक दिन पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू गुज
रात पधारे तब खिरालू में जगन्नाथ जोसी के घ
रउतरे तब श्रीठाकुर जी को दर्शन कीयो तब दे

दे तो श्रीठाकुर जी के श्रोष्ठ राते हैं तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून [illegible]
जिह्वा श्रौर श्रोष्ठ राते क्यों हैं तब श्रीठाकुर जी नेक
हाँसे जो जगन्नाथ जोसी सों कों तानी खीर बहुत
समर्पत हे सो तैसी ही में आगेलत हों तब जगन्नाथ
जोसी सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो त्
तानी खीर श्री ठाकुर जी कों क्यों समर्पत है तब जग
नाथ जोसी नें कह्यो जो महाराज हम तो कछू जान
त नाहीं जो ऐसी बात है हम तो जानत तो तानी खी
र भली तब श्री आचार्य जी महाप्रभूनें कह्यो जो
खीर सुहाती भली खीर बहुत तानी न समर्पियेता
पाछें जगन्नाथ जोसी वैसे ही करन लागे ॥ ÷

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

श्रौर एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभूनके
दर्शन करिवे कों जगन्नाथ जोसी अडेल कों चले
तब मार्ग में अन्नकूट को दिन आयो तब एक सेव
क साथ हतो तासों कह्यो जो चामर दार घृत खां
ड श्रौर कछु आछी सामग्री मिले सो सब लै आउ
तब वह सेवक गयो तब देखे तो गांव में कछू नाहीं
तब वह सेवक फिर आयो श्रौर कह्यो जो इहां तो
कछू मिलत नांही एक ज्वार मिलत है तब जगन्ना
थ जोसी नें कह्यो जो भलें ज्वार ही लै आउ तब गां
म में जाय कें ज्वार लीनी तब आछी भांति कूट फ
टक छानि बीन चुनि कें लै आये पाछें जगन्नाथ
जोसी नें वा ज्वार को रोमर कीयो तब वा सेवक नें

कह्यो जो मुखी निकसी है मो ताकों टोकरा में करि
अपर राख्यो जो ताकी वाफ़ सों जल्दी होय आवेगो
तब जगन्नाथ नें कह्यो जो भलें तब वह टोकरा ख
दखदान लाग्यो तब वह टोकरा धामें गिर पर्यो
सो सब इकठोरो मिलि गयो पाछें भगवद इच्छा
मानि कें जैसो तैसो श्री ठाकुर जी कों भोग सम
र्प्यो पाछें भोग सराय महा प्रसाद लीयो तब जोसी
रात्रि कों सोयो तब श्री ठाकुर जी ने कह्यो जो मेरे
पेट में दूखत है तब जगन्नाथ जोसी ने सुतिवा-
श्रौर सोंठ श्रौर अजवायण समर्पी पीर मन में
पश्चाताप बहुत भयो पाछें श्री ठाकुर जीनें कह्यो
जो अब मेरे पेट में सुख भयो ॥+

वार्ताप्रसंग ३

बहुरि एक समय जगन्नाथ जोसी अपने सेव्य श्री
ठाकुर जी कों उत्थापन करि कें पास ठाढे हते श्री
ठाकुर जी कों मूंछा करत हते श्रौर वैष्णव ठाढे द-
र्शन करत हते ता समय एक रजपूत गांमिया
आयो सो वे वैष्णव हतो सो आय कें वैष्णवन में
ठाढो भयो ता समय एक डोकरी फूल की माला
लैकें आई सो वह माला दूर तें श्री ठाकुर जी के ऊ
पर वानेंडारी तब जगन्नाथ जोसी कों रिस चढी
सो माला वैष्णवन के ऊपर डारी सो वह माला वे-
वैष्णव के गले में जाय परी तब वा गांमिया रजपू
त कों रिस आई तब गांमिया नें अपने मन में वि
चारी जो देखो या जोसी ने माला वाको दीनी श्रौ

र मोकों न दीनो पर भलो जो रजपूत को जायो जोय
जोसी कों ठौर मारू तब वह रजपूत तरवार हाथ में
लेके नित्य तकत फिरे दाव पावै तो घात करै त-
ब जगन्नाथ जोसी एक दिन वहि भूमि ते आवत
हते तब वा रजपूत नें जगन्नाथ जोसी के ऊपर पी
छे ते तरवार चलाई तब श्री ठाकुर जी ने वह त
वार श्री हस्त में थांभी और श्री मुख में कह्यो।

याकों मार मति वह तब वह गयो तब जगन्ना
जोसी फिर के देखे तो श्री ठाकुर जी आसन मंडे
पीछें ठाढे हैं तब जगन्नाथ जोसी ने वा गरीमेया
सों कह्यो जो फिरि पापी तेनें यह कहा कीयो
तब वह रजपूत तरवार डारि कें जगन्नाथ के पा
वन परयो और कह्यो जो मेरे ऊपर कृपा करिये

अनुग्रह कीये और जगन्नाथ जोसी के पाव
हाथ सो पकर रह्यो तब जगन्नाथ जोसी कों द
या आई तब वा कों नाम दीयो सो जगन्नाथजोसी
ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है तब वा रजपूत कों गा
न्नाथ जोसी ने नाम दीयो निवेदन करवायो तब
वह भलो वैष्णवदीय भयो वैष्णव के बीच ठाढ़ो
रह्यो ताको फल सिद्ध भयो ऐ जगन्नाथ जोसी
ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे तासूं इनकी वार्ता
कहां ताई लिखिये ॥ * ॥

॥ वार्ताप्रसंग ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ ३१ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक जगन्नाथ जोसी
की माता तिन
की वार्ता।
लिख्यते

ताकें दे बेटा हुते बड़े बेटा को नरहर जोसी और छो
टे बेटा जगन्नाथ जोसी विद्यार्थी के वामी तिन दो
उन सो माता नें कह्यो जो तुम जाय के श्री आचार्य
जी महाप्रभून के पास नाम पाइ आवो और समर्प
ण करवाय आवो और बेटान के हाथ में एक एक
मोहर दीनी सो मोहर एक लाटी में मोन्नि कें वे दोउ भा
ई अडैल कों चले सो कितनेक दिन में अडैल जाय
पहुंचे सो श्री आचार्य जी महाप्रभू तो अडैल में
हुते नाहीं ... आप तो पुरुषोत्तम क्षेत्र श्री जगन्नाथ
रायजी के दर्शन कों पधारे हुते सो जगन्नाथ जोसी

नाहर जोसी ने विचार कीयो जो हम छिपि रहेंगो तौ हमारी माता खोजैगी जो नाम समर्पण कीयो कि नु तुम क्यों आए ताते आपुन पुरुषोत्तम क्षेत्र च लैं यह अपने मन में विचार करकें जगन्नाथ जो सी और नरहर जोसी ये दोउ भाई पुरुषोत्तम क्षेत्र कों चले सो थोरे दिन में पुरुषोत्तम क्षेत्र जाय पहु चे जाय के पूछो जो श्री आचार्य जी महा प्रभू आ कहां रहत हैं तब एक वैष्णव ने घर बताय दी नों तहां ये दोऊ भाई गये तब श्री आचार्य जी मह प्रभून कों दर्शन कीकें बैठे तब श्री आचार्य जी महा प्रभून ने पूछो जो तुम्हारी माता नाकी है तब इनको बहुत आश्चर्य भयो जो ये तो हम कों पह चानत हैं और हम तो कबहूं देखे नाहीं और श्री आचार्य जी महा प्रभून नें फेरि पूछो जो श्री ठाकु र जी के दर्शन कर आये तब इन दोउनें कह्यो जा महाराज नाहीं किये तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें आज्ञा दीनी जो जाय कें दर्शन करी आवो तब ये दोऊ भाई दर्शन कों गये नहां देखें तो श्री आचार्य जी महा प्रभू जगन्नाथ राय जी के पास खड़े हैं तब इनकों आश्चर्य भयो जो यह कहा हमनें इनकों अबही घर देखि आये हते तब मन में फिर जानी जो दूसरी थार होयगी तहां होयकें आये हों यंगे फेरि मन में सन्देह भयो पाछें दर्शन करिकें आ ये तब देखें तो श्री आचार्य जी महा प्रभू बैठे हैं तब आय कें दंडोत कीकें बैठे तब दोऊ भाई विस्मय

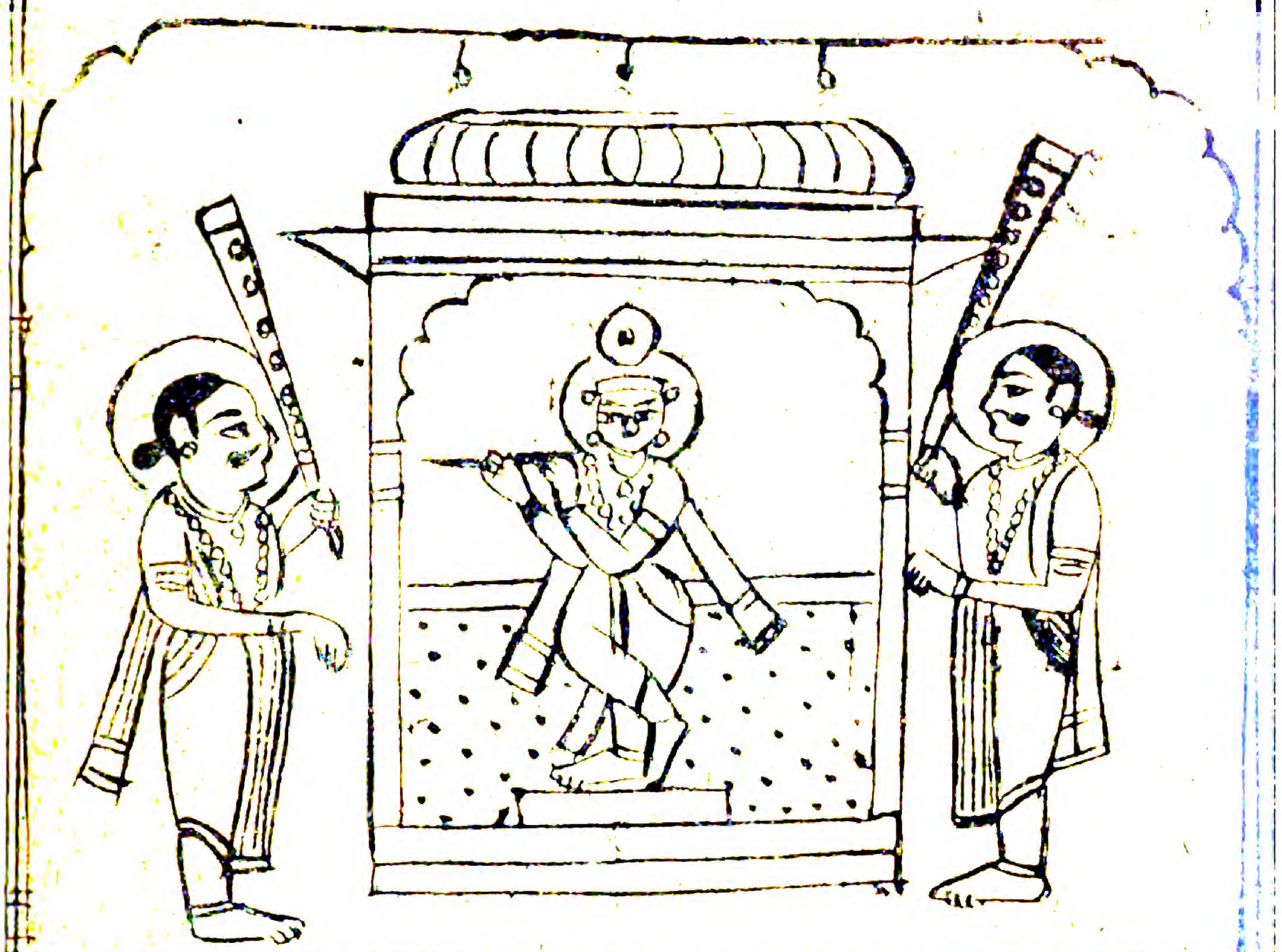

भये आपस में मोहंडो देखन लागे चकृत होय रहे
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पूछो जो दर्शन
कीर आये पीर जो तुम्हारे मन में सन्देह आयो
हतो सो निवर्त भयो तब इन दोउ भाई ने कहो
जो सन्देह तो निवर्त भयो तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून ने कह्यो जो तुम्हारी माता ने भेट मो
हर पठाई हैं सो लावो तब नाठी मेते मोहर का
दि कें आगे धरी पाछें नाम निवेदन करवायो
अपनो महात्म इन दोउ भाईन कों आपने जैसो
दिखायो सो स्वरूप धारि भई ता पाछें बहोत कि
तेनक दिन रहि कें आज्ञा मांगि के चले सो मार्ग
में श्री आचार्यजी महाप्रभून के स्वरूप कों वि-

चार करत जाय ऐसें करत अपने घर आय पहुंचे
सब माता सों सब समाचार कहे तब माता बहुत प्र
सन्न भई पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून का कृपा
ते भरचे भगवदीय भए ताते इनकी वार्ता अब कहां
तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ३२ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक नरहर जोसी जाम्ना
य जोसी के बड़े भाई ।
तिनकी वार्ता ।
लिख्यते ॥

सो एक समय नरहर जोसी पुरुषोत्तम क्षेत्र श्री जग
न्नाथ राय जी के दर्शन को चले सो तहां मंजल जा
य उतरे तब स्नान करिकें रसोई करी श्री ठाकुर जी
कों भोग समर्प्यो तब देखें सो एक बालक वय दस
को एक रूख ऊपर ते उतर कें आय ठाढ़ो भयो तब
वा बालक कों देखि कें नरहर जोसी को आश्चर्य भ
यो जो यहां यह लरिका कहां ते आयो तब वह ल
रिका नरहर जोसी के आगें हाथ पसार कें मांगन लो
ग्यो तब नरहर जोसी ने अपने मन में विचारयो जो य
ह सुन्दर लरिका मेरे आगें काहे कों हाथ पसारो
तब नरहर जोसी नें दे गारी धी मों चुपरि कें तिनके
ऊपर डारि धरि कें बालक के हाथ में दीनी तब वह
बालक इमली के रूख ऊपर चढ़ि गयो पाछें फेरि न
रहर जोसी देखे सो वह बालक नाहीं तब दूसरे दि

न मजल जाय उतरे स्नान करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो तब तैसें ही वह बालक इमली के रूख ऊपर ते उतर कें आयो और तैसें ही हाथ पसा रयो तब नरहर जोसी कों और सन्देह भयो जो कोउ छत्रि वे कों आयो होय तो कैसें देउ और जो भगव द स्वरूप होय तौ प्रसादी महा प्रसाद कैसें देउ त ब यह सन्देह करि कें वा बालक कों कछू न दीनो तब वह बालक रूख ऊपर चढ़ि गयो पाछें नरहर जोसी नें महा प्रसाद लीयो सो यह बात रिवाल् में जगन्नाथ जोसी सों श्री ठाकुर जी ने कही जो आज में नरहर जोसी के पास गयो हौ तहां में हाथ पसार कें मागयो परि मोकों कछू न दीयो तब जग ना थ जोसी ने वह दिन वह महीना वह सम्वत्व

हवार लिखि राख्यो जो नरहर जोसी आवेंगो तब पूछेंगो तब कितनेक दिन पाछें नरहर जोसी अपने घर आये तब माता सों भाई सों मिले पाछें दूसरे दिन दोऊ भाई सेवा में हाजर तब जगन्नाथ जोसी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून के कुशल समाचार पूछे जो नीके हैं पाछें जगान्नाथ जोसी ने नरहर जोसी सों कह्यो जो अमुके सम्वत में अमुक महीना में अमुकी तिथि में अमुके वार पटना ते आगें पेंडे में मजल उतरे तब रसोई करिकें श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो नहीं कोऊ बालक हाथ पसारत देख्यो तब नरहर जोसी ने कह्यो जो एक दिन तौ में सुन्दर बालक देख कें दै रोटी घी सों चुपरि ता ऊपर दाल धरिकें दीनी और दूसरे दिन तो मोको सन्देह भयो जो कोऊ छलिवे कों आयो होय तो कैसें दउ ताते न दीनी तब जगन्नाथ जोसी नें कह्यो जो तुमने बुरी कीनी जान दीनी चेतो श्री ठाकुरजी आपहुते और जब आपन दोऊ भाई श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों गये हुते तब हमारी माता नें मोहन भेंट पठाई हुती सो आपन सन्देह करि गर्वा हुती तब आप श्री आचार्यजी महाप्रभून ने मांग लीनी तातें अपने मार्ग में श्री आचार्य जी महाप्रभून विना श्रीठाकुर जी विना और संदेह न करनों अपने मार्ग में श्री आचार्य जी महाप्रभू के बल प्रताप ते उन विना कछू न संभवे तब दोऊ भाईन के मन में यह निश्चय भयो ॥ +

वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥

श्रीद्वारकसमयनरहर जोसी कों जिजिमानश्र
लियान गाव में रहतो ताकों नाम महीधर जी हतो
तथा ताकी बहन कों नाम फूलवाई हतो तिनसों
नरहर जोसी ने कह्यो जो तुम श्री गुसांईजी के पास
नाम पावो वैष्नव होउ तब उन कह्यो जो भलें श्र
वश्य तुम श्री गुसांईजी कों पधरावो तब नरहर जो
सी आगें आय कें श्री गुसांईजी कों पधराय कें श्र
लियान में गये तब महीधर जी तथा फूलवाई
सों कह्यो जो श्री गुसांईजी पधारे हैं तब दोउ भा
ई बहन अत्यंत प्रसन्न भए तब महीधर जी ने न
रहर जोसी सों कह्यो जो में श्री गुसांईजी को खाली

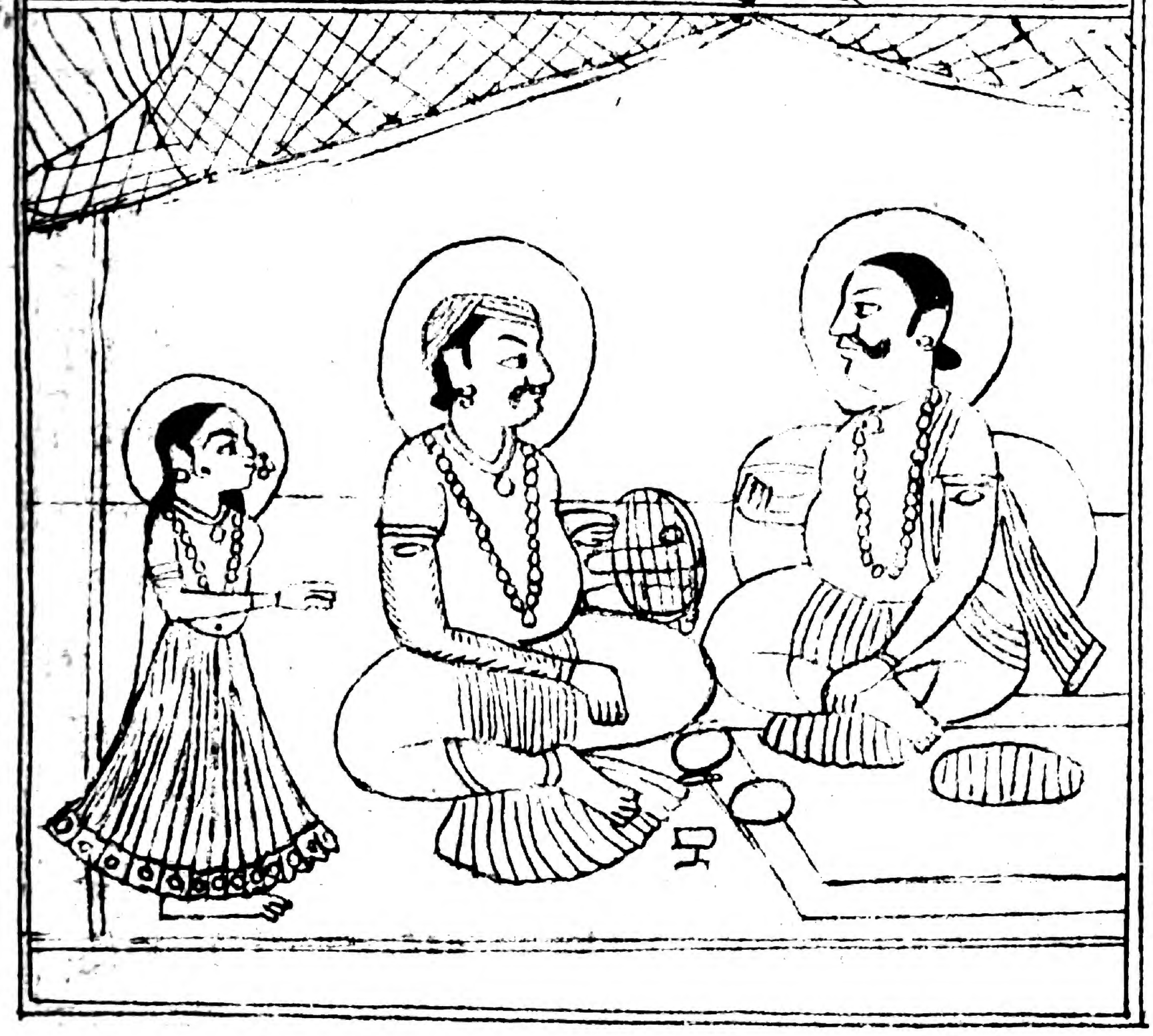

हाथन कैसें पधारूं तब मद्दी धा जीने नरहर जोसी सों रुपैया मोहरन की खीचरी करवाय कें न्योंछावर करि कें श्री गुसाईं जी कों अपने घर में पधरायत पाछें मद्दी धर जी फूलवाई तथा सब वाल गोपाल सब कुटुम्ब कों श्री गुसांई जी के पासनामदिवायो निवेदन कर वायो और भली भांति सों श्री गुसांई जी की सेवा करि कें विदा किए पाछें श्री गुसांई जी द्वारिका कों पधारे तब नरहर जोसी खिरालू अपने घर आये ता पाछें कितनेक दिन में वा अलियान गांव में आगि लगी ता समय नरहर जोसी खिरालू के तालाव के ऊपर ते नित्य कर्म करिकें तुलसी फूल की डारी तथा झारी हाथ में लैकें घर आवत हुते ता समय नरहर जोसी के मन में आई जो अलियान गाम में आग लगी तब नरहर जोसी पेंडें ठाढ़े होय कें तुलसी दल बीच में धरि कें झारी में ते जल लेकें अंजुली सों तुलसी दल के पास पानी की धारा करके कुंडलिया कीनी इतने ही में अलियान मे आग बुझी और मद्दी धर जी की हवेली घर सब वच्यो ता पाछें कितनेक दिन में नरहर जोसी अलियान में गए तब फूलवाई ने नरहर जोसी सों कह्यो जो यहां आगि को उपद्रव बहुत भयो है सो श्री गुसांई जी की कृपा ते अपने तो कल्याण भयो तब नरहर जोसी ने कह्यो जो प्रभून की कृपा ते सदा कल्याण ही होय इतनो कहि कें नरहर जोसी खिरालू आये तब महाप्रसाद लीयो पाछें

दोऊ भाई एकांत बैठे तब नरहर जोसी ने जगन्नाथ जोसी सों कह्यो जो मैं एक दिन नित्य कर्म कर कें तालाव के ऊपर ते आवतहुतो तुलसी फूल कीडा रीतथा झारी मेरे हाथ में हुती और अलियानगां व में आगि लगी सो वात कही तब नरहर जोसी सों जगन्नाथ जोसी नें कह्यो जो आपुन कों इतनों हट। कीयो न चाहिये जो श्री ठाकुर जी कों श्रम करवायो यह अपने मार्ग की रीति नांही तब नरहर जोसी ने क ह्यो जो मैंतो हठ नाहीं कीयो परि मेरे मन में ऐसी आयी जो ये अवही वैष्णव भए हैं और आगि लगी ताते मैनें ऐसो कीयो तब दोऊ भाई हंसि मुसिक्याय चुप कर रहे पाछें कह्यो जो प्रभू वड़े की वुकी हैं इनकी कृपा ते सब भलो होय आपन हठ न कीजै यह अपनों धर्म नाहीं ताते श्री वल्लभ राज कुमार की अद्भुत लीला है सरणा आये तिनकों अतिही कल्याण होय सो वे नरहर जोसी तथा ज गन्नाथ जोसी तथा इनकी माता ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे जो परमार्थ के लिये ऐसें कीयो ताते इनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो अब कहां तांई लि खिये ॥ + ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥२॥ वैष्णव ॥३२॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक एकाव्यास साचोरा। ब्राह्मण गोधरा के वासी तिनकी वार्ता लि०॥

सो जगान्नाथ जोसी ने प्रथम राणाव्यास पास नाम
पायो हुतो फिर श्री आचार्य जी महा प्रभून पास नाम
पायो परि जगान्नाथ जोसी राणाव्यास के पास बहुत
रहते सो एक समय राणाव्यास भगवद इच्छा ते गो
धरा की वेस्या नें इनसों संग कीयो सो वात राजद्वार
में सुनी तव हाकिम के प्यादे राणाव्यास कों लेन आ
ये तव जगान्नाथ जोसी ने राणाव्यास कों और गांम
में कर दीनों पाछें जगान्नाथ जोसी तहां अकेले रहे
और वे प्यादे आये हुते सो राणाव्यास कों ढूंढन
लागे तव जगान्नाथ जोसी नें कह्यो जो राणाव्यास
तो इहां नाहीं चलो हो उत्तर देउंगो तव जगान्नाथ जो
सी कों लाय कें हाकिम के आगे ठाड़ो कीयो तव
हाकिम ने कह्यो जो राणाव्यास कहां है उननें पराई
स्त्री सों अन्याव कीयो है तातें वाकों लावो और
मेंतो जगान्नाथ जोसी कों नीकें जानत हो जो जाकों
नाम जगान्नाथ जोसी सों कवहूं अन्याव न करै यह
तो राणाव्यास नें अन्याव कीयो है ताते उनकों ला
उ तव जगान्नाथ जोसी ने कह्यो जो मेरी कही सुनों
तो में कहूं तव हाकिम ने कह्यो जो कहो तव जग
न्नाथ जोसी ने कह्यो जो राणाव्यास ने अन्याव
नाहीं कीयो राणाव्यास ऐसो काम कवहूं न करै
तव हाकिम ने कह्यो जो क्यों जानिये तव जगान्ना
थ जोसी ने कह्यो जो मेरी कही मानों तो में कहूं जो
राणाव्यास के बदले जो कछु कहो सो में करूं त
व हाकिम ने एक पैया को मुगदर मगायो सो अ

गिन में मेलि कें तातो कीयो तव जगन्नाथजोसी स्ना
नकरिकें आयो तव जगन्नाथजोसी नेठाड़ो होय
कें कह्यो जो रागाव्यास नें अन्याय कीयो होयतो
मोकों अगिनजराय के भस्म करि डारियो और नाही
अन्याय कियो होयतो मुगदल शीतल होयजइ
यो पाछें वह मुगदल अगिन मेंसे काढ़ि कें दीउ हा
थन मों उठाय अपने गरे में मल्यो सो घड़ी१ लों
राख्यो सब जने चोले जो जोसी तू काढ़ि तव जगन्ना
थ जोसी ने कह्यो जोहूं काढ़ि कें कौन कें गरे मेंडारूं
तव हाकिम नें कह्यो जा मेरे गरे में डारो पाछें जोसी
ने भूमि में डार दीनों तव भूमि जरगई तव सब जने
कहन लागे जो जगन्नाथजोसी तुम धन्य हो तुम
सांचे हो तुमकों तुम्हारे धनी कों अैसो सांच है यों
कहिकें जगन्नाथजोसी को समाधान करिकें क
ह्यो जोसी तुमकछू मांगो मैं तेरे ऊपर प्रसन्न भयो हों जो
जोसी ने कह्यो जोइतनों मागत हों जो जानें यहचु
गली करी है तासों कछू मति कहियों तव यह सु
निकें हाकिम तथा सब जने वहुत प्रसन्न भये पाछें
जगन्नाथ जोसी अपने घर आये वे अैसे भगवदी
यहे जो श्री आचार्यजी महाप्रभून की कृपा ते कहा
न होय ॥ ÷ ॥÷

वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥

और पाछले रागाव्यास नें माधोदास भारस्वत
के पास नाम पायो हुतो पाछें श्री आचार्यजी महा
प्रभून के सेवक भये तव परम वैष्णव भये सोइ रागा

व्यास सिद्धपुर में रहते सो गणाव्यास और जगन्ना
थजोसी सरस्वती में स्नान करतहुते ता समय ए-
क रजपूतानी सती होयवे कों आई तव गणाव्या
स के पास जगन्नाथ जोसी हुते तिनने पूछो जो सती
होत है ताको प्रकार कहा तव गणाव्यासनें कहो
जो प्रेत के संग वृथा ऐसो शरीर जरावत हैं जो गा-
णाव्यास नें मूंड हिलाय के कह्यो जो वह रजपूतानी
सती होन आई हुती ताने देख्यो तव वा रजपूतानी
नें क्षाय के मनुष्यन सों कह्यो जो हूं तो न जरूंगी
मोकों सत नाही है तातें मेरी हत्या चढ़ेगी ऐसें क-
हि कें बहुत हसिं दीनी और जरी नाहीं तव वे लोग
वा मृतक कों जराय कें वा स्त्री कों गांम के वाहिर
झोंपरी करि दीनी तव स्त्री उहां रही ता पाछें गणा
व्यास न्हायवे कों आये तव वा स्त्री ने गणाव्यास
सों आय कें पूछो जो तुमने मूंड हलाय के कहावा
त कही ता वात के देखतें हों न जरी ताते मोसों क
ह वात कही तव गणाव्यास नें कह्यो जो हमतो
आपुस में हंसत वात करत हुते तव स्त्री ने कह्यो
जो हमसों काहे कों दुरावत हो जो वात होय सो क
हो और बहुत आग्रह कीयो तव गणाव्यास ने क-
ह्यो जो हम आपस में हंसत हुते जो यह ऐसी उत्त
म देह पाय के नाहक प्रेत के साथ जरावत है यातें
हसों श्रीठाकुर जी की सेवा न कीनी न भजन कीयो
ऐसी उतम देह धरि कें श्री ठाकुर जी कों न भज्यो
तव वा स्त्री ने गणाव्यास सों कह्यो जो हूं तो तुम्हा-

रीपारणाहों जो जा भांति यह देह श्रीठाकुरजी के
काम आवै सो करौ तब यह बात सुनिके राणा
व्यास ने कह्यो जो अबतौ तोकों सूतक है सूतक उ
तरेगो तब होयगो तब स्त्री अपने स्थल कों गई प
रिवाकों वहुत विरह उत्पन्न भयो जो दिन प्रति दि
न आवै सो राणाव्यास कों दर्शन करि जाय ऐसें क
रत सूतक उतस्यो तब सुद्ध होय कें राणाव्यास के
प्रास आई तब राणाव्यास ने कही जो तू सवारे आ
इयो सो वा स्त्री ने वादिन कछू खायो नाही पहिलें
चनाचवाय वें रहती सो वादिन वा स्त्री ने जल पान
हूं नाहीं कीयो पाछें प्रातःकाल भयो तब राणा
व्यास के आयवे कौ समो भयो तब आय के बैठि र
ही तब राणाव्यास आये और स्नान करिकें भागवद
स्मरण कीयो तब वा स्त्री सों कह्यो जो तू स्नान क
रिकें बैठि रही पाछें राणाव्यास ने श्री आचार्यजी
महाप्रभून कौ ध्यान धरिकें वाके कान में नाम सु
नायो तब नाम सुनतही वा स्त्री कौं भागवद भाव
उत्पन्न भयो तब वा स्त्री नें राणाव्यास सों पूछो जो
अब में कहा करूं तब राणाव्यास ने कह्यो जो आ
व भागवद सेवा करि तब वा स्त्री ने कह्यो जो मेरी
स्थित तौ ऐसी है जो तुम कछू टहल देउ सो में क
रूं पाछें राणाव्यास उपरना पटनी धोयवे कों
देते सो धोयकें सिद्ध करिकें पहुंचावती प्रसाद
राणाव्यास के घर लेती ऐसें करत राणाव्यास के
घर कौ काम काज सब करन लागी पाछें भागवद

सेवाको सब काज काम करन लागी सो कितनेक दिन पाछें एकी व्यास के घर श्री आचार्यजी महाप्रभू पधारे तब एकाव्यास नें वा स्त्रीकों श्री आचार्यजी महाप्रभून पास नाम निवेदन करवायो तब वह स्त्री परम वैष्णव भई सो एकाव्यास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग। २। वैष्णव ॥ ३३ ॥

श्रव श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक रामदास सारस्व तब्राह्मण राजनगर में रहते तिन० की वार्ता

सो रामदासजी के मांथे नटवर गोपालजी श्री आचार्यजी महाप्रभूननें श्रोर अपनी पादुकाजी सेवा के लिये पधराय दीनी सो सेवा सदैव करें ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे सो रामदास विवाह करिकें पृथ्वी परिक्रमा कों चले सो। कितनेक दिन में पृथ्वी परिक्रमा करिकें अपने घर आये परि राम दास स्त्री कों अंगीकार न करते तब दि न दे तथा चारि रहिकें द्वारिका कों चले तब रामदास की स्त्रीहू साथ चली परि राम दास स्त्रीको साथ न आवन देहि ईंटन सों मारें परि रामदास की स्त्री तो दूर दूर साथही भई श्रोर रामदास के दासकी पातर में झूठ न उबरे सो खाय नाहीं भूखी ही परि रहे परंतु पति के साथ साथही रहे तब एक दिन श्री रणछोड़ जीनें रामदास सों कही जो तू अपनी स्त्रीकों अंगीकार करि त्याग काहेकों

करतहे तव रामदास ने कही जो में विरक्त हों वेगी
हों मेरो स्त्री सों कहा काम हे तव श्री गणछोड़ जी नें
कह्यो जो तेने विवाह काहे कों कियो जोतू श्री आचार्य
जी महा प्रभून को सेवक हे तोकों ऐसी निठुरता न चाहि
ये जो श्री आचार्य जी महा प्रभून को सेवक जानि कछू क
हत नाहीं अब हों कहत हों तू अपनी स्त्री कों संगी
कार करि तव रामदास नें अपनी स्त्री सों कह्यो जो
तू मेरे साथ चली आउ तव मार्ग में रामदास के सा
थ जान लागी तव मजल जाय उतरे तव रामदास नें
अपनी स्त्री सों कही जो तू वस्त्र साज लेकें डेरा में
बैठी रहियो और में ऊपरा वीनि लाउं पाछें आय

तानकीर रसोई करी श्रीठाकुर जी कों भोगसम
र्प्यो भोग सराय पाछें प्रसाद लीयो और स्त्री कों
प्रसाद दियो सो कितनेक दिन मार्ग में चले आये
पाछें एक दिन श्री गणाछोड जीनें रामदास कों आ
ज्ञा दीनी जो तू अपनी स्त्री कों नाम दै तब रामदास
ने कह्यो जो हूं नाम कैसें देउं तब श्री गणाछोड जी
ने कह्यो जो तू नाम दै मेरी आज्ञा है तब श्री आच
जी महाप्रभून कों नाम लै श्री गणाछोड जी की आ
ज्ञा ते स्त्री कों नाम दीयो तब स्त्री के हाथ को म
हाप्रसाद लेन लाग्यो पाछें कितने क दिन में श्री
आचार्य जी महाप्रभू गज नगर पधारे तब रामद
सनें आयकें श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन
कीये तब रामदास ने कह्यो जो महाराज मेरी स्त्री
कों नाम समर्पण करवाइये तब आपने कह्यो जो
अबतो तेनें नाम दीयो है फेरि कहा तब रामदास ने
कह्यो जो महाराज मैंतो श्री गणाछोड जी की आज्ञा
ते नाम दीयो है और मोकों श्री गणाछोड जी की आ
ज्ञा है जो श्री आचार्य जी महाप्रभून पास नामनि
वेदन करवाइयो तब यह सुनि कें श्री आचार्य जी
महाप्रभून नें नाम निवेदन करवायो पाछें घर आ
य गृहस्थाश्रम करन लागे वे रामदास श्री आचा
र्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे
ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥*

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥३४॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू

नके सेवक गोविंद दुवे सांचौरा ब्राह्मण ति नकी वार्ता ॥

सो गोविंद दुवे श्री ठाकुरजीकी सेवा नीकीभां तिसों करें पीर मन में विग्रह्‌यो तब गोविंद दुवे नें श्री आचार्यजी महाप्रभून कों वीनती पत्र लिख पठायो जो महाराज मेरे मनमैं विग्रह बहुत रहतहै ताते मैं कहा करूं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून ने नवरत्न ग्रंथ प्रगट करि गोविंद दुवे कों लिख पठायो और पत्र में लिख्यो जो याग्रंथ को पाठ तू नित्य करियो सो तेरी विग्रह ता सब मिट जायगी सो छपा पत्र आयो तब गोविंद दुवे नव रत्न को पाठ करन लागो सो पाठ करत गोविंद दुवे की सब विग्रहता मिट गई तब श्री ठाकुरजीकी सेवा नीकी भांति सों करन लागो ॥

वार्ता प्रसंग १

और एक समें गोविंद दुवे मीरा बाईके घर हुते तहां मीराबाई सों भगवद वार्ता करत अटके तब श्री आचार्य जी ने सुनी जो गोविंद दुवे मीराबाई के घर उतरे हैं सो अटके हैं तब श्री गुसांईजी ने एक श्लोक लिखि पठायो सो एक ब्रजवासी के हाथ पठायो तब वह ब्रजवासी चल्यो सो वहां जाय पहुंचो ता समय गोविंद दुवे संध्या वन्दन करतहुते तब ब्रजवासी नें आय के वह पत्र दीनों सो पत्र वांचि कें गोविंद दुवे तत्काल उठे तब मीराबाई

बहुत समाधान की यो परि गोविंद दवे नें फिर पाछें नदेख्यो ॥१॥

वार्ताप्रसंग २

और एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू आप द्वारि का पधारे तब गोविंद दवे और जगन्नाथ जोसी और पांच सात वैष्णव हुते सो आप के साथ हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून सों द्वारिका में वीनती कीनी जो महाराज क छू कथा कहिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें गोवि द दवे सों कह्यो जो अबही तो मोकों अवकाश नाहीं तब गोविंद दवे नें वीनती कीनी जो महाराज थोरी सी कहिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कथा कहिवे कों पोथी

खोलीतव इतने में गोविंद दुवे सों श्री रणछोड़ जी वा तें करन लागे तव आपनें गोविंद दुवे सों कह्योजोपो थी खुलाय कें वातें कौंन सों करत हैं तव श्री आचार्यजी महाप्रभूननें फिर देख्यो जो श्री रण छोड जी सों वातें करत है तव आपनें पोथी वांधी और फिर आप पोढ़े ॥२॥

वार्तिप्रसंग ३

और सव वैष्णव श्री आचार्यजी महा प्रभून के यार कौ म प्रशाद पावते तव एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभूननें खवास सों कह्यो जो तुम इन वैष्णवन कौं यार कौ महा प्रशाद मति देउ सो ता दिन श्री आचार्यजी महा प्रभू भोजन करि कें उठे हुते सो उठतही खवास नें यार छूय कें मांजि धसो तव श्री आचार्य जी महा प्रभून के यार कौ महा प्रशाद न मिल्यो सो तादि नि सव वैष्णवन नें उपवास कियो तव श्री रणछो डजी नें श्री आचार्यजी महा प्रभून सों कह्यो जो तुम इन वैष्णवन कौं यार नित्य देत हो तैसें इनकों नि त्य दीजियो तव दूसरे दिन श्री आचार्यजी महा प्र भून नें गोविंद दुवे और जगन्नाथ जोसी सों कह्यो जो तुम नें काल्हि महा प्रसाद कों नहीं लीनों भूखे काहे कों रहे तव गोविंद दुवे और जगन्नाथ जोसी ने श्री आचार्य जी महा प्रभून सों वीनती करि कें कह्यो जो महाराज काल्हि आप के यार कौ महा प्रशाद न मिल्यो तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो तुमकों अपने यार कौ महा प्र

साद तो न देतो पीरि तुम्हारी सिपारस बड़ी ठौर नैं भ
ई है तातें अब देनो पर्यो पाछें जो नित्य थार को
महाप्रसाद देत हुते तैसेंही देनें लागे तब ये वैष्ण
व प्रसन्न होय कें रसोई करन लागे तब तहां तो
ई श्री आचार्य जी महाप्रभू द्वारिका में विराजे
तहां तांई वैष्णव पास रहे पाछें श्री आचार्यजी
महाप्रभू श्री रणछोड़ जी सों बिदा होय कें अडेल
कों पधारे तब सब वैष्णव श्री आचार्यजी महा
प्रभून के सा थ आए सो श्री आचार्यजी महा
प्रभून कों अड़ेल में पहुचाय कें फेर अपने अप
ने घर आये पाछें श्री ठाकुर जीकी सेवा करन
लागे सोइ गोविंद दुवे श्री आचार्यजी महाप्र
भून के ऐसे परम कृपापात्र भागवदीय हैं तातें
इन की वार्ता अब कहां तांई लिखिये ॥*

वार्ता ॥४॥ वैष्णव ॥ ३४ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक राजा दुवे भाऊ। दुवे दोऊ भाई सांचौरा ब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो नागाम में दोऊ भाई सांचौरा ब्राह्मण और रहते सो एक को नाम हरिकृष्ण हतो और एक को नाम राम कृष्ण हतो सो बड़ो भाई रामकृष्ण पढ़ो बहुत हुतो और छोटो भाई मूरख हतो सो बड़ो जो पढ़ो हुतो सो गांम के चौंतरा ऊपर

बैठि कें पटैल के आगें कथा कहतौ और छोटो भाई-
मूरखहुतौ सो खेती की रखवारी करतौ सब टहल क
रतौ सो वह बड़ो भाई कछू काम गयोहुतौ दूसरे गां
म में सो तादिन इहां की कथा रहगई पाछें एकदिन
मेह की वर्षा बहुत भई सो वह छोटो भाई खेततेउठि
कें घर आयो तब भावज नें कह्यो जो तुम रोटी जे
लेउ तब देवर नें कह्यो जो सीत बहुत लागतहै
और में बहुत भीज्योहूं लातेतू तातो परोसे तो मेंजे
ऊं तब भावज नें कह्यो जो तू खाय तो खानातर-
में जाय कें सोय रहतहूं अब तू कहा गांम केचौंतरा
ऊपर बैठि के पटैल के आगे कथा कहेगो कै वादे
की गवास फरेगो लाने खानो होय तो खा नातरहूं
तौजाय कैं पड़ि रहूंगी और जैसो है तैसो खा नात
र कहूं उठि जा तब देवर के मन में बहुत दुख-
लाग्यो और अपने मन में विचारयो जोहूं या देश
को त्याग करूं कहूं निकस जाऊं ता पाछें घर में
ते निकस कें मन में विचार करन लाग्यो जो राजे
दुवे माधौ दुवे बड़े महापुरुष हैं ताते इनकोंनमस्क
र करि कें जाऊं पाछें तहां गयो तब राजा दुवे माधो
दुवे दोऊ माईन को नमस्कार कीयो और रोवन ला
ग्यो तब दुवे जीने पूछो जोतू कौंन हैं पाछें देखि कें
पहिचान्यो तब वासों कह्यो जोतू तो अमुके को
बेटा है हरिदत्त तेरो नाम है और तू हमारो जाति
कौंहै सो तोकों अैसो कहा दुख है तासों तू रोवत
है तब पाने कह्यो जो मेरे दुख को पार नाहीं तब

दुवेजीने कह्यो जो तू अपनों दुख काहि तोकों का
हा दुख है तब यामें कह्यो जो तुम मेरो दुख कों दूर
करो तो मैं कहूं तुम बड़े हो महापुरुष हो तब दुवे
जी ने कह्यो जो श्री ठाकुर जी बड़े हैं वे सब कों दु
ख दूर करेंगे तू अपनों दुख काहि तब याने सब
समाचार कहे जो मोकों भावज नें ऐसे ऐसें व
चन कहे हैं सो मेरे हृदय में खटकत हैं ताते मैं तु
म पास आयो हूं सो मेरो दुख तुम से दूर होयगो पाछें दु
वे जीनें वाकों समाधान कीयो समाधान करि
के वाकों महा प्रसाद लिवायो पाछें रात्रि कों सो
य रह्यो तब प्रातःकाल भयो तब वासों दुवे जी नें
कह्यो जो तू स्नान करि आउ तब वह जाय के स्ने
त करि स्नान कर के आयो तब माधो दुवे सों
राजा दुवे ने कह्यो जो अब कहा करिये तुमहीं
जानो तुम्हारी जीभ चली है जो तुम करोगे नाहीं
तो कैसें छूटोगे झाड़ लग्यो है तब माधो दुवे नें कह्यो
जो अब तौ तुम्हारी शरण आयो है तुम श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के सेवक हौ अब तौ याको
कार्य कीयो चाहिये तब पहिले तौ याको क्षौर
करवायो पाछें स्नान करवाय कें मन्दिर के द्वार
के आगें बैठायो तब माधो दुवे ने राजा दुवे सों
कह्यो जो अब याको कहनो होय सो कहो तब
राजा दुवे ने माधो दुवे सों कह्यो जो तुम्हारो यह
महै मेरो काम नाहीं ताते तुमहीं कहो तब माधो
दुवे ने राजा दुवे सों कह्यो जो तुम बड़े हो ताते

तुमहीं कहो तब राजादवे ने माधोदवे सों कह्यो
जो मेरी आज्ञाहै नाते तुमहीं कहो तब माधोद
वे ने वाकूं उपदेशदीयो अष्टाक्षर मंत्र कान में
कह्यो पाछें वाकूं अष्टोत्तर सत नाम को जप कर
वायो सो जप कीयो सो राक एक माला जप की
ये पाछें संस्कृत बोलन लाग्यो तब माधोदवे ने
राजा दवे सों हँसि कें कह्यो जो अब आज्ञा होयतो
एक वार याकों फेरि जप करवाइये तब राजाद
वे ने माधो दवे सों कह्यो जो अबपुन करवाइये
पाछें माधो दवे ने दूसरी वार जप करवायो तब
भगवद स्वरूप स्फुर्द भयो और पुराण दूनिहा
स में ज्ञान भयो तब माधो दवे नें राजा दवे सों
कह्यो हँसि के कह्यो जो आज्ञा होय तो अब फेर
याकों जप करि वाइये तब राजा दवे में माधो दु
वे सों कह्यो जो अब यह दूतने ही को पात्र है अ-
धिक सभाय नाहीं और कह्यो जो तुम कछु मन
में मति लाइयो जो हमते भयो है ताते यह कछू भ-
यो है से श्री आचार्य जी महा प्रभून की कृपा ते भ-
यो है तुमारो तुम्हारो स्वरूप तो वे जानत हैं पाछें वा ने
उहां ई प्रसाद लीयो पाछें दवे जी की आज्ञा मांगि कें
अपने गांम के चौतरा ऊपर जाय बैठो और कथा क
हन लाग्यो पहलें बडो भाई कथा कहतो सो वह गां
व गरीब जानि कें कोई न आवतो सो वा दिन अहंतेवा
को सेक आयो ताने कथा कहत देख्यो तब वा ने
गांम के पटैल सों आय कह्यो जो तुम कथा सुनवे

कों क्योंनगरा भट्टजीतो कथा कहि रहे हैं तब पटेल
थके देखे तो भट्टजी कहा कथा रहे हैं तब पटेल नें
कह्यो जो भट्टजी अबतांई तुम कथा कहन कों नाहिं
आगा तब भट्टजीनें कह्यो जो पहिले बड़े भाई कथा
कहते ताते में नाहीं आवतो अबवे और गाम गए हैं
ताते मे कथा कहिवे कों अब आयो हूं तब वे भाव
इच्छा ते भट्टजी भलीभांति कथा कहन लाग्यो ताते
सब कोउ बहुत प्रसन्न भए और सब कोउ कहन
लागे जो हमारो बड़ो भाग्य है जो अब के ऐसो ब्रा
ह्मण मिल्यो तब कितने क दिन में वह कथा सम्पू
र्ण भई तब सबनें मिलि कें भट्टजीकी पूजा करी
और कह्यो जो अबलों तुमहीं कथा कहिवो करो
कथा कों आड़यो पाछे यह ब्राह्मण माधोदुवे के
पास आयो आय के बीनती करी जो तुमारी कृपा
ते मैंनें कही जो जाकी यह पूजा मिली है सो तुम
लेउ यह सब द्रव्य तुम्हारो है तुम मेरे गुरू हो तब
जादुवे माधोदुवेनें कह्यो जो हमारे और तुम्हारे
गुरु श्री आचार्यजी हैं ताने यह द्रव्य सब उनको
है हमारो यामें कछू नाहीं तातें यह द्रव्य सब अडेल
पहुंचावनो तब वा ब्राह्मण नें सब द्रव्य अडेल
पहुंचायो सो कितनेक दिन पाछें गमदास सांचौर
ब्राह्मण और जगन्नाथजोशीये वैस्नव श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के दर्शन कों अडेल जात हैं तिन
के साथ वह द्रव्य अडेल पहुंचायदीयो तब कित
नेक दिन में वाको बड़ो भाई आयो वह गांव गयो

हुतो सो आयो तब यानें राजा दवे मा धो दुवे सो क
ह्यो जो तुम आज्ञा देउ तो मेरे पिता को ग्राम है सो
फेरों तब दुवे जी ने कह्यो जो अब कहा कछु संदेह
है तूजा सब सिद्धि होयगो तब वह दुवे जी सों आ
ज्ञा लेकें वा गाम कों चल्यो सो जाय पहुंच्यो पाछें
वा राजा सों मिल्यो आशीर्वाद दीयो तब वह रज
पूत वा भट्ट कों देखिकें बहुत प्रसन्न भयो और क
ह्यो जो हमारो बड़ो भाग्य जो तुम कृपा करि कें आ
ये और कह्यो तुम डेरा करो तब उन डेरा कीयो पाछें
रसोई की सामिग्री चलती करी पाछें सब जने भट्ट
जी के पास आय बैठे तब भट्टजी नें एक श्लोक को
व्याख्यान करो तब वे सब जने बहुत प्रसन्न भये और
र कह्यो जो तुम पांच रात्र कृपा करिकें रहो.. पाछें तुम
री विदा करेंगे ऐसें कहि कें वे तो अपने घर को
गये पाछें रसोई करि श्री ठाकुर जी कों भोग सम
र्प्यो भोग सराय कें महा प्रसाद लीयो तब दूसरे दि
न सब मिलि कें विचार करन लागे जो भट्ट जी की
विदा कब करिये और कहा करिये और यह ग्रा
म्ना बहुत योग्य है और बहुत दिन में आयो है
तब उन सबन में एक वृद्ध हुतो तिन नें कह्यो जो
याकों १००९ मन तो अन्न देउ और एक मत याकों
मुद्रा देउ और याके पिता को ग्राम पुरातन भूमि है
सो एक १०० सो बीघा है सो याकों लिखि देउ -
इतनों लिखि देउ जो हम हूं ब्राह्मण गिनाते छूटें तब
सबन नें कह्यो जो यह ठीक बात कहे है सो याको

कह्यो सबन को करनों चाहिये पाछे सबनें मिल-
के चौठी निमित्त दीनी और कह्यो जो याको अन्न
सिद्ध है सो ले जाउ तबभट्ट नें कह्यो जो यह सब-
अन्न मेरे घर पहुंचाओ तब वा अन्न को गाड़ि-
यि दीने और कह्यो जो अपने साथ लिवाय लेना
उ और सबनें मिलिके वस्त्र दीने और गाय और
एक भैंस और सत मुद्रा इतनों याको दीयो और
कह्यो जो तुम इतनो प्रति वर्ष आय कें लै जायो क
रो तब भट्ट जी सबन सों विदा होय कें अपने गांव
कूं चले सो आप पहुंचे तब अपने द्वार के आगे आ
य पुकार्यो और पुकार कह्यो जो मामो चिरंजी-
वी सोनहों पटैल के चौतरा ऊपर कथा कहिकें गो

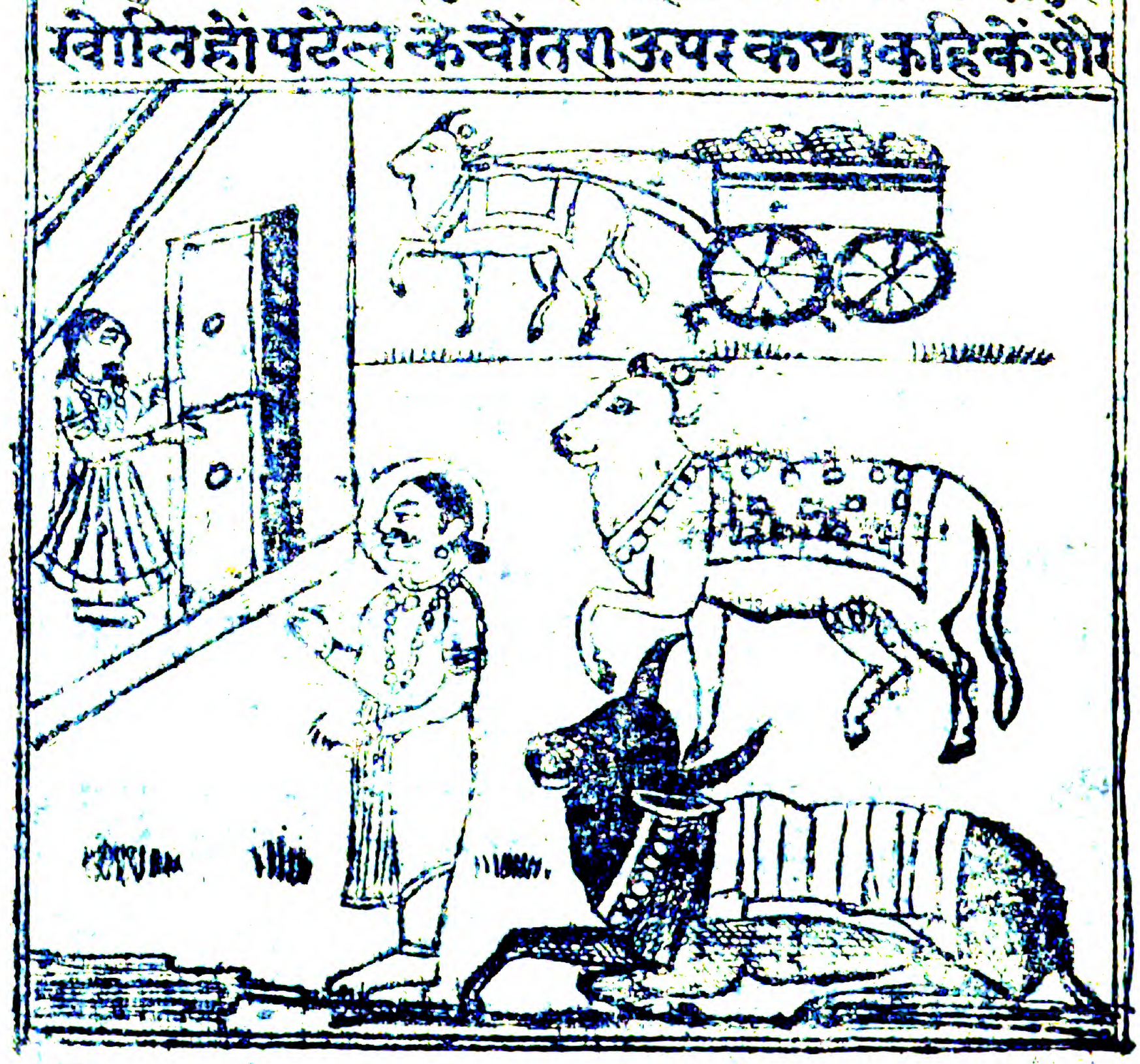

पिताकों ग्रास फेरि कें आयो हों ताते अब हूंगि खे
लि तब भाभी खेाल केंदेखें तौ देवर साचें ही ठाढो
है तब देख कें बड़ो भाई उठि आयो तब देखे तौ छो
टे भाई के ऊपर भगवद तेज विराजत है तब वह बड़ें
भाई डरप्यौ जो मति यह कछु मन में बुरी लावे तब
वह छोटो भाई भाभी के पाय लागयो और कह्यो-
जो तुम्हारे वचन ते मोकों श्री ठाकुर जी की कृपा भई
है तब वा के बड़े भाई नें कह्यो जो स्नान करो महा प्र
साद लेउ तब छोटे भाई ने कह्योजो मैंतो राजा दुवे
माधोदुवे कों नमस्कार कीये विना जल पान न क
रूंगो तब ताके बड़े भाई नें कह्यो जो यह कहा तब
छोटे भाई नें कह्योजो यह भयो है सो सब उन की
कृपा ते भयो है मोकों तो तुम नीकें जानत हो जैसो
हो तैसो तब बड़े भाई ने कह्यो जो में तुम्हारे साथ-
चलूंगो तब दोउ भाई राजा दुवे माधौदुवे के घर
गये तब जाय कें बड़े भाई ने उन कों नमस्कार की
यो और छोटे ने दंडोत करी तब राजा दुवे ने माधो-
दुवे सों कह्यो जो तुम्हारो सेवक आयो है और य
ह प्रसंग याके बड़े भाई के आगें मति कहियो त
ब दुवे जी ने कह्यो आवो बैठो तब वे दोउ भाई वै
ठे ना पाछें दुवे जी सों छोटे भाई नें सब वार्ता निवे-
दन करी तब दुवे जी ने कह्यो जो तेरे ऊपर श्री आ
चार्य जी महा प्रभून को हाथ है ताते जैसो को न
होय तब ताके बड़े भाई नें कह्यो जो हम तो श्री
आचार्य जी महा प्रभून के दर्शन नाहीं करे हम

ने तौ तुमदेखे हौ और जैसें याके ऊपर कृपा करकें
याकों कृतार्थ कीयो है तैसें मोकू हूं कृपा करकें कृ
तार्थ करौ तब वाकूं हूवेजी ने कृतार्थ कीयो नाम
सुनायो पाछें दोऊ भाईन कों महाप्रसाद लिवायो
पाछें छोटे भाईनें दुवेजी सों कह्यो जो आज्ञा होय
तो अन्न औ मुद्रा गाय भैंसि कपड़ा उहासों जो ला
यो हौं सो आप के मन्दिर में आवै तब दुवेजी ने क
ह्यो जो तुम तौ जानत ही हो जो या द्रव्य के धनी तौ
श्री आचार्य जी महा प्रभू हैं तब वाने कह्यो जो
आप की आज्ञा प्रमान तब दुवेजीनें कह्यो जो अ
न और गाय भैंसि और सब द्रव्य इकठौरो करौ पा
छें दुवेजीसों दोऊ भाई विदा होय कें अपने घर
आये तब सब द्रव्य हतो सो इकठौरो कीयो पाछें
दिन थोरे में श्री आचार्यजी महाप्रभू द्वारिका
पधारे तब सिद्ध पुर में रमाव्यास के घर उतरे तब
राजा दुवे माधौदुवे और वह सब द्रव्य लैकें श्री
आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों सिद्ध पुर में
आये तब आय कें श्री आचार्यजी महाप्रभून
के दर्शन कीये पाछें इन दोउ भाईन कों श्री आचा
र्यजी महा प्रभून पास नाम निवेदन करवायो
और वह द्रव्य हतो सो सब भेट कीयो तब तीन दै
वार रहि कें आप आगें पधारें तब राजा दुवे मा
धौदुवे और वे दोऊ भाई ब्राह्मण श्री आचार्यजी
महाप्रभून सों विदा होंय कें अपने घर आये पाछें
वे दोऊ भाई ब्राह्मण राजा दुवे माधौदुवे के संग ते

बड़े भावदीय भए ताते संग करनों सो भावदीय
को करनों वे राजा दवे माधोदुवे औरु कृपापात्र भा
वदीय है तातेइनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥
वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ३५ ॥

अथ श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक श्लोकदास सांचौरा
ब्राह्मण तिनकी वा
र्ता लिख्यते ॥

सो उत्तम श्लोकदास श्रीनाथजी के सेवकनकी
सोई करते और सबन कूं आप पोसतेताते सब
सेवक उत्तम श्लोक दास कौंमहतारी करि बोलते
सेवकन कौं प्रीत से परोसते ताते श्री गुसांईजी
नके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते वे उत्तम श्लोकदास
श्री आचार्यजीमहाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भा
वदीयहे तातेइनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥
वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ३६ ॥

अथ श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक ईश्वर दवे सांचो
रा ब्राह्मण तिनकी
वार्ता

सो ईश्वर दवे श्रीनाथजी के सेवकनकीगम
ई करते और उत्तम श्लोकदास हू श्रीनाथजी के
सेवकन की सोई करते सो तब उत्तम श्लोकदास
की देह छूटी तब श्रीगुसांईजीनें ईश्वर दवे को
नाम उत्तम श्लोकदास धर्यो सोवे श्रीनाथजीके

सेवकन की रखवारी करते सो अपनी गांठि ते घृत मंगाय
मंगाय कें सबन कों जीमने अधिक घृत परोसते लाने
याहू सों सब सेवक महतारी कह के बोलते सोय
ह्वाने श्री गुसांईजी ने सुनी सो सुनि कें बहुत प्रसन्न
भये नव ईश्वरदुवे सों श्री गुसांईजी ने पूछो जो तुम
अपनी गांठि ते द्रव्य को घृत मंगाय कें काहे कों
परुसत हो तब ईश्वरदुवे ने कह्यो जो महाराज इन
न कों सेवा में श्रम बहुत होत है तब यह सुनके श्री
गुसांईजी बहुत प्रसन्न भये और कहे जो याकों
सब सेवकन ऊपर ऐसी बात सल्प है नव ईश्वरदु
वे सों श्री गुसांईजी ने कह्यो जो तू मांगो हों तेरे
ऊपर बहुत प्रसन्न भयो हों तब ईश्वरदुवे ने प्रसन्न
होय कें कही जो महाराज मेरो मन तुम ऊपर तब
प्रसन्न होय तब श्री गुसांईजी सों वैष्णवन नें कही
जो महाराज याने यह कहा मांग्यो तब श्री गुसांई-
जी सुनि कें चुप करि रहे तब श्री गुसांईजी सों हरिदा
सनें पूछी जो महाराज मेरे मन में सन्देह है जो उत्तम
श्लोक ने यह कहा मांग्यो तब श्री गुसांईजी ने क
ह्यो जो यह सन्देह तो उनहीं सों मिटैगो तब उन
वैष्णवन नें उत्तम श्लोक दास सों पूछो जो तुमने श्री
गुसांईजी पास कहा मांग्यो तब उत्तम श्लोकदास
ने कह्यो जो जब श्री गुसांईजी मोपर प्रसन्न होय
कें कह्यो जो हूं तेरे ऊपर प्रसन्न भयो हों ताते तू
मांगि तब श्री गुसांईजी मोकों प्यारे लागे तब मन
में विचार भयो जो साक्षात प्रभूजी की प्रसन्नता ते

सदी प्यारो लागत हों और मैं सेवक हों और जोक
दाचित कोउ अपराध तें मन प्रसन्न होय जायत
न तौ मन कहूं विगरी सो ति यह मांग्यो जो सदा
मिलत तुमारे चरणारविंद पर मन रहे सोउ तुम के
दीए तें रहे तब यह बात सुनि के सब वैष्णव प्रसन्न
भए तब विचारो जो सेवक को श्रेयो ई धर्म चाहिये
पाछें श्री गुसांईजी प्रसन्न होय के श्री अंग की से
वा दीनी सो वे मुखिया भीतरि या भये — ये उत्तम
श्लोक दास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे
परम कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता को
पार नाहीं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ३७ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक वासुदेव दासछ
कड़ा सारस्वत ब्राह्म
ण सोहनंद के।
तिन की।
वार्ता

सो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभून के बड़े
पुत्र श्री गोपीनाथ जी सो अडेल ते आगरे पधारे
सो आगरे में वैष्णवन नें एक सो एक मोहर भेट
कीनी पाछे आगरे ते श्री गोपी नाथजी नें आज्ञा
करी जो कोउ ऐसो वैष्णव है जो एक सो एक मो
हर हमारे घर पहुंचावे तब वासदेव दास नें कह्यो
जो महाराज मोहर मोको देउ में पहुंचाउंगो तब वे

मोहर वासदेव ऊकड़ा कों दीनी सो मोहर लाय कें
मेलकें गोला कीयो सो गोला की पूजा करत
धारा में चलेगये सो दिन पांच में अडेल जाय प
हुंचे सो गांव के बाहर गोला फेरी कें मोहर कादि
पाछें श्री गुसांई जी कों दीनी और श्री गोपीनाथ
जी को पत्र श्री गुसांईजी कों दीनों पाछें श्री गु
सांई जीनें वह पत्र वांचि के मोहर गिनलीनी
पाछें श्री गुसांई जीनें वासुदेव दास कों महाप्र
साद लिवायो पाछें "वासुदेव दास ने श्री गुसांई
जी सों वीनती कीनी जो महाराज पत्र को जुवाव
लिखिये और पत्र में मोहरन की पहुंच लिख
ये जोहूं तो सवारे जाउंगो तब श्री गुसांईजीनें
वा पत्र को जवाव लिखि दीनों जो मोहर पहुंची
ताकी पहुंच लिखि ..... पत्र वीड़ो सो वीड़ कें
वासदेव दास कों दीनों पाछें वासुदेव दास सोयर
हे तब रात्रि घड़ी एक रही तब वासदेव दास उठि
कें श्री गुसांई जी के पास आय कें दंडौत करिके
अडेल ते चले सो पांच दिन में श्री द्वार आय श्री
गुसांईजी को पत्र श्री गोपीनाथ जी कों दीनों दि
न दस में अडेल आय और गये सो पत्र वांच
कें गोपीनाथ जी वहुत प्रसन्न भए और पूछो जो
वासदेव दास मोहर कौन भांति सों लेगये हते तब
वासदेव दास नें कह्यो जो महाराज मोहरन को
गोला करिकें वा गोला की पूजा करत लै गयो त
व श्री गोपीनाथ जी नें कह्यो जो या भांति कबहू

नरखिवय "जो स्वरूप करि मानिये ताकों याभां
ति कैसें करियें तब वासुदेवदासनें कह्यो जो महा
एज प्रतिष्ठा तो न भई हुती ॥+

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

बहुर एक समय श्री गुसांईजी श्री मथुरामें
विराजतहुते सो एक समय श्री गुसांईजी शृंगारक
रि सेवा ते पहुंचि कें बाहर बैठक में विराजे सो बैठ
क में बैठि कें रूपचन्द नंदाकों पत्र लिख्यो तामें
वसंत कों सामग्री मंगावो तब वासदेव सों कह्यो
जो तूइतनी सामग्री लेकें संध्या को आइयो तब
भंडारी कों आज्ञा दीनी जो राजभोग करा याकों प्र
साद को देउ तब भंडारी ने ऐसे गेहु को आहार
दीनो रोकरा में तब श्री गुसांईजीने वासदेव दा
स कों आज्ञा दीनी जो तोकों पनही पहरें को क
छू चिंता नाहीं पेडें में प्रसाद खात चल्यो जैयो
तब वासुदेवदास सोई करत आयो सो तब अपने गा
म पहुंचे तब नांई प्रसाद खायचुक तब फेरी फा
रिकें रूपचन्द नन्दा के घर गये ता समय रूपचन्द
नन्दा अपने घर प्रसाद लै चुकयो हो चलू लैकें सोक
करत हो सो वासदेव दास पत्र लैकें आए तब रूप
चन्द नदा नें हाथ धोय पोंछि कें वह पत्र माथेच
ढाय के लीनों और भाई सों कह्यो जो वासदेव दास
आयो हैं सो घर में कहो ये भूखे होयगे तब वासदेव
दास ने कह्यो जो मोकों तो मथुरा जानों है तासों मोको
खडो महा प्रसाद लेवे को अवकाश नाहीं ताते

सामग्री लै देउ तौ मैं जाऊं इहां तौ प्रसाद ले आऊं तौ
तब रूपचन्द नन्दा वस्त्र पहर कें सामग्री लैनें गये
तब वासदेव दास साथ गये तब रूपचन्द नन्दा नें
छोटे भाई गोपालदास सों कह्यो जो अपने घर में
जितनों प्रसाद होय सो तू लैकें द्वार कू दरवाजे वे-
ठि यो हम आवत हैं तब छोटे भाई नें जितनों घर
में प्रसाद हो सो सब लैकें द्वार कू दरवाजे साथ वै
ठ्यो और रूपचन्द नन्दा बाजार में आयकें सब सा
मग्री लीनी तब वासुदेव दास नें कह्यो जो मेरो स
गौ घर तौ प्रसादी है तब सब सामग्री पिछली श्रे
र कटि सों द्रढ़ कर बांधी पाछें रूपचन्द नन्दा पै
र वासदेव दास द्वार कू दरवाजे आए तब देखें तो
छोटो भाई बैठ्यो है प्रसाद लीये सो सब प्रसाद सों
वासदेवदास की झोरी भरी श्रीम विदा कीए आप
देख भाई घर कों आए श्रीम आप वासदेव मथुरा
कों आए सो तीसरे पहर श्री गुसांईजी स्नान क
रवें कों पधारहुते ता समय वासदेव दास सामग्री
लैकें आय ठाड़ो भयो तब श्री गुसांई जी उठि कें वा
सदेव दास की कटि ते सामग्री खोलि लीनी श्री
र श्री गुसांई जी वासदेव दास के ऊपर बहुत प्रस
न भए और आज्ञा दीनी जो तोकों महा प्रसाद
की सामग्री राखी है सो जाय कें प्रसाद लै तब वा
सुदेव दास विश्राति स्नान करि कें आयो तब प्र-
साद लीनों सो वासुदेव की क्षुधा बहुत हुती मा
डेढ खातो परि जैसो खातो बहुत तैसोही बहुत

पराक्रम हुतो मथुरा ते दोय पहर में आगरे गयो
रात्रि आगे पराक्रमी हुते ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २

बहुर नित्य प्रति श्री गुसांईजी श्री ठकुर जी
की सेवा करिकें बाहिर आय कें खवास सों कहते
जो तू थेली पीढ़ा लेकें विश्रांत जैयो और आप
दर्शनार्थ जन्मस्थान पधारते सो जन्मस्थान दर्शन
करकें पाछें श्री गुसांई विश्रांत स्नान को पधार
तेया भांति सों श्री गुसांईजी नित्य करते सो राक
दिन मथुरिया चौबे सब मिल कें काजी के पास
जाय कें चुगली करी जो तुम इनसों लागा बांधी क
ो सो इनके सेवक आछे हैं सो तुमकों दोय चार

हजार रुपैया ये देइयों तब काजी मनुष्यन सों
हथियार बांधि कें जन्म स्थान आय ठाढो भयो इन
ने में श्री गुसांई जी श्री केशोराय जी के दर्शन कों
पधारे तब दर्शन करिकें बाहर आए पाछें घोड़ा
ऊपर सवार भये तब काजी ने कह्यो जो अबतु
म कहां जाउंगो तब वासुदेव दास नें श्री गुसांई
जी सों बीनती कीनी जो महाराज मोकों बुरी न-
ज़र दीसतहै तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जोयेते
री कहा करेंगे तोसों होय सो लेहु करि तब वासदे
व दास देखें तो एक के हाथ में ढाल औरु एक दे
खो ताकें वासदेव नें एक धपेड़ मारी सो यपेड़ल
गत मात्र वह तो गिर पस्यो तब वाकी ढाल और
गुरज लैकें वासदेव दास के पीछे मनुष्य चीस प-
चीस हुते तब वे भाजिकें हवेली में बैठि कें दर्व
जो दैकें छिपरहे तब श्री गुसांई जी घोरा ऊपर स
वार भये और उनके दरवाजे होकर पधारे तब
वासदेव दास ने श्री गुसांई जी सों कह्यो जो म-
हाराज अब भले इकठोरे भए हैं जो आज्ञा होय तो
इन सबन कों दई बाजी तोरि कें मारों तब श्री गुसां
ई जी ने नाहीं करी और कह्यो जो तेरो ये कहा-
लीन है पाछें श्री गुसांई जी विश्रांत पधारे तब
दूसरे दिन श्री गुसांई जी स्नान कों पधारे तब व
ह काजी अपने मनुष्यन कों साथ लैकें गारे में प-
ड़का दैकें आय कें बीनती करी जो महाराज आ
ज हम कन्हैया देखे और भीम हू देखे जो प्रभू

जीके प्रतापते सब डरे तब श्री गुसांई जीने कह्या जो
यह ऐसो हुतो जो फिर यासों बोलते तो अकेलो यह
सबन कों मारतो तुम सब ठौर रहत और याको मन
में तो बहुत आई हुती पर हमें तो ऐसो न करनो हुतो
पाछें काजी कों समाधान करिकें घर कों पठायो सो
श्री गुसांई जीकी कृपा ते श्री आचार्य जी महाप्रभू
नके सेवक ऐसे सामर्थ्य वान हुते॥ वा॰ प्रसंग २
और सीहनन्द में उत्सव होतो तब वासुदेव दास
कों बुलावते नाहीं तब एक समय सीहनन्द के वैष्णव
मिलिकें श्री गोकुल श्री गुसांई जी के दर्शन कों आ
ये सो तिनके साथ वासदेव दास हू आये तब वैष्णवन
ने श्री गुसांई जीकों दर्शन कीयो पाछें उहां रहि कें
कोई समें पाय कें वासदेव दास नें श्री गुसांई जी
सों विनती करिकें कही जो महाराज ये वैष्णव मोकों
सीहनन्द में उत्सव होत है तब बुलावत नाहीं तब श्री
गुसांई जी चुपकरि रहे तब पाछें उन वैष्णवन कों ज
बडेरा कों विदा कीये तब तिन में तीन चार पांच मुखिय
या रहे सो तिनकों श्री गुसांई जी ने राख्यो और सब
वैष्णवन कों डेरा पठाये तब श्री गुसांई जीने उन
वैष्णवन सों पूछो जो तुम वासदेव दास कों उत्सव
कीर्तन में कों नाहीं बुलावते हो तब उन वैष्णवन
नें विनती करिकें कही जो महाराज वासदेव दास
कों बडे उत्सव में कों नाहीं बुलावते और छोटे उत्सव
में नाहीं बुलावते जो ये भूखे रहे गें तो दोष लागे
तब श्री गुसांई जीने उन कों आज्ञा दीनी जो तुम

वंधान वांधो जो १०० वैष्णवन कों वुलावो तो पचा
स ५० तो और वैष्णवन कों वुलावो और पचास में
एक वासदेव दास कों वुलावो और जहां ५० पचास
वुलावो तो २५ पचीस तो और वैष्णवन वुलावो जो
२ पचीस में एक वासुदेव दास कों वुलावो और ज
हां पचीस वुलावो तहां तेरह तो और वैष्णवनें वु
लावो और वारह में एक वासदेव को वुलावो ऐसे
सें दशतांई श्रीगुसांई जी नें वंधान वांध्यो ऐसें
पांच तांई वंधान वाध्यो ऐसें जितने वुलावने हो
य तितने तो और वैष्णव वुलावो और आधेन
में एक वासदेव कों वुलावो तव उन वैष्णवननें
नें कह्यो श्रीगुसांई जी सों जो महाराज येतो भूखे
रहेंगे तव श्रीगुसांई जी नें उन वैष्णवन सों कह्यो
जो दशतांई तुम आधे में वासदेव दास कों वुला
वो तामें चाहे सो होय ताकों तुम कहा करोगे सो
यह प्रकार मैनें तुम को कर दीनों है सो मेरी आज्ञा
ते तुम कों कछू वाधा नाहीं जो तुम आधे में वास
देव दास कों खुसी सों वुलावो पाछें भूखो रहे तो
तुम कों कछू दोष नाहीं पीर यह श्री आचार्यजी
महाप्रभून कों सेवक है ताते वुलाए विना वासदे
व दास कों तुम उत्सव मति करियो तव वैष्णवन
नें कही जो महाराज की आज्ञा होयगी सोई करेंगे
तव वे कोई क दिन श्रीगोकुलगहि के पाछें सव वैष्ण
व सोइ नन्द कों गांये तव के वैष्णव सोई करन लागे
श्रीगुसांई जी वासदेव कों श्री आचार्यजी महाप्र

भून कौ सेवक जानि कें ऐसी कृपा करते सोंवे-
वासदेव दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे
परम कृपा पात्र भगवदीय हे तातेइनकी वार्ता
कहां तांई लिखिवेये ॥ ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥ बैठक ॥ ३८ ॥ संवंध १०८

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के।
सेवक वावा वेणु और कृष्ण
दास घघरिया देवदा
स तिन की वार्ता
लिख्यते।

सोइ वावा वेणु हृदय के नेत्रन सों देखते सो-
वावा वेणु और छोटे भाई कृष्ण दास ये दोऊ भाई
श्री केसों रायजी के आगें कीर्तन करते तहां याद-
दास हू कीर्तन में साथ हुते तव कीर्तन करन लागे
सो यह पद गावत हुते जो देखरी नैनन गिरधर-
न सो यह पद गावत कृष्ण दास नें अपनी देह छो
ड़ी तव यादव दासनें वावा वेणु सों कह्यो जो यह
पद गावत कृष्ण दास नें अपनी देह छोड़ी तव वावे
वेणु नें कह्यो जो हम तो अपनी देह श्री नाथजी द्वा
र में छोड़ेंगे पाछें कृष्ण दास को संस्कार श्री केसों
राय के पीछे कीयो तापाछें सूतक उतरो तव शु
द्ध होय के श्री नाथजी द्वार चले सो कितनेक दिन
में श्री नाथजी द्वार आय पहुंचे तव पर्वत ऊपर आ
य कें वावा वेणु नें श्री नाथजी के दर्शन कीये पाछें
वावा वेणु नें कीर्तन किये तव श्री नाथजी के कंठ

ते फूल की मालणि सो माला और एक बीड़ा
रामदास भीतर या नें वावा वेणु कूंदीनों सो वावा
वेणु ने मांथे चढ़ाय कें लीनों तव रामदास भीति
या नें वावा वेणु सों कह्यो जो तुम्हा रो विदा।
श्री नाथजी नें कीनी तव वावा वेणु ने श्री नाथ
जी कों दंडौत कीनी पाछें नीचे उतरे सो आन्यो र
की ओर उतरे तव वावा वेणु नें यादवदास सों क
ह्यो जो हूतो पर्वत ते नीचे उतरि कें अपनी देहछो
ड़ंगो तू सावधान रहियो और तू वेगो आइयो ऐसें
यादवदास सों कहि कें वावा वेणु पर्वत ते नीचेउ
तरि कें श्री नाथजी कों दंडौत करत भये अपनी
देह छोड़ी पाछें यादवदास ने वावा वेणु को संस्का
र कीयो पाछें मृतकतें सो तव सुद्ध ह्वोय कें याद
वदास श्री गुसांई जी के पास आए सो श्री गुसांई
जी कों दर्शन कीयो और दंडौत कीनी तव श्री गु
सांईजी यादवदास कों परम भागवदीय जान कें
मन में विचारें जो कोई एक दिन में यादवदास की
हू स्थिति ह्वै ता कें लिये श्री गुसांईजी विचारे जो
श्री नाथजी की सेवा में यादवदास को राखियेतो
आछो ह्वै तव श्री गुसांई जी नें कह्यो जो यादवदास
तुम अकेले हो ताते अब श्री नाथजी की सेवा
करो तव श्री गुसांईजी की आज्ञा ते यादवदास
ने श्री नाथजी की सेवा नीकी भांति सों करी सो
सेवा सों पहुंचि कें यादवदास नीचे उतरे और नी
की भांति सों सेवा करते सो कहूं वार्ता में जाय

के यादव दास लकड़ी परी होंय सो दूकठौरी करीपा-
छें जबजान्यो जो लकड़ी सिद्धि भई तब श्रीनाथजी
पास आज्ञा मांगि कें दंडौत करि कें नीचे उतरे सो अ
ग्नि लैकें जहां लकड़ी दूकठौरी हुतीं तहां आपनें
ए सो लकड़ीन कौं श्रीनाथजीकी ध्वजा के आगारी
चौंतरा बनायो सो चौंतरा के ऊपर आप पोढे जादि
ग्ना कौ व्यार चलतहुती तादिग्ना कौं अगनि धरि-
कें ध्वजा कौंप्रनाम करि कें श्रीनाथ कौ स्मरणाक
रकें यादवदासनें अपनी देह छोड़ी पाछें व्यार ते-
अगिनजरि उठी सो जर कें भस्म होंगई यादवदासने

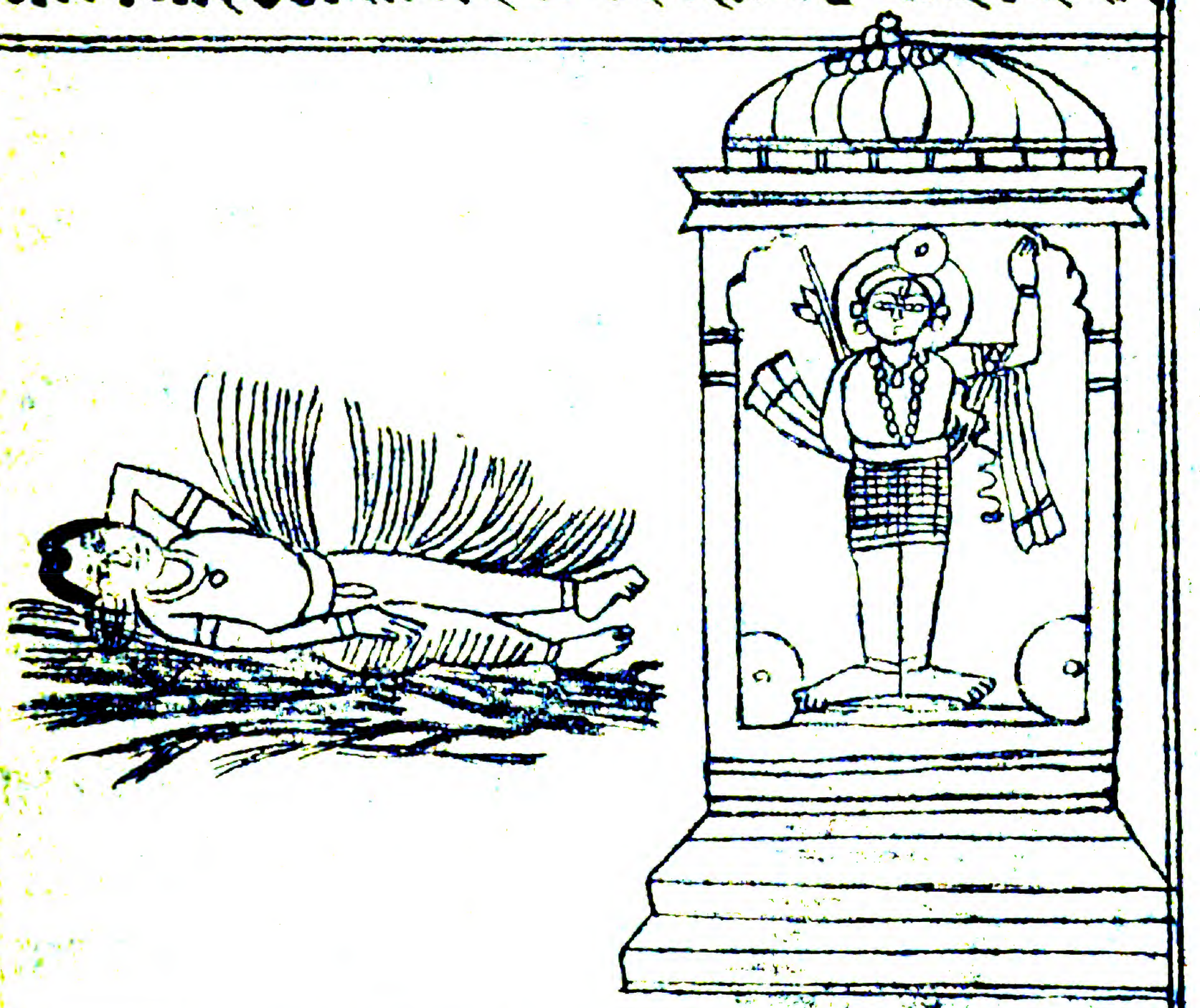

अपने हायन सों अपनो संस्कार कीयो तथा बावां-
वैणु को संस्कार कीयो ताते यादवदास नें अपनो-

यही विचार कीयो जो सब सेवकन कों मेरो संस्कार
करिवे में कष्ट होयगो और सेवा में विरोध होयगो
ताते यादवदासनें अपनों संस्कार अपने हाथन
सों कीयो और पहिलें वावावेगु ने यादव दास सों क
ह्यो हुतो जो तू वेगो अईयो विलम्ब मति करियो-
सोतो श्री गुसांई जी ने श्री नाथजी की सेवा सोंपी
ताते इतने दिन विलम्ब भयो पाछें दिन द्वै भए तब
श्री गुसांई जी नें पूछो जो यादवदास देखियत नहीं
सो कहां गयो है तब सेवकन नें कह्यो जो महाराज
यादवदास कहूं वन में लकड़ी टूकठोरी करत हुते
तब श्री गुसांई जी नें कही जो उहां जाय कें देखो-
तो तब श्री गुसांई जी के कहत मात्र वैष्णव जाय-
कें देखें तो उहां कछू नाहीं रथ की ढेरी परी है तब
वैष्णवन नें श्री गुसांई सों आय कें कह्यो जो महा
राज उहां तो कछू देखियत नाहीं रथ की ढेरी परी
है तब श्री गुसांई जी अपने श्रीमुख सों कह्यो जो
ऐसो भागवद भक्त जो काहू कों दुख न देतो वे याद
वदास श्री महा प्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भग
वदीय जो स्वइच्छा तें अपनी देह छोड़ी सो सबगवा-
लन नें देखो सो चकृत होय रहे ताते वावा वेगु सों
र कल्यदास घघरिया और यादवदास वनिया ऐ
से कृपापात्र भागवदीय हे ताते इनकी वार्ता कौपा
र नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥ ॥

वार्ताप्रसंग ।१। वैष्णव ।१। ई संबंध १०८ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जगतानन्द सारस्वन ॐ ब्राह्मण थानेश्वर के वा सो तिनकी वार्ता लिख्यते

सो जगतानन्द सरस्वती ऊपर कथा कहते तव समय श्री आचार्यजी महाप्रभू थानेश्वर पधारे सोज गतानन्द सरस्वती ऊपर कथा कहि रहे हुते सो तहां श्री आचार्य जी महा प्रभू जाय विराजे तव जगता नन्द सरस्वतीनें एक श्लोक को व्याखान कीयो तव श्री आचार्य जी महाप्रभूननें कह्यो जो याको व्याख्यान भावतो बहुत है तव जगतानन्द नें कह्यो जो श्लोक को अर्थ तो कह्यो जो श्री शुकदेव जीने कह्यो सो कह्यो तव श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो श्री शुकदेव जी सारिकाहैं तव जगतानन्द नें कह्यो जो अधिकी व्याख्यान होयतो तुमही आयकें कहो तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो तू तो व्या सन आसन बैठ्यो है हम तेरो अति क्रम क्यों करि कें तव इतनों सुनत मात्र जगतानन्द चौकी छोड़ के उठि ठाढ़ो भयो तव श्री आचार्यजी महा प्रभून नें चौकी ऊपर वस्त्र बिछाय कें पोथी धरी और फिर आप ताके नीचें बैठे और वा श्लोक को भाव फेरि कें वाको अर्थ कह्यो सो व्याख्यान करत करत तीन पहर व्यतीत भये तव श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो या श्लोक को व्याख्यान

मास दोय तीन लों वीतेगो परि अब तुम भूखेहो
जो ताते अब तुम उठो तब जगतानन्द ने कह्यो
जो महाराज आप तौ ईश्वर आप के भाव घटिवे
के नाहीं तहां चाहो तहां तौ ई कहो तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभून ने पोथी बांधी तब जगतानन्द
ने साष्टांग दंडवत कीनी और कह्यो जो महाराज मे
रो घर पावन करिये तुम तौ साक्षात पूरन पुरुषोत
तम हो तब श्री आचार्यजी महाप्रभून ने कह्यो जं
तू तौ अन्य मार्गीय है हम तेरे घर कैसें पधारें
गे तब जगतानन्द सरस्वती स्नान करि कें आ
य ठाड़ो भायो और वीनती करि कें कह्यो जो म
हाराज मोकों कृपा करि कें नाम दीजिये तब

श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कृपा करिकें नाम दीये। तब श्री आचार्य जी महाप्रभू वा के घर पधारे और जगतानंद के घर सेव्य ठाकुर जी हुते सो वे तुलसी मांम बैठिते तहां वे सदा एक लोटी श्री ठाकुर जी के ऊपर डारते हे तब श्री ठाकुर जी कूं श्री आचार्य जी महाप्रभून नें तुलसी मेसू काढ़ि कें पंचामृत सों स्नान कराय न्यारे बैठाये पाछें शृंगार करि राजभोग समर्पे पाछें जगतानंद कौं सेवा की विधि सिखाई और कहयो जो नित्य याही भांति सों सेवा करियो तब जगतानंद भले भगवदीय भये सो श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करन लागे सो वे जगतानन्द श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसं· ॥१॥ सम्बंध ॥११०॥ वैष्णव ४०

॥ अथ श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक आनंद दास विप्रभर दास दोऊ भाई इन्हीं हुते तिन की वार्ता

सो वे दोऊ भाई अति कृपा पात्र भगवदीय हे सो वे दोऊ भाई एकत्र बैठिकें भगवद्वार्ता करते तथा श्री आचार्य जी महाप्रभून की वार्ता अहर्निस करते कबहूं वार्ता कहत कहत दे भाई कों निंद्रा आय जाती तब श्री ठाकुर जी हुंकारी देते

बड़े भाई आनंन्द दास सो तो भगवद वार्ता के अ
वेश में जानते नाहीं जो हुंकारो कौंन देतहै जब
वार्ता कहि चुकते तब आनन्द दास विश्वंभर
दास सों पूछते जो मैनें तोसूं वार्ता कही सो तूं स
मझ्यो तब विश्वंभर दास ने कही जोमैंतो इहां
तांई सुनी पाछें मोकों तो निन्द्रा आई हुती तब
आनन्द दास नें कह्यो जो तूं तो अब तांई हुंकारो
देत हुतो तब विश्वंभर दास ने वासों कही जोमें
तो हुंकारो दीनो नाहीं तब आनन्द दास नेकही
जो श्रीठाकुर जी नें हुंकारो दीनो होयगो तब दोउ
आनन्द दास विश्वंभर दास अपने मनमे बहुत
प्रसन्न भए और कह्यो जो हमारो बड़ो भाग्य है
है श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपाते श्रीठा
कुर जीने हुंकारो दीनो हमारो कही सब वार्ता
सुनी ताते वे दोउ भाई आनन्द दास विश्वंभर
दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा
पात्र भगवदीय है तातें इनका वार्ता अब तांई
लिखिये ॥ *

वार्ता प्रसंग ॥९॥ वैष्णव ॥ ४१ ॥

॥ अब श्री आचार्य महाप्रभून ॥
॥ को सेवक एक ब्राह्मण ॥
॥ हुतो तिनकावार्ता ॥
॥ लिख्यते ॥

सो ब्राह्मणी के मांथे श्री आचार्यजी महाप्रभून ने
श्रीबालकृष्ण जाको सेवा पधराई हुती सो तह

ब्राह्मणी श्री बालकृष्ण जीकी सेवा करती परि वह
अपने घर में निपट निकंचन हुती ताते श्रीठाकुर
जी के आगे मांटी के कूजा भरावती और रसोई
में मांटी के पात्र और घर निपट संकीर्ण हुतने ही
में सब रसोई मन्दिर आचार हुते और नेत्रन सों
थोरो दीसे हुतो भई ताते जैसी सेवा करती सो और
वैष्णव देखिकें सेवा करत में सो आपुस में सब
चर्चा करन लागे जो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
या ब्राह्मणी के मांथे कहा जानिकें सेवा पधराई है
यह तो कछू समझत नाहीं ऐसे सब वैष्णव आ
पुसमें चर्चा वार्ता करन लागे सो एक दिन श्री आ
चार्य जी महाप्रभून को कोम ऊपर गांव हुतो तहां
पधारे हुते पाछें नहांते फिरे तब तहांते ब्राह्म
णी के द्वार के आगो होय कें निकसे तब माथे के
वैष्णव हुते तिननें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों
बीनती कीनी जो महाराज आपने ब्राह्मणी के
मांथे श्री बालकृष्ण जी की सेवा पधराई है ताकों य
ह घर ह सो याके घर पधार कें देखिये याको घ
र याको आचार कैसो है तब श्री आचार्य जी महा
प्रभू आप असरणा सरण अंतरयामी वा ब्राह्मणी
के घर पधारे सो तासमें वह ब्राह्मणी रसोई क
रत हुती रोटी करकें घी सों चुपरत जाय और श्री
ठाकुरजी आप आगे गत जाय परि वाकों तो दी
सत कछू नाहीं हाथ सों टटोरे कहै जो रोटी आगे
धरन नाहीं कहा मूसा खिलाई लै जात हैं ऐसें

कहे और रोटी करतजाय और श्रीठाकुर जी।
आगे गत जाय सो श्री आचार्यजीमहाप्रभू आप
ठाडे ठाडे देखें पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभून नेंव
डोकरीसोंकहो जो अरी बाई तेरो बड़ोभाग्यहै जो
तेरी करी रोटी श्रीठाकुर जी आप आरोगतहैं तब व
ह बाई श्री आचार्यजी महाप्रभून करि पाछें बोली
जो महाराज मेंनाहीं जानी जो राज पधारे हैं मो कोंतो
कछु दीसत नाहीं परि तुम्हारी कानिते श्रीठाकुरजी
मान लेत हैं तब श्री आचार्यजीमहाप्रभून ने वेसमय
सों कह्यो जो श्री ठाकुर जीतों स्नेह के वसहैं ताते मे

रीकानि सों श्रीठाकुर जी आरोगतहैं और उनकीमहि

मान लेते हैं तब वैष्णव मुसिक्याय कें चुप करि रहे॰ पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू आपने घर पधारे वा बाई के ऊपर बहुत प्रसन्न भये वह बाई श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी परम कृपा पात्र भगवदीय ही तातें इनकी वार्ता कौ पारनाहीं सो कहां तांई॰ लिखिये ॥ (*)

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥४२॥ सम्बन्ध ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक एक क्षत्राणी तिन॰ की वार्ता है

सो वह क्षत्राणी आप चरखा कातती सो सूत के पैसा होय तीन आवते सो ता कौ जो सामाग्री आव॰ ती सो लै आवती रसोई वाल भोग करि श्री ठाकुर॰ जी कों भोग समर्पती ऐसो निर्वाह करती सो एक दिन॰ ऐसो विचार कै सो जो सूत कातें सो थोरो॰ अधिक का॰ ते सो इक ठोरो करत जाय सो टका दश बारह को भेलो की॰ यो सो सूत बेचि कें टका दश बारह आये सो विन कों घृत खांड लेआई सो घर आय कें मैदा छानी पाछें दूसरे दिन मे॰ वके लड्डवा सिद्धि कीये ऐसो मन में कही जो दिन दश बारह कों सामिग्री सिद्धि भई है सो दिन दश बारह कों नित्य भ॰ ई हों सो ता दिन श्री ठाकुर जी कों आरोगाई ऐसो वा की सेवा एक हांडी में धर कें मंदिर में धर सेवा पाछें श्री ठाकुर जी कों॰

समर्प्यो भोग सराय आरती करिकें आपमहा
प्रसाद लैकें चरचा कातन लगी तब श्री ठाकुरजी
आप सिंहासन ते उतरि कें सामग्री कीहांडी लैकें
सिंहासन ऊपर आय बैठे मोहाड़ी मेंते लड़ुवा क
ढ़िकें आप आरोगन लागे तब मंन्दिरमेंहांडी रख
र खटान लागी तब वा छत्राणीनें कही जो कस

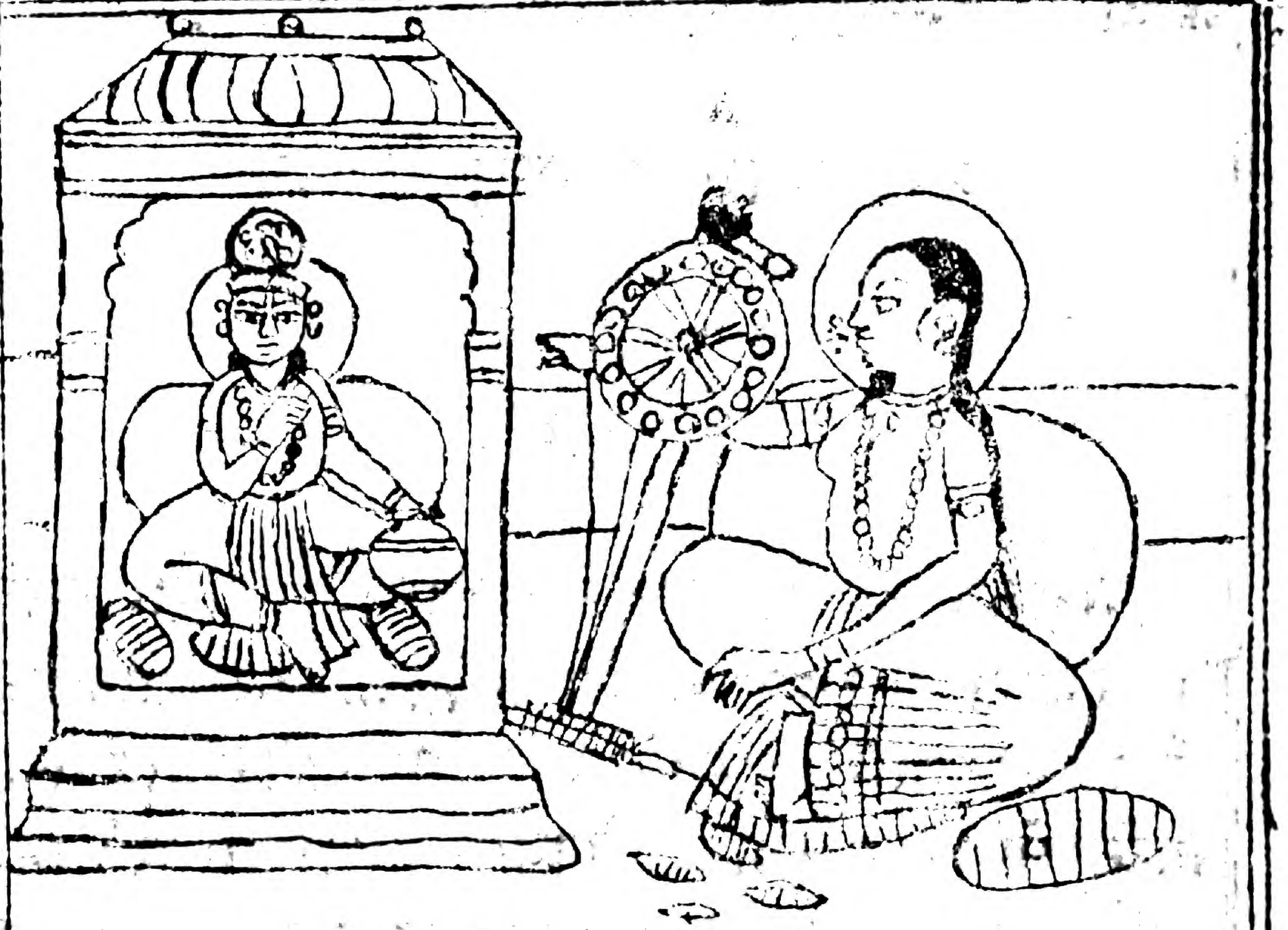

मृसा विलाई होय देखूं तौ सही कौंन है तब वह छत्
राणी कातत हुती सो तहां ते उठि कें देखन गई
मन्दिर के किवाड़ खोल कें देखें तौ श्री ठाकुरजी
सिंहासन ऊपर हांडी लैकें बैठे हैं और वा मेंते ल
ड़ुवा काढ़ि काढ़ि कें आरोगत हैं तब वह छत्रा
णी देखि कें हा हा करि कूटन लागी और कहन लागी

जोयह सामग्री तौ तुम्हारे ही लिये दिन दसवार
ह को करि राखी हुती यह तुमने कहा कीयो जो
आजही आरोगे तब श्री ठाकुर जी नें कह्यो जो
कहा तू नेरवो करि कें आजही निवरी तेनें आ
लस कें लिये इकठौरी करि राखी हुती सो कहा
नित्य नई न होती तब वह क्षत्राणी बोली जो म
हाराज मेरो अपराध क्षमा करो अब ते नई सा
मग्री नित्य प्रति करि कें समर्पूंगी सो श्री ठाकुर
जी याके लिये आरोगे जो यह दिन दश बारह
कों निश्चत होती तो याकों आरत रहती नाहीं
और जो नित्य की नित्य सामग्री करे तो याकों
आरति रहे जो मोकों सामग्री करनी है ताते श्रा
ठाकुर जीने ऐसें करी ताते श्री ठाकुरजी की सा
मग्री दिन चारि ते अधिकी नकरनी और या
क्षत्राणीनें छाती कूटी जो श्री ठाकुर जी आरोगे
ताके लिये कूरी श्री ठाकुर जीनें असन्न हीय वे
आरोगे वानें छाती याके लिये नाहीं कूटी जो श्री
आचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की तौ यह मर्या
दा है जो श्री ठाकुर जी के आगें भोग धरिये सो
आरोगे उठाय धरिये सो सामग्री होय सो न
रोगें तौ श्री ठाकुर जीनें आचार्यजी महाप्रभू
के मार्ग की मर्यादा छोड़ी तौ कदाचित मोहू वे
छोड़ें याके लिये वा क्षत्राणीनें छाती कूटी नवे
श्री ठाकुरजीनें कही जो तू तौ आजही सेवो की क
रि निवरी नित्य नई कहा न होती तब याकों नि

श्चय भयो जो मार्ग की मर्य्यादा तो श्री ठाकुर जीनें
नाहीं छोड़ी हों दश बारह दिन कों निश्चत होय बैठ
ती ताके लीये श्री ठाकुर जी आरोगे ता तें वह छात्राणी
ऐसी परम भगवदीय ही तिन कों श्री ठाकुर जी सेवा
ते एक क्षण हूं स्वास्थ होन देते नाहीं सेवा में सदा
सावधान रहे सो कियो वा छात्राणी सों श्री ठाकुर जी
ऐसे सानुभाव हुते जो चहिये सो मागि लेते ऐसी
कृपा पात्र भगवदीय ही तातें इनकी वार्ता को पा
र नाही सो कहां तांई लिखिये ॥
वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ४३॥ सम्बंध ११३

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून।
के सेवक सास वहू दोउ स
त्राणी सास को नाम गो
रजा वहू को नाम
समराई सीहनं
द की वासीति
नकी वार्ता
लिख्यते
॥ हैं ॥

सो इनके मांये श्री आचार्यजी महा प्रभूननें श्री ठाको
दर जी की सेवा पधराई हुती सो इन सास वहूनते श्री ठा
कुर जी वहुत सानुभाव हुते सो एक समय श्री आचार्य
जी महाप्रभू याने स्वर पधारे तब याने स्वा ही में रहे परि
सीहनन्दन पधारते जो काहे तें याने स्वर और सीह नंद के

वीव सरस्वती नदीहै सो श्री आचार्यजी महाप्रभू
स्वरस्वती उल्लंघन न करते काहेते जो आप आचा
र्यहैं ताते यानें घर ही में रहते सो श्री आचार्यजी
महाप्रभू यानें घर पधारे तब सास नें वहू सों
कह्यो जो मैं श्री आचार्यजी महा प्रभून के दर्शन
कों जात हों तू श्री ठाकुरजी की सेवा नीकी भांति
सों करियो सिंगार करि रसोई करिकें भोग समर्पि
यो इतनों वहू सों सास कहि कें श्री आचार्य
महा प्रभून के दर्शन कों गई तब वहू न्हाय कें
सेवा करन लागी जब पाक सिद्ध भयो तब श्री
ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो तब समयानुसार
भोग सरावन गई तब देखे तो सामग्री सब यथा
स्थिति ज्यों की त्यों हैं तब वहू नें बीनती कीनी
जो महा राज मैं तो जानत कछू नाहीं और सास
ने तो मोसों कह्यो नाहीं और तुम आरोगत ना
हीं सो काहे ते अबहूं कहा करूं ऐसें बहुत वि
लंबिलाय कें खेद करन लागी जो मोसो कछू
चूक परी होयगी रसोई आछीन भई होयगी त
या पात्र मांजिबे में सुद्ध न भये होयगो कछू तो
भयो होयगो जो श्री ठाकुर जी आरोगत नाहीं
पाछें भोग सराय पात्र मांजे आछी भांति सों धोय
पाछि कें फेरि रसोई करि दूसरी वार जब पाक
सिद्ध भयो तब श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो
ऐसा में कहत जाय जो मोते कछू चूक परी हो
यगी होतो कछू जानत नाहीं कहा भयो ताते

श्री ठाकुर जी आगेगे न होयंगे अब आछी भांति सों पात्र मांजि कें रसोई करीहै सो अब श्री ठकुर जी आगेगेंगे सो जब समय भयो तब दूसरी वेर भो ग सरावन गई तब देखे तौ श्रीठाकुर जी के आगे सामग्री यथास्थित है तब फेरि विलविलावे रोवै और वीनती करै और कहै जो महाराज हों कछू जा नत नाहीं सो तुम क्यों नाहीं आरोगत और अपने मन में विचार करती जाय जो मोकों रसोई करनों आवत नाहीं कै मेरी देह कौ कछू दोष है ऐसें वि चार करत जाय और भोग सरावत जाय और छा ती भरि आवै और कहै मेरो कौन अपराध होयगो जो श्रीठाकुरजी आरोगत नाहीं पाछें फेरि जब पा त्र आछी भांति सों मांजि कें तीसरीवार भोग सम प्यो समय भयो तब भोग सरावन गई तब फेरि सा मग्री यथा स्थिति है तब तौ महा खेद भयो जो अब कहा करूं श्रीठाकुरजी भूखे रहेंगे सासनेतौ मोसौं कछू कह्यो नाहीं ऐसें कहे तब मूर्छा खा य कें श्रीठाकुर जी के आगें भूमि में गिर परी और बहुत दुख करन लागी अति बहुत भई तातेवा कौ तनक निद्रा हू आई सवारे सों जल हू नाहीं लीनों सो कंठ जुरयो सूखे अति व्याकुल ह्वै कें परी तब श्री ठाकुर जी ने वाकौ बहुत दुख सह्यो न गयो तब सिंहासन ते नीचें उतरि कें श्री ठाकुर जी ने वासों कह्यो जो तू काहे कौं खेद करत है हों ती न्यौ वेर आगेगों हूं तू कछू संदेह मति करै तब

याने कह्योजो मैं कैसें जानूं तव श्रीठाकुर जीनें क-
ह्योजो तू भूखी है कछू खायले तव कह्यो जोहूं तो
न खाउंगी तव आप कों आरोगत देखूंगी तव लेउं
गी तव श्रीदामोदर जीने कह्योपरि यह तो मानैना-
हीं तव आप जल की झारी लैकें आए और कह्यो
अरी तेरो गरो सूखैगो जात है तू तनक जल पान तो-
लै तव श्री ठाकुर जी अपने श्री हस्त सों वाके मु
ख में जल चुवायो तव कह्यो जो सवारें तू देखगी
तौ में आरोगूंगो तव उठि कें सखडी महा प्रसाद
सब गायन कों लिवायो रसोई पोन कें रसोई की
सामग्री सब सिद्ध करी सखी रात्रि कों उत्साह सों
सोय रही पाछें प्रातःकाल उठि के नित्य कर्म तथा
स्नान करि तथा रसोई करि तव पाक सिद्ध भयो
तव श्रीठाकुर जी कों भोग समर्प्यो जब टेरा सरका
वन लागी तव श्री दामोदर जी बोले जो अब तू-
टेरा अब काहे कों सरकावत है अब तू देखि में-
आरोगत हौं और सब सामग्री यथा स्थित रहेगी-
तब समराई तहां ठाडी भई और श्रीठाकुर जी भोज
न करत देखे तब श्री ठाकुर जी आप भोजन कीए
पाछें सब सामग्री थार में ज्यों की त्यों यथा स्थित
रही तब श्री ठाकुर जीनें कही जो याही भांति सों-
तू नित्य जानि लीजियो तब समराई ने कही जो
हूंतो देखूं तबही मानूं ता पाछें नित्य भोग धरे त-
ब श्री ठाकुर जी कों भोजन करत देखे तब श्रीठा-
कुर जी हू समराई के देखत भोजन करें जो चाहे

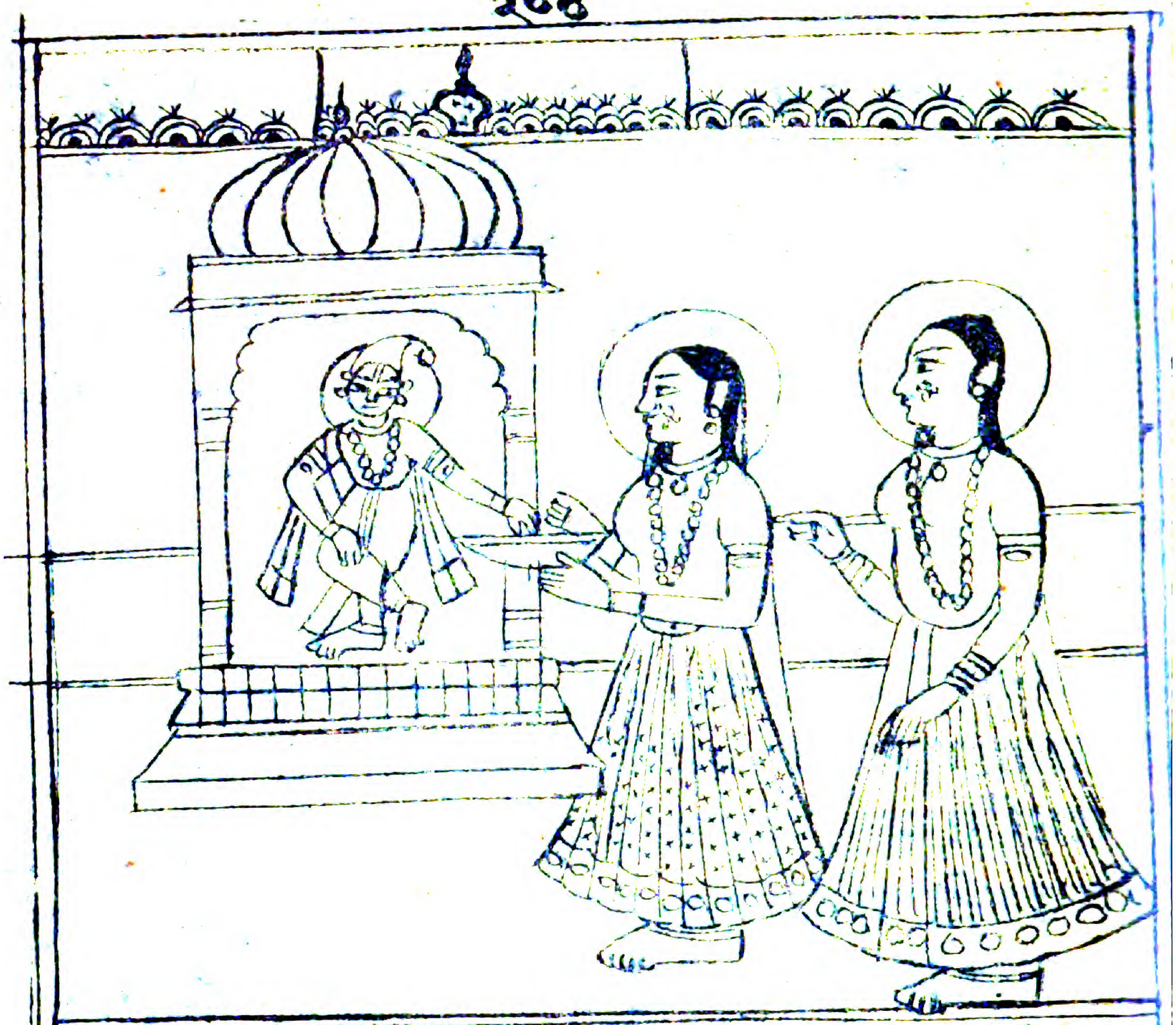

सो मंगाय लेंय पाछें हांमादिक को पाछें वाकों सब
रसको अनुभव करवायो सो समराई सकल रस-
को अनुभव करन लागो तब यह बात श्रीदामोद
रजी नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कही तब
श्री आचार्यजी महाप्रभून नें समराई को सास-
गोरजा सों कहीजो श्री ठाकुर जी कछु मानुभाव
जनावतहैं तब गोरजा तो कछु बोली नाहीं पाछें
गोरजा श्री महाप्रभून सों विदाहोय कें साहनंद
अपने घर आई तब दूसरे दिन सासनें सेवा की
सोई की कें अपने श्री ठाकुरजी कों भोग सम
र्पीजब भोग सर्यो तब वह चौंकि उठीजो श्री
ठाकुरजी आरोगो नाहीं तब सास नें कही जो सुनि

वहू श्री ठाकुर जी तौ लरिकाई तातें तोही सों हि
लेहोयगो तातें रसोई तू वेगि करि तब वहू नें रसो
ई करि भोग समर्प्यो तब श्री ठाकुर जी नें कह्यो
जो मैं तो अबही आरोगोहौं तब वहू ने कही जोहूं
तौ ढेरकू तब मानू तब भोग समर्पि कै कह्यो जो महा
राज आरोगो तब समराई के देखत श्री ठाकुरजी
आरोगे सो जब सास रसोई करै तब वहू कों बुल
वैजो थार लै जाऊ सो वहू थार लै जाय कै आरो
गावै ऐसें नित्य प्रति करै सो यह बात श्री ठाकु
रजी नें श्री महाप्रभून सों कही पाछें वहू श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों थानें स्वर गई
तब आय कें श्री आचार्यजी महाप्रभून कौ दर्शो
न कीयो ता समय श्री आचार्यजी महाप्रभू पा
क करत हुते तब समराई रोटी वेलन कों बैठी
तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें वहू सों कह्यो
जो तेरी सब बात हमसों श्री ठाकुर जी नें कही हैं
जोहम कों समराई भलीभांति सों सुख देत हैं तब
समराई मुसिक्याय रही और कह्यो जो इतनीहू
बात श्री ठाकुर जी के पेट में नाहीं ठहरी तो क
हा करिये पाछें कह्यो जो महाराज लरिकौं क
हा पूछत हो तब श्री आचार्यजी महाप्रभू सुनकें
बहुत प्रसन्न भये और आप श्री मुख सों कहन
लागे जो देवी इनसों कैसो सम्बन्ध है श्री ठाकुर
जी को और कहें जो या वहू के ऊपर बहुत कृ
पा है और वहू सालन करती सो नीकी भांति सों

करती सो श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्योजोनि
त्य सालन क्यों नाही करत तब वहू बोलीजोल
रिका के मन में आवै सो कीयेतब यह सुनि कें
श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये याकी
सास गोरजा बहुत उत्तम सामिग्री करती ताते
श्री ठाकुरजीकौं बहुत प्रिय लागतीतातें इनसा
स बहून के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते ताते इन सास
बहून कौं दर्शन देवे कौं श्रीमहाप्रभूजी तथादे
रिवे के निमित्त प्रति वर्ष आय याने स्वर पधार
ते तब श्री आचार्यजी महाप्रभू कहते जो कहा
कीयेसो सरस्वती उल्लंघनी नाहीं नातर इन
को सीह नन्द में दर्शन देतो सो वे सास बहू ऐसी
धर्मरूपा पात्र भागवदीय ही ताते इनकी वार्ता क
हांनांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ४४ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
की सेवक रुक्मा दासी रु
क्मिनी बहूजी की दा।
सी हुती ताकी
वार्ता॥

सोरुक्मादासी अडैल में श्री रुक्मनी बहूजीकी
खवासी करती सो एक समय रुक्मनी बहूजी
कें गर्भ रह्यो हो तब रुक्मा दासी नें कह्योजोश्व
कें बेटा होयगो तिनको नाम श्री गोकुलनाथ
जी धरूगी सो गर्भ के दिन सम्पूरण भये तब रु

कनीजी वहू के पेट में विथा भई तव छप्पादा
सी नें जाय कें जोतषी सों पूछो जो अव मुहूर्त कैसो
है तव वा जोषी नें तिन नीकों न कह्यो तव कृस्मा
दासी फिरि आय कें श्रीरुकमनी वहूजी के पेट पे
हाथ फेरयो और कह्यो जो महाराज अव तौ मति
पधारो आज कौ दिन नीकौ नाहीं तव पेट की व्य
धि सव दूर भई पाछें दिन दोय तीन वीते तव कृस्म
दासी ने विचार्यो जो अव फेर पूछिये जो आज दि
न कैसो है तव कृस्नदासी ने फेरि जाय कें पूछो
जो आज दिन कैसो है तव वा जोतषी ने कह्यो जो
आज दिन वहुत नीकौ है तव कृस्मा दासी नें आ
य कें श्रीरुकमनी वहूजी सों वीनती करि कें क
ह्यो जो महाराज अव पोढ़िये अव वालकप्रध

ट होयतौ भलो है तब वहजी महाराज पोढ़ीतब छ
ल्लादासी नें वहजी महाराजके पेट पेहाय फेसो
और कह्यो जो महाराज अब पधारिये तब श्री गुसां
ईजी श्रीनाथजी द्वार पधारे हुते तब पेट में व्यथा भ
ई और बालक को जन्म भयो तब तामें छल्लादासी
नें श्री गोकुलनाथजी नाम धरयो तापाछें श्री गुसांई
जीकों बधैया पठायो तब श्री गुसांई जी महा राज
अडैल को पधारे तब नाम करण कीयो तब
श्री वल्लभ नाम धरयो पीर छल्ला दासी की कानि
ते श्री गोकुल नाथ जी नाम रख्यो ऐसी छल्लादा
सी के ऊपर कृपा थी जो जाके कहते दोउ नाम प्रसि
द्ध भये ॥१॥

वार्ता प्रसंग १

पाछें श्री घनश्यामजी को जन्म भयो तब नाम क
रण विचारन लागे तब श्री वल्लभजी नें कह्यो जो
श्री गोकुल नाथ जी नाम धरो तब श्री गुसांईजी
नें कह्यो जो यह नाम तौ तिहारो है तब दोउ नाम प्र
माण कीये सो श्री वल्लभकुल के विषें सब को श्री
वल्लभ नाम कहत हैं और सब जात में श्री गोकुल
नाथजी नाम प्रसिद्ध भयो और जन्म पत्र में श्री कृष्ण
हैं सो गोप्य राख्यो श्री गुसांई जी नें कह्यो जो यह ना
म गोप्य रहे नातें कृष्णदासी श्री आचार्य जी महा
प्रभून की ऐसी कृपापात्र भावती यही सो इनकी
वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ✤

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ ७५ ॥ * ॥ *

॥ अथ श्री आचार्यजी महाप्रभूनके ॥

सेवक वूला मिश्र पंडित तिनकी वार्ता है

सो वूला मिश्र एक कपूर छत्रीके मोहिन हुते नाकी
स्त्रीकें संतति नहुती तव वानें दूसरो विवाह कीयो
तव ताहू स्त्रीकें संतति न भई तव वहू नें वा क्षत्रीसों
कह्यो जो तुम हरिवंश पुराण सुनो तव तुम्हारें संतती
होयगी तव वा क्षत्री नें जाय कें वूला मिश्र सों प्रार्थ-
ना करी जो तुम मोकों हरिवंशपुराण सुनावो तव वू
ला मिश्र नें कह्यो जो अव तो मोकों अवकाश नाहीं
जव अवकाश होयगो तव तुम्हारे घर जाय कें
सुनाउंगो तव वह क्षत्री अपने घर आयो जव एक
महीना वीत्यो तव एक दिन अचानक वूला मिश्र
वा क्षत्री के घर पधारे तव वूला मिश्र कों वा क्षत्री
ने वहुत आदर सन्मान कीयो तव वूला मिश्र नें
कह्यो जो तुम दोउ स्त्री पुरुष स्नान करि कें आय
वैठो तव दोउ स्त्री पुरुष स्नान करि कें आय वैठे
तव वूला मिश्र ने देह शुद्ध होवे के लिये एक दान
करवायो पाछें हरि वंश पुरान को एक श्लोक
अंत को सुनायो ॥ *

श्लोक

इदं मया ते हरि कीर्तनं महत् श्री
कृष्ण महात्म्याय पारमुदत्तं अव-
ाप्यवर्ष्मोषु समासुतत्फलै पच्या
पि लोकेषु स दुर्लभं महत् ॥ १ ॥

यह हरिवंशपुराणा के अंत को श्लोक सो वूला
मिश्र ने वा स्त्री कों सुनायो और आशीर्वाद दीयो
और मंत्राक्षत पढ़ि कें वा स्त्री की वड़ी स्त्री की गो
द में दीए तव वा स्त्री नें कह्यो जो यह मिश्र जीवु
मने कहा कीयो यह तो स्त्री धर्म हूं नाहीं होतहैत
व वूला मिश्र नें कह्यो जो श्री ठाकुर जी सर्व साम-

र्थवान है जो दैन हार होयंगे तो याही को पुत्र देयंगे
अब तौ मैनें याकों अक्षत दीये सोतो दीये नवइ
तनों कहि कें वूला मिश्र अपने घर कों चलनला
गे तव वा स्त्री नें वहुत वीनती कीनी जो मोकों
सम्पूरण हरिवंस पुराण सुनावो तव वूला मिश्रनें
कह्यो जो तोकों श्री ठाकुर जी सम्पूरण को फल

एक ही श्लोक में देहिंगो ऐसें कहि कें वूला मिश्र तौ अपने घर कों आये पाछें वा वड़ी स्त्री कों कह्यो बुआई पाछें गर्भवंत भई तब कितनेक .....

..... दिन में वाकें पुत्र भयौ वे मूला मिश्र श्री महाप्रभून के ऐसे भगवदीय है तिन के अनुग्रह तेवाकें पुत्र भयौ हरिवंस पुराण कौ एक श्लोक सुनेते सम्पूर्ण सुने को फल भयौ ताते वूलामिश्र ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहां ताईं लिखिये ॥+

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ४६ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू न की सेवक मीरावाई के पुरोहित रामदास ति नकी वार्ता लिख्यते

सो एक दिन मीरावाई के श्री ठाकुर जी के आगें रा मदास जी कीर्तन करत हुते सो रामदास जी श्री आचा र्य जी महा प्रभून के पद गावत हुते तब मीरावाई बोली जो दूसरो पद श्री ठाकुर जी कौ गावो तब रामदास जीने कह्यो मीरावाई सों जो अरे दारी गंडु यह कोन कौ पद है यह कहा तेरे खसम कौ मूड़ है जो जा। आज ते तेरो मुहड़ो कबहूं न देखूंगो तब तहां तेस व कुटुम्ब को लैकें रामदास जी उठि चले तब मी रावाई नें वहु तेरो कह्यो फिरि रामदास जी रहे नाहीं पाछें फिरि कें वाको मुख न देख्यो ऐसें अपने प्रभू

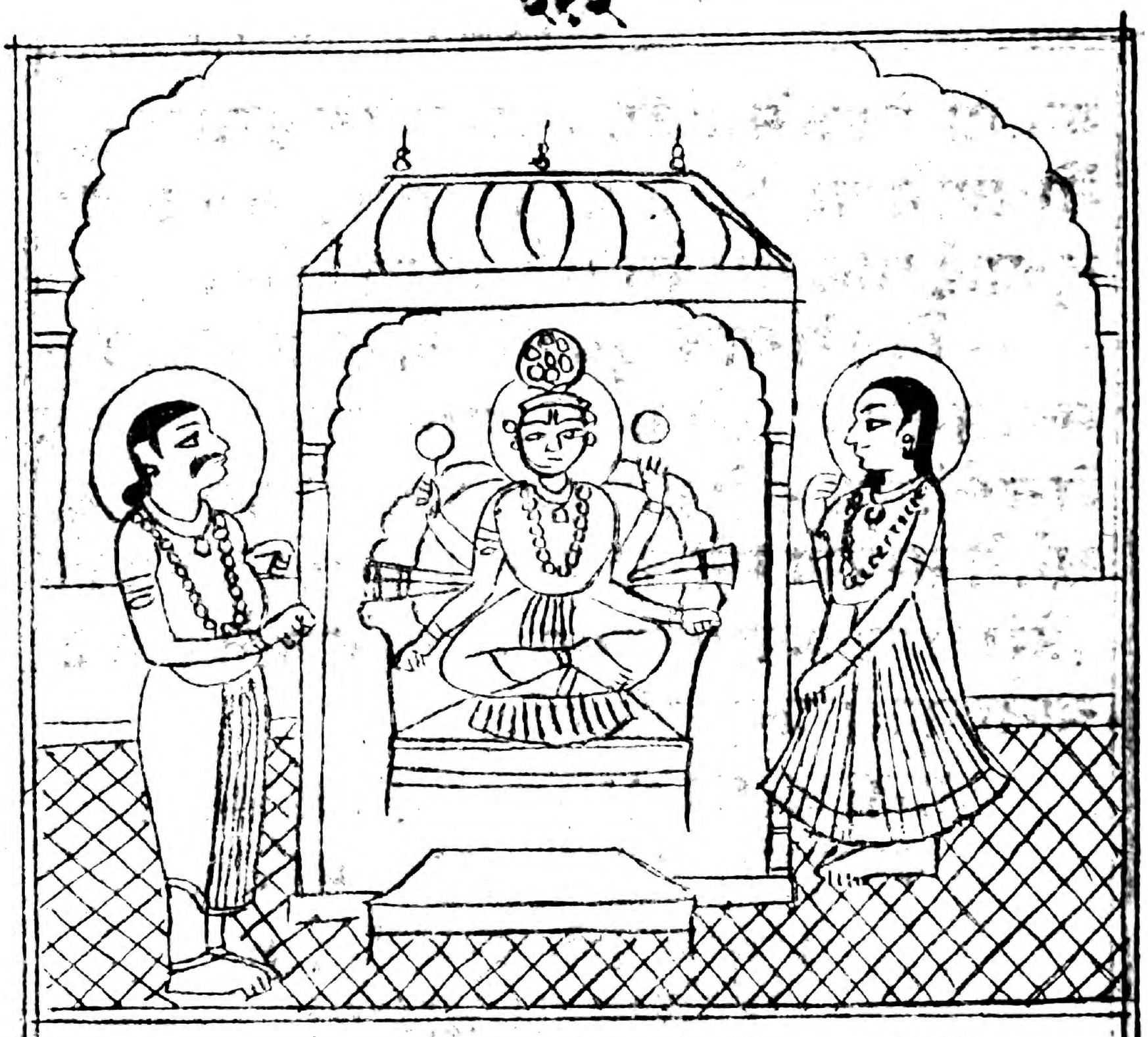

नसों अनुरक्त हुते सो वा दिन ते मीरावाई कों मुख न दिखायो वाकी वृत्ति छोड़ दीनी फेर वाके गांव के आ गे होय कें निकसे नाही मीरावाई ने बहुत बुलाए परि वे रामदास जी आए नाहीं तब घर बैठें भेट पठा ई सोई फेरि दीनी और कह्यो जो रांड तेरो श्री आचा र्य जी महा प्रभून ऊपर समत्व नाहीं जो हम कोंते री वृत्ति कहा करनी हैं हमारे तो श्री आचार्य जी म हा प्रभू सरवस्व हैं हम तौ उन के हैं उन विना हमारें सर्वस्व त्याग करनों उनके चरणारविंद को आश्रय रहनों ऐसी दृढ़ बुद्धि होयगी वे रामदास श्री आ चार्य जी महा प्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥१०॥

॥वार्ता प्रसंग ॥ १॥ वैष्णव ॥ ७७॥

श्रीश्री आचार्यजी महाप्रभू न के सेवक रामदास चौ हान तिनकी वार्ता लिख्यते

सो रामदास चौहान श्री गोवर्द्धन की कन्दरामें रहते सोप्रथम श्री आचार्य जी महा प्रभू श्री नाथ जी द्वार पधारे तब श्री गोवर्द्धन नाथजी कौं पाठ बैठाये तब रामदास कंदरा मे सूं बाहिर आयेत ब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें रामदास जी सों कह्यो जो राम दास श्री गोवर्द्धन नाथ जी की सेवा साव धानी सों करियों तब रामदास जी नें वहां

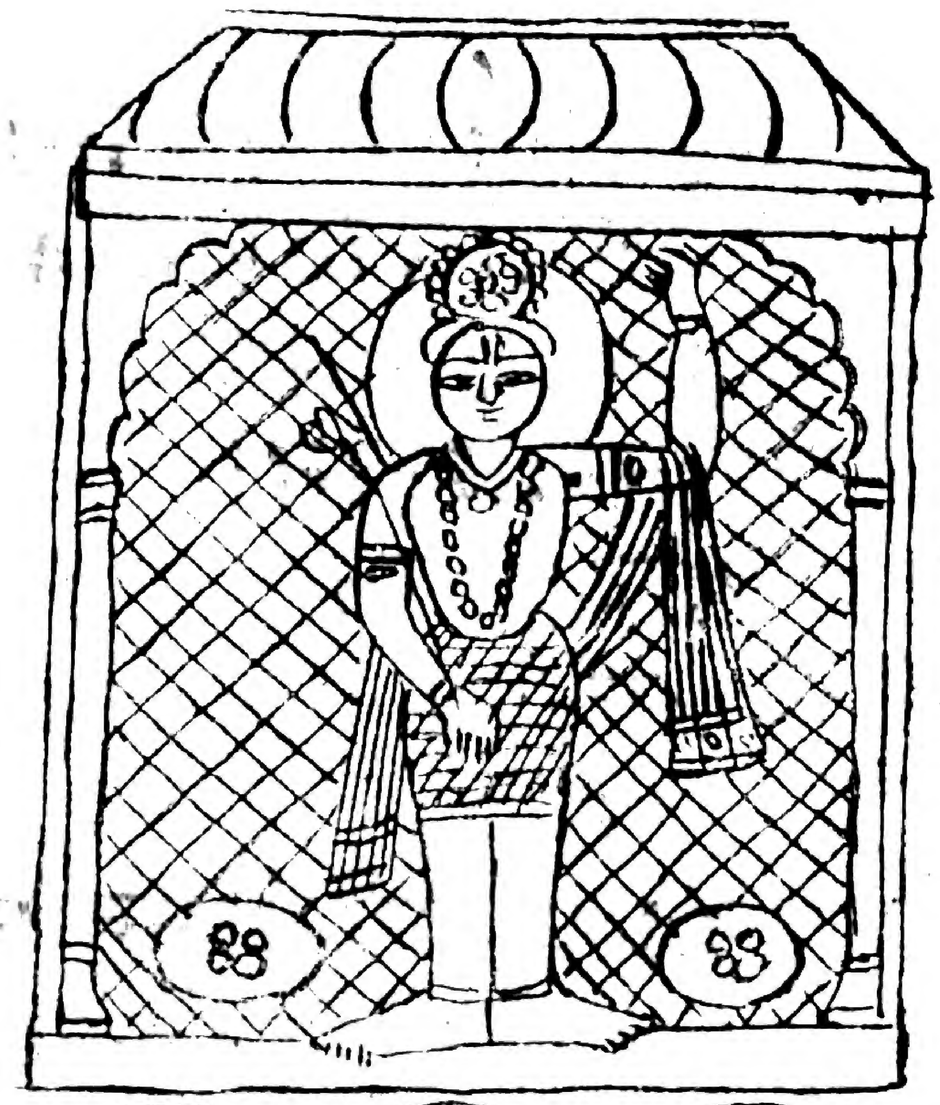

एक मन्दिर कोटो सौ ईटन को बनवायोतब श्री-
आचार्यजी महाप्रभून नें वा मन्दिर में श्रीनाथजी
कों पधराये सो पहिलें श्री गोवर्द्धन नाथ जी श्री
गोवर्द्धन पर्वत ऊपर विराजते सो व्रजवासी लोगननें
एकफूस की छानि करि राखीहुती ता छानि में वे-
ठते और कबहूं कबहूं दूध दही व्रजवासी समर्पे
ते देवदमन यह नाम कहते सो दूध दही मांस्वन
सब आरोगाते तथा श्री गोपाल लाल जी यह नाम
कहते सो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री गोव-
र्द्धन नाथ जी कों मन्दिर में पधराय पोछें श्रीनाथ
जी नाम प्रगट कीयो तब ते सब कोऊ श्रीनाथ-
जी कहन लागे वे रामदास जी श्री आचार्यजीम
हाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हैं-
तातें इन की वार्ता कौ पार नाहीं सो अब कहा
तांई लिखिये ॥ ✻

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥४८॥

अब श्री आचार्यजी महाप्र
भून के सेवक रामानंद
पंडित सारस्वत।
ब्राह्मण ति-
नकीवा
तीहै
सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू याने-
स्वर पधारे तहां रामानन्द पंडित के घर पधारे सो
रात्रि कों चली पोढ़े हते सो अब पिछली रात्रि भई

तव रमानन्द पण्डित नें अपनी स्त्री सों कह्यो
जो वेगि उठि गोवरि और ले चौका कों वहियेगो
नातरि सवारें ये वैष्णव उठेंगे सो लै जायंगे तव य
ह वात श्री आचार्यजी महाप्रभून नें सुनी तासमय
श्री आचार्यजी महाप्रभू हाथ पांव धोय वे कों
उद्यत भये तव अति क्रोधवत भये तव श्री आचार्य
जी महा प्रभून नें रमा नन्द पण्डित कों बुलायो तव
आपने गडुआ में तें जल लैकें वाके हाथ में मेलि
कें मंत्र पढ़ि कें वा जल कों वाऊपर छिरकयो और

अपने श्री मुख सों कह्यो जो में तेरो त्याग कीयो
तेनें मेरे सेवकन सों यों कह्यो जो तू वेगि उठि गो
वर और ले नातर वैष्णव उठेंगे तो ले जायंगे तो तू

सोई को सामान कहांते करोगो ऐसो कहिकें तहांते
उठिचले क्षणएक रहे नाहीं सो यानम्बते रुकगां
वनाऊपर महीताथि है सो तहां आये फिर वहां
आपने स्नान कीयो सोजब श्री आचार्यजी महाप्र
भू रामानन्द पण्डित के घर तेचलन लागे तब याने
स्वर के वैष्णव नें वहुत वीनती कीनी परि श्री आचा
र्यजी महाप्रभू रहे नाहीं और कह्यो जो मैं इहां रहि
कें जलपान न करूंगो ता पाछें काहू ने रामानन्द
पण्डित पास नाम पायो हो तिनसों श्री गुसांई जी
गंगोज्व कहते तब श्री आचार्य जी महाप्रभू याने
स्वर पधारे पाछें रामानन्द की अवस्था विकल
भई तब वाजार में जो वस्तु देखतो सो खातो कछू
मर्यादा न रही परि इतनी मर्यादा तौ करे जो खाय
सो समर्पि कें खाय यों कहे जो श्री गोवर्द्धननाथ
जी तुम आरोगियों इतनों कहि केंमुख में मेले
सो एक दिन हलवाई की दुकान पै जलेवी वहुत
आछी देखीं सो जलेवी वामे ते लेकें कह्यो जो श्री
नाथजी तुम आरोगियों ऐसें कहि के खांई ता स
मय श्रीनाथजी नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों क
ह्यो जो आजतो हमनें जलेवी वहुत आछी आरो
गीहें तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो
कोंने समर्पी है तब श्री नाथ जीनें कह्यो जो तुम्हा
रे सेवक रामानन्द ने समर्पी हैं तब श्री आचार्यजी
महाप्रभूननें कह्यो जो महाराज मैनों वाको त्याग
कीयो तुम वाके यहां कों आरोगो हो तब श्री नाथ

जीने कह्यो जो तुम मोकों काहे कों सोंपत हो हम तुम्हारी कानि ते अंगीकार करत हैं तुम हम कों जाकों सोंपत हो ताको तुम त्याग करत हो परि हम तुम्हारे सोंपे कों नाहीं छोड़त हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभू चुप करि रहे तब यह बात श्री आचार्यजी महाप्रभूतनें दामोदरदास हरसानी सों कही तब दामोदरदास हरसानी नें बीनती करी जो महाराज आपयाकों अंगीकार कब करोगे तब श्री आचार्यजी महाप्रभूतनें दामोदरदास सों कह्यो जो यासों अब वैष्णव को अपराध पड़ेगो तो हमयाकों लक्षजन्म पाछें अंगीकार करेगे श्रीनाथजीने अंगीकार कीयो तोहे परि इन नों अंतराय भयो ताते वैष्णव सों बोलनो सों विचार कें बोलनों बिना विचारें सर्वथा न बोलनों ऐसें वैष्णव को रहनों ॥ *

॥ वार्ताप्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ४८ ॥ *

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
नके सेवक विष्णुदास
छीपी तिनकी वार्ता
लिख्यते ॥

सो विष्णुदास वृद्ध भया तब श्री गोकुल में श्री गुसांई जी की बैठक के द्वारे की द्वार पालकी करते और कोई पंडित आवतो तासों विष्णुदास पूछते जो तुम कों आराहो और कहां जातहो तब उन पंडितन नें कह्यो जो हम श्री गुसांई जी के पासवा

दकरनआएहैंतब विष्नुदासने उन पंडितन सों कह्यो जो तुम मोसों वाद करलेऊ तब विष्नुदास उन पंडितन सों वाद करिकें निरुत्तर करदेते व्या करण शास्त्र पुराण इतिहास सब शास्त्रन कें वच न लेवें निरुत्तर करि देते तब वे पण्डित अपने म न में समाधान करिकें पाछें फिर जाते और वे क हते अपने मन में जो जिनके द्वार पालक ऐसे हैं तो तिनके धनी की कहा बात होयगी सो श्रीगु सांईजी सों काहू पंडित कों न जान देते द्वार ही ते पंडित निरुत्तर होय कें फिरी जाते तब सकल द न श्रीगुसांईजीनें कह्यो जो कोई पंडित अब वाद करन को नाहीं आवत सो काहे ते तब वैष्णवनें

कह्यो जो महाराज उन पण्डितन कों विष्णुदास निरुत्तर करदेत है ताते पण्डित अपने मनमें समाधान करिकें फिर जात हैं तब श्रीगुसांईजी श्री मुखसों कह्यो जो विष्णुदास तुमकों तो श्रीमहाप्रभून की कृपाते ऐसी सामर्थ्य है जो तुम पंडितन कों जीत कें निरुत्तर करदेत हो परि उन ब्राह्मणों कों अतिक्रम होत है ताते अब जो कोई पंडित वादकरन कौं आवे ताकों हमारे पास आवन दीजो तब उन पंडितन कों जान देते विष्णुदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय है उन कों ऐसी सामर्थ्य हुतीजो पंडितन कों निरुत्तर करि दृढ़ता करते॥

वार्ता प्रसंग॥१॥

और एक भट्ट हुतो सो श्रीगुसांई जी सों कहतो जो तुम्हारे सेवकन कों मैं जिमाऊंगो तब श्री गुसांई जी चुप करि रहते सो वह श्री गुसांईजी को सुमरहु तो श्री घनश्याम जी कौ नाना हुतो सो एक दिन वा भट्टनें श्रीगुसांई जी कों न्योत्यो तब श्रीगुसांई जी उन के घर भोजन कों पधारें तब नहां विष्णुदास जलपान कौ गडुआ लेकें साथ गये तब श्रीगुसांईजी भोजन करिकें उठे तब श्री गुसांई जी कों विष्णुदास नें शुद्ध आचमन करवायो पाछें श्री गुसांई जी मन्दिर में पधारें तब विष्णुदास कों श्री गुसांई जीने आज्ञा दीनी जो तुम प्रसाद लेकें जाओ सोजा चार में श्री गुसांई जी भोजन करि

हुते ता पात्र में तें प्रसाद अपनी पातरमें धरि वें-
पात्र धोय धरयो पाछें आप प्रसाद लेवे कों बैठे त
ब भट्ट जी और सामिग्री लेकें आए तब विष्णुदा
सी सें कह्यो जो मोकों नाहीं चाहियत तब भट्टनें कह्यो
जो कछू तब काहेको लेत हो नाको सामिग्री लेउ तब विष्णु
दासने कह्यो जो मोकों नाहीं चाहियत मेरी पातर मंडारे
गतो मेरी पातर कूपजायगी तब भट्ट जी अति क्रोध
वंत भये पाछें उन भट्ट जीने श्री गुसांई जी सों कह्यो

जो तुम्हारे शूद्र ने मोसों ऐसें कह्यो जो मेरी पातर
में मति डारो और डारोगे तो मेरी पातर कूपजायगी
तब श्री गुसांई जी चुपकरि रहे पाछें श्री गुसांई-
जी मुसिक्याय कें भट्ट जी सों कह्यो जो तुम हमारे
सेवकन कों जिमामन कहत हुते सो तुमसों ह-
मारो १ शूद्र न जिमायो गयो और सेवकन कों कै

सें जिमाऱ्योगे तवभट्ट जी मुसिकाय के चुप क
रि रहे सो वे विष्णुदास श्री आचार्य जी महाप्रभू
नके ऐसे परम कृपा पात्र भगत होय हैं ताते इन
की वानी को पार नाहीं सो अवकहां तांई लिखि

॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ ५० ॥ सम्बंध ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक जीवनदास क्षत्री
कपूर सीहनन्द के वा
सीतिनकी वा ५
तीलिखिय०

सो एक समय सीहनन्द के सब वैष्णव मिलि
कें श्री आचार्य जी महा प्रभून के दर्शन कों अड़
ल आवत हुते सो मार्ग में एक दिन मङ्गल जाय उ

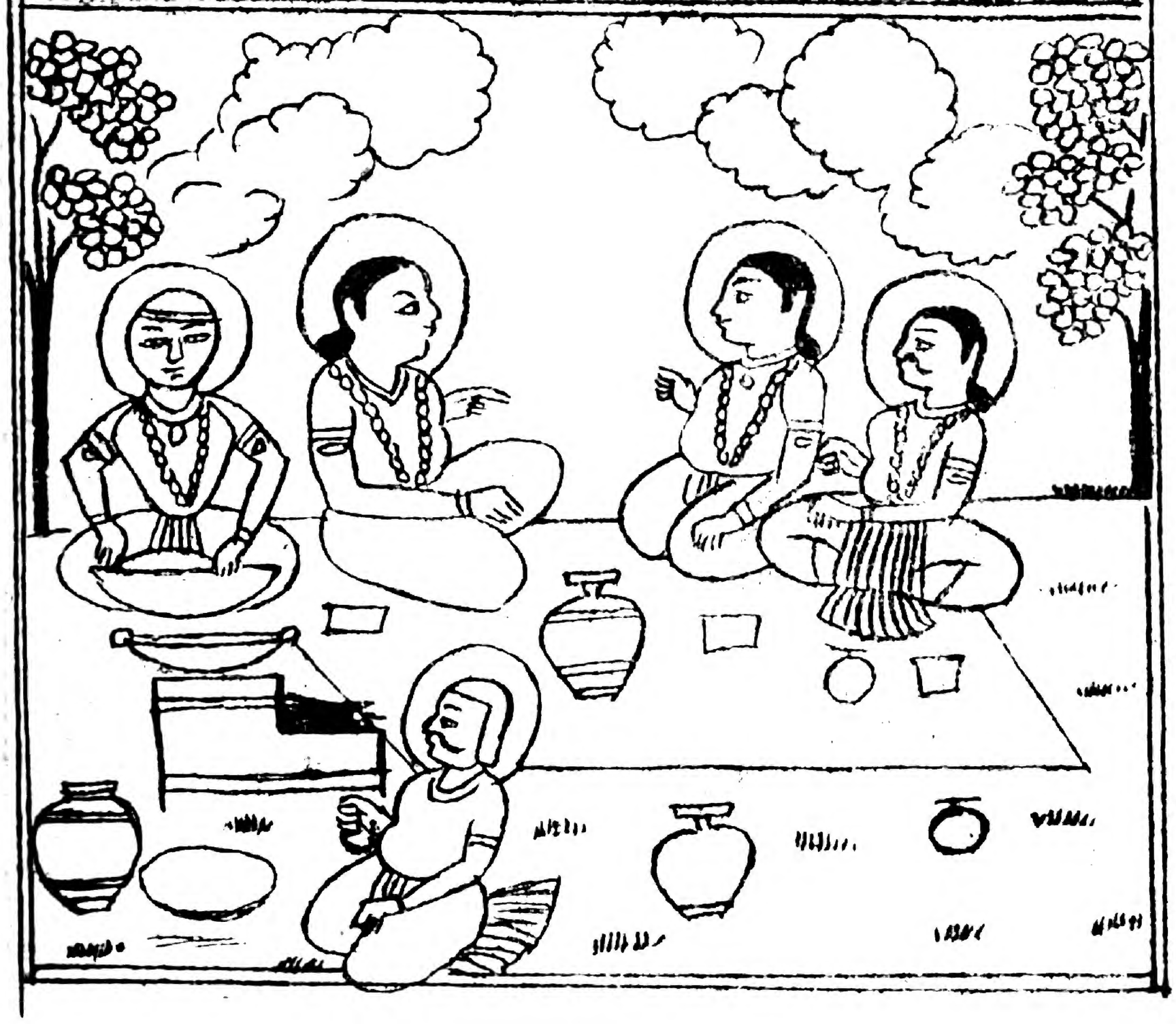

तें तहांसव वैष्णव अपने अपने चौका देत हते तास
मय मेह चढ़ि आयो तब वैष्णव नें कह्यो जो वर्षा
आई ऐसो कार्य भयो तब जीवन दास बोले जो तुम
चिंता मति करो तब जीवनदास नें श्रीआचार्य जी
महाप्रभून को नाम लेकें मेह कों आनि दीनो जो तो
को श्री आचार्य जी महाप्रभून की आनि है जो तब
थें मीत तब वह मेह रहि गयो पाछें सब वैष्णवन नें
भोग समर्पि महाप्रसाद लीयो तहां रात्रि कों सोये
ता पाछें सब वैष्णव अडैल आये तब श्री आचा-
र्य जी महाप्रभून को दर्शन कीयो पाछें यह वात
सबननें श्रीगुसांई जी सों कही जो महाराज एक
दिन सब हम वैष्णव पाक करत हते ता समय मेह
चढ़ि आयो तब जीवन दास नें आप को आनि दै
कें ऐसें कहि कें मेह कों वरजो तब यह सुनिकें
जीवनदास सों श्री आचार्य जी महा प्रभूननें पूछो
और कह्यो जो केधों हमारी तेनें आनि दीनी और
कदाचित वर्षा होती तो तू कहा करतो तब जीवन
दासनें कह्यो जो महाराज वह कौन है जो आपको
आनि दिये उपरांत बांधे यह इन्द्र को कहा सामर्थ्य
है तब यह बात जीवनदास की सुनिकें श्री आचा
र्य जी महाप्रभू मुसिक्याय कें चुप कर रहे तब उ
न जीवन दास पै श्री आचार्य जी महा प्रभून की
ऐसी कृपा हती उन जीवन दास कों श्री आचार्य
जी महा प्रभुन के स्वरूप कों ऐसो ज्ञान हतो सो आ
नि दैकें मेह वरजो तिनको कहा कहिये .....

तव वैष्णव नें कह्यो ये बड़े भागवदीय हैं वेजी वनदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे प रम कृपा पात्र भागवदीय हैं तासे इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग वैष्णव ४५ ॥

अथ श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक भगवानदास सारस्व त ब्राह्मण तिनकी वा· र्ता लिख्यते

सो उन भगवानदास नें श्रीआचार्यजी महाप्रभू नकी सेवा नीकी भांति सों कीनी तब श्री आचार्य जी आप भगवानदास के ऊपर बहुत प्रसन्न भये· तब भगवानदास कों श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें आप कृपा करि कें अपनी श्रीपादुकाजी की से वा दीनी जो वृ इनकी सेवा नीकी भांति सों करियो तब भगवान दास श्री पादुकाजी की सेवा नीकीभां ति सों ऐसी भांति सों सेवा करते जो श्री ठाकुर जी· इनसों सानुभाव इते चानें करते सो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू भगवान दास के घर पधारे सो आवेार श्री आचार्यजी महाप्रभू विराजतहें ताठौ रनित्य उठि कें सवारें भगवान दंडौत करते सो या ते द्वारेार पर कोउ पाव न धारतो ऐसो उन को भा वहौ सोई भगवानदास श्री आचार्यजी महा प्रभू नके ऐसे कृपा पात्र भागवदीय हैं तासे इनकी वा र्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥वार्तासंग॥१॥वैष्णव॥५२॥
श्रीश्राचार्यजीमहाप्रभू नके सेवकभागवानदा सश्रीनाथजीकेभी तरिया तिनकी वार्ताहै॥

सो एक समय श्रीनाथजीके बालभोगकी स मग्री करत भगवान दास सों कछु सामग्री दाखी

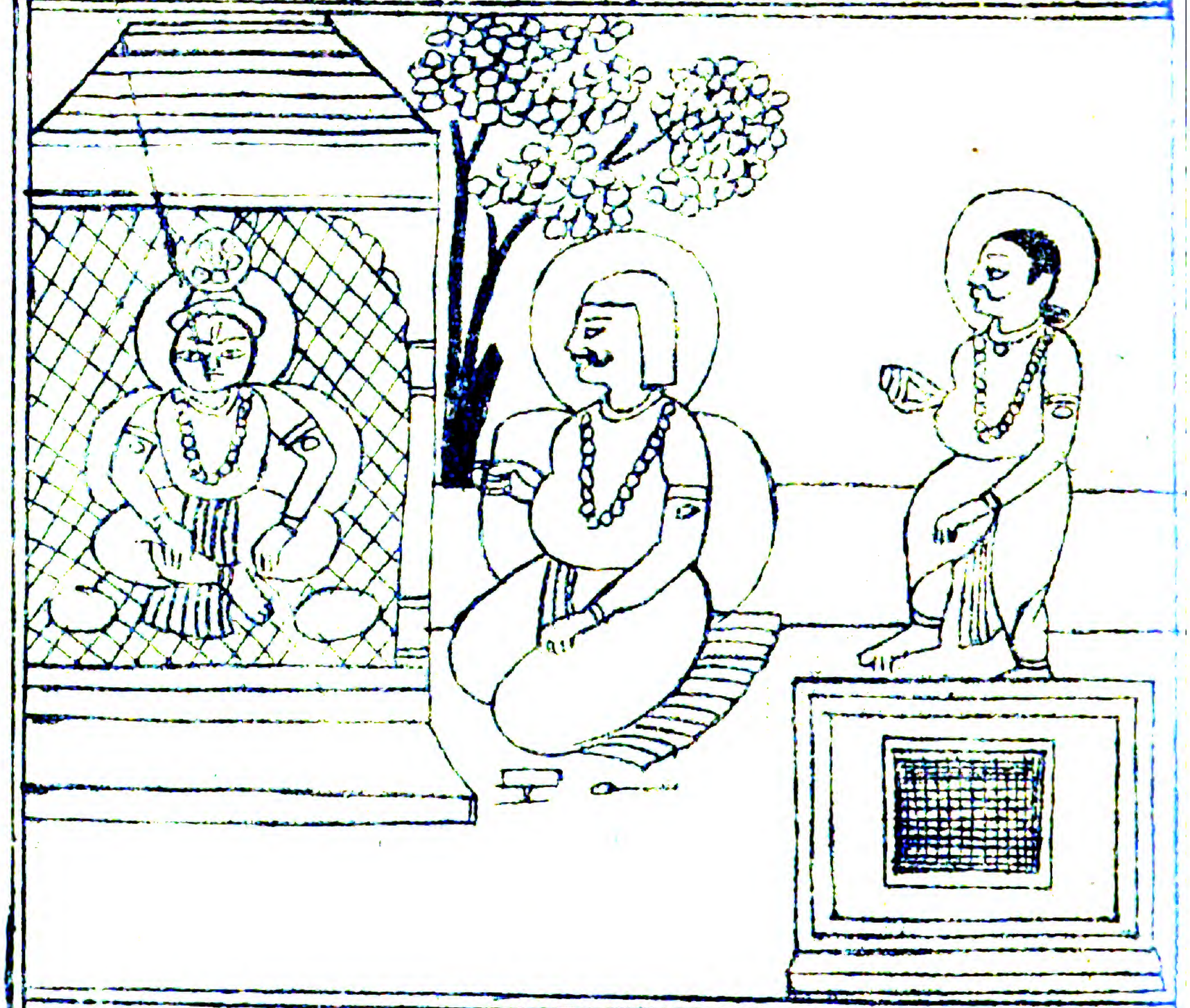

तब श्रीगुसांईजी भगवान दास के ऊपर बहुत खीजे और भगवान दास को सेवा तें भिन्न बैठारे सो भगवान दास गोविंदकुंड उपर आय अच्युत दास के पास आय बैठे पाछें श्रीगुसांईजी श्रीप

स्नान करिवे कों गोविंद कुंड ऊपर पधारे ओर
भगवानदास तौ पूछरी की ओर अच्युत दास के
पास हुते सो भगवानदास ने सब समाचार कहे पाछें ज
व श्री गुसांई जी गोविंद कुंड स्नान करिकें अच्यु
तदास कों दर्शन दैन पधारे तब श्री गुसांई जी के
दर्शन करिकें अच्युत दास की आंखन में सूधा
सून को प्रवाह चल्यो सो देखि कें अच्युत दास
कों श्री गुसांई जीने अच्युत दास सों पूछो जो अ

च्युतदास तुमकों ओसो दुक्ख कहाहै तब अच्युत
दास में श्री गुसांई जी सों कह्यो जो महाराज श्री आ
चार्य जी महाप्रभून कों तो श्री नाथजी नें आज्ञा
दीनीहै जो तुम जीवन को ब्रह्म सम्बन्ध करावो

सो साठ लाख जीवन कों तुम हाथ अंगीकार क
रनो है और श्री आचार्य जी महाप्रभूनें तो तुमकों
सोंपे हैं और तुम जीवन को अपराध देखन लागे
और जीव तो सदा अपराधही ते भर्यो है सो जी
वन कों अंगीकार करनों तुम्हारे हाथ है ताते अ
व जीवन कों अंगीकार ..... कैसें होय गो तब
श्रीगुसांई जी यह बात सुनिकें आप भगवानद
स कों हाथ पकारि कें श्रीगोवर्द्धन पर्वत ऊपर लें
चढ़े और श्री गोवर्द्धननाथ जी की सेवा जा रीति
सों करते ता रीति सों सेवा करन की आज्ञा दीनी
और कही जो अबते सावधानी सों सेवा करियो
और सामग्री आछी भांति सों करियो तब भगव
नदास ने तासमय श्री गुसांई जी के आगे नयो प
करिकें गायो ॥ सो पद ॥ राग सारंग

श्री विट्ठलेस चरण कमल ॥ सो यह पद गायो
सो सुनि कें श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भये पाछें
भगवानदास सावधानी सों सेवा करन लागे ता
भगवानदास श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे
कृपा पात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ता कहां ताई
लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥५३॥ *

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक अच्युतदास
मनोडिया ब्राह्मण ति
नकी वार्ता है ॥

सो वे अच्युतदास मानसी गंगा ऊपर रहते तहां चक्रतीर्थ है तहां रहते सो नित्य शृंगार के समय श्रीनाथ जी के दर्शन कौं आवते सो दर्शन करि के अपने स्थल कौं आवते सो उन अच्युत दास जीनें श्री नाथजीकी तीन परिक्रमा दंडोती करी हुतीं तब श्री गुसांईजी अच्युत दास के ऊपर बहुत प्रसन्न भए और श्रीगुसांईजी अपने श्री मुख सों कहते जो अच्युत दास बड़े भागवदीय हैं और बड़े महा पुरुष हैं सो वे अच्युतदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के तथा श्री गुसांईजी के ऐसे परम कृपा पात्र भागवदीय है ताते इनकी वार्ता कहा तांई लिखिये ॥*

॥ वार्ताप्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥५७॥*

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक अच्युतदास गौड़ ब्राह्मण तिनकी वार्ता लिख्यते

सो वे अच्युतदास बड़े भागवदीय हे और श्री आचार्य जी महाप्रभून नें इनके मांथे श्री मदन मोहन जीकी सेवा पधराई हुती आप कों पाठवे ठारे हुते सो अच्युतदास श्री मदन मोहनजीकी सेवा नीकी भांति सों करते तब श्री मदन मोहनजी आप अच्युत दास सों सानुभाव हुते वातें करते और अच्युतदास ऊपर श्री ठाकुर जी ऐसी कृपा करते और एक दिन अच्युत दास श्री नाथजी के

दर्शनको आवत हते तब श्री गोवर्द्धननाथजीकी एकदंडौती परिक्रमा करते ऐसे भागवदीय हैं औ रजब श्री गुसांईजी के पास आवते तब श्री गुसांई जी अच्युतदास कौं दंडौत न करत देते और कहते

जो ऐसे श्री आचार्य जी महाप्रभून के कृपापात्र भ गवदीय हैं तातें इनकों दंडवत न करन दीजिये पा छें जब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें लौकिक ली ला आसुर व्यामोह लीला दिखाई तब अच्युत दासनें श्री मदनमोहनजीकौं श्री आचार्यजीम हाप्रभून के घर पधराये आप श्री बद्री नाथ जीके दर्शन कौं उठि गये तब उहां जायकें श्री बद्रीनाथ जीके दर्शन करि कें अन्नजल को त्याग करि कें

अपनी देह छोड़ी पाछें श्रीमदनमोहनजी कौंक
हौ गोपीनाथजीने श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास
पधराए वे अच्युतदास श्री आचार्यजी महाप्रभू
नके ऐसे भगवदीय है जिन श्री आचार्यजीमहा
प्रभूनकौस्वरूप साक्षात करि जान्यौ और उन
की श्री महाप्रभून के ऊपर बडी आसक्ति हुती जो
परोक्ष भए पाछें अन्नजल को त्याग कीयो तब
देह छोड़ी भक्ति मार्ग को स्वरूप केवल विहास
किहै सो वे अच्युतदास ऐसे भगवदीय है तातें
इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ ❋

॥ वार्ताप्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ५५ ॥

श्री आचार्यजी महा १
प्रभून के सेवक अच्यु
तदास सारस्वत ब्रा
ह्मण तिनकी १
वार्ता है ॥

सो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभून के संग
अच्युतदास नें पृथ्वी परिक्रमा कीनी हुती सो श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें अच्युतदास कौं अपनी
पादुकाजी की सेवा दीनी सो अच्युतदास नें आ
ति उत्तम रीति सों श्रीपादुकाजी की सेवा कीनी
वाते श्री आचार्य जी महाप्रभू अच्युतदास कौं
नित्य दर्शन देते और जो श्री आचार्यजी महाप्रभू
नें सन्यास ग्रहण कीयो सो केवल उनके भावार्थ
कीयो तब एक वैष्णव सों श्री आचार्यजी महा

प्रभून नें कह्यो जो एक डोंगी कासी कों भाड़े करलें
उ तब वह वैष्णव डोंगी भाड़ें करि लाये ताके ऊप
र श्री आचार्यजी महाप्रभू चढ़ि कें बनारस पधारे
तहां सन्यास डेढ़ महीना तांई राख्यो तब वह वैष्ण
व जो काशी में गयो हो सो कासी ते कंड़ा में आयो
तब अच्युतदास तथा सब वैष्णवन सों कह्यो
जो श्री आचार्यजी महाप्रभूननें सन्यास ग्रहण की
यो फेरि कासी पधारे सो उहां डेढ़ महीना तांई रहे
पाछें असुर व्यामोह लीला दिखाई तब अच्युत
दासनें या वैष्णव सों कह्यो जो तोकों भ्रम भयो हो
यो तब वा वैष्णवनें कह्यो जो में श्री आचार्यजी
महाप्रभून के साथ हतो सो कासी ते देखि कें अब

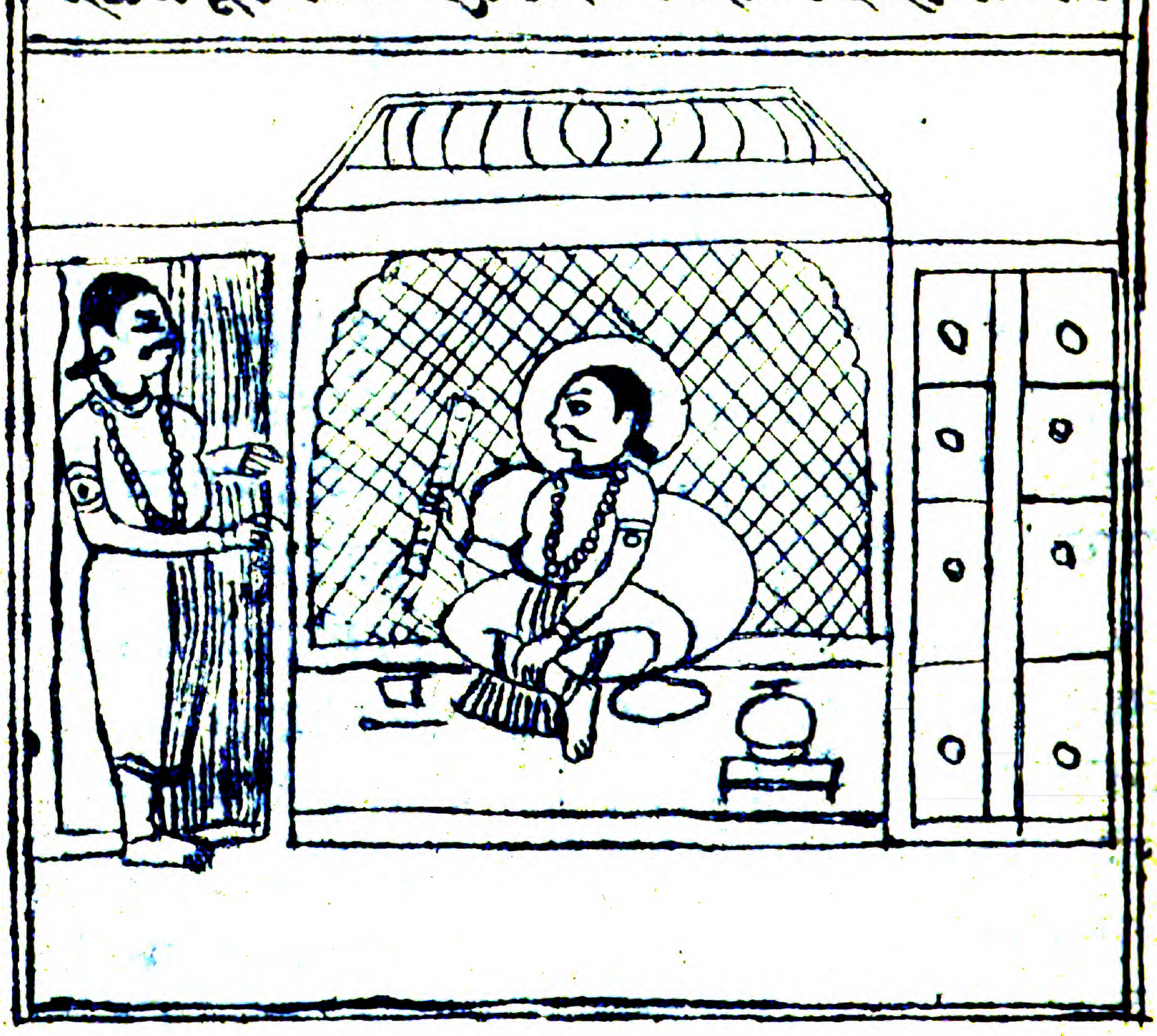

हो हो आयो हों तब श्रीअच्युतदास नें कह्यो जो ऐसो प्रभू
कबहू न करें जो जीवन कों आसुर व्यामोह लीला
दिखावत हैं तब श्रीअच्युतदास नें मन्दिर के किवाड़ खो
लिकें वा वैष्णव कों श्रीआचार्यजी महाप्रभून के
दर्शन करवाये तब देखें तो श्री आचार्यजी महाप्रभू
विराजे हैं और पोथी देखत हैं तब वा वैष्णव नें बड़ो
ताप कीनो तब श्री आचार्यजी महाप्रभू नें कह्यो तुम
कछू सन्देह मति करो यह प्रागट्य लौकिक देहि सों
देह धरे की लीला है और सिंहासन बैठिकें अलौकि
क लीला नित्य है ताते यह लीला श्रीवल्लभ अवतार
प्रगट है ताते तहां आरूढ हैं ताते सन्देह न करनो यह
आसुर व्यामोह लीला है सो श्री गुसांईजी मैं वैष्णव
में लिखे हैं जो प्राकृतानुकृत व्याज मोहिता सुरमा
नुषः मनुष्य देह धरे ताकी यह लीला है सो अच्युत
दास ऐसे स्वरूप नेष्टा के जिन कों श्री आचार्यजी
महाप्रभून के स्वरूप की ऐसो दृढ़ विश्वास हो
वे अच्युत दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे
कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांलों
हू लिखिये ॥*॥

वार्ताप्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ पूर्वापरसम्बन्ध ॥१२८

श्रव श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक
वक नारायणदास अम्बाले
के वासी हते तिनकी
वार्ता लिख्य
ते हैं ॥

सो वैनारायणदासदेशाधिपती के चाकर हुते तिनकों राजद्वार को काम बहुत हुतो ताते श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आय सकते नां ही परि अंतः करन में श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन की आतुरता बहुत जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों कब जाउंगो परि आय सकते नाहीं ताते नारायणदासनें एक चाकर राख्यो ताकों महीना रुपैया ४) चारि को कीनों और वा सों कह्यो जो तेरो यह काम है जो मोकों छिनछिन में सुरत दीवायो करि जो भैया जी श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों कब चलोगे यह कहि कें सुनाउ जोहम कों श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन की सुधि रहे सो वह चाकर योंहीं कह्यो करें

तब नारायणदास अपने कार्य में बैठे तब आगे आप कें ठाडो होय कें एक१ घडी उपरांत कहैजो भैया जू श्री आचार्यजी महा प्रभून के दर्शन कों कब जाउंगो ऐसेंही नित्य प्रति कहै और नारायणदास श्री आचार्यजी महाप्रभून कों भेट बहुत पठावते नारायणदास ऐसे भगवदीय है सो उन कों चित सदा श्री आचार्यजी महाप्रभून के चरणारविंद में रहतो ताते श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत ही प्रसन्न रहते वे नारायणदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥*

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥५७॥ सम्वन्ध १२६

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक नारायणदास मां ट मथुरा में रहने नि नकी वार्ता * लिख्यते

सो नारायणदास कों श्री मदनमोहनजी नें आज्ञा दीनी हुती जो वृन्दावन में अमुक ठौर हौं सो वहां सों काढ़ि के मोकों बाहिर पधराउ तब नारायणदास जाय कें श्री मदनमोहनजी कों बाहिर पधराय कें पाछें जब श्री गोपीनाथजी नें श्री मदनमोहनजी कों पाठ सिंहासन बैठारे तब कितनेक दिन तांई नारायणदास नें सेवा कीनी तब उनके पाछें उनकों कोऊ नहुती ताते बड़ी गोंडिया सेवा

करनलागे श्रीगोपीनाथजी ने पाट बैठारे ताते सब कोऊ दर्शन कौं आवहै वे नारायण दास ऐसे भगवदीय हे तिन कौं श्रीमदनमोहनजी आप कृपा करिकै वृन्दावन पधारे श्रीमदनमोहनजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभून कौ सेवक जानि कैं नारायणदास के ऊपर कृपा कीनी ताते वे नारायणदास श्रीआचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ * वार्तीप्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥५८॥ सम्बंध १३०॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक नारायणदास चौहानठट्टे के बासी ति

नकी वातीहै
सोवे नरायणादास ठट्ठे के पातसाह के दीवान कुल
कुलां हुतो जो नारायणदास दीवानकरे सोहोयपाछे
कि ननंका दिन में वह पातसाह नारायणादासके ऊपरको
ध्यो तव नारायणदास को पकरयो तव बहुत मारयो
और वन्दीखाने में देदीयो पाछे पचास लाख रुपैया
वाके माथे दंड कीकीयो सो दिन प्रति पांच हजार भ
रे और जादिन रुपैया न भरै तादिन नरायनदास कें
पांचसो कोरडा मारने पातसाह ने ऐसोबंधान कीयो
तव एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक
दोउ भाई ब्राह्मण तिननें अपने मन में विचार कीयो
जो ठट्ठे में नारायणदास दीवानहै सोहमउनके पास
चलोहमकों अपनी कन्या की विवाह करनों है ताते
जोवे कहूदेय तो कन्या को विवाह करें सो ऐसो
विचार कें वे दोउ भाई अपने घरते ठट्ठे कों चले सोठ
ठे में जाय कें पहुंचे तव वहांजाय कें सुन्यो जो नराय
णदास तो वन्दीखाने में परयो है तव वे दोउ भाई अ
पने मन में विचार करन लागे जो अब कहा करिये
ऐसो विचार दोउ भाईन नें कीयो जो अब यहा
सोंचलिये तव प्रातःकाल यह वात नारायणदास
ने सुनीजो वे दोउ भाई श्री आचार्यजी महाप्रभूके
सेवक गांव में आये है सो उननें सुनीजो नारायण
दास तो वन्दीखाने में परे है तातें अब यहांसे प्रातः
काल चलोगे तव नारायणदासनें उनकेपास मनु
ष्य पठायो और कहिवाय पठाईजो तुम आये सो

मेरो बड़ो भाग्य है मेरे पास तुम प्रातःकाल होय
के दर्शन अपने मोकूं देके जो यों तब वे दोऊ भाई
प्रातःकाल उठि देह कृति करि तिलक मुद्रा क
रि नित्य कर्म सों पहुंच कें श्री आचार्यजी महा प्र
भून कों चरणामृत और महाप्रसाद लैकें जहां ना
रायणदास बन्दीखाने में हुते तहां दोऊ भाई नारा
यणदास के पास जाय मिले तब नारायणदास वे
उनकों देखि कें परम आनन्द भयो और बहुत प्र
सन्न भए तब उन दोऊ भाईनें चरणामृत और म
हाप्रसाद नारायणदास कों दीनों तब नारायणदास ने
लीनों और कह्यो जो मोकों बन्दीखाने में वैस
वनको दर्शन भयो तब नारायणदासनें श्री आचार्य

जी महाप्रभून के कुशल समाचार पूछे पाछें भगवद्
वार्ता के प्रसंग करन लागे इतने में नारायणदास के
घरते पांच हज़ार रुपैया न की थैली आई सो द्वार पा
लनें थैली के ऊपर मोहर छाप करि के नारायणदास
के पास पठाई तब नारायणदासनें वे पांची थैली उ
न द्वेउ भाईन कों सोंपि दीनी और दंडौत कीनी और
कह्योजो अब तुम बेगि पधारो और श्री आचार्यजी
महाप्रभून कों मेरी दंडौत करियो और तुम अपनी
कन्या कों विवाह या द्रव्य ते भली भांति सों करि
यो तब वे द्वेउ भाई ब्राह्मण नारायणदास ते विदा
होय के चले तब इतने में पात्साह बोल्योजो पांचो
थैली नारायणा वारी लावो तब दरवान बोल्योजो
पांचों थैलीन ऊपर मोहर छाप करि कें नित्य नारा
णदास के पास पठावत हैं त्योंही पठाई हैं तब पात्सा
ह बोल्यौ जो खजानची कों बुलावो तब मनुष्यजा
य कें खजानची कों बुलाय लाये तब खजानची आगें
आय ठाड़ो भयो तब पात्साह नें खजानची सों पू
छ्यो जो कोरे तेरे पास नारायणदास के पास वे पांचों
थैली आई हैं तब खजानची नें कही जो साहब मेरे
पास तो नाहीं आई तब पात्साह कों बहुत क्रोध
भयो और कह्यो जो नारायणदास कों बुलावो तब
नारायणा दास कों बन्दीखाने मेते बुलाये सो लायकें
पात्साह के आगें ठाड़ो कीयो तब नारायणा दास ने
पात्साह ने पूछ्यो जो नारायणदास आज थैली क्यों
नाहीं आई पाछें घोड़ो सो गाड़ो कोरड़ा करिकें

कोड़ा वारी बुलायो और पातसाह नें पांचसौ कोड़ा कौहुकदीयो और पातसाहबोल्योजो नारायण दास सांच कहि जो आज थैली क्यों नाहीं आई द्वारपालनें तौ मुहर छाप करि कें तेरे हवालें कीनी और तेनें यह कहा कीयो तू सांच कहि नाहीं कोड़ा लागत हैं तब नारायणदास सलाम करिकें बोल्योजो हजरत आज मेरे गुरूभाई आयेहुतेसो

वेपांचों थैलीउनकों दीनी और मेनें अपने मनमें कह्योजोमें आज मार खाय रहूंगो परि यह घड़ी कहांहै तब पातसाह चुपकरि रह्यो पाछे एकघड़ीविचार कें कह्यो जो स्यावास तू अपने गुरू के आगे सांचोहै सो मैं तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न

तवपातसाह ने वाही समय वेड़ी कटवाइ के वा
ही समय घोडा तथा सिरोपाउ मगायकें नारायण
दास कौं पहरायो घोड़ा दीयो और निवाज्यो तव
फीर कें अपनों कुल कुलादीमान राख्यो जैसो पह
लेंहतो तैसेंई कीयो काम सब सोध्यों श्रीनारायन
दास के मांथे दंड कीयो हतो सो सब माफ़ करि कें
सिरोपाव पहराय कें कह्यो जो जा घर होय आउ सो
सिरोपाव पहरि कें घोड़ा ऊपर चढ़ि कें नारायणदा
स घर कों गये सो वे दोउ भाई वैष्णव गांम में ही
हते सोइ दोउ भाई वैष्णव सुनि कें नारायणदास
सों मिलिवे कों आये तव नारायणदास उनसों
मिले भेंट और कह्यो जो मेरे गुरू के सेवक आये
तौ में छूटो तव उन वैष्णवन नें कह्यो जो श्रीआ
चार्य जी महाप्रभून को कृपाते कैसेंन छूटे तवना
रायणदास ने १००० हज़ार मोहरन की एक थे
ली वैष्णवन के हाथ श्री आचार्यजी महाप्रभून
कों भेट पठाई पाछे वे दोउ भाई उहां सों चले सो
कितनेक दिन में श्री गोकुल आये तव श्री आचा
र्यजी महाप्रभू श्री गोकुल में हुतो सो उन दोउ भा
ई वैष्णवननें आय के श्री आचार्यजी महाप्रभून
को दर्शन कीयो और नारायणदास को हज़ार मो
हर की थैली आगें राखी तव श्री आचार्यजी म
हाप्रभूतनें नारायणदास के कुशल समाचार पू
छे तव उन वैष्णवननें सब समाचार कहे तव श्री
आचार्यजी महाप्रभू अपनो श्री मुख सों कहेंजो

जाकों वैष्णव ऊपर ऐसो दृढ़ स्नेह है ताकी कथा कहांलों कहे पावें वे वैष्णव ब्राह्मण श्री आचार्यजी महाप्रभून ते बिदा होय कें अपने घरको गये सो बेटी को विवाह आछी भांति सों कीयो और पहु लेउन कों नाम नरियाहुतो सो सेवक भए पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभूननें नारायणदास नाम धर सो जाको ऐसो मन होय नाथे श्रीठाकुरजी ऐसी कृपा करें प्रभूजी को नाम भक्त वत्सल है सो अपने को चोरही में कृपा करतहैं सो वे नारायणदास ऐसे कृपा पावहुते इनकी वाती कहां तांई लिखियें॥ +

॥वातीप्रसंग॥१॥ वैष्णव ॥५७॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक एक क्षत्राणी
अकेली सीहनन्द ५
मेरहतीतिन ५
कीवाती

सो क्षत्राणी कें श्री नवनीत प्रियाजी विराजेहैं श्रीठाकुरजी सानुभाव हैं सोइह बाई अकिंचन सेवा जब करि पहुचे तब सूत कातै तामें जो कछु बढ़ती आवे तासों निवाह करे सो घर के द्वारे का किछु तरकारी केवन आवे तब श्रीठाकुरजी मन्दिर में पुकार कें कहें अरी अमुकी तरकारी विक ने आई है तूले ऐसें श्रीठाकुरजी कहें तब वह क्षत्राणी सब भांति की तरकारी लेहि सो केतिक

तौकच्छी समर्पे केतिक रसोई में डोंकि कें समर्पे
और कबहूं काछिन को शब्द श्रीठाकुरजीनसु
नें और वह काछिन आगें निकस जाय तब वह
वाई सामग्री कछू लैन सकै तब श्रीठाकुर जी वा
सों बहुत गरि करें जैसे लौकिक स्त्रिका गर करें
तैसे श्रीठाकुर जी वा क्षत्राणी सों झगरो करें और
एक दिन कछू पकवान वाल भोग को होय न आ
यो तब रोटी घी सों चुपरि कें रात्री के लिये डोंकि
एवी सो जब रात्रि आधी भई तब श्रीठाकुर जी
बोले वा क्षत्राणी वाई कों जगाई और कहूं जो
हों भूखों हों तब वा वाई नें कह्यो जो लालजी प
कवान तौ कछू नाहीं है और रोटी घृत सों चुपरी
धरी है तब श्री ठाकुर जी कहे जो भलो रोटी ही
लाउ तब वा वाई ने रोटी आगें आनि धरी तब
श्रीठाकुर जीने वा वाई सों कह्यो जो तुमो कों रो
टी की तुतुरी कर कें दै तब वह वाई श्रीठाकुरजी
के हस्त में दैन जाय तब अपने श्री हस्त में लेकें
कतरि कतरि कें आरोगन जाय पाछें जब पान क
रकें पोढ़े परि वा क्षत्राणी के मन में क्षोभ भयो तब
इन सों और कह्यो जो सवारे उधारे लाय कें पक
वान करि धरोगी जो रात्रि कों श्री ठाकुर जीनें की
की अकेली रोटी आरोगी पाछें दूसरे दिन पकवा
न करि धरयो तब रात्रि कों श्रीठाकुर जी नें मांग्यो
तब पकवान लैकें आगें धर्यो तब श्रीठाकुर जी
आरोगे तब कह्यो जो अमुकी तेनें पकवान तो ध

सो परि मोकों पकवान वीच रोटी की तुतरी अ
ति अद्भुत स्वाद लगी तब वा क्षत्रानीने कह्यो र
जो महाराज में कहा करूं मेरो कोई कमावन र
हारो तो है नाहीं मैंतो अकेली हों मोते तो कब
हू कछु होय आवत नाहीं तब श्री ठाकुरजीनें
वा क्षत्रानीसों कह्यो जो तू नित्य पकवान काहे र
को करत है तू मोकों रोटी चुपरि कें धरि राख्यो क
रि मोकों तो तेरी रोटी बहुत रुचित है तातें तू सं
कोच मति करै हमकों तो तेरी रोटी चुपरी बहुत
स्वाद लागत है पाछें वह रोटी करि राखती सो श्री
ठाकुर जी आरोगते वह क्षत्रानी श्री आचार्य
जी महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्र भावदी यही

ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं सो अब कहांतांई लिखिये॥ ३९

वार्ताप्रसंग॥१॥ वैष्णव॥ ६०॥ ॥ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक दामोदरदास का
यस्थ सेरगढ के वा
सो तिनकी वा
तीहै॥

सो तिनकी सेव्य ठाकुर श्री कपूर रायजी सोवत गौर स्वरूप हतो तिनके पास श्री नवनीत प्रियाजी बैठते सो एक समय दामोदरदास की स्त्री वीरबाई ताके गर्भ रह्यो पाछें प्रसूत भई सो पुत्र जन्म भयो सो घर की वहू बेटी सब प्रसूत के काम काज करन लागी सो श्री ठाकुर जी की सेवा में विलम्ब भयो वीरबाई प्रसूतक में ते बहुत कहे जो कोऊ सेवा में न्हाउ श्री ठाकुरजी की सेवा में अबेर होत है पर कोऊ नाहीं न्हाय तब श्री ठाकुरजीने वीरबाई सों कह्यो जो तू स्नान करि के सेवा क्यों नाहीं करत है तब वीरबाई प्रसूतक मेते उठि के श्री ठाकुर जी सों कह्यो जो महाराज मेरी तो यह व्यवस्था है मोकों तो सेवा में आमनो नाहीं प्रसूतिका में है अपरस छूट जाइगी तब श्री ठाकुर जी महाराज ने वीरबाई सों कह्यो जो मोकों तो मेवा में विलम्ब होय है मोको इतनी अबार भई है सो तू जो न्हात नाहीं ताते तू ही न्हाउ तब यह वीरबाई

श्रीठाकुरजी के श्रागमते उठिके प्रसूतकामेंते न्ह
यके काछ देंकें श्रीठाकुर जी की सेवा करिकें पाछें
भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सराय कें
नोंसर करिकें श्राप भोजन करिकें खाट में सोय
रही श्रीठाकुरजीकी श्राज्ञा सोंसेवा कीनी सो
सेचालीस दिन तांई नित्य करती तब श्रीठाकुरजी
ने काह्यो जो तेंने मेरी श्राज्ञाहू मानी श्रौर वेद मार्ग
की रीतिहू राखी ताते श्रीठाकुरजी बहुत प्रसन्न
भए तब चालीस दिन बीते तब शुद्ध स्नान करकें
सेवा करन लागी पहले पात्र वस्त्र सब श्रपरस
दूर कीने श्रौरदूसरे सबनये मंगवाए पाछें भली
भांति सों सेवा करन लागीनाते वह वीर बाई श्री
श्राचार्यजी महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्रभग
वदीय ह्वीताते इनकी वार्ता श्रब कहां तांई लि
खिये ॥*

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥६१॥*

श्रब श्री श्राचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक स्त्रीपुरुष दोऊ
छत्री हुते तिन की ॥
वार्ता लिख्यते

सो वे स्त्रीपुरुष दोउ जने सीहनन्द में श्राय रहे सो
वह घर निपट छोटो हुतो ताते श्रीठाकुरजी तास
मय बैठिते सो श्राधी कोठरी में तो रसोई करते श्रौ
र श्राधी में रहते श्रौर सेया को ठौर न हुतो ताते एक
कांस को मेंडा कर राख्यो हुतो ताके ऊपर श्रीठाकु

स्त्री पोढ़ते आप .... स्त्री पुरुष दोऊ जने रात्र
कों आगन मे सोय रहते ऐसें करत नव चातुर
मास के दिन आये नव मेह वरसनो तोऊ वे आं
गन में सोय रहते परि भीतर न सोवते नव ठाठा
कुर जी भीतर सों बोलते जो अरे अमुका अमु
कोहो तुम भीजत क्यों हो भीतर क्यों नाहीं सोव
त हो बाहिर काहे कों पोढ भीजत हो ताते तुम भी
तर आवो और हमनो ऊंचे मेडा पर हैं तुम नीचे
क्यों नाहीं सो वत हो तब वा स्त्रीने कह्योजो
महाराज तुम तो ऊंचा मेडा ऊपर पोढत हो और
मैं नीचे कैसें सोऊं तब श्री ठाकुर जी प्रसन्न होय
के कहें जो कछु बाधक नाहीं तुम कछु संकोच
मति करो हम तुमते प्रसन्न होय कें कहत हैं तातें

तुम भीतर खुसीसों सोय रहो पाछें तब वे दोऊ जने भीतर सोवन लागे परि ऐसी भांति सों सोवते मति कहूं स्वास बाजे ऐसे सावधानी सों सोवते सोवे स्त्री पुरुष श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहा तांई लिखिये ॥*

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ६२ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक सूतारिकी गिर अडैल में रह ते तिनकी वा: ताँहे ॥

सो उन सूतार ऊपर श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत कृपा करते वा सूतार के ऐसो नेम हुतो जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन विना एक दिना न रहतो ताते वह सुतार सब घर को काम काज छोड़ि कें नित्य श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों आवतो तब घर के मनुष्य दुख बहुत पावते ताके लिये श्री आचार्यजी महाप्रभू आप वा सूतार के घर पधारते वामों श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत वार्ता करते और श्री आचार्यजी महाप्रभून की माता दुलंमागारूजी सो श्रीआचार्यजी महाप्रभून की माता खीजती और कहैं जो तुम ऐसे अनुचित कों करत हो ऐसे उचित नाहीं ऐसें कहि कें दुलंमागारूजी बहुत रिस

कर तो परि श्री आचार्य जी महाप्रभू चोथे पाच दि
दिन तो पधारते ऐसी कृपा श्री आचार्य जी महाप्र
भू वा सूतार के ऊपर करते सो वह सूतार श्री आ
चार्य जी महाप्रभून को ऐसो कृपा पात्र भाव
यहो ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६३ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
नके सेवक एक क्षत्री हुते
ताकों अन्यमार्गीय
को स्नेह हुतो

सो वा क्षत्रीसों अन्य मार्गीय को स्नेह हुतो सो
एक दिन वह वार्ता अन्यमार्गी के घर गयो तब वा
क्षत्रीसों कह्यो जो तुम आज दूहांई पाक करियें
तब वाके आग्रह तें वा क्षत्री वैष्णव ने पाक उहां
ई कीयो तब पाक करिकें वा अन्य मार्गीय ठाकु
र के आगें श्री नाथ जी को नाम लेकें भोग सम
र्प्यो पाछें समयानु सार भोग सराय वाको प्रसाद
दीयो पाछें आपनें लीयो पाछें वहांई विश्राम
कीयो सो निद्रा वस भए तब वा अन्य मार्गीय के
सेव्य स्वरूप ने स्वप्न में कह्यो जो आज तो हम भूखे
रहे तब वा अन्यमार्गीय सें कह्यो जो तुम कोंतो
वा वैष्णव ने पाक भोग समर्प्यो हो और तुम भूखे
कैसें रहिगये तब उनके सेव्य श्री ठाकुर जी ने के
ह्यो तोपर हो श्री नाथ जी आप आरोगिहैं हम
को तो श्री नाथ जी ने बासी दे दीयो ....

तब वह अन्य मार्गीय को मित्र सोयो होता कों
जायेंगो तब वह जाग्यो तब सब समाचार कहे तब
वा स्त्री ने कह्यो जो मंतो सों के ताकवार कहो
जो यह श्री आचार्यजी महाप्रभून को सेवक होय
सो याहो के लिये हमारे प्रभूजी श्री आचार्यजी
महाप्रभून की कृपा ने सेवक के हाथ को आरो
गत हैं पाछें वह अन्य मार्गीय सब कुटुम्ब सहित
श्री आचार्यजी महा प्रभून की सरण आये सब
सेंत सेवक भयो पाछें वाके स्वरूप को श्री आ
चार्यजी महाप्रभूननें पंचामृत सों स्नान करवा
यो पाछें पाठ बैठारे ता पाछें भोग समर्प्यो समया
नुसार भोग सराय कें सब वैष्णवन को बुलाय
महाप्रसाद लिवायो पाछें वह अन्यमार्गीय
श्री ठाकुरजी की सेवा भलीभांति सों करन लाग्यो
पाछें वह स्त्री भलो वैष्णव भगवदीय भयो
वा स्त्री वैष्णव के संग ते भलो भगवदीय भयो
ताने संगकरनों तो वैष्णव को करनों भगवदीय
को करनों वह स्त्री वैष्णव श्री आचार्यजीम
हाप्रभून को ऐसो कृपा पात्र भगवदीय होता
तेह्नको वार्ता कहा ताईं लिखिये ॥ +

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥६४॥

अब श्री आचार्य जीमहाप्र
भून के सेवक लघु पुरु
षोत्तमदास हाती ×
तिनकी वार्ता

सोवे लघु पुरुषोतम दास श्री आचार्यजी महा
प्रभून कोवथा श्री नाथजी कों एक सार जानते श्री
आचार्य जी महाप्रभून कौ स्वरूप साक्षात पुरुषो
तम करि जानते लघुपुरुषोतम दास की श्री आचा
र्य जी महा प्रभून के ऊपर बड़ी आसक्ति हुती वार्ते
श्री महाप्रभूजी लघुपुरुषोतम दास के ऊपर व
हुत प्रसन्न रहते लघु पुरुषोतम दास दूसरो स्व
रूप जानते नाहीं श्रीगाकुर जी कों तथा श्री महा
प्रभूजी कौं एक जानते वे लघुपुरुषोतम दास ऐ
से कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वाती कहां
तांई लिखिये ॥ ॥

॥वाती प्रसंग॥ शा वैष्णव॥ ६५॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक कविराज भा
ट तिनकी वाती है॥

सोवे कविराज भाट ब्राह्मण हुते सो तीन भाई
हुते सो तीन्यौ भाई श्री आचार्य जी महाप्रभून के
ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय है उनकों नाम
समर्पणा करवायौ पाछें श्री नाथजी के सन्निधान
बहुत कवित पढ़े भये २ कवित्त करिकें श्री नाथ
जी के सन्निधान कवित सुनावते पाछें श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के कवित्त बहुत कीये ताते श्री
आचार्य जी महाप्रभू कविराज भाट के ऊपर बहु
त प्रसन्न रहते सोवे कवि राज भाट श्री आचार्य
जी महा प्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भागवदीय

हे तातें इनकी वार्ता कहांलौं लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६६ ॥ *

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
नके सेवक गोपालदास
ठोरा के वासी तिनकी
वार्ता लिख्यते ॥

सो गोपालदास के कीये छन्द बहुत हैं सो गोपालदास की श्री आचार्यजी महाराज के ऊपर बहुत आसक्ति हती सो एक समें गोपालदास अडेल आये सो दूसरे दिन श्री आचार्यजी महाप्रभूनको जन्मोत्सव हतो सो श्री आचार्यजी महाप्रभू मार्कन्डेय पूजा कों बैठे हुते ता समय गोपालदास नें एक नयो छन्द कारि के गायो ॥ सो पद

राग बिलावल

माधो मास भरि बैसाख श्री वल्लभहरि जन्म लीये

॥ यह सुनिकें श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भए पाछें गोपालदासनें बहुत छन्द कीये सो ये गोपालदास श्री आचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहांलौं लिखिये ॥ *

॥ वार्तोप्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६७ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्र
भूत के सेवक जनार्दन
दास चौपडा क्षत्री
तिनकी वार्ता

एक समें श्री आचार्य जी महाप्रभू श्रीनाथ जी द्वार पधारे हते पाछें श्री गोकुल आये तब जनार्दनि दास ने श्री महाप्रभून कौ दर्शन कीयो नवल हौ जो ये साक्षात पूर्ण पुरुषोत्तम हैं ईश्वर हैं नव जनार्दनि दास नें वीनती कीनी जो महाराज मोकों नाम समर्पणा करवाइयें तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्रीनाथजी के सन्निधान जनार्दन दास को समर्पणा करवायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते जनार्दन दास मलो वैष्णव भयो सो श्री आचार्य जी महाप्रभू जनार्दन दास के ऊपर बहुत कृपा करते वे जनार्दन दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ *

* ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक गढ़ स्वामी मनोड़िया ब्राह्मण तिनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥

सोवे गढ़ स्वामी आप स्वामी कहावते सो एक स

मय श्री आचार्यजी महाप्रभू वृन्दावन में पधारे
हुते तब गडु स्वामी कों आज्ञा भई श्री ठाकुरजी
ने कृपा करि कें रात्रि कों स्वप्न में जनायो जो सवारे
श्री आचार्य जी महाप्रभू इहां पधारेगें सो तू इन
की सरणा जैयो तू सेवक हूजियो तब श्री आचार्य
जी महाप्रभू आप सवारे पधारे तब गडु स्वामी
स्नान करिकें जहां श्री आचार्यजी पधारे हुते त
हां गये तब जाय के गडु स्वामी नें दंडोत कीनी
और वीनती करिकें यह कह्यो जो महाराज मो
कों सरणा लीजिये तब श्री आचार्यजी महाप्र
भू मुसिक्याय कें कहें जो तुम तो आप स्वामी हो
तुम कों सेवक कैसे करियें तब गडु स्वामी नें श्री
आचार्यजी महाप्रभून सों वीनती कीनी जो महा
राज मोकों भगवद् आज्ञा भई है जो तू श्री आचा
र्यजी महाप्रभून की सरणा जैयो ताते महाराज
मोकों सरणा लीजिये तब श्री आचार्यजी महा
प्रभूनें गडु स्वामी कों नाम दीयो पाछें निवेदन
करवायो ता पाछें जो गडुस्वामी ने जो सेवक कीये
हुते तिन सबन कों श्री आचार्यजी महाप्रभून
पास नाम दिवायो पाछें वे गडु स्वामी बडे भगव
दीय भये श्री आचार्यजी महाप्रभू आप गडु स्वा
मी के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते सो वे गडु स्वामी
ऐसे भगवदीय हैं ॥

॥वार्ता प्रसंग॥१॥ वैष्णव ॥ छट्टे ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्र

भून के सेवक कन्हैया सा
ल क्षत्री तिन की
वार्ता है ॥

सोउन कन्हैया साल क्षत्री के ऊपर श्री आचा
र्यजी महा प्रभू बहुत प्रसन्न रहते बड़ी कृपा कर
ते श्री आचार्यजी महाप्रभून नें आप कृपा करि
कें अपने ग्रंथ कन्हैया साल कौं पढ़ाए सोई ग्रं
थ कन्हैया साल के पास ते श्री गुसांई जी नें पढ़े
सो श्री आचार्य जी महा प्रभून की कृपाते सब
स्फुर्द रूप भये सो वे कन्हैया साल क्षत्री श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भग
वदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥७०॥

अब श्री आचार्यजी महा
प्रभून के सेवक नरहर
दास गोडिया तिन
की वार्ता है

सो एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभून नें नरहर
दास के घर श्री मदन मोहन जी पाट बैठारे हुते
सो श्री मदन मोहन जी की सेवा नरहर दास नें नी
की भांति सों कीनी पाछें सरीर जब पस्यो तब सेवा
न होय आई तब नरहर दास नें श्री ठाकुरजी।
श्री गुसांईजी के घर पधराये सो श्री गुसांईजी
श्री रघुनाथ जी के पधराये सो श्री गोकुल चंद्र
माजी के पास जुदे बैठत है न्यारे सिंघासन ऊपर

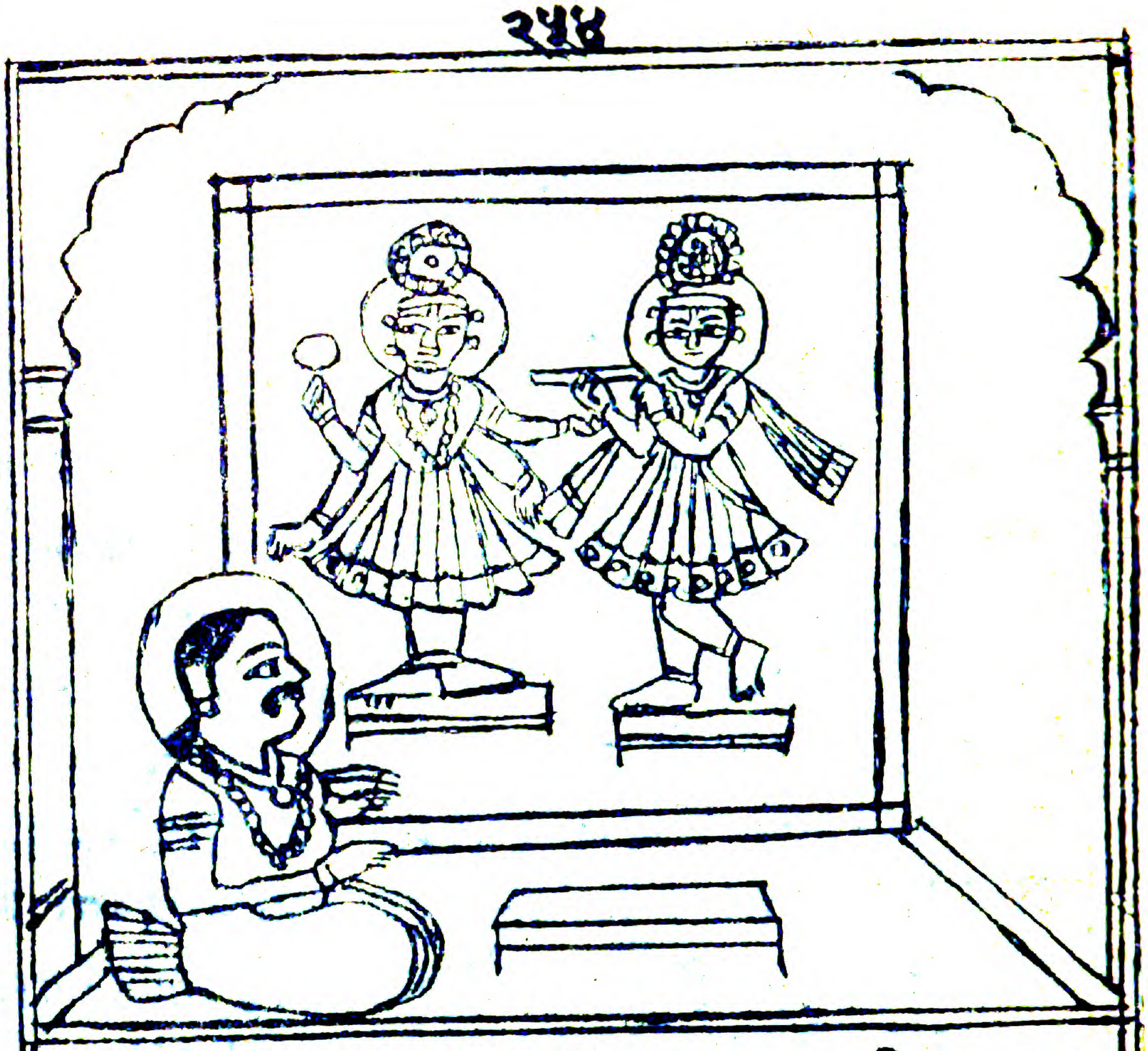

विराजते सो श्रीगुसांईजी नरहरदास के ऊपर व
हुत प्रसन्न भये वे श्रेसे भागवदीय हे श्रीर नरहर
दासनें अपने मन में विचारी जो श्रीठाकुरजी क
वहूंन सुख पामेंगें श्रीगुसांईजीके घर सुख पा
मेंगे सोवे नरहरदास श्रीगुसांईजी के श्रेसे परम
कृपापात्र भागवदीय हे सो इनकी वार्ती कहांतो
दूं लिखिये ॥+

॥वार्ती प्रसंग ॥१॥वैष्णव॥७१॥

श्रवश्री आचार्यजी महाप्र
भून के सेवक वादराय
णदास तिनकीवा
र्ती लिख्यते

सो वादरायरणादास और उनकी स्त्री मोरवी में रहते सो वादरायरणादास को पहिलो नाम वादा हुतो सो एक समय आछे भट्ट द्वारका श्रीरणछोड जी के दर्शन कों जातहुते सो मोरवी में रात्रिकों वे सो वादरायरण दास नें उनकों राखे तब वादरायरणा दास नें उन पास नाम पायो पाछें आछे भट्ट के पास श्री भागवत श्रवण कीयो तब श्रीभागवत सम्पूरण करि कें वादरायरण दास ते विदा हे यकें आछे भट्ट द्वारिका श्री रणछोड़ जी के दर्शन कों गये तब कितनेक दिन पाछें श्री आचार्य जी महा प्रभू आप द्वारिका श्री रणछोड़जी के दर्शन कों पधारे हुते तब मोरवी में उतरे सो वादरायरणा दास और उनकी स्त्री दोउजनेनें श्री आचार्य जी महा प्रभून के पास फेरि कें नाम पायो पाछें समर्पण करवायो पाछें श्री आचार्य जी महा प्रभू मोरवी में दिन दोय रहे ता पाछें श्री आचार्य जी महा प्रभू आप श्री रणछोड़ जी के दर्शन कों पधारे तब वादरायरण दास और उनकी स्त्री श्री आचार्य जी महा प्रभून के संग गये तब दोऊ स्त्री पुरुष श्री आचार्य जी महा प्रभून की सेवा में रहे सो उन दोउन नें ऐसी सेवा कीनी जो श्री आचार्य जी महा प्रभू उनके ऊपर बहुत प्रसन्न भये तब याको नाम वादरायरण दास धरयो ता पाछें श्री आचार्य जी महा प्रभू द्वारिका सों चले तब वे दोनों जने श्री आचार्य जी महा प्रभून के

* पहले वादरायनी सो श्री आचार्य जी महा प्रभूनें याको नाम

साथ गये सो मोरवी लों साथ आरा पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून ते आज्ञा मांगि के मोरवी में रहे पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप श्री गोकुल पधारे वे वादरायण दास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता लिखिये ॥ +

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७२ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक सद्दू पांडे मानिक चंद पांडे इनकी स्त्री तथा नरो बेटी आदि न्यौर में रहते हुते

सो जब श्री आचार्यजी महाप्रभू पृथ्वी परिक्रमा करत झारखंड में पधारे तब श्रीनाथजीने श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो तुम मेरी सेवा को चलावो व्रज में श्री गोवर्द्धन पर्वत है तहां हम तीन दमन हैं देवदमन, नागदमन, इंद्रदमन तिनके मध्य में हम देव दमन हैं सो देवदमन मेरो नाम हैं सद्दू पांड़े को बड़ो भाई मानक चन्द पांड़े हैं तहां हम प्रगट भये हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभू परिक्रमा झारखंड में राखि के व्रज को पधारे सो सेवक हू पांच सात साथ है दामोदरदास हरसानी कृष्णदास मेघन रामदास जी माधोदास इत्यादिक श्री आचार्यजी महाप्रभून

केसेवक सबघ्रान्योर में आरा सो सन्ध्यासमय
श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप सद्दू पांडे के घर पां
व धारे सो एक बड़ो चौंतरा सद्दू पांडे के घर के द्वारे
हुतो ताके ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभू विराजे
तब सद्दू पांडे ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों क
ह्यो जो स्वामी कछु खाउगे तब श्री आचार्य जी म
हाप्रभून नें कह्यो जो हम तो कछु न खायगे तब
कृष्णदास मेघन नें कह्यो जो ये तो अपने सेवक
के हाथ को लेत हैं विना सेवक तो ये काहू के हा
थ को लेत नाहीं इतने में श्री गोवर्द्धन पर्वत से
श्रीनाथ जी पुकारे जो नगे मेरो दूध लाउ तब न
रो ने कह्यो जो महाराज आज तो हमारें पाउनें श्री
बेहै ताने दूध नाहीं तब श्री नाथ जी नें कही जो

तेरे पालुंने आग हैं सो तो भली भई हम कहा करें परि मेरो दूध तो लाउ तब नरो बोली जो वारी लाल लाई तब नरो कटोरा भरिकें लैगई श्रीनाथ जी कों प्यायो तब श्री आचार्यजीमहाप्रभून नें दामोदर दास सों पूछो जो दमला ते कछु सुन्यो तब श्री आचार्यजी महा प्रभून सों दामोदरदास नें कह्यो जो महाराज यह प्राब्द और झारखण्ड को प्राब्द एक मिलत है सो ऐसो जान्यो परत है जो डुहांई लगाटे हैं सवेरें चलेंगे तब इतने में नरो दूध प्याय कें आई तब श्री आचार्यजी महा प्रभून नें नरो सों पूछो जो तू कहां गई हुती और कहा लैगयी हुती तब नरो बोली जो राज देव दमन कों दूध प्याय आयी हों तब नरो पे मांग्यो जो यामें दूध है तब नरो नें कह्यो जो स्वक है तब श्री आचार्यजी महा प्रभून नें कह्योजो यामें ते बच्यो है सो हमकों दे तब नरो बोली जो महाराज घर में बहुत दूध है तब सहू पांडे नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों बीनती कीनी जो महा राज हम हारे आप जीते अब हम कों ना मदीजिये तब श्री आचार्य जी महा प्रभून के मनिरकचन्द तथा सहू पांडे तथा इनकी स्त्री तथा नरो ये सब सेवक भए उनके ऊपर आपने हाथ फेरयो और नाम दीयो ता पाछें वह दूध लीयो पाछें उनके हू घर को दूध दही अंगीकार करो मोहे भ ले भावदीय है तब श्री आचार्यजी महा प्रभून नें सहू पांडे सों पूछो जो क हो पांडे महां ऊपरदे

बदमन प्रघट भए हैं सो कौन भांति सों प्रघट भये हैं तिनकी प्रागट्य तुम हमसों कहो सो श्री प्राचार्यजी तो साक्षात ईश्वर हैं आपही करत हैं और आपही पूछत हैं सो काहे ते जो आप जीव के ऊपर कृपा करिवे के लीये तब सद्दू पांडे ने श्री प्राचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो महाराज एक हमारे गांव की ग्वाल हुतो सो सब गांव की गायन कों चरावतो सो सब प्रकार सद्दू पांडे नें श्री प्राचार्यजी महाप्रभून के आगें कह्यो सो सब श्री प्राचार्यजी महाप्रभून नें सुन्यो सो श्री प्राचार्यजी महाप्रभू तो आप पूरणापुरुषोत्तम हैं आपही कहत हैं सो वे सद्दू पांडे तथा मानिक चन्द पांडे और सब श्री प्राचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हैं जिनके पास ते श्री प्राचार्यजी महाप्रभू तथा श्री नाथजी जो चहिये सो मांगि लेते और आप जिन के घर पधारते ॥ ॥

वार्ताप्रसंग ॥१॥

और एक दिन श्री नाथजी इन के घर दूध पीवे कों सोने को कटोरा लै आए तब श्री नाथजी ने नरो सों कह्यो जो दूध लाउ तब नरो तोड़ा कटोरा में दूध डारत जाय और श्री नाथजी आप आरोगत जाय सो दूध पीकें श्री नाथजी आप तो पधारे और कटोरा वहांई भूलि आए तब सवारे भए पाछें मंगला आरती के समय भीतरियानें देखी तो मन्दिर में कटोरा नाहीं तब इतने में नरो क

टोरा लै आई और कह्यो जो यह कटोरा लेउ रात्रि को लरिका भूलि आयो है तब सबजने बहुत प्र सन्न भया वह नरो ऐसो भागवदीय ही ॥*

वार्ता प्रसंग २

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून सों श्री नाथजी नें कह्यो जो मोकों गाय भगाय देउ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोदर दास हरसानी सों कह्यो जो श्री नाथ जी नें गायन के ली ये आज्ञा ... दीनी है सो श्री आचार्य जी महाप्रभूननें अपने हस्त को छल्ला सुवर्ण को दीनो और दामोदरदास हरसानी सों कह्यो याके दामनकी गाय लै आवो तब दामोदर दासनें वह छल्ला सदू पांडे कों दीनो और कह्यो जो याकों वेचि के या के दामन की गाय लेउ श्री आचार्य जी महाप्रभून नें गाय मगाई है तब सदू पांडे ने कह्यो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू आप गायन कों कहा करोगे तब दामोदर दास नें कह्यो जो श्री नाथजीनें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों गाय मंगाई है ताके लिये उननें कही है तब सदू पांडे नें कह्यो जो मेरे यहां गाय हैं सो कोन की हैं वहू तो श्री आचार्य जी महाप्रभून की हैं जो चहियें सो लीजियें तब दामोदर दास नें कही जो श्री आचार्य जी महाप्रभू न की ऐसी ही आज्ञा है तातें याकों वेचि के गा य लै देउ तब सदू पांडे नें वह छल्ला वेचि कें ताकी गाय दी लै दीनी सो दाऊ गाय श्री आचार्य जी म

हरिभूननें श्री नाथजी कों समर्पी पाछें दस गाय
सह पाडेनें श्री नाथजी कों भेट कीनी पाछें सब-

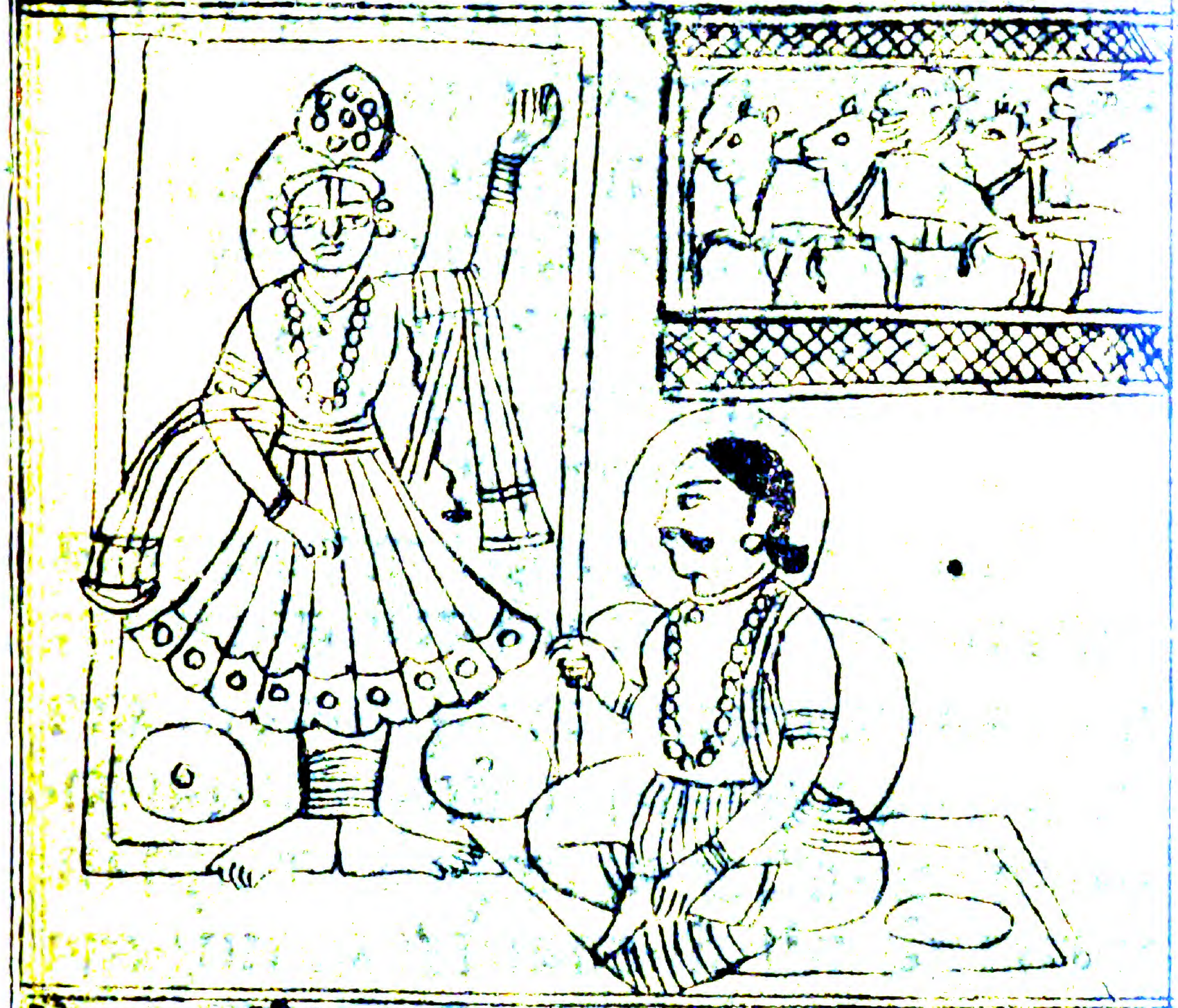

वेष्णवन कों खबर भई जो श्री नाथ जीनें गायन
के लिये श्री आचार्य जी महा प्रभून सों आज्ञा
करी है सो वेष्णवन नें गाय पठाई काहू नें दोय
काहू नें चारि काहू नें छ्या पठाई ऐसें करत दो
यसै के आसरे गाय भेली भई सो श्री नाथ जी
कों गाय बहुत प्रिय हैं तबते श्री नाथजी को ना-
म गोपाल श्री आचार्यजी महाप्रभून ने धरयो है
तब श्री गुसांईजीने गोपाल नामते गोपालपुर गां
व बसायो ताही ते सूरदास जीने श्री आचार्य जी
महा प्रभून के प्रगट गोपाल नाम कीये हैं प्रथम

गाय सुर गायो सो वे सहू पांडे तथा नरोत्तम को
उ श्री आचार्यजी महा प्रभून के ऐसे कृपा पात्र
भागवतीय है सो इनकी वार्ता को पार नाहीं ता
ते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥
॥ इति वार्ता प्रसंग ॥ बैष्णव ॥ ७३ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक नरहर दास स
न्यासी तिनकी वार्ता
लिख्यते है

सो एक वेंना कोठारी हुतो ताने प्रथम नरह
रदास सन्यासी के पास नाम पायो हुतो सो एक
समय श्री आचार्यजी महा प्रभू आप द्वारिका प
धारे हुते तब नरहर दास सन्यासी और वेना को
ठारी श्री आचार्यजी महाप्रभून के साथ हुते सो
द्वारिका गये तहां श्री आचार्यजी महा प्रभू आप
नरहर दास सन्यासी के ऊपर बहुत प्रसन्न भये
तब नरहर दास सन्यासी नें वीनती कीनी जो महा
राज मेरे ऊपर कृपा करिये तो मैं प्रार्थना करतहौं
तब श्री आचार्यजी महाप्रभू मुसिकाय के चुप
कर रहे पाछें कहैं जो कहा प्रार्थना करत हौ त
ब नरहर दास सन्यासी नें कह्यो जो महाराज वेना
कोठारी को सरण लीजिये तब श्री आचार्यजी
महाप्रभून नें कृपा करिकें नाम दीयो समर्पण
करवायो पाछें वे नरहर दास सन्यासी के ऊपर
प्रसन्न बहुत भये सो वे नरहर दास सन्यासी श्री

श्राचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगा
वदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिवेंपै
॥वार्ता प्रसंग॥१॥ वैष्णव॥७४॥ सं॰१४७१

अब श्री श्राचार्यजी महाप्रभून के सेवक गोपाल दासजदा धारी श्री नाथजी की खवासी करत॰ हुते

सो श्री नाथजी उनसों सानुभाव हुते श्रौर गरमी के दिन में श्री नाथजी कों भोग श्रावतें तब गोपालदास श्राप नेत्र मूंदि के पंखा कर ते तब रात्रि कों श्री नाथजी जागमोंहन में पौढ़ ते तहां गोपालदास ठाढ़े होय कें श्रांख मूंदि कें पंखा करते चार पहर ठाढ़े रहते परि देह सों लस कछू बाधा न करती रात्रि के विषै श्री ठा कुर जी के श्री स्वामीजी के वचन सुनतो तब श्राप कहते.... जो गोपालदास श्रांख खो ल देउ तेरो परदा कैसो तब गोपालदास कह तें जो महाराज मोकों श्री श्राचार्यजीमहाप्रभू न की श्राज्ञा नाहीं ताते मैं क्यों करि खोलों त ब कबहू श्री नाथजी श्रपने श्री हस्त सों गोपा लदास के मुख में मेलते श्रैसी कृपा करते त ब श्रैसे करत कितनेक दिन बीते तब एक दिन गोपालदास नें बीनती करिकें कही जो

महाराज मोकों पृथ्वी परिक्रमा करिवे की आज्ञा दीजिये मेरो मनोरथ पृथ्वी परिक्रमा करिवे को है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो अवश्य करिये पाछें गोपालदास आज्ञा मागी के पृथ्वी परिक्रमा कों गये तब और वैष्णवननें कह्यो जो महाराज ऐसे कृपा पात्र को ऐसो मन को कर होय तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो यह गयो तो हैं परि जाय सकेगो नाहीं मजल दोयचारि जायगी.. तब याकों विरह होयगो ता विरह करिकें याकी देह छूटैगी तब सब वैष्णवननें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों वीनती कीनी जो महाराज इन की देह या भांति कों पड़े तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें कह्यो जो महद अपराध इन श्री ठाकुर जी सों विगाड़ो ताको नाम महद अपराध कहिये इनसों एक महद अपराध पड़ेगो है तासों इनकी यह गति भई तब सब वैष्णवन नें पूछो जो महाराज इनकी देह या भांति सों पड़ै तो सही परि महद अपराध काहे सों कहि यतु है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो यह गोपालदास पहिलें श्री नाथजी के बाग की रखवारी करतो सो एक श्री ठाकुर जी को सेवक ब्राह्मण को लरिका हतो सो एक कों वा बाग में ते फूल चुराय कें ले जातो सो एक दिन गोपालदास नें वाकों पकरयो सो वह भाज्यो सो वह अपने मन्दिर में दुवकयो सो गो

पालदास नें जाय कें वाकें मुक्की की मारी सो वात
अब श्री ठाकुर जी कों वहवात सुधि जो याकों महद श्राप
ग्रथ परयो है तातें एथ्वी परिक्रमा की इच्छा भई है
सो गोपालदास पांचचारि मजल गयो पाछें विर
ह भयो सो विरह करिकें गोपालदास ने देह छोड़ी
तव यह वात श्री श्राचार्य जी महाप्रभून नें सुनी त
व श्रपने श्री मुख ते कहें जो गोपालदास के परलो
क में तौ हानि नाहीं जो यह श्री नाथजी के चरणान
पास पहुचौ तातें भगवदीय कों सर्वथा विगाड़ न
करनों भगवदीय कौं विगाड़ करैतौ या भांति सों
होय भगवदीय के विगाड़े ते गोपालदास की य
गति भई वे गोपालदास श्री श्राचार्य जी महाप्रभू
न के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इन
की वार्ता अब कहां तांई लिखिये ॥ ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ १५ ॥

अब श्री श्राचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक कृष्णदास
ब्राह्मण तिनकी
वार्ता है

सो वे कृष्णदास व्रा गांम में रहते परि श्रकिंचन
रहते सो एक समय वैष्णव दस पन्द्रह मिलिकें श्री
श्राचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों श्रडेल कों
जात हुते सो जा गांव में कृष्णदास रहते ता गांम में
श्राए सो कृष्णदास के घर श्राए तव कृष्णदास
तौ घर हुते नाहीं कछू कार्य के लिये कोसती

न पुकार गये हुते और कृष्णदास की स्त्री घर हुती
तब वा स्त्री नें उन वैष्णवन कों साष्टांग दंडवत
कीनी श्री कृष्ण स्मरण कहि बहुत आदर सन
मान करिकें अपने घर में बैठारे पाछें मन में विचा
रे जो अब कहा करियें तब सुधि आई जो वह
बनियां नित्य टोक करत है जो तू मोसों मिलि
तू मांगेगी सो देउंगो सो आज वासों सीधो सामि
ग्री लाउं ऐसें विचार के स्त्री चली सो वा बनियां
की हाट पे गई तब वा बनियां नें टोकी तब वा
निया सों स्त्री नें कही जो में तोसों काल्हि मिलों
गी तू मोकों आज सोदा चहियत है सो दे तब वा
बनियां नें कह्यो जो तू मोसों कौल करै तो में सा
नूं तब वा स्त्री नें वासों कौल करि दीनों तब वा
स्त्री कों सीधो सामग्री चहियत हुतो सो दीनों
तब लेकें घर आई तब घर आय के रसोई करि
श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो समयानुसार भो
ग सराय अमोसरि करि के पाछें वैष्णवन कों
महाप्रसाद लिवायो तब वैष्णवन नें महाप्रसा
द भली भांति सों लीनों पाछें कृष्णदास घर आए
सब वैष्णवन सों मिले दंडौत करिकें भीतर गये
तब स्त्री सों कह्यो जो कहा खबरि है वैष्णवन
कों महाप्रसाद लिवाइयै तब स्त्री नें कह्यो जो
प्रसाद तो लिवायो है तब कृष्णदास नें कह्यो जो
सीधो सामग्री कहां ते लाई कहा प्रकार कीयो त
बजो प्रकार कीयो हुतो सो सब कह्यो और कह्यो

जो यह वनियां मोसों नित्य टोका करतो जो तू मोसों
एक दिन मिलि तू कहैगी सो देउंगो तब ओ बाज
वासों कौल करार करिकें सीधो सामानी लाई
हौं तब कुम्भदास वा स्त्री के ऊपर बहुत प्रसन्न
भए पाछें स्त्री पुरुष दोउ जनेन ने सीरो महाप्रसा
द लीयो पाछें कुम्भदास वैष्णवन के पास आय
बैठे सबरी रात्रि भगवद वार्ता करत बीती जब स
वारो भयो तब सब वैष्णव विदा होय कें चलेंतब
कुम्भदास थोरी सी दूर पहुचांवन गयो पाछें आप
घर आय स्नान करि श्रीठाकुर जी की सेवा करि
कें यात्रा कों गये पाछें वा स्त्री नें रसोई करि श्री
ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो भोग सराय अनोंसरि
करि महाप्रसाद टांकि धस्यो तब कुम्भदास घर
लौट कों आए तब वही सीरो महाप्रसाद दोउ जा
नन नें लीयो तब कुम्भदास ने अपनी स्त्री सों कही
जो तुमनें काल्हि वा वनियां सों कौल कीयो हुतो
सो वह वनियां पेडो देवन होयगो ताते वाको
कौल पूरो करिये सो भलो है तब वह स्त्री उबटनों
करि न्हाय कें स्त्री जन के शृंगार होत हैं सो सब
करि कें वह स्त्री चली सो वर्षा के दिन हुते सो मेह
बरस गयो हुतो सो मार्ग में कीच भई हुती ताके
लिये कुम्भदास नें अपनी स्त्री सों कही जो तू मे
रे कांधे पै बैठिले में पहुचाय आउं मार्ग में की
च बहुत भई है तेरे पांय कीच में भरि जायंगे तौ व
ह वनियां देखि कें तेरो अनादर करेगो सब वा स्त्री

को अपने कांधे ऊपर चढ़ाय कें लै चले सो वा वनियें
की हाट के आगे उतार दीनी तब वा स्त्री नें वा वनि-
या को हेला पार कें कह्यो जो किवाड़ खोलि तब
वा वनियां नें किवाड़ खोलि दीने और वा स्त्री कों
भीतर लीनी तब वह वनियां पांय धोयबे कों पा
नी ले आयो और कह्यो जो पांय धोय तब वा स्त्री
नें कह्यो जो मेरे पांय कीच सों भरे नाहीं तब वा व
नियां ने कह्यो जो मार्ग में तो कीच बहुत भर्‌यो है
और तेरे पांय कोरे कैसें रहे तब वा स्त्री नें कह्यो
जो तू पूछि कें कहा करैगो तू तेरो काम करि तब वा
वनियां नें कह्यो जो यह तो बात कहीं चाहियें।
तब वा स्त्री नें कह्यो जो मेरो भरतार मोकों कांधे
ऊपर .... चढ़ाय कें लायो है तब यह बात सु-
निकें वा वनियां कों बड़ो आश्चर्य भयो और स
ब वृतांत हो सो पूछ्यो जो यह कहा कारन है सो सब
मेरे आगें कहि तब वा स्त्री ने जो प्रकार भयो हो-
सो सब कह्यो सो सुनि कें वह वनियां अपने मन
में धिक्कार करन लाग्यो और कह्यो जो धन्य जन्म
तुमारो जो जिनकों ऐसो मन सांच्यो है और धिक्का
र जन्म मेरो है तब दोउ हाथ जोरि कें दंडौत कीनी
और कह्यो जो मेरो अपराध क्षमा करियें और मे
रे ऊपर कृपा करिबे मेरी तुम बहन हो ऐसे कहि
वा वनियां नें बहुत दुख मान्यो पाछें वा वनिया नें
स्त्री कों कपड़ा पहराय कें वाके घर पहुंचाय दी
नी और कृष्णदास सों वा वनियां नें बहुत बीनती

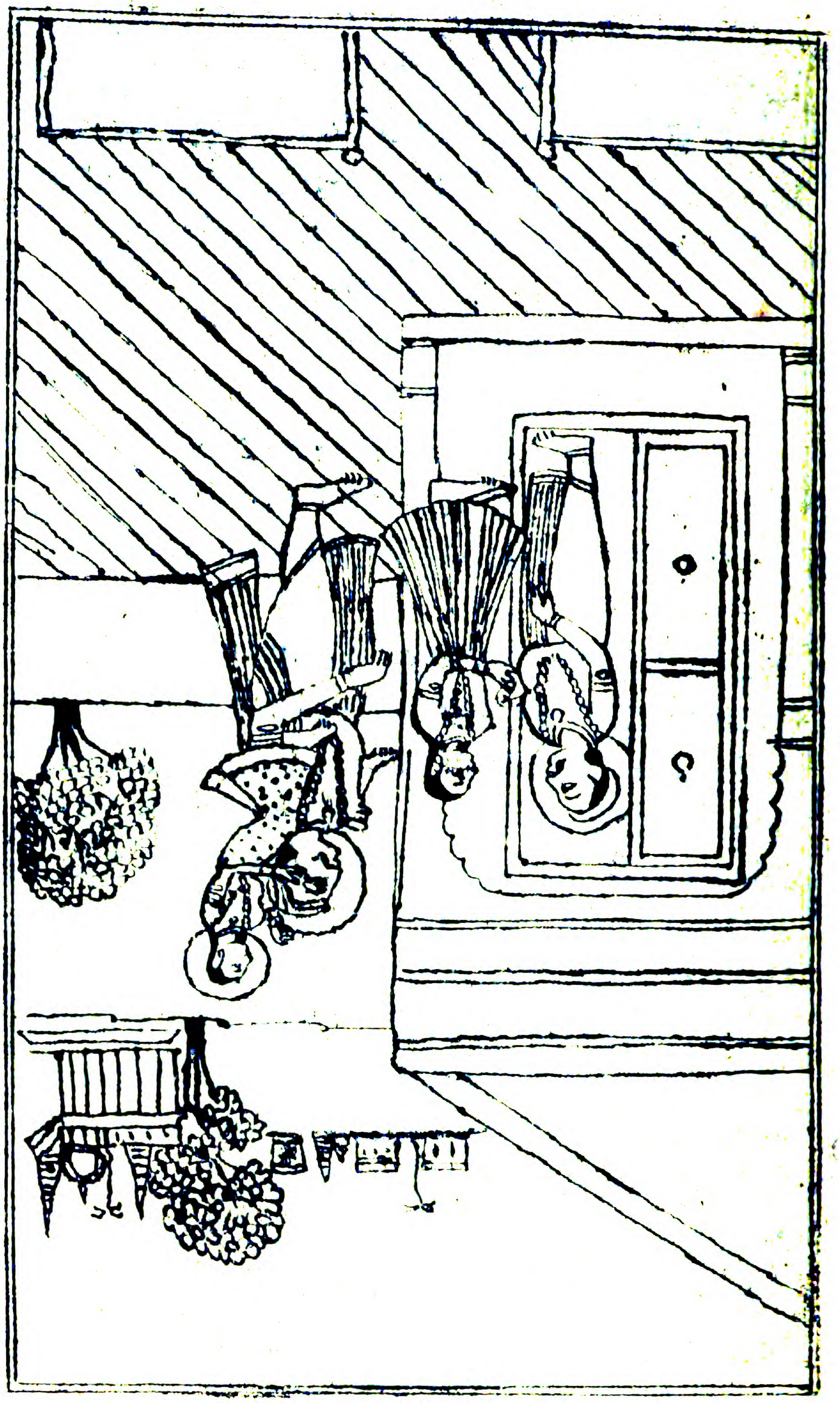

की नीजो तुम मेरो अपराध क्षमा करो यह मेरी वहन
है ओर तुम मेरे पूज्य हो तब कृष्णदास नें कही
जो तेरो कहा अपराध है तू संकोच मति करै के
रि यह बनियां कितनेक दिन पाछें श्री आचार्य
जी महाप्रभून को सेवक भयो नाम समर्पणा की
थो तब या बनियां को नाम श्री आचार्यजी महा
प्रभूतनें ग्यानचंद धस्यो पाछें यह बनियां बड़ो
भागवदीय भयो सो कृष्णदास के संग ते भयो ता
ते संग करनो तो भागवदीय को करनो जासों भ
गवद भक्ति उत्पन्न होय पाछें यह बनियां सदा
कृष्णदास सों ममत रहतो उन को स्त्री सों वहन
कहतो सो ऐसो सम्बध राखतो सोवे कृष्णदा
स श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र
भागवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लि
खिये ॥ +

॥ इति प्रसंग ॥ १० ॥ वैष्णव ॥ ७६ ॥ +

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
के सेवक संत दास चौप
ड़ा छाणी आगरे के
तिनकी वार्ता
लिख्यते

सो ये संतदास पहिलें बहुत संपतवान हुते
व्यौपार बहुत हुतो लाखन को व्यौपार करते सो
द्रव्य सब व्यौपार ही में खोयो पाछें सेउ के वाजा
र में कौडी केचन लागो टका २४ की पूंजी हुंती सो

जबतांई पैसादाई कमावते तबतांई उठ्या बैठेर
हते कौड़ीन की ढेरी पैसा की करि राखते सो गा
हक पैसा धरिकें कौड़ीन की ढेरी लेजाते और
संत दास आप पोथी वांचते मौन में काहू सों
बोलते नाहीं भगवद रस में छिके रहते और जो
कोउ भगवद भक्ति आवतो तासों बड़े भगवद
वार्ता करिकें और सों संभाषण न करते रसोई
कों टका एक लगावते और धेला की चबेनी
आनि राखते सो रात्रि कों वैष्णव आय कें बैठ
ते भगवद वार्ता कीर्तन करते सो सब चबेनी म
हाप्रसाद बांटि देते सो वैष्णव लेकें उठते औ
सैदाई पैसा में निर्वाह करते ऐसें करत कि

तनेक दिनवीते तव नारायणदास गौड़ देसकेनें सु
नी जो संत दास कें द्रव्य को वहुत संकोच है ताते ना
रायणदास नें संतदास को पत्र लिखेयो ॰और एक
मौहरन की थैली पठाइ सो हुंडी कासद लैकें आ
यो तव संतदास कौं पत्र दीनों तव वह पत्र संत॰
दास नें वाच्यो ॰और तामें हुंडी ही सो वांची तव हुं
डी ही सोतो श्री गुसांई जी के पास पठाई ॰और ए॰
कदका कासद कौं दीनी ॰और संतदास नें नारा
यणदास कौं पत्र लिखेो तामें लिख्यो जो तुमनें
हुंडी पठाई ही सोतो ॰अडेल श्री गुसांईजी को पठा
यदोनी ॰और तुम्हारी प्रभूता में हमारे एक दिन॰
की रसोई न भई तादिन की कमाई कासद कोंदी
नी जव हुंडी पहुंची तव भंडारी नें श्री गुसांई जी कों
वचाई सो एक सौ मौहरन की है सो नारायणदा
सनें गौड़देस ते संतदास को पठाई सो संतदास॰
नें इहां पठाई है तव श्री गुसांई जी नें कह्योजो सं
तदास तौ श्री ॰आचार्य जी महा प्रभून के वड़े ही॰
कृपापात्र भागवदीय है ताते वैष्णव को द्रव्य का
है कौं गरवेंगे ॥+

वार्ता प्रसंग ॥१॥

वहुरि कितनेक दिनपाछें श्री गुसांई .. जी नें श्रीगो
कुल वास कीयो तव संतदास उत्सव के दिन॰
॰आगरे ते दर्शन को ॰आवते ॰और श्री गुसांई जी॰
॰आप ॰आगरे पधारते तव संतदास के घर विना
वुलाए पधारते ॰आप श्री गुसांई जी श्री ॰आचा॰

वे जी महाप्रभून के सेवक जानि ऐसी कृपा करते
तव कितनेक दिन पाछें संतदास की देह थकी र
तव श्री गोकुल तें चापा भाई कों बुलायो सो चापा
भाई श्री गुसांई जी की आज्ञा मानि कें आगरे आ
ए तव संतदास ने चापाभाई सों कह्यो जो यह घर
तुम्हारो है जानो तो कोई एक दिन स्त्री कों रहन
दीजियो और जानों तो गहने धर दीजियो अथवा
बेचि कें दाम लै जाउ ऐसें कहि के घर के पत्र व
त चापा भाई कों सोंप दीनों तव चापाभाई खत प
त्र लेकें श्री गोकुल आए तव श्री गुसांई जी सों स
व समाचार कहे पाछें संतदास बहुत आसकिम
ए तव वैष्णव सब आय जुरे तव संतदास सों कह्यो
जो तुम कहो तो रेणुका स्थल अथवा मथुरा जहां
कहो तहां लै चलें तव संतदास नें कह्यो जो मोकों
कहा रेणु का स्थल कृतार्थ करेगो तव वैष्णवन
ने कह्यो जो श्री गोकुल लै जांय तव संतदास नें
कह्यो जो श्री गोकुल जांय कें कहा राख भड़ा र
अंगो ऐसें कहि कें आगरे ही में देह छोड़ी पाछें
वैष्णवों कृत्य उहांई कीयो पाछें यह वात वै
ष्णवन ने श्री गुसांई जी के आगें कही तव श्री
गुसांई जी अपने श्री मुख ते कहें जो वे संतदास
ऐसे भागवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तां
ई लिखिवये ॥+

वार्ता प्रसंग ॥ २॥ वैष्णव ॥ ७७ ॥+

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू

नके सेवक सुन्दर दास श्रीज गन्नाथ रायजी के दस को स परे एक गांव में रह ते तिनकी वार्ता

सो सुन्दर दास उहां रहत नहां कुल्म चैतन्य को सेवक माधौदास सो उहां रहतो सो सुन्दर दास र कें और माधौदास कें परस्पर स्नेह बहुत हुतो सो सुन्दर दास जब श्री आचार्यजी महा प्रभून की सराहना करतो तब माधौ दास कहतो जो मेरो जो कछु है सो सब कुल्म चैतन्य को है सो जहां एक समय श्री आचार्यजी महा प्रभू पाउ धारे हुते त ब सुन्दर दास नें अपने घर पधराये तब श्री आ चार्यजी महा प्रभून नें उहां रसोई करिकें श्री ठा कुर जी कों भोग समर्प्यो पाछें भोग सरायो तब माधौदास नें द्वार आवत देख्यो ता पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तौ भोजन करि कें पोढे तब माधौदास ने सुन्दर दास ते कही जो तेरे गुरु के हाथने श्री ठाकुर जी आरोगे नाहीं और भें श्री ठाकुर जी कों आरोगाव तहों सो तो एक हू ग्रास खात नाहीं तब सुंदर दास नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कही तब श्री आचार्यजी महा प्रभून ने माधौदास कों बुलाय कें पूछो तब माधौदा मनेजो वृतान्त हुतो सो सब कह्यो तो काल्हि हम तेरे घर आमेंगे सो देखेंगे मेरें आगें श्री ठाकुरजी आरोगेंगे तब जानूंगो तब दूसरे दिन श्री आ

चार्यजी महाप्रभू माधौदास के घर पधारे ओर कह्यो जो अब थार श्रीठाकुर जी के आगें आ न राखि तब माधौदास थार लैगयो श्रीठाकुर जी के आगें भोग धर्यो फिर बाहिर आयौ तब श्री आचार्य जी महाप्रभू मन्दिर के द्वार ऊपर बैठे रहे सो उहां एक प्रेत नित्य आय कें श्री

ठाकुर जी के आगे ते खाय जातो सो वह प्रेत बाहू दिन आयो तब देखे तो श्री आचार्य जी महाप्रभू विराजे हैं तब वह प्रेत विस्यानो ओर कह्यो जो राज अबहूं भूखो रहूंगो तब श्री आचार्यजी महाप्रभून ने कह्यो जो तैनें अब लों जो खायो सो तो खायो परि अब न खान पावेगो

ताते अबइहां सों जानव वह प्रेत फिर गयो तब माधौदास भोग सरावन गयो तब देखैं तौ यार ज्यों का त्यों मरयौ है तब माधौदासनें कह्योजो तुम्हारे आगे मेरे श्रीठाकुर जी आरोगे नाहीं ऐसे सामान्य वचन बहुत बोले परि श्री आचार्यजी महाप्रभू आप चुपिकर रहे कछू बोले नाहीं तब माधौदास रात्रि कों सोयो तब श्रीठाकुर जी के अनुचर आए सो बहुत मारयो और खाट ते औंधों पटक मारयौ तब माधौदास ने उन सों कह्यो जो तुम मोकों काहे कों मारत हौ जब जगन्नाथ राय जीनें कह्यो जो तू श्री आचार्य जी महाप्रभून सों ऐसो सामान्य वचन कों बोल्यो मैं तेरे इहां कब आरोगत हों जो तू भोग धरतो सोतो प्रेत खाय जातो हो आज श्री आचार्यजी महाप्रभू भीढार ऊपर बैठे हुते तातें न खाय सकों तू उनसों कों बुरो बोल्यो बेतो मेरो स्वरूप हैं तब माधौदास ने उनसों कह्यो जो में सबारें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों अपराध क्षमा कराय लुंगो मेंनें ऐसें न जान्यो तब माधौदास प्रातःकाल उठि कें श्री आचार्यजी महाप्रभून के पास आयो और साष्टांग दंडवत कीनी और बीनती करि कें कह्योजो महाराज मेरो अपराध क्षमा करियें सो श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तौ परमदयालु हैं तब प्रसन्न होय कें कहें जो तेरो कह्या अपराध है हम तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न हैं तब माधौदास

नें वीनती कीनी जो महाराज मेरे घर पाव धारो
तव श्री आचार्यजी महाप्रभू माधोदास के घर
पाव धारे और प्रसन्न होय के माधोदास कों ना
म सुनायो ता पाछें माधोदास कों निवेदन करायो
पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभून नें माधोदास
के ठाकुर कों पंचामृत से स्नान करवायो ता पा
छें श्रीठाकुरजी कों सिंगार करिकें सिंहासन पर
वैठारे पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभून नें पाक
करिकें भोग समर्प्यो तव समयानुसार भोग सरा
य आनोंसरि करिकें पाछें श्री आचार्यजी महाप्र
भूनें माधोदास सों कह्यो जो तू वैष्णवन कों वु
लाय लावो तव माधोदासनें कह्यो जो महाराज
पांच सात वैष्णव वुलाय लाउं तव श्री आचार्यजी
महाप्रभून नें कह्यो जो पांच सात की कहा है जि
तने तेरे मन में आवे तितने वैष्णव वुलाय लाउ
तव माधोदासनें श्री महाप्रभूजी सों कह्यो जो महा
राज प्रसाद तो थोरो है और वैष्णव वहुत आवें
गे तो कैसें होयगी तव श्री आचार्यजी महाप्रभून
नें कह्यो माधोदास सों जो अरे तेरी अक्कल मारी
गई है प्रसाद कवहू नघटे तेरे या गांव में जितने
वैष्णव होय तिन सव कों वुलाय लाउ पाछें जि
तने वैष्णव हे तिन सवन कों वुलाय लायो तव
सवन कों महाप्रसाद लिवायो तोहू वह थार
भरयो रह्यो तव माधो दास सों श्री आचार्यजी मह
प्रभून नें कह्यो जो वैष्णव कें विषें विस्वास चहिये

जो भगवद प्रसाद सदां अटूट रहे या भांति सों माधौ दास कों श्री महाप्रभूजीने अंगीकार कसो सो सुंदर दास के संगते भयो ताते संग करनो तौ भगवदीय कों करनो सो वे सुन्दरदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥+

॥वार्ता प्रसंग॥१॥ वैष्णव॥७८॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक मावजी पटेल
तथा इनकी स्त्री विरजो
तिनकी वार्ता है

सो वे मावजी पटेल तथा इनकी स्त्री विरजो व रस दिन में दोय वेर श्री गोकुल आवते श्री नाथ जी के दर्शन कों तथा श्री गुसांई जी के दर्शन कों आवते सो श्री गुसांई जी इनके ऊपर बहुत प्रस न रहते बहुत कृपा करते पाछें उनकों कृष्ण भट्ट को संग भयो तब विरजो ने कृष्ण भट्ट सों कह्यो जो तुम हमारे माथे मेंणा पधरावो तो भलो है तब कृष्ण भट्टने महाराज गुसांई जीसों बीनती करि कें कह्यो और उन कें माथे सेवा पधराई सो श्री गुसांई जीने श्री ठाकु रजी कों पाट बैठासो सो सहज पूर्वक सेवा करते सामग्री भलीभांति सों करते श्री महाप्रभू जी के सेवक दस कोस पर रहते तिनकों प्रसाद लिवा वते ऐसें भली भांति सों सेवा करी कृष्ण भट्ट आ वि हैकें करी ॥+

॥ वार्ती प्रसंग ॥१॥

और एक समय वैष्णव सब प्रसाद लैंन कों उ
त्सव के दिन बैठे हुते तब विरजो नें वैष्णवन कों अ
नसखडी महा प्रसाद परोसो तब विरजो नें कृष्ण
भट्ट सों वीनती कीनी जो मोकों ऐसो मनोरथ है
जो सब वैष्णव मंडली बैठी होय और में सखडी म
हा प्रसाद सबन कों लिवाऊं तब कृष्ण भट्ट नें कह्यो
जो यह मनोरथ है सो तो भक्ति भाव सों होय परि
यह द्रव्य साध्य है तब विरजो ने पूछो जो द्रव्य सा-
ध्य सो कहा ताको अर्थ मोकों समझाय के कहो
तब कृष्ण भट्ट नें कह्यो जो यह वैष्णव मंडली इनके
श्री गोकुल श्री गुसांई जी के पास जैसे पावें श्री
गुसांई जी आज्ञा देय सो करिये जो श्री गुसांई जी
आज्ञा देय तो सखड़ी महा प्रसाद लीयो जाय-
ताते यह द्रव्य साध्य है जो मार्ग में सबरवाच क
रिये और वैष्णवन की आज्ञा लेनी तब विरजो
नें मावजी पटेल ते कह्यो जो मोकों यह मनोरथ
है सो मनोरथ कियो चाहिये तब मावजी पटेल
नें कह्यो जो मेरे पास दो लक्ष मुद्रा है इनसों काम
होय तो भलेई करिये तब कृष्ण भट्ट नें कह्यो जो
इनसों काम अवश्य होयगा आपन श्री गुसांई जी पा
स चलें तब श्री गुसांई जी आज्ञा देय सो करिये
सो मावजी की गांठि में द्रव्य बहुत हुतो सो सब
लेकें उज्जैन आये पाछे कृष्ण भट्ट नें वैष्णव सब
इकठौरे करि के श्री गोकुल श्री गुसांई जी के दर्श

न कों आये पाछें श्री गोकुल आय कें श्री गुसांईजी
के दर्शन कीये पाछें कृष्ण भट्टनें श्री गुसांई जी सों
बीनती कीनी जो महाराज विरजो कों ऐसो म
नोरथ है जो सरवडी महाप्रसाद मेरे हाथ सों
सब वैस्नवन की मंडली बैठी होय तिनको में
परोसों तब श्री गुसांई जीनें कही जो यह मनो
रथ तो पुरुषोत्तम क्षेत्र विना न होय तब सब वै
स्नवन की मंडली लैकें विरजो चली श्री जगन्
नाथ जी कूं सो कितनेक दिन में जाय पहुंची
तब श्री जगन्नाथजी के दर्शन कीये पाछें जो
मनोरथ हुतो सो सब नाना प्रकार की सामिग्री
करवाय कें श्री जगन्नाथ राय जी कों भोग सम
र्पो पाछें वह प्रसाद सरवडी अनसरवडी सबवै

वन कों विरजो नें अपने हाथसों परोसि के लि
वायो विरजो नें अपनो सब मनोरथ पूरन कीयो
पाछें विरजो उहां कछुक दिन रहि कें सब वैष्नवन
सहित श्री गोकुल आई तब श्री गुसांईजी कों द
र्शन कीयो दंडवत कीनी ता पाछें जो बात करी सो
सब श्री गुसांईजी के आगें कही पाछें और जो द्रव्य
लयो सो सब गुसांईजी की भेट कीनों तब श्री गुसां
ईजी विरजो कों भाव देखि कें वाके ऊपर बहुत प्रस
न्न भये पाछें सब वैष्नवन कों महाप्रसाद लिवा
यो तब श्री गुसांईजी नें आप प्रसाद लीयो ता पा
छें विरजो तथा सब वैष्नव श्री गुसांईजी के सा
थ श्री नाथजी द्वार आए तब श्री नाथजी के द
र्शन कीने तब विरजो तथा श्री गुसांईजी सब वैष्नवन
सहित श्री नाथजी ते विदा होय के अपने देस
कों गये वह विरजो ऐसी भगावदीय ही॥

वार्ता प्रसंग॥२॥

और विरजो बरस दिन में दोय वेर श्री गोकुल
आवती तब एक गाड़ा तो गुड़ को भर लावती
और एक गाड़ा घृत कों भर लावती सो एक मही
ना लों रहती ता में पन्द्रह दिन तो श्री गोकुल रह
ती और पंद्रह दिन श्री नाथजी द्वार रहती ती या
भांति सों विरजो रहती तब सामग्री करि कें भो
ग समर्पि भोग सराय कें सब टांकि धरे जब गायन
के ग्वाल आवते तब महाप्रसाद दूध अंगीकार
करते और खिरक में लिवावती और आवती

न कों आये पाछें श्री गोकुल आय कें श्री गुसांईजी
के दर्शन कीये पाछें कृष्ण भट्टनें श्री गुसांईजी सों
बीनती कीनी जो महाराज विरजो कों ऐसो म
नोरथ है जो सरवडी महाप्रसाद मेरे हाथ सों
सब वैस्नवन की मंडली बैठी होय तिनकों यें
परोसों तब श्री गुसांईजीनें कही जो यह मनोर
थ तो पुरुषोत्तम क्षेत्र विना न होय तब सब वै
स्नवन की मंडली लैकें विरजो चली श्रीजगन्
नाथ राय जीकूं सो कितनेक दिन में जाय पहुंची
सब श्रीजगन्नाथजी के दर्शन कीये पाछें जो
मनोरथ हुतो सो सब नाना प्रकार की सामिग्री
करवाय कें श्री जगन्नाथ राय जी कों भोग सम
र्पो पाछें वह प्रसाद सरवडी अनसरवडी सबनै

समवन कों विरजो नें अपने हाथसों परोसि के लि
वायो विरजो नें अपनो सब मनोरथ पूरन कीयो
पाछें विरजो उहां कछुक दिन रहि कें सब वैस्मवन
सहित श्री गोकुल आई तब श्री गुसांईजी कों द
र्शन कीयो दंडवत कीनी ता पाछें जो बात करी सो
सब श्री गुसांईजी के आगें कही पाछें और जो द्रव्य
लयो सो सब गुसांईजी की भेट कीनों तब श्री गुसां
ईजी विरजो कों भाव देखि कें वाके ऊपर बहुत प्रस
न्न भये पाछें सब वैस्मवन कों महाप्रसाद लिवा
यो तब श्री गुसांईजी नें आप प्रसाद लीयो ता पा
छें विरजो तथा सब वैस्मव श्री गुसांईजी के सा
थ श्री नाथजी द्वार आए तब श्री नाथ जी कें द
र्शन कीये तब विरजो तथा श्री गुसांईजी सब वैस्मवन
सहित श्री नाथजी ते विदा होय के अपने देस
कों गये वह विरजो ऐसी भगावदीय ही॥

वार्ता प्रसंग॥२॥

और विरजो बरस दिन में दोय वैर श्री गोकुल
आवती तब एक गाड़ा तो गुड़ को भर लावती
और एक गाड़ा घृत कों भर लावती सो एक मही
ना लों रहती ता में पन्द्रह दिन तो श्री गोकुल रह
ती और पंद्रह दिन श्री नाथजी द्वार रहीती या
भांति सों विरजो रहती तब सामग्री करि कें भो
ग समर्पि भोग सराय कें सब डांकि धरे जब गायन
के ग्वाल आवते तब महाप्रसाद दूध अंगीकार
करते और खिरक में लिवावती और आवती

जब दोऊ पधरावती करती सो वह विरजो ऐसो
भागवदीय ही सो चरणचल के संगते ताते संग
करनों तो भागवदीय को करनों सो इनकी वार्ता
को पार नाहीं तातें अब कहा तांई लिखिये ॥*
॥ वार्ता प्रसंग ॥३॥ तैप्तव ॥१८॥ सम्बन्ध दृढ़

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक गोपालदास रेड़ा में रहते तिनकी वार्ता है

सो श्री आचार्य जी महाप्रभूननें उनकों आज्ञा दीनी हती जो तुम सबन को नाम दीजियै तातें वे गोपालदास नाम देते सो एक समय श्री आचार्य जी रेड़ा में पधारे हुते तब गोपालदास लोचन हुते गोपालदास के बेटा धर हुते गोपालदास कहू यात्रा कों गए हुते तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें गोपालदास के बेटान सों पूछो जो गोपालदास कहां गए हैं तब गोपाल दास के बेटाननें कह्यो जो कछु श्री ठाकुरजी के काम गयो है तब यह सुनि कें श्री आचार्य जी महाप्रभून को मन प्रसन्न भयो जो गोपाल दास के बेटा ऐसे कैसें बोलत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो ये कैसे वैष्णव हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो यहां रहनों उचित नाहीं है तब फिर अपने मन में विचारे जो गोपाल दास कों तो आवन दीजियै वह कैसें बोलत है तब पा

कें संध्या समें गोपालदास आरा तव गोपालदास ने संध्यासमय श्री आचार्य जी महाप्रभून कों दर्शन कायो तव गोपालदास सों श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पूछो जो गोपालदास तुम कहा गये हते तव गोपालदास नें कही जो महाराज पेट लाग्यो है ताते या हति कों गयो हुतो तव यह सुनि कें गोपाल दासके ऊपर बहुत प्रसन्न भये और आप श्री मुख सों कहे जो यह वैष्णव को लक्षण आहे जो या हति में श्री ठाकुर जी को नाम न लेय

वार्ता प्रसंग ॥१॥

और एक समय गोपालदास श्री नाथ जी के दर्शन कों आये सो साथ एक सेवक हुतो तहां ज्वर चढि आयो सो लंघन दै चारि कीये तव एक

कों गोपाल दास कों प्यास लागी सो वा सेवक के पास जल मांग्यो सो सेवक तौ सोयो हुतौ सेवक नें तौ सुन्यौ न हुतौ तब श्री ठाकुर जी जल पान के झारी लैकें आये सो गोपाल दास कों जल पिवायो और वह झारी उहां ही धरि आये श्री नाथजी को हृदय अति कोमल है ताते भक्ति की आर्ति सहि न सकें ॥

वार्ता प्रसंग ॥२॥

और एक समय गोपाल दास नें चोपरा विरह करिकें गायो सो चोपरा ऐसो + सिरवंडी श्याम घन सरवी कंठ मणि हरहार + धन्य दिन जेनीं दे सब सूं नयनन नन्द कुमार ॥१॥ ऐसे चोपरा वहु न कीये ॥२॥

वार्ता प्रसंग ॥३॥

और एक समें श्री गुसांई जी आप रेढ़ा में पधारे तब बाहिर डेरा कीये हुते पाछें जब गोपालदास उ स्थापन के समय श्री गुसांई जी के दर्शन कों आए तब हे वैष्णवन नें कह्यो जो हम कों श्री गुसांई जी के पास नाम दिवावो तब गोपाल दास नें कह्यो जो हम नाम देत हैं सो नाम श्री गुसांई जी देत हैं ताते तुम कों घर चलि कें नाम देयंगे. पीछे उन वैष्णव न कों मन श्री गुसांई जी पास नाम पायवे कों सो तीन बेर उन वैष्णवन नें कह्यो सो तीनों वार गोप ल दास नें वेसेंही कह्यो जो तुम कों घर चलि कें ना पठेयों सो यह वात श्री गुसांई जी नें अपने कान

न सों सुनी पाछें उन वैष्णवन सों श्री गुसांईजीनें
कहीजो तुम कहा कहत हो तब उन वैष्णवननेक
हौजो महाराज हम कौ नाम दीजिये तब श्री गु-
सांईजीने उन कों नाम सुनायो उनकों कृतार्थ
करे पाछें गोपालदास सों श्री गुसांईजी यों क-
हें जो गोपालदास तुम्हारो अंगीकार श्री आ-
चार्यजी महाप्रभून ने कीयो है सो तो दृढ भयो
है परि जिनने तुम्हारे पास नाम पायो है सो तो
हमारे कबहूं न होंयगे सो श्री गुसांईजीने क्षो
भ करिकें गोपालदास सों कह्यो पाछें गोपालदा
सनें जितनेन कौं नाम दीयो हुतो तिन सबनकें
फिर सबन कों सांईजी के पास नाम दिवायोतब
वे सब कृतार्थ भये तिन सों श्री गुसांईजी गंगो-
ज्व कहते उन गोपालदास कों सामित्व आयो
तातें इन जीवन कों अकाज भयो तातें वे गो
पालदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे
परम कृपापात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ता
कहां तांई लिखिये ॥ ❀

वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ ८० ॥ संबन्ध ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक सूरदासजी
गऊघाट ऊपर रह
ते तिनकीवा
ता तिरस्क
तेहैं ॥

तोरक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू आदे
लये ब्रज कों पधारे सो कितनेक दिन में गऊ
घाट आए सो गऊघाट आगरे और मथुरा
के बीचा बीच है तहा श्री आचार्यजी महाप्रभू
पधारे सो एक घाट ऊपर श्री आचार्यजी म
हाप्रभू उतरे तहां श्री आचार्यजी महाप्रभू आ
चमान करि के संध्यावंदन करि के पाक क
रन कों बैठे और श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवकन को समाज बहुत हुतो और सेवक
हू अपने अपने श्री ठाकुर जी की रसोई करन
लागे सो एक घाट ऊपर सूरदास जी को स्थल
हुतो सो सूरदास जी स्वामी है आप सेवक के
रते सूरदास जी भगवदीय हैं गान बहुत आछो
करते ताते बहुत लोग सूरदास जी के सेवक
भये हुते सो श्री आचार्यजी महाप्रभू गऊघाट
ऊपर उतरे सो सूरदास जी के सेवक देखि के
सूरदास जी सों जाय कही जो आज श्री आचा
र्य जी महाप्रभू आप पधारे हैं जिननें दक्षिण
में दिग्विजय कीयो हैं सब पंडितन को जीते हैं म
त कि मार्ग स्थापन कीयो है सो श्री वल्लभाचार्य
यहां पधारे हैं तब सूरदास जी नें अपने सेवक
सों कह्यो जो तू जाय के दूर बैठि तब आप भोजन क
रि के निराजे तब खबरि करियो हम श्री आचार्य
जी महाप्रभून के दर्शन कों जायगे सो वह तनक

दर जाय बैठो तब श्री आचार्यजी महाप्रभून आप
पाक करत हुते सो पाक सिद्ध भयो तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभून में पाठाद्यनजो कों भोग सम
र्पी पाछें समयानुसार भोग सराय अनोसार
करी कें महाप्रसाद लेकें श्री आचार्यजी महाप्रभू पा
भू गादी उपर विराजे तहां सब सेवक हू पहुंचि
के श्री आचार्यजी महाप्रभून के आस पास प
य बैठे तब बड़ भए दास को सेवक आयो सा सू
रदास सों कही जो श्री आचार्यजी महाप्रभु पधारे
जेहें तब सूरदास अपने स्थान ते आय के श्री
आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आये तब
श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो सूर आवो
बैठो तब सूरदासजी श्री आचार्यजी महाप्रभून

कोदर्शन करिकें आगें आय बैठे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून में कही जो सूर कछू भागवद जस वर्णन करौ तब सूरदास नें कही जो आज्ञा सो सूरदास नें श्रीआचार्यजी महाप्रभून के आगे एक पद गायो ॥ (सोपद)

रागधनासरी ॥

हों हरि सब पतितन को नायक ॥ को करि सकै बराबर मेरी इते मान को लायक ॥१॥ जो तुम अजामेलि सौं कीनी जो पाती लिखि पाऊं ॥ होय विस्वास भलो जिय अपने और पतित बुलाऊं ॥२॥ सिमिटे जहां तहां ते सब कोउ आय जुरे इक ठौर ॥ सब कें इतने आनि मिलाऊं वे र दूसरी और ॥३॥ होड़ा होडी मन हुलास करि करे पाप भरि पेट ॥ सबहिन लै पायन तरि परि हों यही हमारी भेट ॥४॥ ऐसी कितनी कवना उं जान पति सुमरन है भयो आडो ॥ सब की वे र निवार लेउ प्रभू सूर पतित कों दाडों ॥५॥

और पद गायो रागधनाश्री

प्रभू मैं सब पतितन को टीको ॥ और पतित सब धोस चारि के मेरो जन्म तही को ॥१॥ वधिक अजामिल गनिका त्यारी और पूतना ही को ॥ मोहि छांडि तुम और उधारे मिटे शूल कैसें जी को ॥२॥ कोउन समरथ सेव करन कों खैचि कहत हौं ली को ॥ मरियत लाज सूर पतितन में कहत सबन मैं नी को ॥३॥ ऐसो पद श्री आचार्यजी महाप्र

प्रभूनके आगे सूरदासजीने गायो सो सुनि कें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो सूरहैकें सेसो विधियान काहे कों हे वन्यो भागवद लीलावर्णान करि तब सूरदासनें कह्यो जो महाराज होतो समझता नाहीं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो जा स्नान करि आउ हम तोकों समझामेंगे तब सूरदासजी स्नान करि आयेतब श्री महाप्रभूजी नें प्रथम सूरदास को नाम सुनायो पाछें समर्पणा करवायो और कि दशमस्कंध की अनुक्रमणिका कही सो ताते सब दोष दूर भये ताते सूरदासजी कों नव धाभक्ति सिद्धि भयी तब सूरदासजीने भागवद लीला वर्णान करी अनुक्रमणिका ते सम्पूर्ण लीला फुरी सो कों जानियें सो दशमस्कंध की सुबोधिनी में मंगलाचरणा को प्रथम कारक कीयेहैं सो यह श्लोक सूरदासजीनें कह्यो सोश्लोक

नमामि हृदये पीठे लीला शाराधि सायनं
लक्ष्मी सहस्र लीला भिः सेव्य मानं कलानिधं

और ताही समय श्री महाप्रभून के सन्निधान पद कीये सोपद ॥

॥ राग बिलावल

चकई री चलि चरण सरोवर जहां न प्रेम वियोग

॥ यह पद सम्पूरणा करि कें सूरदासजीनें गायो सो यह पद दशमस्कंध के मंगलाचरणा को ॥

कारिका के अनुसार कीयो सो यासें कह्यो है॰
जो तहां श्री सहस्र सहित नित क्रीडत शोभित
सूरदास या भांति पद कीये ताते जानी जो सूरदा
स कों सम्पूर्ण सुबोधिनी स्फुरी सो श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें जान्यो जो लीला कों अभ्यास
भयो पाछें सूरदास जीनें नंद महोत्सव कीयो
सो श्री आचार्यजी महाप्रभूनकें आगे गायो॥

राग देव गन्धार

ब्रज भयो मह्र के पूत जवयह्र वात सुनी॥ सोयह्र
श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें गायो सो सु
निकें श्री आचार्यजी महाप्रभू वहुत प्रसन्न भये
और अपने श्री मुखतें कहे जो सूर दास मानों
निकट ही हुते पाछें सूरदास जीनें अपने सेवक
कीये हुते तिन सवन कों नाम दिवायो पाछें सू
रदास जीनें वहुत पद कीये पाछें श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें सूरदास जी कों पुरुषोत्तम स
हस्र नाम सुनायो तव सूरदास जी को सम्पूरण
भागवत स्फुर्तना भई पाछें जो पद कीये सो श्री
भागवत प्रथम स्कंध ते द्वादस स्कंधतांई की
ये ताते वे सूरदास जी श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के ऐसे परम कृपा पात्र भागवदीय है पाछें
श्री आचार्यजी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन दो
य तीन विराजे पाछें फेरी व्रज कों पाव धारे सव
सूरदास जीहू श्री आचार्यजी महाप्रभून के सा
थ व्रज कों आये॥ *

॥वार्तिप्रसंग॥१

अब जो श्री आचार्यजी महाप्रभू ब्रज कों पधारे सो प्रथम श्री गोकुल पधारे तब श्री आचार्यजी महाप्रभून के साथ सूरदासजी हू आया तब श्री आचार्य महाप्रभून नें अपने श्री मुख सों कह्यो जो सूरदास श्री गोकुल कों दर्शन करो सो सूरदास ने श्री गोकुल कों दंडवत करी सो दंडवत करत ही श्री गोकुल की बाल लीला सूरदासजी के हृदे में फुरी और सूरदासजी के हृदय में प्रथम श्रीमहाप्रभून नें सकल लीला श्री भागवत की स्थापी है तातें दर्शन करत मात्र सूरदासजी कों श्री गोकुल की बाल लीला स्फुरना भई तब सूरदासजी नें विचार्यो मन में जो श्री गोकुल की बाल लीला कों वर्णन करिकें श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें सुनाइये जन्म लीला को पद तो प्रथम सुनायो है अब श्री गोकुल की बाललीला को पद गायो ॥ सो पद

॥राग विलावल

सोभित कर नवनीत लियें ॥ घुटुरुवन चलत रेणु तन मंडित मुख लेप किये ॥१॥ चारु कपोल लोल लोचन छवि गोरोचन को तिलक दियें ॥ लार लटकन मानो मत मधुप गन माधुरी मधुर पियें ॥२॥ कठुला कंठ वज्र केहरि नख राजत हैं सखी रुचिर हिये ॥ धन्य सूर एकौ पल यह सुख कहा भयो सत कल्प जिये ॥ ३॥

यह पद सूरदास नें गायो सो सुनिकें आप बहुत
प्रसन्न भया पाछें और हू पद गाए तब श्री महाप्र
भूजी अपने मन में विचारे जो श्रीनाथजी के यहाँ
और तौ सब सेवा को मंडान भयो ॥ और कीर्त
न को मंडान नांही कीयो है नाते अब सूरदास
जी कों दीजिये तब आप श्रीजी हार पधारे सो
सूरदासजी कों साथ लीए हीं सो श्रीनाथजी
हार जाय पहुंचे तब आप स्नान करिकें मन्दि
र में पधारे तब सूरदासजी सों कह्यो जो सूरदा
स ऊपर आउ स्नान करि के श्रीनाथजी कों
दर्शन करि तब सूरदास पर्वत ऊपर जायकें श्री
नाथजी कों दर्शन कीयो तब आपने कह्यो जो
सूरदास कछु श्रीनाथ कों सुनावो तब सूरदास
ने प्रथम विनयरूप को पद गायो ॥ सो पद

राग धनासरी

अब हों नाच्यो बहुत गुपाल ॥ यह पद सम्पू
र्ण करि के श्रीनाथजी के आगें गायो तब श्री
महाप्रभूजी नें कह्यो जो अब तो सूरदास तुम में
कछु अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या तो श्री
भून नें दूर कीनी तातें कछु भगवद जस वर्णनक
रो तब सूरदास ने महात्म और लीला अैसो जस
करि कें गाय सुनायो ॥ सो पद

राग गोरी ॥*

कोंन मुख दूंन ब्रजवासिन कों यह पद संपूर्ण
करिकें गायो सो सुनिकें श्री महाप्रभूजी बहुत

भये सोजैसो श्री आचार्यजी महाप्रभून मार्गप्र
काश कीयो हो ताके अनुसार सूरदासजीनें पद
कीये श्री आचार्यजीमहाप्रभून के मार्ग कौ कह
स्वरूपहै महात्म ग्यान पूर्वक सुदृढ सेहू की
यो परम कारणहै और स्नेह आगे भगवान कौम
हात्म रहत नाहीं ताते भगवान वेर वेर महात्म्यज
नावतहैं नाम प्रकरन में पूतना करि संकट त
नावर्त करि गर्गाचार्य करि यमलार्जुन करिवे
कुंठ दर्शन करि ऐसें करिकें भगवान नें बहुतम
हात्मजतायो परि इन व्रज भक्तन कौ स्नेह परम
कारुणा पन्न है ताते ताही समै तौ महात्म्य रहे पा
छें विस्मृत होजाय ॥ ÷

वार्ता प्रसंग ॥२॥

और सूरदासजीनें सहस्र विधि पद कीयेहैंता
कौं सागर कहिये सो सब जगत में प्रसिद्धि भरासो
सूरदासजी के पद देशाधिपत ने सुने सो सुनिके
यह विचारो जो सूरदासजी काहू विधि सों मिलें
तो भलो सो भागवद इच्छा ते सूरदासजी मिले
सो सूरदासजी सों कह्यो देशाधिपति में जो सूर
दासजी में सुन्यो है जो तुमनें विसन पद बहुत की
ये हैं जो मोकों परमेश्वर नें राज्य दीयो है सो सब
गुनीजन मेरो जस गावत हैं ताते तुमहूं कछू गावो
तब सूरदास जीने देशाधिपति के आगें कीर्तन
गायो ॥

सो पद

राग विलावल

मनारे तू करि माधौ सों प्रीति ॥*॥ यह पद देवी
धिपति के आगें सम्पूरण करि कें सूरदासजी नें
गायो सो यह पद कैसौ है जो या पद कों अहर्नि
सध्यान रहे तौ भागवद अनुग्रह की सदा सांति
रहे और संसार ते सदा वैराग्य रहे और कुसंग
की सदा भय रहे और भागवदीय के संग की सदा
चाह रहे और श्रीठाकुरजी के चरणारविंद ऊपर स
दा नेह रहे देवाधिक ऊपर आसक्ति न होय ऐसो
पद देवीधिपति कौं सुनायो सो सुनि कें देवीधि
पति बहुत प्रसन्न भयो और कह्यो जो सूरदास
जी मोकों परमेश्वर ने राज दीनों है सो सब गुनी
जन मेरो जस गावत हैं ताते मेरो जस कछू गावो त
ब सूरदासजीनें यह पद गायो ॥* सो पद*

राग केदारा

नाहिन रह्यो मन में ठौर ॥*॥ यह पद सम्पूरण क
रिकें सूरदासजी नें गायो सो सुनि कें देवीधिपति
अकबर बादशाह अपने मन में विचार्यो जो ये
मेरो जस काहे कों गावेंगे जो इनकों मेरी कछू चा
नक को लालच होय तो गावें येतौ परमेश्वर के जे
नहे और सूरदासजीने या पद के समाप्त में गायो
हो जो सूर ऐसे दर्शी कों दुसमत लोचन प्यास *
यह गायो है सो देवीधिपति नें पूछ्यो जो सूरदास
जी तुम्हारे लोचन तौ देखिवयन माहीं सो प्यासे
कैसें मरत हैं और बिनदेखें उपमा कों देत हौ*

सो तुम कैसे देत हो तब सूरदास जी कछु बोले नाहीं तब फेरि देशाधिपति बोलो जो इनके लोचन नहीं सो तौ परमेश्वर के पास हैं सो उहां देखत हैं सो दर्शन करत हैं तब देशाधिपति नें सूरदास जी के समाधान की मन में विचारी जो इनकों कछू दीयो चाहिये परि यह तौ भगवदीय हैं इन कों कछू काहू बात की इच्छा नाहीं पाछें सूरदास जी देशाधिपति सो विदा होय कें श्रीनाथजी द्वार आये ॥ * ॥ *

वार्ता प्रसंग ३॥

एक समें सूरदास जी मार्ग में चले जात हैं सो कोउ चौपड़ खेलत हुते सो वा चौपड़ खेल में ऐसे लीन हैं जो कोउ आवे जाते की सुधि नाहीं ऐसे खेल में मान हैं सो देख सूरदास जी के संग के भगवदीय हे तिनसों सूरदास जी नें कह्यो जो देखो वह प्राणी के सो अपनों जमारो खोवत है भगवान नें तौ मनुष्य देह दीनी है सो तो अपनी सेवा भजन के लिये दीनी है सो ये तौ या देह सों हाड़ कूटत हैं यामें यह लौकिक सिद्ध नाहि सो काहे तें जो या लोक में तौ अपजस और पर लोक में भगवान ते वहिर्मुख ताते श्रीठाकुरजी नें इन कों मनुष्य देह दीनी है तिनकों चौपड़ ऐसी खेलनी चाहिये सो ता समय एक पद सूरदास ने अपने संग केन सों कह्यो ॥ सो पद

राग केदारो ॥

मन तू समझ सोच विचार ॥ भक्ति बिन भगवान ॥
दुर्लभ कहत निगम पुकार ॥ साध संगति डारि फार
सांकरि रसना सारि ॥ दाव अब के परयो पूरौ उत
रि पहिली पार ॥ २ ॥ + वाक सत्रे सुनि अठारे पर
चही को मारे ॥ दूर ते तजि तीन कांनेच मकि चौं
क विचार ॥ ३ ॥ काम क्रोध जंजाल भूल्यो ठगयो ठ
गनी नारि ॥ सूर हरि के पद भजन बिन चल्यो दो
उकर झार ॥ ४ ॥

यह पद सूरदासजी नें अपने संग के भगवदीयन सों कह्यो सो या पद में सूरदासजी नें कहा कह्यो मन तू समझि सोच विचार ये तीन्यो वस्तु चौपड़ में चहिये सोई तीनों वस्तु भगवान के भजन में चहियै काहे ते जो समझि न होय तो अवगा कहा करेगो ताते पहिलें तो समझ चाहिये और सोच करिये चिंता सो भगवान के प्राप्त की चिंता न होय तो संसार उपर वैराग्य कैसें आवैं ताते सोच करिये और विचार जो या जीव कों विचार ही नहीं तो संग सत्संग में कहा करैगो ताते विचार चहियै सो ये तीनो वस्तु होंय तो भगवदीय होय ताते ये तीनों वस्तु भगवदीय कों अवश्य चाहियें सो चौपड़ में हूं ये तीनों वस्तु चहिये समझि कहैगि न वो न आवतो गोट कैसें चलै और सोच आग मजो मेरो यह दाव पड़े तो यह गोट चलूं विचारजो वाही में तन मन जो येती नों वस्तु होय तो चौप ड़ खेली जाय सोवे सूरदासजी श्री आचार्यजी

महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भागवदीय हे
वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥

वहुर सूरदासजी श्री नाथजी द्वार आय कें वहु त दिन तांई श्री नाथजी की सेवा कीनी वीचली च में श्री गोकुल श्री नवनीत प्रियाजी के दर्शन कों आवते सो एक समय श्री सूरदासजी श्री गोकुल आये श्री नवनीत प्रियाजी के दर्शन कीये और वाल लीला के पद वहुत सुनाये सो श्री गुसांईजी सुनिकें वहुत प्रसन्न भये पाछें श्री गुसांईजी ने एक पालना संस्कृत में कीयो सो पालना सूरदास जी कों सिखायो सो पालना सूरदास जीनें श्री नवनीत प्रियाजी झूलत हुते ता समय गायो सो पद ॥

राग रामकली

शेष पर्यंत शयनं ॥ यह पद सूरदास जीने सम्पूर्ण करिकें गाय सुनायो श्री नवनीत प्रियाजी कों पालेंया पद के भाव के अनुसार वहुत पद कीये सो सुनिकें श्री गुसांईजी वहुत प्रसन्न भये पालनाके भाव अनुसार पद गायो ॥ सो पद

राग विलावल

वालविनोद आंगन में की डोलनि ॥ मणि मय भूमि सुभग नंदालय वलि वलि गई तोतरी वोलनि ॥ १ ॥ कठुला कंठ रुचिर केहरि नख व्रज माल वहु लर्द अमोलनि ॥ वदन सरोज तिलक गोरोचन लर लटि कन मधु गनि लोलनि ॥ २ ॥ लीन्यो कर परसत आ

नन्धर कछू खाय कछू लायो कपोलनि ॥ कहै जस सूर कहा लौं वरनौं धन्य नंद जीवन जग तो लाने ॥३॥ *

गोपाल दुरे हैं माखन खात ॥ देखि सखी सो भाजो बढ़ी अति स्याम मनोहर गात ॥१॥ उठि अवलोकि ओट ठाढ़ी ह्वै जिह विधि नहिं लखि लेत ॥ चकृत नैन चहुं दिस चितवत और सबनकों देत ॥२॥ सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत यह आकार ॥ * ॥ जनु जलरुह तजि वैर विधिसों लारों मिलत उपहार ॥३॥ गिरि गिरि परत वदन तेउपर दै दधि सुत के बिंदु ॥ मानहु सुधाकन खवार वत पिय जिय दंदु ॥ बाल विनोद विलोक सूर प्रभु चित भई ब्रज की नारि ॥ फुरत न बचन वरजि वे कौं मन रही विचार विचार ॥ *

राग जैत श्री

कहां लगि वरनौं सुन्दरताई ॥ खेलत कुमर कनक आंगन में नैन निरखि सुखपाई ॥१॥ कुलहै लसत श्याम सुन्दर कें वह विधि रंग विवनाई ॥ मानउ नव घन ऊपर राजत मघुवा धनुष चढ़ाई ॥ सेत पीत अरु असित लाल मणि लटकनि भाल कराई ॥ मानहु असुर देव गुरु सों मिलि भूमि जस सो समुदाई ॥३॥ अति सुदेस मृदु चिहन हरे मन मोहन मुख वगराई ॥ मानहु मंजुल कंज ऊपर वर अलि अवलि फिर आई ॥ दूध दंत छवि कही न जात कछु अलि पल लपझलकाई

॥किलकतहंसतदुरति प्रगटतमानों विंध्रुमेंवि
पुलतांई ॥५॥खंडितवचन देतपूरनसुख अद्भुत
यहउपमाई ॥घुटुरुनचलतउठतप्रमुदित मन
सूरदास वलिजाइ ॥६॥

रागरामकली

देखोसखीयक अद्भुतरूप ॥यक अम्बुज मध्यदे
खियत वीसदधि सुतजूप ॥१॥यक अवलीदोय
जलचर उभेअर्क अनूप ॥ पंववार चढि गहि देखि
यत कहो कहा स्वरूप ॥२॥ सिसु गन में भई सोभा
कोउ करो विचार ॥ सूरश्री गोपालकी छवि गावो
यह निरधार ॥३॥

ऐसे पद सूरदास जीनें गाये पाछें फेरि श्रीनाथ
जी द्वार आये ॥*

वार्ताप्रसंग ५॥

अव सूरदासजीनें श्रीनाथजी कीसेवावहुत कीनी
वहुत दिन तांई ता उपरांत भगवदइच्छा जानी जो
अव प्रभून कोइच्छा वुलाय वे कीहे यह विचारिकें
जो नित्य लीला फलात्मक रासलीलाजोजहां करें
हैं ऐसीजो परासोली तहांसूरदासजी आए श्रीना
थजी की ध्वजा कों दंडोतत करिकें ध्वजा के सामे
सन्मुख करिकें सूरदासजी सोये परि अंतःकरन
यहजो श्री आचार्यजी महाप्रभू दर्शन देयंगे अव
यहदेह तो यकी नातें अवयादेह सों श्रीनाथजी
को दर्शन होय तो जानिये परमभाग्यहैं श्रीगुसांई
जीको नाम कृपासिंधु हे भक्तन के मनोरथपूरन

करतीहैं ऐसे विचार कें सूरदासजी श्री गुसांईजी
को चितवन करतैं और श्री गुसांईजी कैसे कृपा
सिंधु हैं जैसें सूरदासजी उहां स्मरण करतहैं तेसेही
श्री गुसांईजी इनकों छिनहूं नाहिं भूलतहै श्रीना
थजीकों सिंगार होतो तासमय सूरदासजीमणि
कोठा में ठाडे ठाडे कीर्तन करते सो तादिन श्रीगु
सांईजी श्रीनाथजी कौ सिंगार करतहुते और
सूरदासजी कों कीर्तन करत न देख्यो तब श्रीगुसां
ईजीनें पूछो सूरदासजी नाहीं देखियत सो काहे
तेतव काहू वैष्णवनें कह्योजो महाराज सूरदास
जीतो आज परासोली की ओड़ी जातदेखेहे तब
श्रीगुसांईजीने जान्योजो भगवदइच्छा ते अवसा
न समेंहे ताते सूरदासजी परासोली गयेहैतबश्री
गुसांईजीनें अपने सेवकन सों कह्योजो पुष्टिमा
र्गीको जिहाजजातहैजाकों कछु लेनोंहोयसो ले
लेउ और जो भगवदइच्छा ते राजभोग आरतीपा
छें रहतहैंतो मेंहूं आवतहौंपाछें श्रीगुसांईजीवे
वेर सूरदासजीकी खबरि मंगायो कोंजो आवै
सोई कहैजो महाराज सूरदासजीतो अचेतहैंकछू
बोलतनाहीं ऐसें करत श्रीनाथजीकेराज
भोगको समय भयो सो राजभोग आरती करि
कें श्रीगुसांईजी श्रीगिरिराज तेनीचें उतरेसो
आप परासोली पधारे भीतरिया सेवक रामदा
सजी प्रभृत और कुंभनदासजी और श्रीगुसांई
जीके सेवक गोविंद स्वामी चत्रभुजदास प्रभृत

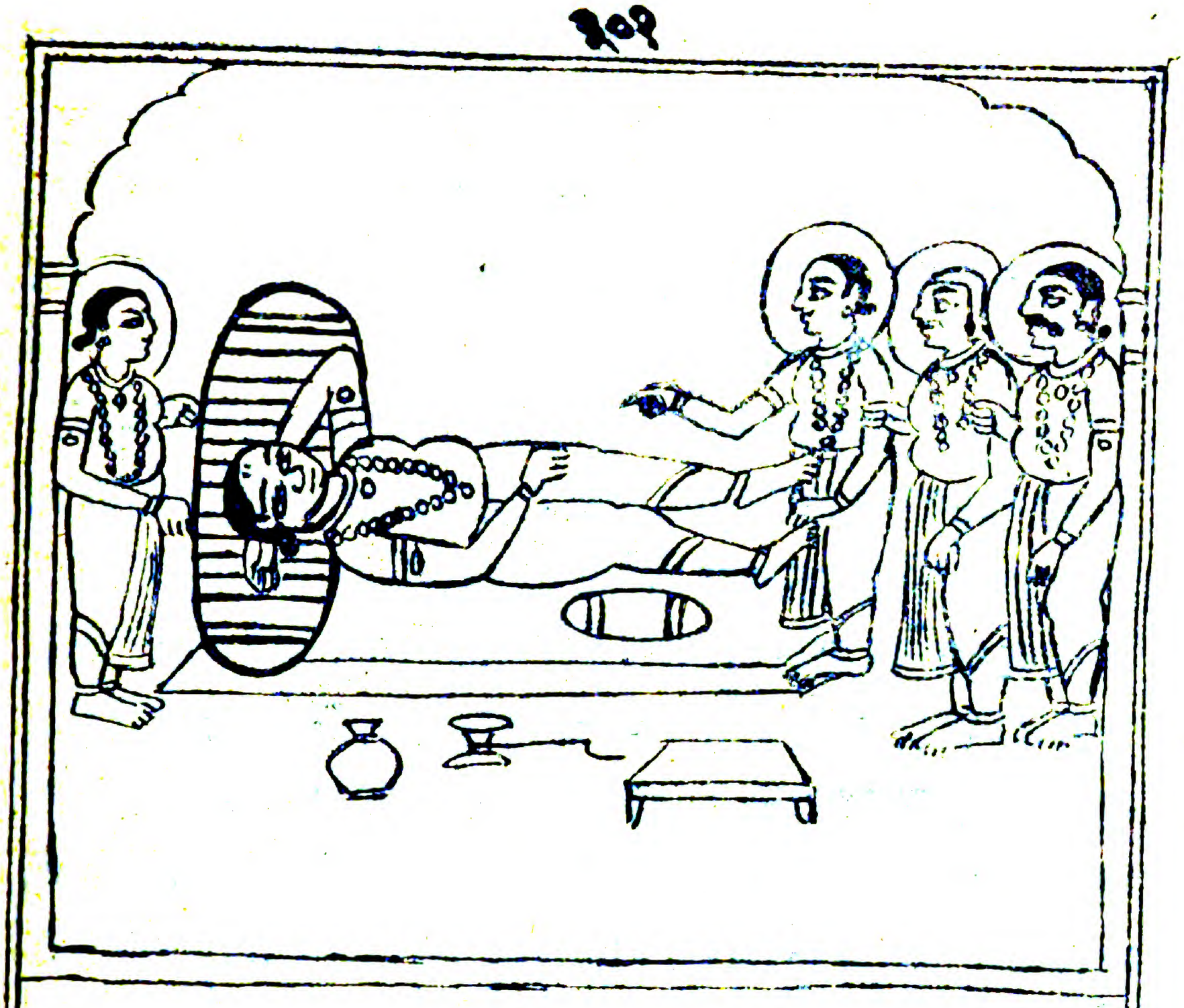

और सब श्री गुसांईजी के साथ आरा सो आव तही सूरदासजी सों श्री गुसांईजी नें पूछो जो सूरदासजी कैसें हौं तब सूरदासजी नें श्री गुसांईजी कों दंडौत करिकें कह्यौ जो महाराज आरा हौ महाराज की वाट देखत हतौ यह कहि कें सूरदासजी ने एक पद गायो सो पद ॥

राग सारंग ॥*

देखौ देखो हरि जू कौ एक सुभाव ॥ अति गंभीर उदार उदधि प्रभू जानि सिरोमन राय ॥१॥ राई जितनी सेवा कौ फल मानत मेरु समान ॥ समझि दास अपराध सिंधु सम वृंदन एकौ जानि ॥२॥ वदन प्रसन्न कमल पद सनमुख दीखत ही है ।

ऐसे ॥ ऐसे विमुख हु भए कृपा या मुख कीजव
देखो तव तैसे ॥३॥ भक्त विरह कर तब करुणा भय
डोलत पाछें लागें ॥ सूरदास ऐसे प्रभू कों कह दी
जै पीठ अभागे ॥ *

यह पद सूरदास जीनें कह्यो सो सुनि कें श्री गुसां
ई जी बहुत प्रसन्न भए और कह्यो जो ऐसो दैन्य *
प्रभू अपने सेवकन कों देहि या दैन्य के पात्र एही
हैं तब वा वेर श्री गुसांई जी पास ठाड़े हुते और चत्र
भुजदास हू ठाड़े हुते तब चत्रभुजदास नें कह्यो जो
सूरदास जीनें बहुत भावद जस वर्णन कीयो परि
श्री आचार्य जी महाप्रभून को जस वर्णन ना कीयो
तब यह वचन सुनि कें सूरदास जी बोले जो मैं तो सब
श्री आचार्य जी महा प्रभून कोही जस वर्णन की
थो हो कछू न्यारो देखूं तो न्यारो करूं परि तेरे साथ
कहत हो या भांति कहि कें सूरदास जीनें एक पद
कह्यो ॥ सो पद

रागविहागरो

भरोसो दृढ़ इन चरणन केरो ॥ श्रीवल्लभ नख चंद्र *
छटा विनु सब जग मांझि अंधेरो ॥१॥ साधन और
नहीं या कलि में जासों होत निवेरो ॥ सूर कहा
कहि दुविधि आंधरो वि ना मोल को चेरो ॥२॥ *

यह पद कह्यो पाछें सूरदास जी कों मूर्छा आई तब
श्री गुसांई जी कहें जो सूरदास जी चित की वृति
कहां है तब सूरदास जीने एक पद और कह्यो ॥ *

सो पद

रागविहागरो।।

वलिवलिवलि हौं कुमर गंधिका नंद सुवनजासों रति मानी।।वे अतिचतुर तुमचतुर सिरोमनश्री त करीकैसें होत है छानी।।१।।वेजुधरत तन कनकपीत पट सोतो सव तेरीगति ठानी।।तें पुनि स्याम सहज वे सोभा अंवर मिस अपने उर आनी।।* २।। पुलिकित अंग अवहीं है आयो निरखिवे ऊरिव निज देह सियानी।। सूर सुजान सखी केधूमै प्रेमप्रकाश्या भयो विह सानी।। *३*।।

यहपद कह्यो इतनों कहिकें सूरदासजीको चित्त श्रीठाकुरजी को श्री मुखतामें करुणारस केभरे नेत्र देखे तव श्री गुसांईजी पूछो जो सूरदास जी नेत्र कीवृति कहां है तव सूरदास जीने एक पद श्रोर कह्यो।। सोपद

रागविहागरो

खंजन नैन रूप रस माते।।अति सेचारुचपल अनियारे पल पिंजरा न समाते।।चलि चलि जात निकट श्रवणान के उलटि पुलटि ताटंक फंदाते।।सूरदास अंजन गुण अदक नातर अव उडिजाते।। इतनों कहतही सूरदास जीने या प्रारि को त्याग कीयो सो भगवद् लीला में प्राप्त भये पाछें श्री गुसांईजी सव सेवकन सहित श्रीगोवर्द्धन आयेता ते सूरदासजी श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय है सोइनकी वार्ता कौपार नाहीं तातेइनकी वार्ता कहां तांई लिखये।।*

॥वार्ता प्रसंग॥ ६॥ वैष्णव ८१॥ सम्बन्ध॥ ✤

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक परमानन्द दास कनी
जिया ब्राह्मण तिनकी
वार्ता लिख्यते
हैं

सो परमानन्द दासजी परम भगवद लीला मध्य या ती श्रीठाकुर जी के परम सखा हे सो जब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप भूतल पर प्रगट भये तब श्रीगोवर्द्धन नाथजी की आज्ञा ते देवी जीवन के उद्धारार्थ और तेसेंई श्री आचार्यजी महाप्रभून को श्रीठाकुरजी को पधरावन सब प्रगट भयो और आप श्रीगोवर्द्धन पर्वत में प्रघट भए सो गोपाल दासजी वल्लभाख्यान में गाये हैं जो अपने कृपा को वादे प्रांतर पर जेम ताते परमानन्द दासजी को जन्म कनोज में हैं कनोजया ब्राह्मण के घर भयो सो वे परमानन्द दासजी बहुत योग्य भए और कवि भये भगवद कृपा के पात्र भये कीर्तन बहुत आछो गावते ताते परमानन्द दास जी के संग समाज बहुत रहतो आप स्वामी क हावते आप सेवक करते सो भगवद इच्छा ते एक समय ×
परमानन्द दास जी कन्नोज ते आप प्रयाग को आ ये सो प्रयाग में उतरे सो वहां कीर्तन बहुत आछें गावते ताते बहुत लोग कीर्तन सुनिवे को आवते ×
और अडेल ते कायस्थ लोग बहुत आवते सो इन के कीर्तन सुनि के पार अडेल में जाय कहते ×

जो परमानन्द दास जी इहां प्रयाग में आये है सो की
र्तन बहुत आछें गावत है सो श्री आचार्यजी महाप्र
भून के सेवक जल घरिया कपूर छली सो उनके राग
पर बहुत आसक्ति परि वे अवकाश नाहीं ..... पा
वें जो परमानंद दास जीके कीर्तन सुनिवे कों आवें
सेवा में अवकाश नाहीं जो आग जाय सकें सो एक
दिन एक वैष्णव आगरे ते अडेल में आयो सो याने क
हो जो आज एकादशी है सो परमानन्द दास जी
आज जागरन करेंगें सो यह सुनिकें वा जल घरि
यानें अपने मन में विचारयो जो आज परमानन्द जी
के कीर्तन सुनिवे कों चलनों सो वे छली कपूर जल
घरिया अपनी सेवा सों पहुंचि कें रात्रि को अपने
घर आये सो घर आयकें अपने मन में विचार की
यो जो या बेर नाव तो मिलेगी नाहीं ताते कहा कर्त
व्य परि वे पैरवे में भले निपुन हुते सो मन में विचारी
जो पैर कें पार जैये पाछें अपने घर तें चले सो श्री य
मुना जी के तीर ऊपर आय ठाढे भये तब पर्दनी प
हर कें वस्त्र सब मांथे सों बाधि कें श्री यमुना जी में
पैर कें पार प्रयाग आये पाछें वस्त्र पहर कें जाठी
र परमानन्द स्वामी उतरे हुते तहां आये सो इनकों
कछु मिलाप तो परमानन्द स्वामी सों हुतो नाहीं
जहां और सब जने बैठे हुते तहां एक जाय बैठे परि
एक श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक हे सो सब
कोउ जानत हुते ताते सबनें इनकों आदर कर
कें बैठायो सो ए बैठे ता पाछें परमानन्द स्वामी ने

कीर्तन कों प्रारंभ कीयो सो परमानन्द स्वामी ने विर
ह के पद गाये सो विरह के पद काहे कों गाए सो
प्रथम इनकों स्वरूप कहि आये है कही जोये ली
ला मध्ययाती श्रीठाकुर जी के परमानन्द स्वामीपर
म सरवाहैं सो उहां सों विछुरे और इहां तो आवही
श्रीठाकुर जी कों दर्शन नाहीं भयो और श्री आचा
र्यजी महाप्रभून को दर्शन आवहोयतो श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के मार्ग को यह सिद्धांत है जोभग
वदीय को संग होयतो श्रीठाकुर जी कृपा करें ता
ही के लियें श्री आचार्यजी महाप्रभून नें परमान
द स्वामी के ऊपर अनुग्रह करि कें अपने कृपापा
त्र भागवदीय के अंतकरन में प्रेरना करिकें परमा

नंद स्वामी के इहां पठाये सो ये श्री आचार्य जी महा
प्रभून के सेवक कैसे हैं जो जिनकों श्री ठाकुर जी ए
क क्षन हूं नाहीं छोडत इनके संगही रहत हैं काहे
ते सूरदास जी गाए हैं भक्ति विरह करत करुणा म
यडोलत पाछें पाछें और जगन्नाथ जोसी की हूवा
तीमें लिख्यो है जो जब रजपूत नें तरवार चलाई त
व श्री ठाकुर जी नें हाथ पकरी तातें श्री आचार्य
जी महाप्रभून के सेवकन के सदां श्री ठाकुरजी नि
कट ही रहत हैं तातें परमानन्द स्वामीने विरह के प
द गाये सो पद ॥

रागविहागरो ॥*

ब्रज के विरही लोग विचारे ॥ बिन गोपाल ठगे सेठा
डे अति दुर्बल तन हारे ॥१॥ मात जसोधा पंथ नि
हारत निरखत साझ सकारे ॥ जो कोई कान्ह कान्ह
कहि बोलत अँखियन बहत पनारे ॥२॥ यह मथु
रा काजर की रेखा जे निकसे ते कारे ॥ परमानन्द
स्वामी बिनु ऐसे जैसें चन्दा बिनु तारे ॥३॥*

और पद गायो सो **रागविहागरो**

सब गोकुल गोपाल उपासी ॥ जो गाहक साधन
के ऊधो सो सब बचन दृढ़ासी ॥ जद्यपि हरि
हम तजी अनाथ करि सब छांडत कोंरति जासी ॥
अपनी सीतलता तहां छांडत जद्यपि विधु राहु है
ग्रासी ॥ ४॥ किंह अपराध जोग लिखि पठयो नेम
भजन सो करत उदासी ॥ परमानन्द ऐसी को नि
रहन पावें मुक्ति गुन रासी ॥ ३॥

रागकान्हरो

कौन रसिक है इन बातन को ॥ नंदनंदन विनका सो कहिये सुनरी सखी मेरे दुखिया मनको ॥१॥ कहांवे जमुना पुलिन मनोहर कहां वह चंद सरद रति को ॥ कहां वे मंद सुगंध अमल रस कहांवे षट पद जल जातन को ॥ २॥ कहांवे सेज पौढ़िवो बनको फूल बिछौना मृदु पातन को ॥ कहांवे दृग सपरस परमानन्द कोमल तन कोमल गातन को ॥३॥*

राग कान्हरो

माई कौं मिलवे नंद किसोरे ॥ एक बार कोनैन दिखामें मेरे मन कौं चोरे ॥१॥ जागत नाम गनत नहीं खूटत कों पाउंगी भोरे ॥ सुनरी सखी अब कैसें जीजै सुनतम चर खग रोरें ॥२॥ जो यह प्रीति स्य अंतर गति जिनकाहू बन होरे ॥ परमानन्द प्रभू आन मिलेंगे सखी सीस जिन दोरे ॥३॥*

इत्यादिक पद विरह के ऐसे परमानंद स्वामीनें सगरी राति गाए पाछिली य डीचारि रात्र रहीत व जोजो जागरन में आए हुते सो सब अपने घरकों गये तैसेंई श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक ए जल घरियाक पूर हू परमानंद स्वामी सों जैसी कृ ष्ण स्मरण कहि कें चले और परमानंद स्वामीके कीर्तन सुनिकें बहुत प्रसन्न भये और परमानन्द स्वामी सों कह्यो जो जैसे हमने सुने हुते तातें अधिक देखे तुम परम भगवद अनुग्रह पूरण हो

येजलधरिया क्षत्री कपूर श्री महाप्रभून के परम भ
गवदीय है सो येजो चलि आरा सो परमानन्द स्वा
मी के ऊपर अनुग्रह करिवे कों आरा है नातर भ
गवदीय काहे कों काहू के घर जांय और यहउ
पर काहि आये हैं जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के
निकट ही रहत हैं सो याकों हेत यह जो निकट रहत
हैं तौ इन जलधरिया क्षत्री कपूर की गोद में बैठि कें
श्रीनवनीतप्रियाजी ने परमानंद स्वामी के पद सुने
जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के मार्ग की मर्य्यादा
है जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के अनुग्रह विना
श्रीठाकुर जी कृपा न करैं सो इन जलधरिया क्षत्री
कपूर ऊपर श्री आचार्यजी महाप्रभून को परम अनु
ग्रह है ताते श्रीनवनीतप्रियाजी इनकी गोद में
बैठि कें परमानन्द स्वामी के पद काहे को सुनने
पड़े सो ताको हेत यह जो भगवदीय परमानन्द
स्वामी के ऊपर श्रीनवनीतप्रियाजी अनुग्रह क
रवे कों आप पधारे हैं तातें सुने सो श्री आचार्य
जी महाप्रभून के सेवक जलधरिया क्षत्री परमा
नन्द स्वामी सों जैसी कृष्ण कहि कें चले सो श्रीय
मुनाजी के तीर ऊपर आये सो वहां आय कें विचा
र कीयो जो नाव की याट देखें तौ अपार होयगी
और सेवा छूटैगी और श्री आचार्यजी महाप्रभू
भी रीझेंगे ताते जैसे पैर के आये हुते तैसेही चले
सो पैर के पास गये सो पार आवतही स्नान कर
कें अपनी सेवा में तत्पर भये पाछे वहां प्राग में

परमानन्द स्वामी की रात्रि के जागरन के श्रमित
सो आंखि लगी निंद्रा आई सो सुतनें में स्वप्न आ
यो सो स्वप्न में देखे जो जैसें रात्रि के जागरन में श्री
आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जल घरिया ए
भी बैठे हैं और उनकी गोद में श्री नवनीत प्रिया
जी के दर्शन भये और स्वप्न में श्री नवनीत प्रिया
जी परमानन्द स्वामी सों कहैं और परमानंद स्वा
मी की निद्रा खुली सो वा श्री मुख को कोऊ सों
दर्यो कोटिकं दर्पणा वरण्य परमानन्द स्वामी नें
देख्यो सो स्वप्न में तो हृदय में धरि लीये और मन में च
टपटी लगी सो यह दर्शन फेरि कब होयगो तब यह
मन में विचार्यो जो यह दर्शन उन श्री आचार्यजी
महाप्रभून के सेवक जल घरिया विना न हो
यगो तातें होय तो उनके पास जैये जो उनसों मिलै
तब कार्य सिद्धि होय ऐसो परमानन्द स्वामी नें अ
पने मन में विचार कियो सो ततकाल भागते अ
डेल कूंचले सो श्री यमुनाजी के तीर ऊपर आय
ठाढे भये सो प्रातः काल को समय भयो सो प्रथम
नाव चली ता पर बैठि के पार उतरे तब आगें जाय
बैठि रहे तो श्री आचार्यजी महाप्रभूजी स्नान सं
ध्या वदन करतहैं सो परमानन्द स्वामी को श्री महाप्र
भूजी को कैसो दर्शन भयो साक्षात पूरन पुरुषोत्तम
श्रीकृष्णचंद्र सों श्री गुसांई जी वल्लभाष्टक में लि
खे हैं सो वल्लभ कुल सब ऐसो दर्शन भयो
जो श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक जल घरि

याछलीकपूरकीगोद में श्रीठाकुरजीकाहें कोंवे
ठेयहकारणा जिनके माथे श्रैसे प्रभू विराजत हैं पर
मानन्द स्वामी के मन में यह जो श्छली कपूर मिले
तो श्राछी सो काहेते जो जिन के मांथे श्रैसे प्रभू श्री
र जिनके दर्शन त श्री श्राचार्य जी महाप्रभून कों
दर्शनभयो तापाछें श्री श्राचार्य जी महाप्रभून
ने श्रपने श्री मुख सों कह्यो जो परमानन्द कछू भग
वदीयजस वर्णन करि तब परमानन्दस्वामीने वि
रह के पद गाये ॥ सो पद

रागसारंग ॥ *

कौनवेर भई चलेरी गोपाल ॥ हों ननसार गई हौंए
क्योते वार वार वृक्षत व्रजबोले ॥१॥ तेरो तनकोरू
प कहां गयो भामिन श्ररु मुख कमल सुखायरह्यो
तवसोभागयो हरि के संग हुतो सो कमल विरह दह्यो
॥२॥ को बोले कोनैन उघारे को प्रति उतर देहिवि
कल मन ॥ जो सर्वस्व श्रक्रूर चुरायो परमानन्द
स्वामी जीवन धन ॥ *

रागसारंग

जिय की साधन जिय ही रहीरी ॥ बहुरि गोपालदे
खि नहीं पाए विलपत कुंज श्रहीरी ॥ १ ॥ एकदि
नसोंज समीप यह मारग बेचन जात दहीरी ॥ पी
त के लिये दान मिस मोहन मेरी बांह गहीरी ॥ २ ॥
विनदेखें घडीजात कलप समवि रहा श्रनलद
हीरी ॥ परमानंद स्वामी विन दर्शननैनन नींद वा
हीरी ॥ ३ ॥ *

रागसारंग ॥*

वह्नवातकमलदलनैननकी ॥ वारवार सुधिकरै वतरज नीचहुदिदेनी सैनी सैनकी ॥ वह्नलीला वह रास सरद को गोरजरजति आवनि ॥१॥ वह उंची टेर मनोहर मिस करि मोह सुनावनि ॥२॥ वसनकुंजमें रास खिलायो विद्या गमार्दू मैनकी ॥ परमानन्द प्रभू सों को जीवे जे पोखी मृदुवेनकी ॥

या भांति परमानन्द स्वामी ने विरह के पद गाए सो सुनि कें परमानन्द स्वामी सों कह्यो जो कछू वा लीला वर्णन करि तव परमानन्द स्वामी नें कह्यो जो महाराज में कछू समझत नाहीं तव श्रीमहाप्रभून नें कह्यो जो ध्यान करि आउ हम तोकों समझावेंगे तव परमानन्द स्वामी नें श्री महाप्रभून सों पूछ्यो जो महाराज आप को सेवक विरक्त कह्यो है तव श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो कछू हल करत होयगो तव परमानन्द स्वामी ध्यान कों गये सो तव परमानन्द स्वामी आगें जाय कें देखेंतो यमुनजल की गागर लेकें वह कपूरछत्री आवतहै तव निकट आए सो सामहे मिले सो उनकों देख कें परमानन्द स्वामी वहुत प्रसन्न भए और परमानन्द स्वामी नें उनकों नमस्कार करी और कह्यो जो रवि कों जागरन में आप पधारे हुते सो श्री ठाकुर जीनें आप की गोद में बैठि कें मेरे कीर्तन सुने सो आप की कृपा ते श्रीठाकुर जीनें मोसों क

हौ जो में श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जल
घरिया स्त्री की गोद में बैठि के तेरे कीर्तन सुने
है और आप की कृपा ते मेरो भाग्य सिद्ध भयो है
सो आवत ही तुम्हारी कृपा ते मोको दर्शन भयो
इतनी बात सुनि के उन जल घरिया नें कह्यो जो ए
से मति कहो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू सुनेंगे
तो खीजेंगे सो सेवा छोड़ के क्यों गये ताते यह बा
त मति कहो तब इतनी सुनि के परमानन्द स्वामी
को आश्चर्य भयो और कह्यो जो ए धन्य है जिन
ऊपर श्रीठाकुर जी को ऐसो अनुग्रह है और ये

अपनो स्वरूप छिपावत हैं पाछें परमानन्द स्वामी
तो ध्यान को गये और जल घरिया जल की गागर

लेकें मन्दिर में गयो पाछें परमानन्द स्वामी श्रीज
मुनाजी में स्नानकरिकें ततकाल आप श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के आगें आय ठाढ़े भये तब
श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्योजो परमानन्द
तुमा आगें आउ बैठि तब परमानन्द स्वामी आ
प आगें आय बैठे तब श्री आचार्यजी महाप्रभून
नें परमानन्द स्वामी कों नाम सुनायो पाछें मन्दि
र में पधार कें श्री नवनीत प्रियाजी के सन्निधान
परमानन्द स्वामी कौं ब्रह्म संबंध करवायो पाछें
अनुग्रह करिकें परमानन्द स्वामी कों अनुक्रम
णिका सुनाई काहे तेजो प्रथम परमानन्दस्वामी
सों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें अपने श्री मुख

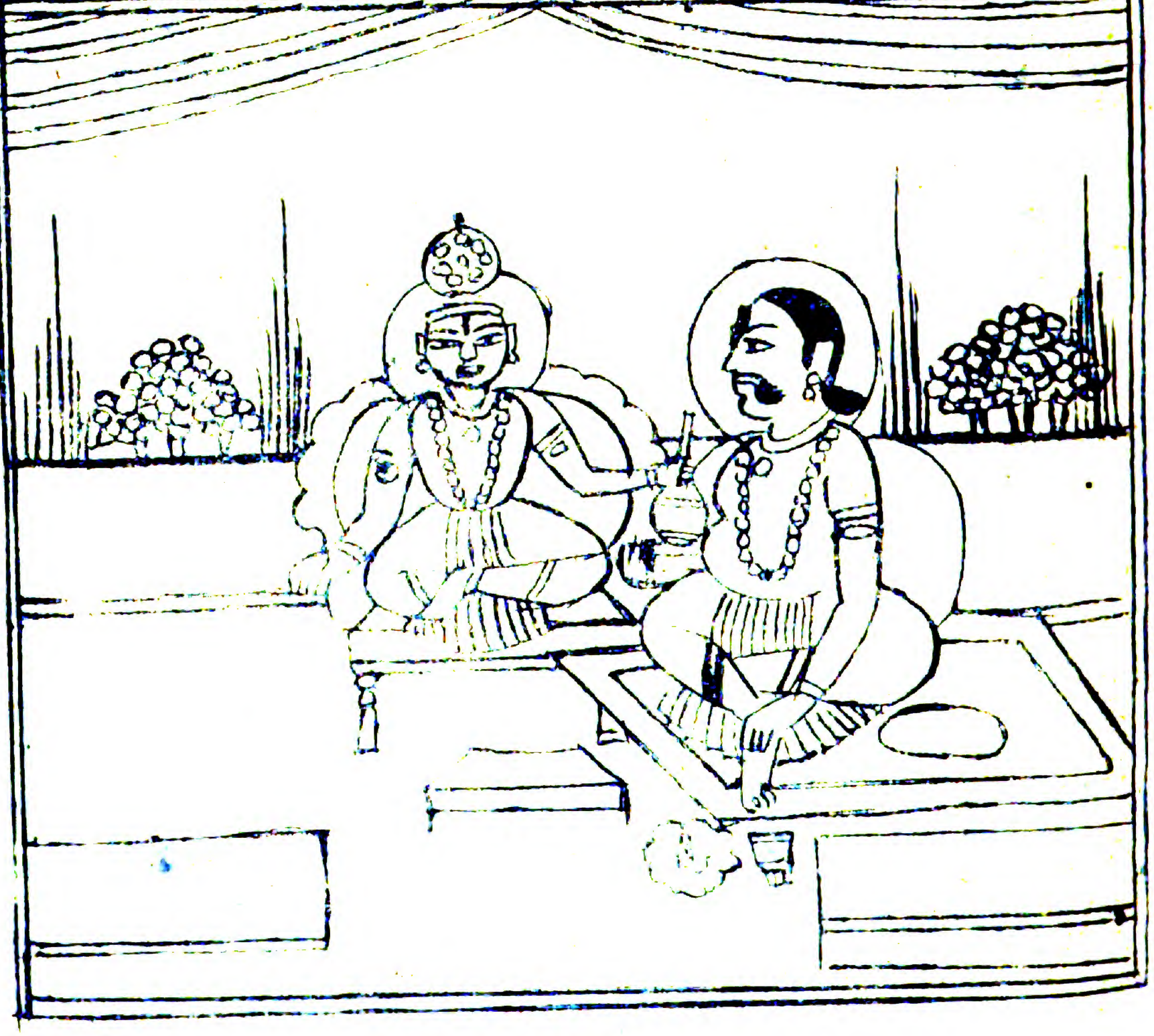

सोंकह्योजो भागवद जस वर्णन कीसो परमानं
द स्वामीनें विरह कोपद गायोतब श्री आचा
र्य जी महाप्रभून नें कह्योजो परमानंद स्वामीका
ललीला गाउ तब परमानन्द स्वामीनें कह्योजो
राजमें कछू समझत नाहीं सो परमानन्द स्वामी
नें काहे ते कह्यो जो ऊपर कहि आए हैंजो ये श्री
ठाकुर जी सो विछुरे हैं सो विछुरे के दुख कीतो
स्फुर्ति रही और संयोग जो सुख भयो ताको वि
स्मरन भयो जो काहेतेजो सब लीला विसिष्ट
पूरण पुरुषोतम तो श्री आचार्य जी महाप्रभून
सों घर पधारे हैं सो परमानन्द दास कों श्री आचा
र्य जी महाप्रभून नें अनुक्रमिणाका सुनाई तब सब
लीला की स्फुर्ति भई और अनुक्रमणिका सुना
ई ताको कारण कह्या जो श्री आचार्यजी महाप्र
भून को नाम है श्री भागवत पीयूष समुद्र मथनः
क्षमः सो श्रीभागवत को श्री गुसांईजी अमृत
को समुद्र करिकें वर्णन कीये हैं सो अनुक्रमणि
काद्वारा श्रीभागवत रूपी समुद्र श्री आचार्य जीम
हाप्रभून नें परमानन्द स्वामी के हृदय में धरयो ता
ते वाणी तो सब अष्टकाव्य की समान हैं और ये
दोउ परमानन्द स्वामी और सूरदास जी सागर भये
सो याते जो श्री भागवत रूपी अमृत को स्वरूप
इनके हृदय में श्री आचार्यजी महाप्रभून नें ध
रयो सो काहे ते जो सब कोउ सूरसागर और पर
मानन्द सागर कहते सब परमानन्द दास सो श्र

श्राचार्यजी महाप्रभू श्रीमुखसों कहें जो बाल लीला वर्णन करि सो परमानन्दजी नें तत्काल बाललीला के पद करिकें श्रीनवनीतप्रियाजी के सन्निधान गाये॥ सोपद

राग सांमरी

मांई री कमल नैन श्याम सुंदर झूलत हैं पलना॥ बाल लीला गावत सब गोकुल के ललना॥१॥ अरुणा तरुणा कमल नख मनि जस जोती॥ कुंचित कच भवराकृत लटकत गज मोती॥२॥ अंगूला गहि कमल पान मेलत मुख माहीं॥ अपनों प्रतिविम्ब देखि पुनि पुनि मुसिकाही॥३॥ जसुमति के पुन्य पुञ्ज वार वार लाले॥ परमानन्द स्वामी गोपाल सुत सनेह पाले॥४॥

यह पद सुनिकें श्री श्राचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भए फेरि और पद गायो॥ सोपद

राग विलावल

जसोधा तेरे भाग्य की कहीं न जाय॥ जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्लभ सोप्रघटे हैं आय॥१॥ शिव नारद सनकादिक महा मुनि मिलवे करत उपाय॥ तेनंद लाल धूर धूसर वपु रहत गोद लिपटाय॥२॥ रतन जटित पौढ़ाय पालने वदन देखि मुसिकाई॥ भूलो मेरे लाल बलिहारी परमानन्द जस गाई॥३॥

राग विलावल

मणि मय आंगन नंद के खेलत दोउ भैया॥ सो श्रैसे

वालसीलाकेपद परमानन्द दास नें गाए सो सुनिकें श्री आचार्यजी वहुत प्रसन्न भए सो परमानन्द दास जी श्री आचार्यजी महाप्रभून के पास हे सो परमानन्द दास को आपने कीर्तन की सेवा दीनी सो परमानन्द दास जी श्री नवनीतप्रियाजी कों नित्य नये पद करिकें भांति भांति के सुनावते जब अनोंसर होतो तव परमानन्द दास जी श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें पद कीर्तन करें श्री आचार्यजी महाप्रभू नित्य कथा कहते सो परमानन्द दासजी नित्य सुनते सो ताही प्रसंग के कीर्तन करिकें परमानन्द दासजी सुनावते सो एक दिन परमानन्द दासजी नें श्रीठाकुर जी के चरणारविंद को महात्म सुन्यो सो चरणारविंद के महात्म को कीर्तन करि श्री आचार्यजी महाप्रभून कों सुनायो सुनिके श्री आचार्यजी महाप्रभू वहुत प्रसन्न भए सो पद॥

राग कान्हरो

चरण कमल वंदौ जगदीस गोधन के संग धाए। जे पद कमल धूरि लपटाने करि गहि गोपीन के उर लाए॥१॥ यह पद संपूरण करि के परमानन्द दास जी नें गायो और श्री आचार्यजी महाप्रभून के स्वरूप को और आर्यना को पद गायो॥ सो पद

राग कान्हरो

यह मागों गोपीजन वल्लभ यह परमानन्द दास स्वामी नें संपूरण करिकें गायो सो सुनिकें श्री आचार्यजी महाप्रभू अपने मन में जाने जो यह मिस कर

कें परमानन्द दास या पद कों सुनाय के व्रज के दर्शन की प्रार्थना कीनी है ताते व्रज कों अवश्य चलनों ॥*

वार्ता प्रसंग ॥१॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू यह विचार करेजो व्रज कों पधारबे को उद्यम कीयो सो दामोदरदास हरिसानी कृष्णदास मेघन परमानन्द दास और यादव दास हलवाई तथा रसोई की सामिग्री संग

लेकें चले और सब वैष्णव संग लै आप श्री आचार्यजी महाप्रभू व्रज कों पधारें सो व्रज कों आवत परमानन्द दास कों गांव कन्नोज आयो तब परमानन्द दासनें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों वीनती

कीनीजो महाराज मेरे घर पधारिये आप के अनु
ग्रह ते मेरो भाग्य सिधि भयो है अब मेरो घर हू पा
वन करिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप अं
तर यामी कृपा निधान भक्त मनोरथ पूर्वक आप
कृपा करि कें पधारे सो परमानन्द दास के घर आ
ई भांति सों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें रसोई
करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो पाछें भोग सरा
य कें आप प्रसाद लीयो पाछें आप गादी तकिया
न के ऊपर विराजे तब परमानन्द दास सों कह्यो जो
कछु भगवद जस गावो तब परमानंद दास जी नें
मन में विचारी जो या समय श्री आचार्यजी महा
प्रभून कों मन तो व्रज में श्री गोवर्द्धननाथजी के
पास है ताते विरह के पद गाउं सो विरह को पद
ऐसो गायो जामें छिनहूं कलप समान जाय ॥

सो पद राग सोरठ ॥

हरि तेरी लीला की सुधि आवै ॥ कमलनैन मन
मोहनी मूरत मन मन चित्र बनावै ॥१॥ एक बार जा
य मिलत माया करि सो कैसें बिसरावै ॥ मुख मुं
सिकान बंक अवि लोकन बाल मनोहर भावै ॥
कबहुक निबड़ तिमर आलिंगन कबहुक पिक
सुर गावै ॥ कबहुक सभ्रम छांसि छांसि कहि
संगहीन उठि धावै ॥३॥ कबहुक नैन मूंदि अं
तर गति मणि माला पहरावे ॥ परमानंद श्याम ध्या
न करि ऐसें विरह गवावै ॥ + ***

यह पद परमानन्द दास नें गायो सो सुनिवो श्री

श्राचार्यजी महाप्रभून कों मूर्च्छा श्राई सो जा लीला कौ पद परमानन्द दास नें गायो सो लीला विषेः श्री श्राचार्यजी महाप्रभू मान भये सो देहानुसंधान न रह्यो सो तीन दिन लों श्री श्राचार्यजी महाप्रभून कों मूर्च्छा रही सो सबरे सेवक दामोदरदास हरसानी प्रभृति श्री श्राचार्यजी महाप्रभून के दर्शन करे सो वैसें ही बैठे रहे चतुर्थ दिन के प्रातः काल श्री श्राचार्यजी महाप्रभू सावधान भए तब सब वैष्णव प्रसन्न भए तब परमानन्ददासजी मन मेंइ पे जो फेरि श्रैसो पद न गाऊ फेरि सूधे पद गाए ॥ सो पद

रागविभाग

माई री हों श्रानंद गुन गाउं ॥ गोकुल की चिंता मणि माधो जो मांगो सो पाउं ॥ जब ते कमल नैन व्रज श्राये सकल संपदा बाढ़ी ॥ नंद रय के द्वारे देखो श्रष्ट महा सिद्धि ठाढी ॥ २ ॥ फूलै फलै सदा वृंदावन काम धेनु दुहि दीजै ॥ मांगे मेघ इंद्र बरषावैं कृष्ण कृपा सुख लीजै ॥ कहत जसोधा सखियन श्रागें हरि उत कबै जनावै ॥ परमानंद दास कौ ठाकुर मुरली मनोहर भावै ॥

श्रौर हू पद गायो ॥ सो

राग गौरी ॥

विमल जस वृंदावन के चंद्र को ॥ यह पद सम्पूर्ण करि कें गायो फेरि श्रौर गायो ॥

राग सारंग ॥

धन्तरी नन्द गांव जाय वसिये ॥ यह पद सम्पूरण क
रि कें गायो सो पद में यह कह्यो जो चलरी नंद गांव जा
यवसिये सो श्री महाप्रभू जी मुनि के व्रज कों पधारे
सो प्रथम श्री गोकुल पधारे सो श्री गोकुल आवत
ही श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री यमुना जी के तीर ऊ
पर छोंकर के नीचे बैठक में तहां श्री आचार्यजी महा
प्रभू विराजे और एक बैठक श्री द्वारिकानाथ जी के
मन्दिर के पास है सो भीतर की बैठक है सो गवि के वि
श्राम स्थान सोई को ठौर है उहां श्री आचार्य जी महा
प्रभून कों घर हुतो जब आप श्री गोकुल पधारते तब
उहां ई उतरते सो यह भीतर की बैठक है पाछें सबवे
स्मवननें श्री यमुना जी स्नान कीये और परमानन्द
दास जी हू श्री यमुना जी कों जस वर्णन कीये सो पद

रागरामकली

श्री यमुना जी यह प्रसाद हों पाउं ॥ तिहारे निकट र
हों निस वासर राम कृस्न गुन गाउं ॥१॥ मंजन विमल
पावन जल चिला कुलरव वहाउं ॥ तिहारी कृपा भान
की तनया हरि पद पीत चढ़ाउं ॥२॥ विनती करों य
ही वर मागों अधम संग विसराउं ॥ परमानन्द दास
फल दाता गगन गोपाल लड़ाउं ॥३॥

रागराम कली

श्री यमुना जी दीन जान मोहि दीजे ॥ सो ऐसे पद
सम्पूरण कीर्के श्री यमुना जी के परमानन्द दास जी
सें वहुत गाय श्री आचार्य जी के आगें नीर विषें गा
ये ता उपरांत श्री महाप्रभू जीनें परमानन्द दास कों

कोंवात्लीलाकिसिष्ट श्रीगोकुल के दर्शन करवा
ये सो परमानन्द दास को ऐसो दर्शन भयो सो सब
ब्रजभक्त श्री यमुनाजल की गागरि भरि लेजातहै
और श्रीठाकुर जी मार्ग में खेलतहैं और ब्रजभक्त
न कों जलकी गागरि उठाय देतहैं और उनकी कछु
तोरेहैं याभांति सों दर्शन भए सो तैसोई पद श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के आगें गायो सो पद

राग विलावल

जमुना जल घर भरि चली चन्द्रावलि नारी॥ मारग खे
लत मिले घनश्याम मुरारी॥१॥ नैनन सों नैना मिले म
न ल्यो है लुभाई॥ मोहन मूरत जिय बसी पग धरो न
जाई॥२॥ तब की प्रीति प्रगट भई यह पहली भेट
॥ परमानन्द ऐसी मिली जैसी गुड़ में चेंट॥३॥

राग सारंग

मातनैंक दे को मेरी बेंया॥ औघट घाट चल्यो नहि
जाई रपटत हों कालिन्दी महियां॥१॥ यह पद सम्पू
रण करके ऐसे पद गाये ता पाछें परमानन्ददास नेवा
ल लीला के पद बहुत गाये और श्री गोकुल को स्व
रूप जा में आवे ऐसो पद गायो॥ (सो पद)

राग कान्हरो

गावत गोपी मधु व्रज बानी॥ जाके भुवन वसत त्रि
भुवनपति राजानन्द जसोधा रानी॥१॥ गावत वेद भा
खी गावत गावत ना रदादि मुन ज्ञानी॥ गावत गुन
गधर्व कास शिव गोकुलनाथ महातम जानी॥२॥
गावत चतुरानन जद नायक गावत पंच सहस्र मुः

खरास ॥ मन क्रम वचन प्रीत यह श्रम्बुज श्रवगावत
परमानन्द दास ॥३॥ यह पद परमानन्द दास नें गा
यो पाछें श्रीर पद गायो सो पद ॥

राग कान्हरो

जसुमति गृह श्रावति गोपी जन ॥ वासर ताप निवार
न कारन बारंबार कमल मुख निरखन ॥१॥ चाहत
पकरि देहरी उलंघन किलक किलक हुलसन मन
हीं मन ॥ लोंन उतारिढोउ कर वारि फेरि जलतन
मन घन ॥२॥ लेन उठाय चापत हीयो भरि प्रेम वि
वस लागे दृग ढरकन ॥ चली लै पलना पोढावन कें
श्रम कमाय पोढे सुन्दर घन ॥३॥ देत श्रसीस सक
ल गोपीजन चिरजीवो लोग गज सुन ॥ परमानन्द
दास को ठाकुर भक्त वछल भक्त मन रंजन ॥४॥

राग हमीर ॥

चिंते चिंते चित चासोरी गई ॥ यह पद सम्पूरण कर
कें गायो सो श्रैसे पद परमानन्द दास नें बहुत गाये
ता पाछें श्री गोकुलनाथजी के दर्शन करें कें परम
नन्द दास श्री गोकुल उपर बहुत श्रासक्त भये त
श्रैसे पद गाये जामें श्री श्राचार्यजी महाप्रभून को
यनाकानो जो मोको श्री गोकुल में श्राय के चरणा
विंद के नीचे राख्यो नित प्रति प्रभून के दर्शन को
लीला विसिष्ट पूरन पुरुषोतम हैं श्रौर यह पद गा
यो सो पद ॥

राग कान्हरो

यह माखंजसोदानंदन ॥ चरणा कमल मन मन मधु

॥ यादवनि श्रेनत पांउ दर्शन ॥१॥ चरणा कमल की से
वा ठाउ तन राजत विजे लता घन नंदन ॥ वृषभानु
[illegible] ॥ अगवा सखा
जमुना जल अचिवो श्री वल्लभ कोदास यही पन ॥
महाप्रसाद पाउं हरि गुन गाउं परमानन्ददास जीवन
धन ॥ ३ ॥

रागकान्हरो

जब लगि जमुना गाय गोवर्द्धन तब लग गोकुल गांव
पुसार्द्द ॥ यह पद सम्पूरण करके प्रार्थना के पद गो
ये तब कितनेक दिन श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री
गोकुल में विराजे ता पाछें सब वैष्णवन कों संग लेके
श्री गोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन कों पधारे ॥

वार्ता प्रसंग ३

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें पर्वत ऊ
पर पधारे सो आवते ही परमानन्द दास नें श्री नाथ
जी कों श्री मुख देखि कें वहां के वहां रहे तब श्री महा
प्रभूजीने श्री मुख सों कह्यो जो परमानन्द दास कछु
भागवत कीर्तना गावो तब परमानन्द दास अपने म
न में विचारे जो कहा गाऊं तब ऐसें विचारो जो जामें
प्रथम अवतार कीर्तना पाछें चरणारविंद की वंदना
पाछें भागवद वर्णान को स्वरूप ता पाछें बाल क्रीड़ा
ता पाछें श्री ठाकुर जी को महात्म ऐसो पद परमा
नन्द दास नें गायो सो पद ॥

रागकान्हरो

मोहन नन्द राय कुमार ॥ प्रगट ब्रह्म निकुंज नाय

कभक्तहित अवतार ॥१॥ प्रथमचरणासरोजवन्दो
श्याम घन गोपाल ॥ मकर कुंडल गंड मंडितचारु
नासावसाल ॥२॥ बलिराम सहित विनोद लीलासें
करहेतादास परमानन्द प्रभू हरि निगमवोलत नेत
॥३॥ और आसक्ति कौ गायो

रागपूरवी ॥

मेरोमाई माधौ सों मन लाग्यो ॥ मेरोनैंन और कमल
नैन कौ दूकठौरो करि सान्यो ॥१॥ लोक वेद की का
नि तजी मे न्यौनी अपने आन्यो ॥ एक गोविंद चरण
के कारण वैर सबनसों ठान्यो ॥२॥ अब कोभिल्यो
यमेरी सजनी दूध मिल्यो जैसें पान्यो ॥ परमानन्द
मिल्यो गिरधर सों है पहली पहचान्यो ॥३॥
जैसें पद परमानन्ददास नें गाया ता पाछें श्री आचा
र्यजी महाप्रभू सेन आरती करि श्रीनाथजी कौं पौ
ढ़ाये तब अनोसर करि आप नीचें पधारे तब परमा
नन्द दास हू नीचे आय बैठे तब रामदास भीतरियानें
परमानन्द दास कों महाप्रसाद दूध पठायो सो दूध
परमानन्द दास जी सेवे लागे तब तातो लाग्यो तब
परमानन्द दास जीनें सीरो करि कें लीयो ता पाछें
रामदास नें पूछो जो तुमकों महाप्रसाद दूध पठायो
हो सो आयो तब परमानन्द दासनें कही जो हो आयो
परि दूध बहुत तातो हतो सो जैसो दूध श्रीठाकुर
जी कैसें आरोगत हो तातें दूध तो सुहातो भलो तब रा
मदास नें कह्यो जो बहुत आछो आप भगवदीय हो
जैसें आज्ञा करोगे तैसे करेंगे तब सकारें सब सेवक

स्नान करि कें श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवामें तत्पर भये तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें स्नान करि कें श्रीगिरराज उपर पधारे तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कों जगाए तब व्रासमय परमानन्ददासजी जाय कें श्रीठाकुरजी के जगायवे कों पद गायो सो पद ॥*

राग विभास

जागो गोपाललाल मुखदेखेवों तेरो ॥ पाछें गृहका ज करौं नित्य नेम मेरो ॥१॥ विगसत निसा अरुण तिसा उदित भयो भान ॥ गुंजत अग पंकज वनजा तिये भगवान ॥२॥ द्वारे ठाडे बंदीजन करतहैं पुकार ॥ वेस प्रसंग गावत हरि लीला सार ॥३॥ परमानंद स्वामी व्यालजगत मंगलरूप ॥ वेद पुराण पढत महिमा लीला अनूप ॥४॥

यहपद परमानन्द दास नें गायो फिर कलेउ कों पद गायो ॥ सो पद

रासकाम कल्यो

पिछवारे द्वै ग्वालन टेर सुनायो ॥ कमलनैन प्यारो करत कलेउ कोदन मुखलों आयो ॥१॥ अरीमैया गियाएक घन व्याय रह्यो है बछरा उहांही वसायो ॥* मुरली लई न लकुटिया न लीनी अरवराय कोउ सखान बुलायो ॥२॥ चकृत भई नंद जू की रानी सत्य आयकि धों अपनों पायो ॥ फूलेंन अंग मात सब त्रिभुवन पति सिर छत्र जो छायो ॥३॥ मिल बैठे संकेत सघन वन विविधभांति कीयो मन भायो ॥ परमानन्द स्यानी ग्वालनि उलटि अंग लि

धर पिय प्यायो ॥४॥

ऐसे पद परमानंद दास नें गायो ता पाछें श्री गोवर्द्ध
ननाथजी के मंगला के दर्शन खुले तब परमानन्द
दास नें श्री गोवर्द्धन नाथ जी सों पूछो जो आप ता
तो दूध कों आरोगत हो तब श्री नाथजी नें कह्यो
जो यें हम कों समर्पत हैं सो आरोगत हैं ता पाछें प
रमानन्द दास जी नित्य कीर्तन करि कें सुनावते
तब ता समय एक राजा दर्शन कों आयो सो श्री गो
वर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे तब फेरि आय कें रानी
सों कही जो श्री गोवर्द्धन नाथ जी ठाकुर बहुत सुन्दर
हैं ताते तू जाय कें दर्शन करि आउ तब रानी ने कही
जो जैसें हमारी रीति हैं सो होय तो दर्शन करें तब राजा
ने कही जो श्री गोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन में काहे
को परदा है तब रानी ने मानी नहीं तब राजा नें श्री
आचार्य जी महा प्रभून सों बीनती कीनी जो महा
राज मेंतो रानी सों बहुत कहत हों परि वह आवत
नाहीं ताते आप कृपा करि कें दर्शन करवावो तो वह
करे तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कही जो य
हां से आवो जो प्रथम वाकों एकांत में दर्शन करा
वावेंगे ता पाछें और लोग दर्शन करेंगे तब राजा
अपनी रानी कों लिवाय कें श्री गोवर्द्धन नाथ जी के
दर्शन करवाये सो सब लोग सरकि गये तब रानी द
र्शन करिबे लागी तब इतने में श्री गोवर्द्धन नाथ जी
नें सिंह पौर के किवाड़ खोल दीए सो सब भीर दौरि
कें रानी के ऊपर परी सो रानी के सब वस्त्र सिकसपरे

और बहुत लज्जित भई तब राजा नें रानी सों कही जो में
ने तो तोसों पहिलेंही कह्यो हुतो जो श्रीठाकुर जी केर
ध्यान में काहे को परतारे ये व्रज के ठाकुर हैं इननें का
हू को पर्दा राख्यो नाहीं तब का समय परमानन्द
दास जीनें पद गायो ॥

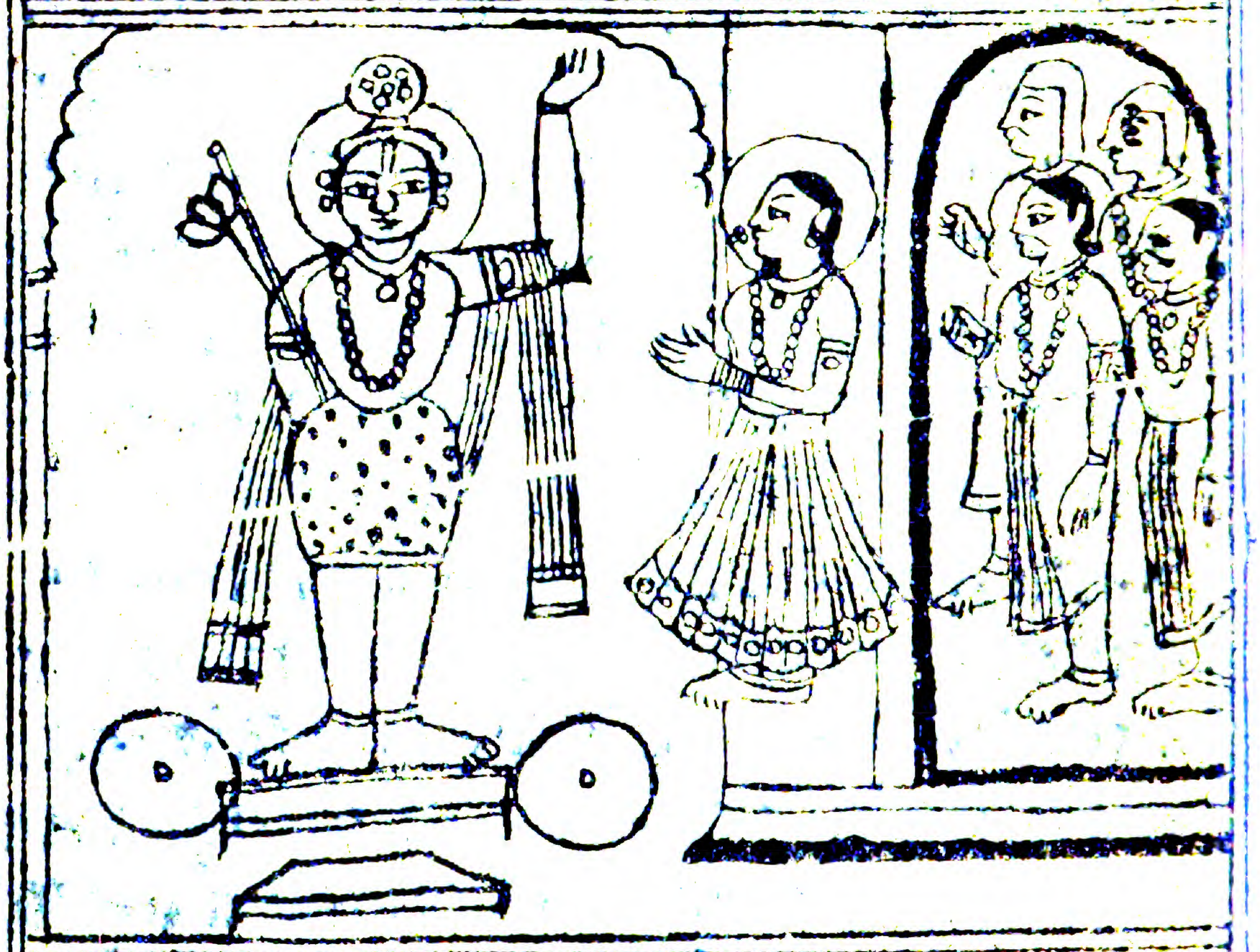

रागदेव गंधार

कौन यह खेलवे की बानि ॥ मदन गोपाल लाल को
हू की राखत नाहिन कानि ॥१॥ यह एक तुक परमा
नन्द दास जीनें गाई हुती तब श्री आचार्यजी महा
प्रभून नें कह्यो जो परमानन्द दास पैं में कहौ जो
भली यह खेलवे की बानि ॥ तब परमानन्द दास
नें ऐसो ही पद गायो ॥ (सो पद)

रागदेव गंधार

भलीयह खेलवे कीवानि॥ मदन गोपाल लाल का
हू कीनाहिन राखत कानि॥१॥ अपने हाथ लैदेत
है चन वर दूधदही घृत सानि॥ जो वरजों तौ आंख
दिखावै पर धन कौ दिन दान॥२॥ सुनरीजसोधा
सुत के करतव पहले मांट मथानि॥ फोर डारि दधि
डारि आजर में कौन सहै नित हानि॥३॥ ठाडी देख
त नंदजू की रानी मूंदि कमल मुख हानि॥ परमा
नंद दास जानत है बोलि बूझि धों आनि॥

यह पद परमानन्द दास नें गायो ता पाछें कितेक पद गाए जो जो लीला श्रीठाकुरजी नें करी सो ता ता लीला के पद परमानन्द दास ने गायो सो एकदिन भागवदीय रामदास जी और कृष्णदास जी कुंभन दास जी सब वैष्णव मिलकें परमानंन्द जी जहां रहतते तहां आये सो भागवदीय आगमजानि कें परमानन्द दास जी बहुत प्रसन्न भये जो आज मेरे घर भागवदीय आये हैं सो मेरो बड़ो भाग्य है और आज मेरो भाग्य सिद्धि भयो है सो काहे तें जो श्रीठाकुर जी भागवदीय के हृदय में सदा सर्वदा विराजत हैं ताते भागवदीयन की कृपा होय तो श्रीठाकुरजी अनुग्रह करैं जो ये सब भागवदीय मेरें घर पधारे हैं सो प्रथम भागवदीय की योछावरि करीचाहि यै जो जैसो तो कछु नाहीं जो न्योछावर करौं ज यह विचार कें परमानंन्द दास नें जैसो ही पद गा सो सो पद॥

रागहमीर

श्राये मेरें नन्द नंदन के प्यारे ॥ मालातिलक मनो हर बानों त्रिभुवन के उजियारे ॥१॥ प्रेमसहत वसत मन मोहन नेकहुं टरत न टारे ॥ हृदय कमल के मध्य विराजत श्री व्रजराज दुलारे ॥२॥ कहा जानों कौन पुण्य प्रगट भयौ मेरे घर जो पधारे ॥ परमानंद प्र भु की न्योछावर वार वार हों वारे ॥३॥

यह पद भगवदीय न की भेट करि श्रपने श्राए भगवदीयन कों विदा कीये ता पाछें श्रेमी गित सों पर मानन्ददास नें श्रीनाथजी की भली भांति सों सेवा कीनी सो वे परमानन्द दास जी श्री श्राचार्यजी म हा प्रभून के श्रैसे कृपा पात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥*

वार्ता प्रसंग ॥५॥ वैष्णव ८२ ॥ संबंध ॥१६६॥

श्रव श्री श्राचार्यजी महा प्रभून के सेवक कुंभ नदास गोरवा ति न की वार्ता है ॥

सोवे कुंभनदास जी श्री गोवर्द्धन पर्वत के पास जमुनावतौ गांव है तामें रहते सो जमुनावतौ नाम या गाम को काहेतें है जो जमुनाजी को प्रवाह सा स्थन कल्प में याके निकट हुतौ ताते जमुनावतौ ना म या गाम को है तामें कुंभनदास जी रहते श्रौर प रासोली चंद सरोवर के उपर उनकी नदासजी की धरती हुती सो वहां खेती करते सो कुम्भनदास

जी श्री गोवर्द्धन्नाथ जी के परमसखा हुते ओर कृपा
पात्र हुते सो अबही श्री गोवर्द्धन्नाथजी प्रगट होय
कें श्री महाप्रभूजी कों बुलावेंगे तब ये भगवदीय प्र
सिद्ध होयंगे सो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू
एथ्वी परिक्रमा करत झारखंड में पधारे सो झारख
ड में श्री गोवर्द्धन नाथजी नें आज्ञादीनी जो हम गोव
र्द्धन में तीन दमन हैं ॥ नागदमन, इन्द्र दमन, देव द
मन, तिनके मध्य में हम देव दमन हैं सो मेरो नाम हैं
ताते तुम आय कें हमकों पधरावो ओर हमारी
सेवा को प्रकार प्रगट करो तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा उहांही राखि के वेग
पधारे तब दामोदर दास हरसानी कृष्ण दास मेघन
गोविंद दुबे जगन्नाथ जोसी रामदास ये पांच वैष्ण
व संग हुते सो श्री आचार्यजी महाप्रभू श्री गोवर्द्धन
की तरहटी आय कें सद्दू पांडे के चौंतरा ऊपर विरा
जे सो आगें श्री गोवर्द्धननाथ जी के प्रागट्य में यह
सद्दू पांडे भवानी नगो श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक भये हुते तिनकी श्री आचार्यजी महाप्र
भून नें श्री गोवर्द्धन नाथजी की सेवा सोंपी ओर व्र
जवासी व्रजमें श्री आचार्यजी महाप्रभून के से
वक बहुत भए ओर कुम्भनदासजी श्री आचार्य
जी महाप्रभून की सरण आये सो श्री आचार्यजी
महाप्रभून नें श्री गोवर्द्धननाथजी को एक छोटो
सो मन्दिर सिद्ध करायो तामें श्री नाथजी को
पधराये ओर रामदास चौहान कूं सेवा की आज्ञा

दीनी और सब व्रजवासी लोग दूध दही माखन लावते
सो श्री गोवर्द्धननाथजी आरोगत हुते और रामदास
कों जो भगवद इच्छा ते जो आप प्राप्त होय सो भोग ध
रते और आप प्रसाद लेते और जे व्रजवासी लोग
श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिन
कों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें आज्ञा दीनी जो यह
मेरो सर्वस्व है सो तुम सब वातन सों यत्न राखियों
और सेवा में तत्पर रहियों और कुम्भनदास कों
और सब सेवकन कों श्री आचार्यजी महाप्रभून
नें आज्ञा दीनी जो तुम देवदमन के दर्शन किये विना
महाप्रसाद मति लीजियों तबया भांति सों आज्ञा
करि कें श्री आचार्यजी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्र
मा भारखंड में राखी हुती अब कुंभनदासजी नि
त्य श्री आचार्यजी महाप्रभून की कृपा ते श्री गोवर्द्ध
नाथजी के दर्शन कों आवते सो कुंभन दास जी की
तनवहुत नीके गावते जो श्री आचार्यजी महा प्रभू
ननें कुंभनदास जी कों नाम सुनायो और ब्रह्मसंबंध
कर वायो तब कुम्भनदास जी नित्य नए पद करि
कें श्री नाथजी कों सुनावते और श्री नाथजी
कुंभनदासजी के घर पधारते और बहुत क्रीड़ा क
रते खेलते वार्ता करते और बहुत कृपा कुंभनदासजी
के ऊपर करते अब रामदास जी श्री गोवर्द्धननाथ
जी की सेवा करन लागे सो एक समय म्लेक्ष कौउ
पद्रव भयो सो यहां मानिकचंद पाड़े सद्द पाडे राम
दास चौहान कुंभन दास सब मिल कें विचार कीयो

जोयह मतेक्ष आयोहे सोयह धर्म को हुवोहे सो
कहा कर्तव्य हे तब सदने कही जोयामें कहा क
र्तव्य कहा पूछनों अपनों विचारसो कहा होतहे ता
ते श्रीनाथजी कों पूछो जो महाराज कहा करे तब श्री
नाथजीनें आज्ञादीनी जोहमकों यहां ते ले चलोहम
यहांते उठेंगे तब सदननें पूछो जो महाराज कहां प
धारोगे तब आपनें श्री मुख सों कह्यो जो टोंड केघ
नेमें चलेंगे तब एक भैंसा मंगायो ता पर श्री गोवर्द्धन
नाथजी कों बेठाए तब एक ओर ते सो रामदास पक
रें रहे ओर एक ओर ते कुंभनदास जी पकरें रहे ओर

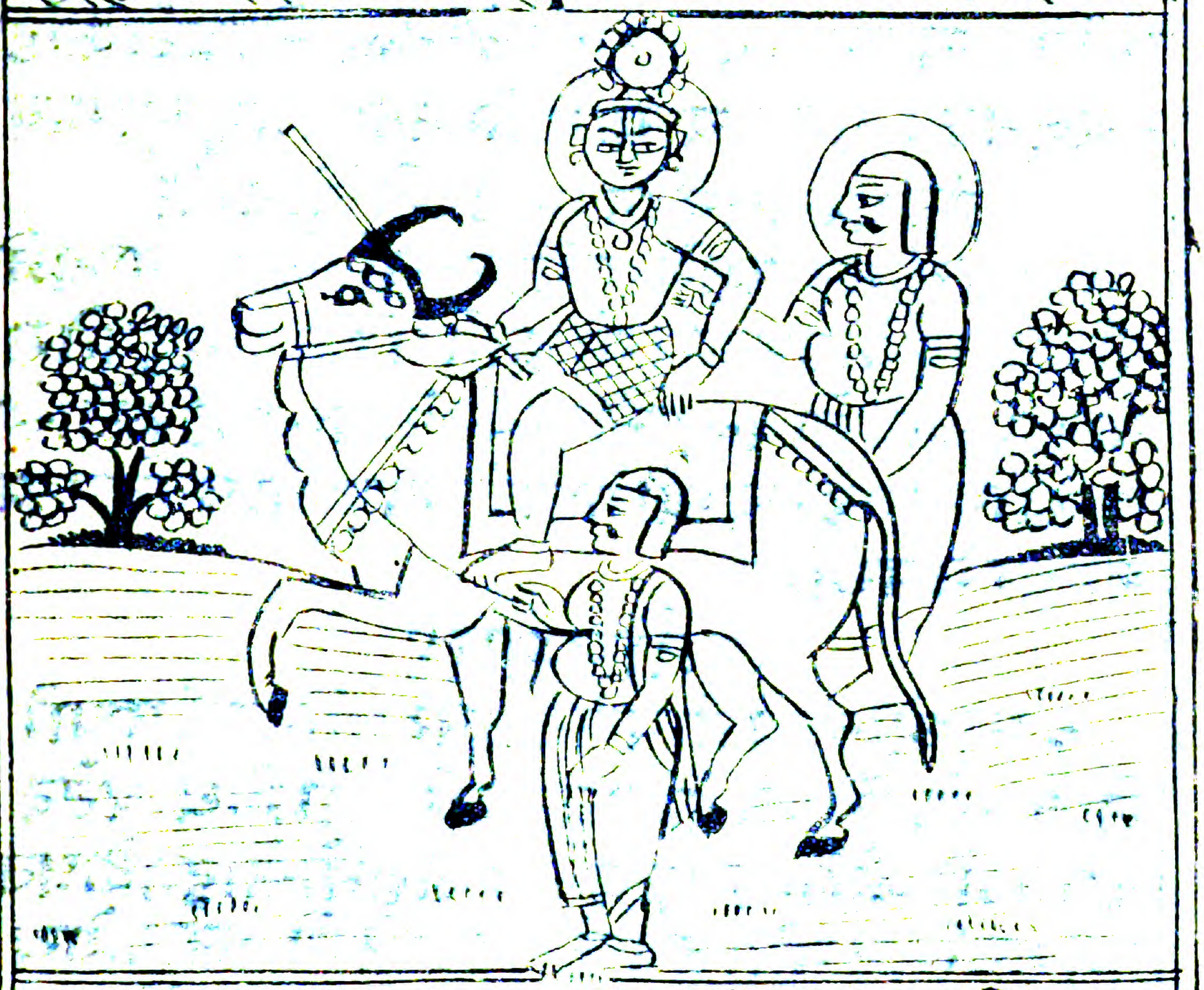

सब सेवक संग चले जात हैं तहां घने में कांटे बहुत
हुते सो उहां कांटेन में बैठे सो वस्त्र सदन के फाटि ग

ये श्रीर सरीर में कांटे लागे दुख बहुत पायो सो घनेमें एक तालाव हुतो तहां रूखन कौ एक चौक है त हां बड़े रूखन नीचे श्रीनाथजी विराजे सो कछूक सा मिली संगत हुती सो रामदास ने भोग धरि जल को करुआ भरि कें आगें धरि कें सब वैष्नव बैठे तब श्री गोवर्द्धननाथजी नें कुंभनदास सों कह्यो जो कुंभन दासजी कछू गावो तब कुंभन दासजी तो मन में कुढ़ रहे हुते तब एक पद नयो करि कें गायो ॥ सो प द

राग सारंग

भावत है तोय टोड को घनों ॥ कांटे लगे गोखरू बूढ़े फबो जात यह तनों ॥१॥ सिर्हों कहा लोक टी कौड़ र यह कहा वानक वन्यो ॥ कुंभनदास प्रभु तुम गोव र्द्धन धर वह कौन गंड ढेडनी को जन्यो

यह पद कुंभनदास नें गायो सो सुनि कें श्रीनाथजी मुसिकाय कें चुपकरि रहे हुते में श्री गोवर्द्धनते स माचार आये जो वह मलेछ की फ़ौज आई हुती सो पाछी फिर गई तब श्री गोवर्द्धन नाथजी पर्वत ऊपर मन्दिर में पधारे ॥

वार्ता प्रसंग १

अब श्री नाथजी पर्वत ऊपर मन्दिर में पधारे सो व्रज के लोगन कों बहुत हर्ष भयो जो धन्य देव दमन जो ऐसो उपद्रव आयो हुतो सो इनके प्रता पते सब मिट गयो तब कुंभनदास जी प्रसन्न होय कें पद गाए सो पद श्री गोवर्द्धन नाथजी कों सुना ये ॥ ✣

रागश्री॥चर्चरी

जयतिजयतिहरिदास सर्व धरने॥यहपदसम्पूर
नकरिकेंगायोपाछेंश्रौरपदगायेसोपर

रागसारंग।

कुम्भतंनतरयातीर॥यहपदसम्पूरनकरकेंकुंभ
नदासनेंगायोपाछेंनित्यश्रैसेपदकुंभनदासजी
देवदमन कौंसुनावतेतवकुंभनदासजीकेपद
सबजगतमेंप्रसिद्धिभयेसोसबलोगइनकेपद
गावतेतवइनकोंपदकाहूकलामतनेसीख्योा
सोफतैपुरसीकरीमेंदेसाधिपतिकेश्रागेंकुंभनदा
सजीकौपदकीयोभयोपदवाकलामतनेगायोसो
सुनकेंदेसाधिपतकौचित्तवापदमेंगडगायोश्रौर
माथोधुन्योजोश्रैसेहूमहापुरुषहूगएहैंजिनकों
श्रैसेदर्शनपरमेश्वरकेहोतहैंतववाकलामतनेक
ह्योजोश्रजीसाहबश्रवहूहैंसोसुनिकेदेशाधिपति
बहुतप्रसन्नभयोश्रौरवाकलामतसोंकह्योजोवेः
कहांहैतववाकलामतनेंकहीजोश्रीगोवर्द्धनके
पासजमुनावतोगांवहैतहांवेरहतहैतवदेसाधिप
तिनेंकहीजोयहांबुलावोहमउनसोंमिलेंगेतवदे
साधिपतिनेमनुष्यश्रौरश्रसवारीकुंभनदासजीके
बुलायवोंकोंभेजेतवकुंभनदासजीतोघरहुतेप रैसो
लीमेंबैठेहुतेसोमनुष्यननेंउहांबतायदीयेतवकुं
भनदासजीघरतोहुतेनाहीं पातसाहनेयादकीय
होतवकुंभनदासदासनेकहीजोभैयामेंकहूदे
शाधिपतिकौचाकरतोनाहीमेरोदेसाधिपतिसों

कहा काम है तब देसाधिपति के मनुष्यन नें कही जो
बावा हमतौ काम कछु समझत नाहीं परि हम कों
देसाधिपति कौ हुकम है जो कुंभनदास कौं लै आवो
नातें यह पालकी है यह घोड़ा है जा पर चाहो ता पर वै
ठि कें चलिये हम तौ आये हैं सो आप कों लै जांयगे
तब कुंभनदास नें मन में विचार कीयो जो बिना जाये
तौ निर्वाह न होय गो सो कुंभनदास जी तत काल उ
हांते पनहीं पहरि कें चले तब कुंभनदास जी कों जो ले
वे कौं आये हुते तिननें कही जो बावा सवारी में बैठि
ये तब कुंभन दास नें कह्यो जो भैया मैं तौ कबहूं बैठ्यो
नाहीं पाछें ऐसें ही चले सो फतेपुर सीकरी आय पहुं
चे सो देसाधिपति के डेरा हुते तहां गए तब मनुष्य न
नें देसाधिपति सों कह्यो जो कुंभनदास जी आये हैं त
ब देसाधिपति नें कुंभनदास सों कही जो कुंभनदास जी
आवो बैठो सो आय बैठे सो वह स्थल कैसो है जामें
जड़ाव की गवदी तामें मोतीन की झालरि लगी है
ऐसें स्थल हो तामें बैठे तब मन में बहुत दुख लाग्यो
और कह्यो जो यांसों तौ हमारे व्रज के हींसने के सुख
आछे हैं सो जिनमें श्री गोवर्द्धन नाथ जी खेलत हैं
तब इतने में देसाधिपति बोल्यो जो कुंभनदास जी तु
मने बिसनपद बहुत कीये हैं सो मेनें तुम कों बुलायो है
तातें तुम कछु बिसन पद गावो तब कुंभनदास जी
तो मन में कुढ़े हुते जो बिचारें जो कहा गाउं मेरी वाणी
के भक्ता तो श्री गोवर्द्धनधर हैं और कछु गाए बिना
ऐसो काम चलेगो नाहीं तातें जैसो गाउं जो कबहूं

मेरो नाम न लेय काहे ते जो याके संगते मेरे प्रभू छूटे हैं
ताते कछू कठोर वचन कहूं जो बुरो मानेगो तो कहा करै
गो तब यह मन में आई जो जाको मन मोहन संग करे ग
को के सब से नहीं मिरत जो जग वैर परै यह विचारियें
ता समय कुंभन दासजीनें एक नयो पद करि के गायो।
सो पद ॥*

राग सारंग

भक्तन को कहा सीकरी काम ॥ आवत जात पनहैया
टूटी बिसर गयो हरि नाम ॥१॥ जाको मुख देखे दुख
लागे ताको करन परी परनाम ॥ कुंभन दास लाल
गिरधर बिन यह सब झूठो धाम ॥२॥*
यह पद गायो सो सुनि के देसाधिपति अपने मनमें य
हुत कुढ़ो और कह्यो जो इनको काहू बात को लाल
च होयतो ये मेरो जस गामें इनको तो अपने परमेश्व
र सों सांचो स्नेह है इतनो कहि के देसाधिपति नें कुंभ
न दास को सीख दीनी तब कुंभन दास जी उहां तें चल्ये
सो मार्ग में आवत अति क्लेश जो कबहों प्रभून को मु
ख देखो सो ऐसो विचार के कुंभन दास जी आवते हे
ता समय पद गायो सो पद ॥*

राग धनाश्री

कबहूं देखहौं इन नैननु ॥ सुन्दर श्याम मनोहर मूरत
अंग अंग सुख दैननु ॥१॥ वृन्दावन विहार दिनहि
प्रति गोप वृन्द संग लैननु ॥ हंसि हंसि कहा बोल पनो
वन पावन घाटि बाटि पय फैननु ॥२॥ कुंभन दास कि
तेहि दिन बातें किये रंग सुख मैननु ॥ अब गिरधर वि

निसि और वासर मन न खटत कोंचेननु ॥ ३॥
यह पद मार्ग में गावत आए सो आय कें श्रीगोव
र्द्धन नाथ जी के दर्शन कीये और दोय दिन सों दर्शन
न भए सो कुंभनदास जी कों दोय जुग की घरावर बीते
सो श्री गुरु देखतही सब दुख विसर गयो तब एक प
द गायो सो पद ॥

रागधनाश्री

नैन भरि देखों नन्द कुमार ॥ ता दिन ते सब भूलि गयो
हों विसरयो पन परवार ॥१॥ विन देखें हों विकल भ
यो हों अंग अंग सब हारि ॥ ताते सुधि है सामरीमू
ति की नैनन भरि भरि वार ॥ २॥ रसरास पर मिलन
ही मानों कैसें मिलैलों कन्हाई ॥ कुंभनदास प्रभु
गोवर्द्धन धर मिलियें बहुर गो माई ॥ ३॥

रागधनाश्री

हितलगन कठिन है यामन की ॥ जाके लिये देखि मेरी
सजनी लाज गई सब तन की ॥१॥ धर्म जाउ अरु लोग
हंसो सब अरु गावो कुल गारी ॥ सो क्यों रहे नाहि वि
न देखें जो जाको हितकारी ॥ २॥ रस लुब्धक निमखन
छांडन ज्यो आधीन रागानों ॥ कुंभनदास सनेह कर
म श्री गोवर्द्धन धर जानों ॥

श्रीमे पद बहुत कुंभन दास जी ने गाये सो सुनके श्री
नाथ जी बहुत प्रसन्न भए और कहो वर सो बिन
हत नाही ॥ *

वार्ता प्रसंग ॥ २॥

श्री एक समय राजा मान सिंह सब ठौर ते विजय

करि कें आपने देस कूं चले तब मन में विचारे जो बहुत दिन में आये हैं ताते मथुरा विन्द्रावन होय कें चलनों सो यह विचार कें आगरे ते चले सो मथुरा आए तब विश्रांत स्नान करि कें श्री केसवरायजी के दर्शन करि कें वृन्दावन चले सो उष्मकाल के दिन हुते तब वृन्दावन के सब महंतन ने जानी जो आज यहां राजा मानसिंह दर्शन कों आवेगों सो यह जानि कें श्री ठाकुरजी कों आछे आछे जरी के वागे बहुत आभरन पहराये पिछवाई चंदोवा सब जरीन के बांधे इतने में राजा मानसिंह दर्शन कों आयो सो भीतर मन्दिर के आय कें श्री ठाकुर जी के दर्शन कीये सो उष्णा काल के दिन हुते सो बहुत गरमी पड़े सो ता समय राजा मानसिंह पेला डोन रह्यो गयो सो ऐसे दर्शन चार पांच जगह बड़े हुते सो तहां सब ठौर दर्शन करि सब ठौर ते विदा होय कें आपने डेरा में आये सो डेरा आय कें मन में विचारे जो अबही कूंच करें सो उहां सों असवार होय कें चलें सो तीसरे पहर गोवर्द्धन गाव आये सो मानसीगंगा ऊपर डेरा कीये सो तहां श्री हरदेवजी के दर्शन कीये सो वहां वृन्दावन के महंतननें बड़े ठाठ बनाये हे तेसोई यहां ठाठ बनाय राख्यो हतो सो राजा मानसिंह तहां ते दर्शन करि कें चले तब काहूनें कही जो महाराज यहां श्री गोवर्द्धननाथ जी बहुत सुन्दर ठाकुर हैं तहां आप दर्शन कों चलो तब राजा मानसिंह ने कह्यो जो यहां तो अवश्य चलनों ए ठाकुर सब ब्रज के राजा हैं ताते इनके दर्शन तो अवश्य करने तब तहां ते चले सो गोप

लपुर गांम आए तब आय कें पूछी जो दर्शान कौ कहाँ समय है तब काहू ने कही जो दुग्धापन के दर्शान तो होय चुके हैं अब भोग के दर्शान होयगे तब यह सुनकें राजा मान सिंह श्री गोवर्द्धन्नाथ जी के दर्शान कौंगि रराज ऊपर आये सो उष्मकाल के दिन मार्ग के श्रमि त दूर के चले आये सो गरमी में राजा बहुत व्याकुल भयो हुतौ इतने में भोग के किवाड़ खुले सो राजा मान सिंह कौं मणि कोठा में लेगये तिन दिनन में श्री नाथजी की सेवा वैभव सों होती हती बड़ो मन्दिर सिद्ध भयो हुतो श्री गोवर्द्धन्नाथजी के आगे गुलाब जल कौ२ सिंगार भयो हुतौ निज मन्दिर मणि कोठा निवारी स व जल मय होय रह्यो हुते सो ता समय राजामानसिंह

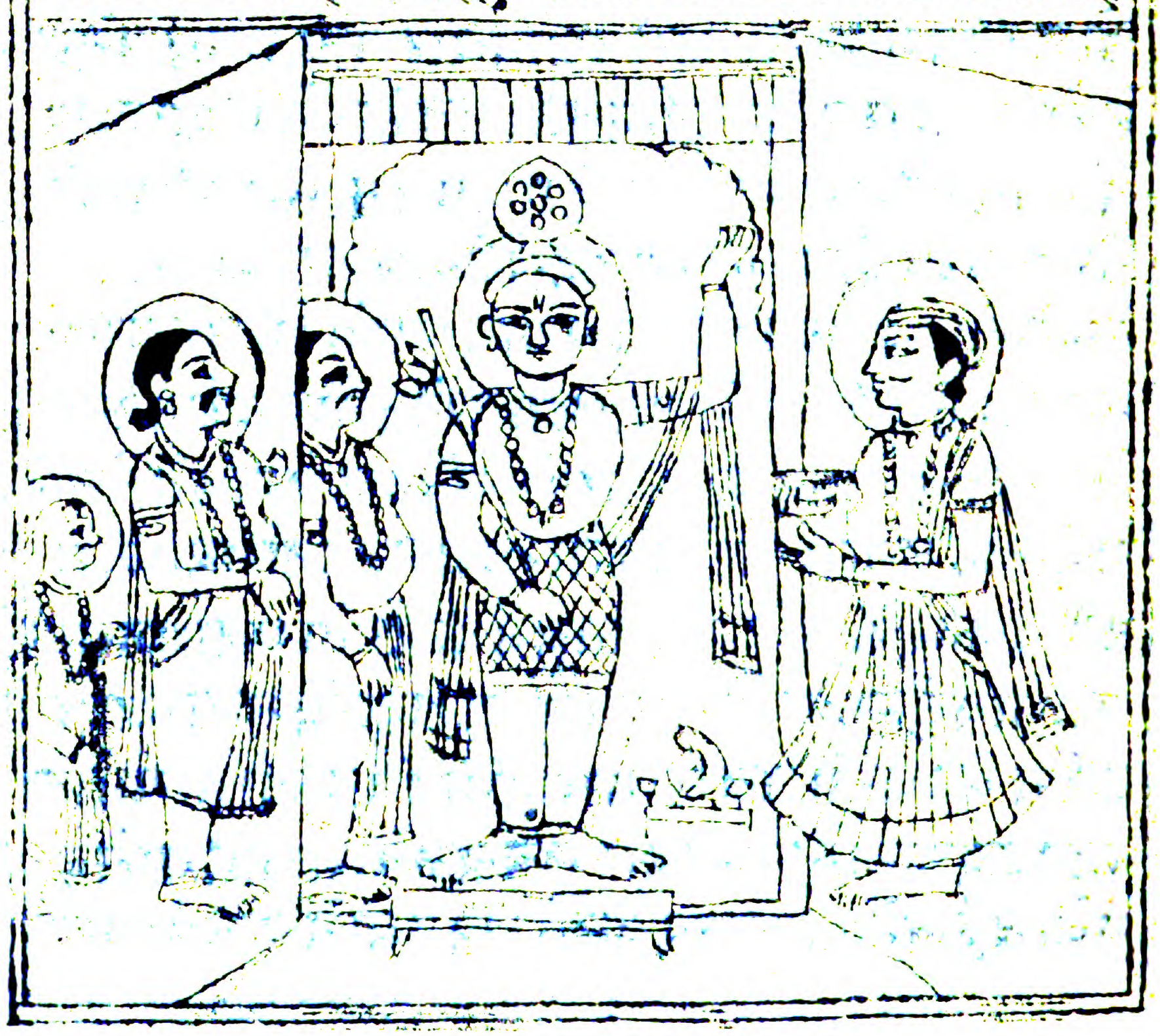

दर्शन कों गये हुते सो श्री गोवर्द्धनाथजी के दर्शन करि
कें साष्टांग दंडवत कीनी और गरमी में राजा व्याकुल
भयो हुतो सो सीतलताई भई बड़ो चैन भयो और श्री
गोवर्द्धनाथजी को श्री मुख देखि कें राजा बहुत प्रस
न्न भयो और कही जो साक्षात पूरणब्रह्म श्री कृष्ण
चन्द्रावनचन्द्र श्री गोवर्द्धनाथजी हैं आगें श्रीभागवत
में सुन्यो हुतो सो आज देख्यो आज हैं दिन सो धन्य है सो
आज मेरो बड़ो भाग्य है और मन में कही जो यह भाग
को समय है सो तो प्रभून को राजधानी है समय है सो वे
प्रभू विराजे हैं आगें ताल मृदंग बाजत हैं कीर्तन होत
है सो कुंभनदास जी ठाड़े ठाड़े भोगा कोठा में दर्शन क
रत हे और कीर्तन गावत हैं सो राजा मानसिंह को मन
आपद में गाढ़ गयो हुतो तेसोई कोटि कंदर्पलाव
ण्य स्वरूप और तेसोई कीर्तन कुंभनदास जी करत
हुते सो पद ॥

राग नट ॥

रूप देखि नैना पल लागे नहीं ॥ गोवर्द्धन के अंग२
प्रति निरखि नैन मन रहत नहीं ॥१॥ कहा कहों कछु
कहत न आवे चित चायो भाग बेदही ॥ कुंभनदा
स प्रभु के मिलन को सुन्दर यान सीरवाल सो कही ॥

राग धनाश्री

आवत मोहन मन हु हसो हो ॥ हो गह अपने ह...
हु सों बैठी निरखि वदन अलसौ हो ॥१॥ रू
पनिधान रसिक नंद नंदन निरखि वदन धोरज न थ
सो हो ॥ कुंभन दास प्रभू गोवर्द्धनधर राग अंग पेम

पियूषभरो हो॥१॥

ऐसे पद कुंभनदासजी गावत हे इतने में राजभो
ग के दर्शन हो यचुके तब राजा मान सिंह दंडौत करि
के अपने डेरा में गयो तब कुंभनदास जी संध्या आरती
के दर्शन करिकें अपनी सेवा सों पहुंचि कें अपने घर
कों गये तब राजा मानसिंह अपने डेरा में जाय के पास
के पास के मनुष्य हुते तिनसों श्री गोवर्द्धन्नाथजी के
सिंगार की वार्ता करन लागे और कह्यो जो यह श्री

गोवर्द्धन्नाथ जी के आगें कौन गावतहुतो इननें ऐसे
विसन पद गाये हैं जो कछु कहिवे में नाहीं आवत
तब काहू नें कही जो महाराज गोकुल वासी है कुंभ
नदास नामहै सो आप सेनेही होयगो ऐसा सुनि पर

मिलेहुते सोहें तब राजा मानसिंह नें कही जो हम हूंड
नसों मिलेंतो आछो तब राजा मानसिंह सवारे उठ
सो श्रीगिरराज की परिक्रमा कों निकसे जो परासो
ली आरा सो परासोली में कुंभनदास जी न्हाय के बैठे
हुतने में श्री गोवर्द्धननाथजी पधारे सो श्रीमुख सों
कहे जो कुंभनदास जी होतों सो एक बात कहूंगो।
तबहुतने में राजा मानसिंह आयो सो कुंभनदास जी
को प्रनाम करिके बैठो और श्रीनाथ जी तो उहां तेद
राजाय ऊंडे भए सो श्रीनाथ जी तीरक कुंभनदास
जी कों देखें हैं और दूसरे की भतीजी कों देखे हैं तब कुं
भनदास जी की दृष्टी तो श्रीनाथ जी के संग ही गई सो
श्रीनाथजी बैठे हैं तहां कुंभनदास जी देखबो करत
अभतीजी बात्नी जो बाबा राजा बैठे हैं तब कुंभनदास
जीनें कही जो मैं कहा करूं जो बैठे हैं तो जा बात कहत
हुते सो तो भाजि गये सो अब कहेंगे तब दूरते श्रीना
थजी कहें जो कुंभनदास मेंबात कहूंगो तब कुंभनदा
सजी प्रसन्न भये और भतीजी सों कही जो अमुकी
आरसी ल्याउ तिलक करों तब भतीजी नें कही जो
बाबा आरसी तो पडिया पीगई तब राजा नें कुंभन
दास की भतीजी सों कही जो अरी ढोंगी पडिया क
हा पीगई तब वह कटोरी में पानी लाय के कुंभन
दास जी के आगें धरयो तब कुंभनदास जी बा में दे
खि के तिलक करन लागे हुते में राजा मानसिंह
नें अपनी सोने की आरसी कुंभनदास जी के आगें
धरी और कही जो बाबा या में देखि के तिलक करि

येतव कुंभनदास जी बोले जो अरे भैया याकों होंक
हा करूंगो हमारे तो यहां छानि के घर हैं नातें कोउ
याके पीछें हमारो जाव लेयगो नातें हमें तो यह नाहीं
चहियत हैं तब राजा मानसिंह नें इनके आगे सोने
की थैली धरी तब कुंभनदास नें कह्यो जो भैया हम
कों तो यह नाहीं चहियत हमारे तो यह खेती हैं ता
को धन आवत हैं सो खान हैं तब राजा मानसिंह नें
कह्यो जो भलो आप को गांव हैं ताकों लिखवा हों क
रि देउं तब कुंभनदास नें कह्यो जो भैया होतो ब्राह्म
ण नाहीं जो तेरो उदक लेउं तब फेरि राजा मानसिंह
नें कह्यो जो बाबा कहु तो आज्ञा करो तब कुंभन
दास नें कह्यो जो हमारो कह्यो करोगे तब राजा मान
सिंह नें हाथ जोर कह्यो जो आप कहोगे सो करूंगो
तब कुंभनदास नें कह्यो जो फेरि मेरे पास तुम मति
आइयो तब राजा मानसिंह नें कह्यो जो धन्य हैं मा
या के भक्त तो सगरी पृथ्वी में फिरयो सो बहुत देखे
परि भागवद भक्त तो एक यही देखे यह कहि कें राजा
मानसिंह कुंभन दास को दंडौत करिके उठि चल्यो
तब फेरि आय कें कुंभनदास सों श्री नाथ जी नें व
ह ज्ञान कही और बहुत प्रसन्न भये तब फेरि कुं
भनदास जी श्री गिरिराज ऊपर आय कें श्रीनाथजी
की सेवा में तत्पर भये॥

वार्ता प्रसंग २

और एक समय कुंभनदास जी कों मिलिवे कों
वृन्दावन के मध्य हरि वंशभट्ट आये सो यह जानि

कें आये सो महापुरुष हैं इनसों श्रीठाकुर जी बोलत हैं बातें करत हैं और काव्य इनकी सुनी सो कीर्तन वहु ससुन्दर कीये ताते ऐसे पद श्रीठाकुर जीके साक्षा त कार विनान होंय यह जानि कें कुंभनदास सों मि लवे आये सो कुंभनदास जी सों मिलि कें वहुत प्रसन्न भए और कह्यो जो कुंभनदास जी तुमनें विसन पद वहुत कीये हैं सो हमनें आय कें सुने हैं और आपके पद श्रीस्वामिनी जी को नाहीं सुन्यो ताते आप कोई स्वामिनी जी को पद सुनावो तव कुंभनदास जीने श्री स्वामिनी जी को पद करि कें गायो सो पद ॥

राग रामकली

तालचरचरी ॥

कुमरि राधिका के लुव सकल सौभाग्य की वा वदन पर कोटि सत चंद्र वारों ॥ खंजन कुरंग सत कोटि जं घन ऊपर सिंह सत कोटि उपन्यों छा वर उतारो मत्त स त कोटि चालि पर कुंभ सत कोटि इन कुचन पर वारि डारों ॥१॥ कीर दशा कोटि दशानन पारिकाहिन वारों पंक कें दूर वहूक सत कोटि अधरन ऊपर वारि रुचिर गर्भ टारों ॥ नाग सत कोटि वैनी ऊपर कपोत सत को टि करि जुगल परवार नें नाहिन कोउ लोक उपमा जु धारों ॥२॥ दास कुंभन स्वामिनी सुन खासिख अति अद्भुत सुठान कहां लगि समारों ॥ लालगिरधर क हत मोहि तोहि लोजीवह रूप छिन छिन निहारो ॥३॥ ॥

॥ यह प द कुंभनदास ने गायो सो सुनि कें महंत वहुत ही रीझे

और कहैं जो हमनें श्रीस्वामिनीजी के पद बहुत कीये हैं परि वहां उपमा दीनी है और बार फेरि डारी ताते कुंभनदास जी आप बड़े महापुरुष हो आप की सराहना कहां तांई करियै वा महंत नें कुंभनदास की बड़ीबड़ाई करी बहुत रीझे तापाछे वे महंत आदि सब कुंभनदास जी सों विदा होय कें अपने घर गये॥

वार्ताप्रसंग॥४॥

और एक समय श्री गुसांईजी श्रीगोकुलमें आप ने घरते श्रीनवनीतप्रियाजी सों आज्ञा मांगि कें विदेसार्थ द्वारिका कों पधारे सो श्री गुसांईजी श्रीनाथजी द्वार पधारे सो श्रीनाथजी कों सेवा सिंगार की ये तापाछे आप भोजन करिकें गादीउपर विराजे तब सब सेवक दर्शन कों आये तब बातचलत में कुंभनदास जी की बातचली तब काहू बैष्णवनें कह्यो जो महाराज कुंभनदास जी कों द्रव्य को बहुत संकोच है सात बेटा हू हैं और उपजत तो एक खेती की है ताकें धन आवत है तासों निर्वाह करत हैं सो यह बात श्री गुसांईजीने अपने मन में राखी तापाछें उत्थापन के समय कुंभनदासजी दर्शन कों आयें तब श्री गुसांई अपने श्रीमुख सों कहैं जो कुंभनदास हम श्री द्वारिकाधीशजी के दर्शन कों पधारेंगे और विदेस हू होयगो वैष्णव ने बहुत करिकें लिख्यो है ताते जो तुम संग चलो तो विदेस में भगवदीय कों ग्रह काल बाधा न होय तब भगवदीय को काल व्यतीत होजाय कछू जान्यो न परै और में सुन्यो है जो कछु तुम्हारें द्र

व्य कोसंकोच हैं सोउहां सिद्धि होयगी ताते सर्वथा
तुमकों चल्योचाहियेतव कुंभन दास नेकही जो श्री
ठाइतने में दर्शन कौ समय भयो सो श्रीगुसाईं जी ५
आपस्नान करिकें श्रीनाथजीके मन्दिर में पधारे
श्रीनाथ जी की सेवा सों पहुंच कें श्रीनाथजी कौं पौ
ढ़ाय के बैठक में पधारे और कुंभनदासजी कौं सीख
दीनी जो कुंभनदासजीतुम सेवा ते पहुंच कें वेगा आइ
यो हम कालि आरती करिकें अपछरा कुंड ऊपर जा
यरहेंगे तब कुंभनदासजी श्री गुसांईजी को दंडौत
करकें अपने घर कौं आये सवार सेवा सों पहुंचि कें
श्रीनाथजी के दर्शन करिकें अपछरा कुंड ऊपर आ
ये और श्री गुसांईं जी श्री नाथ सों सीख मांगि कें आ
पनीचे आये पाछें आप भोजन कीये और सब सेव
कन कों महा प्रशाद लिवायो ता पाछें ताही समय कैं
मुहूर्त हुतो सो श्री गुसांईं आप पर्वत नीचे आये सो
अपछरा कुंड ऊपर आये सो तहां अपछरा ऊपर डेरा
को हुते सब सेवक आगाऊ सो ठाढ़े हुते सो श्रीगुसांईं
जी डेरा पधारि कें पोढ़े हुतने में सब सेवक सामान ले
कें वेऊ आये सो कुंभनदास उहां बैठि कें विचार तहुतेक
हिये जो कहिवे की होय प्राननाथ विछुरन की विरियां
जानत नाहिन कोऊ यह विचार करत उत्थापन कौ स
मयो तब श्री गुसांईजी आप भीतर डेरा में जागे श्री
रकुंभन दासजी कूं दर्शन की सुधि आई सो वहां पू
छ्यो की और कोने में जाय कें बैठि कीर्तन गावत हैं ५
और आंगिवन में ते जल को प्रवाह वहत हो सो कुंभ

नदासनेंएकपदगायोसोपद ॥

रागसारंग

केतेहूंजुगनविनदेखें ॥ तरुणाकिसोररसिकनंदनंदन
कछुकउठतिमुखरेखें ॥१॥ वहशोभावहकांतिवद
नकीकोटिकचंदविसेखें ॥ वहचितवनवहहास्यम
नोहरवहनटवरवपुभेखें ॥२॥ श्यामसुन्दरसंगमिलि
खेलनकोआवतजियेअपेखें ॥ कुंभनदासलालगि
रधरविनजीवनजन्मअलेखें ॥३॥

यहपद कुंभनदासनें गायोसोश्रीगुसांईजीआ
पडेगके भीतरसुनोंसोकुंभनदासजीकोकलेशश्री
गुसांईजीसोंसंग्यानगयोसोश्रीगुसांईजीआपडे
राकेवाहरपधारेऔरश्रीमुखतेकह्योजोकुंभन
दासअबतुमघेरीजाऊतुम्हारोविदेसहोयचुकोो
श्रीजोतुम्हारीअवस्थाहैअैसीउनकीअवस्थाहै
सोकैसेंजानियेंजोश्रीअक्काजीनेगजनधावनकों
पानलेवेंकोंपठायोसोगजनकोतोंभगवदआसः
क्तिदेखेविनाएकक्षणहूंनरह्योजायसोगजनधाव
नपानलेवेकोंवाहिरगयेसोघोरीसींदूगयेऔरज्व
रचढिआयोसोमूरछाखायकेंगिरेऔरश्रीअक्का
जीनेंश्रीनवनीतप्रियाजीकोंभोगसमर्पेोतबश्रीन
वनीतप्रियाजीनेंगजनधावनकोबोलनसुन्योत
वश्रीनवनीतप्रियाजीनेंअपनेश्रीमुखसोंकह्योः
जोमेरोगजनधावनकहांहैतबश्रीअक्काजीनेंक
ह्योजोवहतोपानलेवेकोंगयोहैतबश्रीनवनीत
प्रियाजीनेकह्योजोमेरोगजनधावनआवेगोतब

आरोगृगो सो श्री हस्त स्वेंखि कें वेठि रहे तब वेगि गज्जन धावन कों बुलायो तब गज्जन धावन नें कही जो वा वा आरोगो तब श्री नवनीत प्रियाजी आरोगे हैं यह श्री आचार्यजी महा प्रभून की मर्यादा हे जो जितनों सेवक को स्वामी ऊपर नेह होय और भागवद गीता में भगवान कहे हैं ॥ श्लोक

ये यथा मां प्रपद्यंते ४
तांस्तथैव भजाम्यहं

यह आधो श्लोक कह्यो ताते श्री मुख सों कहे जो इहां तुम्हारी विवस्था और उनकी विवस्था हे सो ऐसो ४ कुंभनदास कों और श्री नाथजी कों विरह हुतो ताते श्री गुसांई जी ने कुंभनदास को सेवा दीनी तब कुंभन दास नें श्री नाथजी के दर्शन कीये तब कुंभनदास नें एक पद गायो सो पद ॥

गांसारंग

जो ये चोप मिलन की होय ॥ तो क्यों रहे नाहि बिन देखे लाख करो जिन कोय ॥१॥ जो ये बिरह परस्पर व्यापे जो कछु जीवन खैनें ॥ लोक लाज कुल की मर्यादा एको चित न गनैं ॥२॥ कुंभनदास प्रभू जाहि तन लागी और न कछु सुहाय ॥ गिरधर लाल तोहि बिन देखें छिन २ कल्प विहाय ॥३॥

सो यह पद कुंभनदास नें श्री नाथजी के सन्मुख गायो सो सुनिकें श्री नाथजी बहुत प्रसन्न भए सो कुंभनदास श्री नाथजी कों देख के प्रसन्न भये ॥

वार्तापसंग ५

औरएक समयकुंभनदासजी श्रीगुसाईजीके पा
सबैठे हुतेतबकुंभनदासनें श्रीगुसांईजीसों कह्योजो
महाराजबेटा डेढ़ है औरहेंतौसात तब श्रीगुसाईजी
नें कह्यो जोकुंभनदासडेढ़ कौकारन कहातबफेरकुं
भनदासजीकहे जोमहाराज आखोबेटा तौचत्रभु
जदास है और आधोबेटा कृस्नदासहै सोश्रीनाथ
जीकीगायनकी सेवा करतहै तासों आधोहै कुंभन
दासजी कृस्नदास सों आधो क्यों कहे ताको हेतयह
जोश्री आचार्यजी महाप्रभून नेंपुष्टी मार्ग प्रगट कीयो
है सो पुष्टी मार्ग कहा है जोब्रज भक्तन कौहेतयहमा
र्ग प्रगट कीयोहै सोभगवदीय गाए हैं जो सेवा रीति
प्रीत ब्रजजन कीजन हितजग प्रगटाई सोब्रजभक्त
की कहा रीति है जो श्रीठाकुरजी के सन्निधानतौ
सेवा करें और श्रीठाकुरजी वन में पधारे तबगुणा
गान करें जोण बनु होय तौ आखो और इनमेंते ए
कहोय तौ आधो ताते चत्रभुजदास सेवा और गुणा
गान है ताते आखो और कृस्नदास में एक सेवा है सो
आधो तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखते कहें जोभगव
दीय हैं तेई बेटा हैं और बहुतभये तौ कौन काम के
यह चत्रभुजदास की वार्तामें लिखेहैं ॥

अथ कृस्नदास की वार्ता

सोवे कृस्नदास श्रीनाथजी की गायन के ग्वाल हुते
श्रीगुसांईजीनें इनकों गायन की सेवा दीनी हुती सोकृ
स्नदास श्रीनाथजी की गायन की सेवा करतेसवा

रें खिरक सेवा सों पहुंच कें फेरि गायचरायवे कों जा
ते सो सारे दिन कृष्णदास गायन की सेवा करतेसो
एक दिन गायचरायकें पूछरी की ओर कृष्णदास गा
यन के संग आवत हुते सो सगरी गाय तो खिरक में
आई और गायवड़ी हुती ताकों ओन बहुत भारी हु
तो सो वह गाय बहुत हरवे चलती सो वा गाय कों
आवत आंधयारो परिगयो सो तहां पर्वत के नीचे
अंधियारे में राक नाहर निकस्यो सो गाय पे दोसो
तब कृष्णदास कहें जो अरे अधर्मी यह श्रीनाथ
जी की गाय हैं तू भूखो होय तो मेरे ऊपर आउ तब
इतने में गाय तो भाजि खिरक में गई और नाहर ने
कृष्णदास कों अपराध कीयो और ऊपर कहि आ

एहैं जो गाय सब खिरक में आई तब श्रीनाथजी आ
प गाय दुहिवेकों आये सो सब गाय ग्वाल दुहतहैं
और वह बड़ी गाय खिरक में आई सो वह गाय को
श्री दुहिवे को बैठें और कृष्णदास बछरा यामें हैं
और वह गाय बछरा कों चाटतहैं सो ऐसे दर्शनकु
भनदासजी कों भये ता पाछें गोदुहन करिकें श्रीना
थजी गिरराज ऊपर मन्दिरमें पधारे तब श्रीगुसाई
जीनें भोग समर्प्यो और कुंभनदासजी खिरक में से
आये सो दंडोती सिला पास ठाड़े भये दूतनेमें समाचा
र आये जो कृष्णदास कों नाहर नें मारयो सो सुनिकें कुं
भन दासजी मूर्छा खाय कें गिरे सो ऐसे गिरे जो देहा
नु संधान भूलि गये तब कुंभनदासजी को सब कोउ
बुलावें परि बोलें नाहीं तब ये समाचार काहूनें श्रीगु
साईं सों कहे जो महाराज कृष्णदास कों नाहर नें मा
रयो और गाय को कृष्णदास नें बचाई सो कृष्णदास
उहांहीं परे हैं तब श्रीगुसांईजी कहें जो गाय कबहूं
न छोड़ि आवें अंत समै गाय संकल्प करतहैं ताकों
गाय उत्तम लोक कों लेजातहै और कृष्णदास नें तो
श्रीनाथजीकी गाय बचाई है ताते कृष्णदास कों गाय
कैसे छोड़ आवेगी और श्रीगुसांईजीनें कह्यो जो
कुंभनदासजी कहां हे तब काहू वैष्णवननें कही
जो महाराज कुंभनदासजी कों कलेस बहुत बाधा
कीयो है जो कुंभनदासजी ऊपर आवत हुते सो कुंभ
नदासजी के आगें काहूनें कृष्णदास के समाचार
कहे सो सुनतही कुंभनदासजी मूर्छा खाय कें गिरे

सो लोग बहुत ही बुलावत हैं परि आवत नाहीं तब श्री
गुसांईजी ने अपने श्री मुख सों कह्यो जो फेरि कुंभन
दास जी की खबर लावो जो कुंभनदास जी की देह कैसें
है सो वे आय कें कुंभनदास जी कों पुकारे तब ए सभा
चार श्री गुसांईजी सों कहे जो महाराज कुंभन दास जी
तो कछू समझत नाहीं तब श्री गुसांईजी तो सेन भोग
के दर्शन करिकें श्रीनाथजी कों पौढ़ाय कें आपनी वे
पधारे सो देख कें मार्ग के सामें कुंभनदास जी परे हैं
और लोग चारों ओर ठाड़े हैं सो कहत हैं जो कुंभन
दास जी कैसें भगवदीय हैं परि पुत्र को सोक बहुत बु
रो होत है या पीरा सों कोई बच्यो नाहीं काहे तें जो अप
नी आत्मा है तब यह बात लोगन की सुनि कें श्री गुसांई
जी मन में विचारे जो इन्हों तो कारण कछू और है और
लोगन कों तो कछू और भासत हैं तातें भगवदीय को
स्वरूप करिवे के लियें श्री गुसांईजी अपने श्री मु
ख सों कहे जो कुंभनदास जी सबारें तुम वेगों आइयो
तुमकों श्री गोवर्द्धनाथ जी कें दर्शन करामेंगे तुम मन
में खेद मति करो इतनों श्री गुसांईजी श्री मुख सों कहे
तब कुंभनदास जी उठि ठाड़े भये और प्रसन्न भए तब
श्री गुसांईजी कों दंडौत करि कें कुंभनदास कों जो कै
यें करनों हो सो सब कीयो पाछें सबारें कुंभनदास जी
दर्शन कों आये श्रीनाथजी कों सिंगार करि के श्री
गुसांईजी सों कह्यो जो प्रथम कुंभनदास जी कों दर्शन
कराय दउ सो कुंभन दास जी बैठकन के ऊपर यह प्र
कार कीयो जो सूत की कों कौन मन्दिर में जान देतो सो

कुंभनदासजी के अनुग्रह ते सबकोउ दर्शन करतहैं सो कुंभनदास जी नित्य एक बेर दर्शन करिकें परासोली में जाय बैठते सो वहां बैठें बैठें विरह के पद गाव ते सोपद॥

राग धनाश्री

तुम्हारे मिलन बिन दुखित गुपाल॥ अति आतुर व्रज सुन्दर प्यारे विरही बेहाल॥१॥ सीतल चन्द तप तभयो दाहत किरणा कमल जनु जाल॥ चन्दन कुसुम सुहाय घन सार लगत बढ़ी ज्वाल॥२॥ कुंभनदास प्रभू नव धन तुम बिन कनक लता मानिं सूखी जीवमा काल॥ अधरामृत वंसी सींचि लेउ तुम गिरगोवर्द्धन लाल॥३॥

राग धनाश्री

अवदिन रात्रि पहर से भरा॥ तवते निघटत नाहिन जबते हरि मधुपुरी गये॥१॥ यह जानियें विधाता जुग सम कीने जाम नए॥ जागत जाग विहातन के अरु सेज पीत भये॥ व्रजवासी अति परम दीन भए व्याकुल से चलये॥ उन प्राण दुखित जलरुह गन दारुण हेम पए॥ कुंभनदास विछुरत नंद नंदन वहुत संताप करे॥ अब गिरधर विन रहत निरंतर नैनन नीर ढुए॥

राग केदारा

औरन को समीप विछुरनो आयो मेरी हिसा॥+॥ सबकोउ सोवे सुख अपने आली मो कूं चाहत रिसा॥ नाजानों यह विधाता की गति मेरे आकलि वे औसो कोन रिसा॥ कुंभनदास प्रभू गिरधर कहत

निसदिन रहज्यों चातक घन त्रिसा॥२॥
ऐसे पद गाय गाय कुंभनदास जीनें सूत ते पद कीये
पाछें शुद्ध होय कें कुंभनदासजी भागवद सेवा में आर्
ऐसो जिनकों दर्शन की आरति सो वे कुंभनदासजी
श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसें परम कृपापात्र
भगवदीय है तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं तातें इ
नकी वार्ता कहां तांई लिखिये॥+
॥वार्ता प्रसंग॥६॥वैष्णव ८३॥ सम्बंध १७५॥

अब श्री आचार्यजी महा
प्रभून के सेवक कृष्ण
दास अधिकारी
तिनकी वार्ता
लिख्यते

सो वे कृष्णदास शूद्र एक वेर द्वारिका गए हुते सो श्री
रणछोड जी के दर्शन करिकें तहां ते चले सो आधन
मीरा वाई के गांव आयो सो वे कृष्णदास मीरा वाई के
घर गए तहां हरिवंश व्यास आदि दे विशेष सह वेष्म
वहते सो काहू कों आये आठ दिन काहू कों आये द
श दिन काहू कों आए पंद्रह दिन भये हुते तिनकी वि
दा न भई हुती और कृष्णदास ने तो आवंतही कही
जो हूं तो चलूंगो तब मीरा वाई ने कह्यो जो बैठो तब के
तनीक मोहर श्री नाथजी कों दैन लागी सो कृष्णदास
नें न लीनी और कह्यो जो तू श्री आचार्यजी महाप्रभू
न को सेवक नाहीं होत तातें तेरी भेट हम हाथ ते लेवेंगे
नाहीं सो ऐसें कहि कें कृष्णदास उहां ते उठि चले सो

जब आगे आये तब एक वैष्णवननें कह्यो जो तुमनें श्री
नाथजी की भेट नाहीं लीनी तब कृष्णदास ने कह्यो जो
भेट की कहा है परि मीरावाई के यहां जितने सेवक बैठे
हुते तिन सबन की नांक नीची करिकें भेट फेरी है इतने
दूकठौरे कहां मिलते येहू जानेंगे जो एक बेर सद्द श्री
आचार्यजी महाप्रभून को सेवक आयो हुतो तानें भेट
न लीनी तो तिनके गुरू की कहा बात होयगी ॥::

वार्ता प्रसंग ॥*१*॥

और प्रथम सेवा श्रीनाथजी की बंगाली करते जो श्री
आचार्यजी महाप्रभूननें मुकट काछनी हीरा के आभ
रन भराय दीने हैं सो नित्य धरते सो भेट आवती सो खर्च
होती कछू संग्रह न राखते सब खर्च होय जातो और
बंगाली सेवा करते पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभूनें छ
घमदास को आज्ञा दीनी जो तुम श्रीगोवर्द्धन रहो सेवा
टहल करो तब कृष्णदास अधिकारी भए अधिकार
करन लागे पाछें एक दिन मथुरा कों चलन लागे सो
अडींग लों पहुंचे तब पेड़े में अवधूत दास मिले महापुरु
षहुते ब्रज में फिरयो करते सो कृष्णदास कों मिले तब
अवधूत दास ने कह्यो जो कृष्णदास तुम कहां चले तब
कृष्णदासनें कही जो मथुरा जात हौं कछू काम है तब
अवधूत दासने पूछो जो श्रीनाथजी की सेवा कैसन क
रते हे तब कृष्णदासनें कही जो बंगाली करत है तब अव
धूतदासनें कही जो श्री नाथजी कों अपनों वैभव बढाव
नो है तातें तुम बंगालीन कौं दूर क्यों नाहीं करत सो अव
धूतदास सों श्रीनाथजी नें कह्यो जो मोकों बंगाली वहु

तदुरवदेतहैं सो तव वंगाल्ली श्री नाथजीकों भोग धरते सो उनकी चुटि में छोटो सो स्वरूपहुतो देवी कोसोसा म्हे बैठावते जब भोग सरावते या देवीकों अपनीं चुटि या में धर लेते ऐसें सदा करते सो बात अव धूत दास कों श्रीनाथजीने जनाई ताते अव धूत दासने कृष्णदास सों कह्यो जो तुम वंगाल्लीन कों दूर करो तव कृष्णदासनें कही जो श्री गुसांईजी की आज्ञा विना कैसें काढे तव अवधूतदासने कह्यो जो तुम अडेल में जाय के श्री गुसांईजी की आज्ञा ले आवो जैसें बनें तैसें इन वंगाल्ली कों काढो तव कृष्णदास अडैल गये फिरे सो श्रीगोवर्द्धन आए तव वंगाल्लीन सों कह्यो जो हूंतो श्री गुसांईजी के पास अडैल जात हों तुम श्री नाथजी की सेवा सावधानी सों करियो और सब सेवक हुते तिन सों कृष्णदासनें कह्यो जो हूंतो श्री गुसांईजी के पास कछू काम है सो अडैल को जात हों तुम साव धान रहियो ता पाछें श्री नाथजी सों विदा होय के अ डैल कों चले सो दिन पंद्रह में श्री गुसांईजी के पास आय पहुंचे सो आय कें श्री गुसांईजी कों दंडौत कीये तब श्री गुसांईजीने पूछो जो कृष्णदास तुम क्यों आये तव कृष्णदासनें कही जो श्री नाथजी कों अपनों वे भव बढावनों है और वंगाल्लीन नें बहुत मायो उठायो है जो भेट आवत है सो लेजात हैं सो सब अपने गुरु न कों देत हैं तब श्री गुसांईजी कहे जो श्री आचार्यजी महाप्रभू असुरव्यामोह लीला दिखाई ता पाछें श्री गो पीनाथजी पूरब को परदेश कीयो सो एक लक्ष की

भेट भई पाछें अडेल आये तब श्री गोपीनाथजीनें क
हीजो यह पहलो परदेश हैं ताते यामें आयो सो सब
श्रीनाथजी कों हैं श्री नाथजी कों विनियोग कीयोचा
हियें ता पाछें श्री गोपीनाथजी दिनदश बारह रह कें
पाछें श्री नाथजीद्वार पधारे सो जाय पहुंचे तब श्री गो
पीनाथजीनें दर्शन कीयो पाछें जो लाये हुते सो सब
भेट कीयो आभूखन सब जड़ाव के समराये थार कटो
रा, डवरा, चमचा, तष्टी, प्रभृत, सब सोंना रूपा के कीये
सब करिकें श्री नाथजी सों विदा होय कें श्री गोपीना
थजी अडेल आये ता पाछें बंगाली बरसएक के भीत
र सब लैगये अपने गुरु के यहां जाय कें दीयो यह बात
श्री गुसांईजीनें कृष्णदास सों कही और कह्यो जो बं
गालीननें मार्यो उठायो हे परि वे श्री आचार्यजी मह
प्रभून के राखे हैं सो कैसें निकलेंगे तब कृष्णदासनें श्री
गुसांईजी सों कह्यो जो महाराज श्री नाथजी की आ
ज्ञा हैं जो बंगालीन कों निकासो ताते आपयावात में
कछू मति बोलो मोकों आप आज्ञा करो तो अपनों
आप करि लेउंगो जैसें बंगाली निकसेंगे तैसें काढ़ूं
गो तब श्री गुसांईजीनें कह्यो जो अवश्य तब कृष्ण
दास नें कह्यो जो महाराज दोय पत्र लिखिये एक राजा
टोडरमल्ल के नाम को एक धीरवल के नाम को तब श्री
गुसांईजीनें दोय पत्र लिखिदीने राजा टोडरमल्ल कों
और धीरवल कों लिखो जो कृष्णदास कों श्रीनाथ
जीद्वार भेजे हैं जो तुम सों कृष्णदास कहे सो करि दे
गे सो पत्र लैकें श्रीनाथजी द्वार कों चले सो आगे आ

ए तहां टोडरमल्ल राजा वीरवलसों मिले पत्र श्रीगु
सांईजी के हुते सो दीये सो उन पत्र वांचि कें कृष्णदास
सों कह्यो जो तुम कहो तैसें करें तब कृष्णदासनें क
ह्यो जो अब तौ में मथुरा जात हौं बंगालीन कों काढि
वे कों ना पाछें कृष्णदास राजा टोडरमल्ल सों विदा ह्वो
य कें श्रीनाथजी द्वार कों चले सो मथुरा आए तब मा
ग में अवधूतदास मिले तब कृष्णदास सों अवधूत
दासनें कही जो कृष्णदासजी दील कहा करि राखी
है बंगालीन कों काढ़ो श्रीनाथजी की ऐसी इच्छा है
श्रीनाथजी कों अपनों वैभ व बढ़ावनों है तब कृष्ण
दासनें कह्यो जो श्रीगुसांईजी की आज्ञा लेकें आयो
हों अब जाय कें बंगालीन कों काढ़त हों इतनों कहि
कें कृष्णदास चले सो श्रीनाथजी द्वार आये सो वे
बंगाली सब रुद्र कुंड ऊपर रहते सो उहां उनकी झों
परी हुती सो कृष्णदासनें जराय दीनी तब सोर भयो ×
तब बंगाली सेवा छोड़ के पर्वत के नीचें आये तब कृ
ष्णदासनें पर्वत ऊपर अपने मनुष्य पठाय दीये तब बं
गाली देखे तौ कृष्णदासनें झोंपरी में आग लगाय
दीनी हैं तब सब बंगाली कृष्णदास सों लरन लागे
तब कृष्णदास नें दुंदै चारचार लाठी सबन में दीनी
तब वे बंगाली तहां ते भाजे सो मथुरा आये तब रूप स
नातन के पास आय कें सब बात कही तब इतने में कृ
ष्णदास हू आय ठाढ़े भये तब रूप सनातन ने कृष्णदा
स के ऊपर खीजि कें कह्यो जो केंगरे शूद्र तू कौन जो ×
इन ब्राह्मणान कों मारें तब कृष्णदास नें कही जो हूं

सूद्रहों परि तुमहूंतो अग्निहोत्री नाहींतुमहूंतो का
यस्थहो तव सनातन नें कह्यो जो यहवात पात्साह
सुनेंगो तौ तू कहा जुवाव देयगो तव कृष्णदासनें क
ह्यो जो होंतो नोकें जुवाव देयंगो परि तुम कों जुवाव
देत में दुखहोयगो और तुमकों जवाव न आवेगो
जो तुम कायस्थ होयकें इनब्राह्मरान सों दंडोत करा
वतहो तव रूप सनातन तोचुपहूं रहे और वंगालीन
सों कह्यो जो तुमजानों ए जानों तव वंगाली मथुरा
के हाकिम पास गये तव कृष्णदास जाय ठाडे भये
तव हाकिम नें कह्यो जो भयो सो तो भयो परि अवइ
न कों राखो तव कृष्णदासनें कह्यो जो अवतो इन
कों नराखेंगो एतो हमारे चाकर हुते सो हमनें इनकों
सेवा सोपीं हुती सो ए सेवा छोड़ कें कयों आयेजो इन
की झोंपरी जरगई हुती तो हम नई छवाय देते तात
अव हमतो नराखेंगे ता ऊपर तुमकहतहो जो हम
श्री गुसांईजी कों लिखेंगे वे कहेंगे तैसें करेंगे तुम
श्री गुसांईजी कों लिखेवो पाछें कृष्णदास श्रीनाथ
जीद्वार आये और वंगाली सव अपने श्री कुंड आये
तव कृष्णदासनें श्री गुसांईजी कों पत्र लिखेवो तामें
वंगाली काढ़े सो सव समाचार विस्तार करि कें लिखे
और लिख्यो जो अव पधारियेतो भलोहै सो पत्र श्री
गुसांईजी के पास अडेल आयो तापाछें श्री गुसांई
जी अडेल ते चलेसो श्रीनाथजीद्वार आये तव वे व
गाली सव आये तव श्री गुसांईजी सों कह्यो जो हम
कों श्री आचार्यजी महाप्रभूननें सेवा में राखेहतेसो

कृष्णदास नें हमकों काढे तब श्री गुसांईजी ने कह्यो॰
जो तुम सेवा छोड़कें कहां गये दोष तुम्हारोंहै ताते अबतो
सेवामें न राखेंगे तब बेवंगाली बहुत बीनती करन लागे
जो महाराज अब हम स्वायंगे कह्या तब श्री गुसांईजीनें
इनकों श्रीनाथजीके बदले श्री मदनमोहनजी की सेवा
दीनी और कह्यो जो इनकी सेवा तुम करियो जो आवे॰
सो खाइयो तब वे बंगाली श्री मदनमोहन जीकी सेवा
करन लागे ताते उन बंगालीनें श्री गोवर्द्धन रहिवोछो
ड़ दीयो ता पाछें श्रीनाथजीकी सेवामें गुजरातीब्रा
ह्मण भीतरियारासे श्रीनाथजीकों अपनों वैभव बढावेना
हों सो सब भीतरियान कों नेग और सब सेवकन कों नेग
जो जा भांति श्रीनाथजीनें कह्यो ता भांति श्री गुसांई
जीनें बांधो तबते श्रीनाथजीकी सेवा प्रनालिका तेहो
न लागी और कृष्णदास अधिकार करन लागे ॥*

वार्ता प्रसंग ॥२॥

बहुरि श्रीनाथजीनें कृष्णदास कों आज्ञा दीनी जो
श्यामकुमरि कों लैकें ताल परवाज लेके तू परासो
लीमें आइयो सो श्यामकुमर आके मृदंग बजावते॰
सो श्रीनाथजीकी सेन आरती उपरांत अनोसर भयो
तब कृष्णदास श्यामकुमरि के घर गये तब कृष्णदास
नें श्यामकुमरि सों कह्यो जो श्रीनाथजीनें आज्ञा क
रीहै सो मृदंग लैकें परासोली चलो तब श्यामकुमर
नें कह्यो जो मोहू कों श्रीनाथजीनें आज्ञा करीहै ताते
चलिये तब श्यामकुमर मृदंग लैकें आयो तब कृष्ण
दास और श्यामकुमर दोउ जने परासोली आए

सोढरवेंतो श्री नाथ जी स्वामिनीजी सहित विराजें हैं तब श्री नाथजीने श्यामकुमर सों कह्यो जोतू तो मृदंग बजाय और कृष्णदास सों कह्यो जोतू कीर्तन करि और श्रीनाथजी और श्री स्वामिनीजी नृत्य कीयो तहां कृष्ण दासनें पद गायो सोपद

राग केदारो

श्रीवृषभानुनन्दनीनाचत गिरधर संग लागडाट अरु पति परमरंग रस्यो ॥ झपताल मिल्यो राग केदारो रास सुख अवधा तान रंग रस्यो ॥१॥ पाई सुखसिंधु भरत काम विविधि रिद्धि अभिनवदल सत सुहाग हुलास रंग रस्यो ॥ वनिता सत जूथ संग लिये निरखत कोंसघन चन्द वलिहारी कृष्णदास सुधारंग रस्यो ॥२॥

यह पद कृष्णदास नें गायो श्याम कुमार नें मृदंग बजा
यो श्रीनाथजी और स्वामिनी जी नृत्य कीयो ताते श्री
महाप्रभूजी की कानिते श्रीनाथजी कृष्णदास के ऊपर
ऐसी कृपा करत हुते ॥

वार्ता प्रसंग ३ ॥

और कृष्णदास नें बहुत पद कीये तब एक समें सूर
दासजीनें कृष्णदास सों पूछो जो तुम पद बहुत हो तामें
मेरी छाया है तब कृष्णदास नें सूरदास जी सों कह्यो ×
जो अब कें ऐसो पद करूं जो जामें तुम्हारी छाया न
आवै तब कृष्णदास ए कांत में बैठि कें एकाग्रचि
त करि कें नयो पद करन लागे जो जामें तीन तुक कीं
कीयो और चौथी तुक बनें नाहीं तब घड़ी दोय लों
विचारे जो आगें तुक चलत नाहीं तो भलो फेरि प्रसाद
लेकें विचारेगें सो जा पत्र में लिखत हुते सो पत्र तथा द्वा
ति स्नेह वती अहार्इ धरि कें प्रसाद लेवे कों उठे जब कृष्ण
दास प्रसाद लेवे कों बैठे तब श्रीनाथजीनें आप तीन तु
क वा पत्र में अपने श्रीहस्त सों लिखि दीये कृष्णदा
सनें आधो पद कियो हुतो ताकों आप श्रीनाथजी पू
रो करि कें आप तो पधारे ता पाछें कृष्णदास प्रसाद ×
लेकें आये तब देखो तो श्रीनाथजी पूरो पद करि कें
श्रीहस्त सों लिख गये हैं सो देख कें कृष्णदास बहुत
प्रसन्न भये और कहें जो सूरदास जी आवें तो पद सु
नावे तब उत्थापन के समय सूरदास जी दर्शन कों आ
ये तब कृष्णदास ने कह्यो जो सूरदास जी नयो पद एक
मेंनें कीयो है तामें तुम्हारी छाया नाहीं धरी तब सूरदा

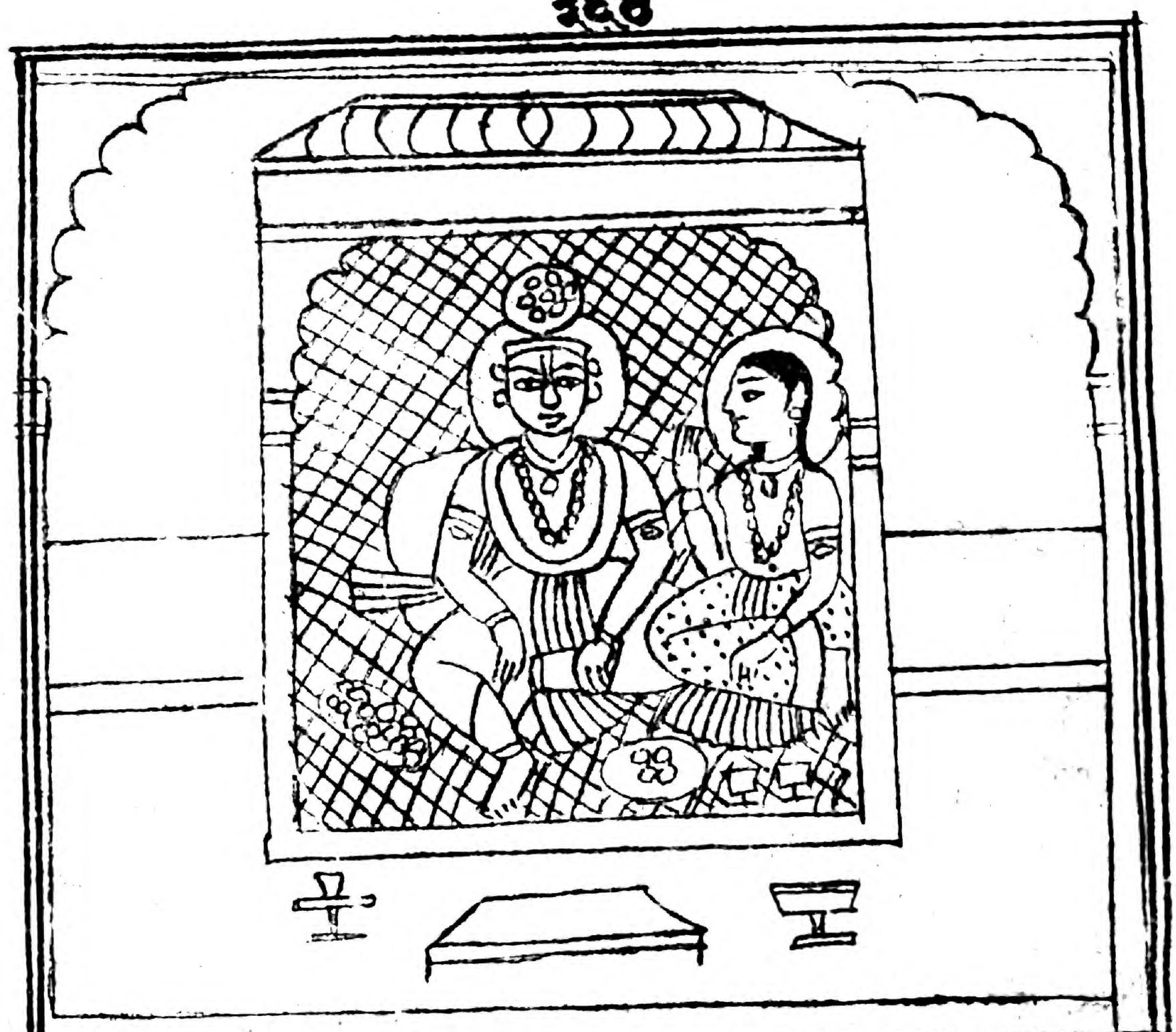

सजीनेंकह्यौजोकछौसुनोंतवजानोंतवपदकह्यौसो
पद ॥*

राग गोरी ॥*

आवतवनेंकान्ह गोपवालक सगानें चुकी खुर रेणु
छुरतु अलका वली ॥ भौंहेंमनमथचापवक्रलोच
नबान सीम सोभितमत्तमयूरचन्द्रावली ॥१॥उदित
उडुराजसुन्दर सिरोमणि वदन निरखि फूलीनवलजु
वती कुमुदावली ॥ अधरविंव फल
हसात कहत कछुक प्रकटित होत कुंददसनावली ॥
२॥ श्रवण कुंडलभालतिलक वेसरि नाक कंठकौ
सुभसरि सुभग सिवलावली ॥ रत्नहाटकखचितपुर
सि पटिव निपांतिवीच राजत सुभउलक मुक्तावली

॥३॥अथ श्रीनाथजीकृत ॥ वलयकंकण वाजूवंद
आजानु भुज मुद्रिका करद्वलविराजत नखावली ॥ क
णतर मुरलिका मोहित अखिल विश्व गोपिकाजनम
सिग्र सयित प्रेमावली ॥४॥ कटि क्षुद्र घंटिकाजटित
हीरा मयी नाभि अम्बुजवलित भृंग रोमावली ॥ धाय
कवहुक चलत भक्त हित जानि पियगंड मण्डल रवि
र श्रम जल कणावली ॥५॥ पीतको सय परिधाने सु
दर अंग चरणानूपुर वाद्य गीत सवदावली ॥ हृदय कृ
ष्णदास गिरवर धरणलाल की चरणानख चन्द्रिकाह
रति तिमिरावली ॥६॥ यह पद कृष्णदास नें सूरदास
जी के आगें कह्यो सो सूरदासजी तीन तुक तोर्इ तौ वो
लेनाहीं और तीन तुक के आगे कहनलागे तव सूरदा
सजी नें कृष्णदास सों कह्यो जो कृष्णदास मेरें तुम
सों वाद है और प्रभून सों वाद नाहीं में प्रभून की वानी
पहिंचानत हौं तव कृष्णदास चुपकरि रहे ताते कृष्ण
दास ऐसे भगवदीय है ॥

वार्ता प्रसंग ॥४॥

और एक समय श्रीनाथजी के भंडार में कछु सामिग्री
चहियत हती सो कृष्णदास गाड़ा लैकें आगरे कों आ
ए सो आगरे के वाजार में एक वेस्या नृत्य करत हती
ख्याल टप्पा गावत हती और भीर हती सव लोगत
मासो देखत हते सो कृष्णदास वाजार में तमासे में
जाय ठाढ़े भये तव भीर सरकि गई तव वह वेस्या कृ
ष्णदास के आगें नृत्य करन लागी सो वह वेस्याव
हुत सुन्दर और गावै वहुत आछो नृत्य तैसोई क

रै सो कुम्भदासवा वेस्याके ऊपर रीझे ऐर मन मेंकहे
जो यहतो श्रीनाथजीके लायक है ता पाछें वा वेस्या
कोंदश मुद्रा तो उहांही दीये ऐर कही जो रात्रिकों स
माज सहित आइयो ता पाछें कुम्भदास उहा हवेली
मेंउतरे सो सामिग्री चहियत हुती सो सब लेकें गाड़ा
लदाय सिद्ध करवायो ता पाछें रात्रि पहर गई तब वे
स्या समाज सहित आई ता पाछें नृत्य भयो गान भयो
वापै कुम्भदास बहुत रीझे सो रुपैया सत राक दीये तब
वा वेस्या सों कहयो जो तेरो गान हूं आछो ऐर नृत्य
हू आछो परि हमारो सेठ है सो तेरे ख्याल टप्यान ऊ
पर रीझेगो नाहीं ताते हों कहों सो गाड़ियों ता पाछें कु
म्भदास नें राक पूरवी राग में पद करिकें सिर्वयो ता पा
छें दूसरे दिन वा वेस्याकों साथ लैकें चले सो आगे तें

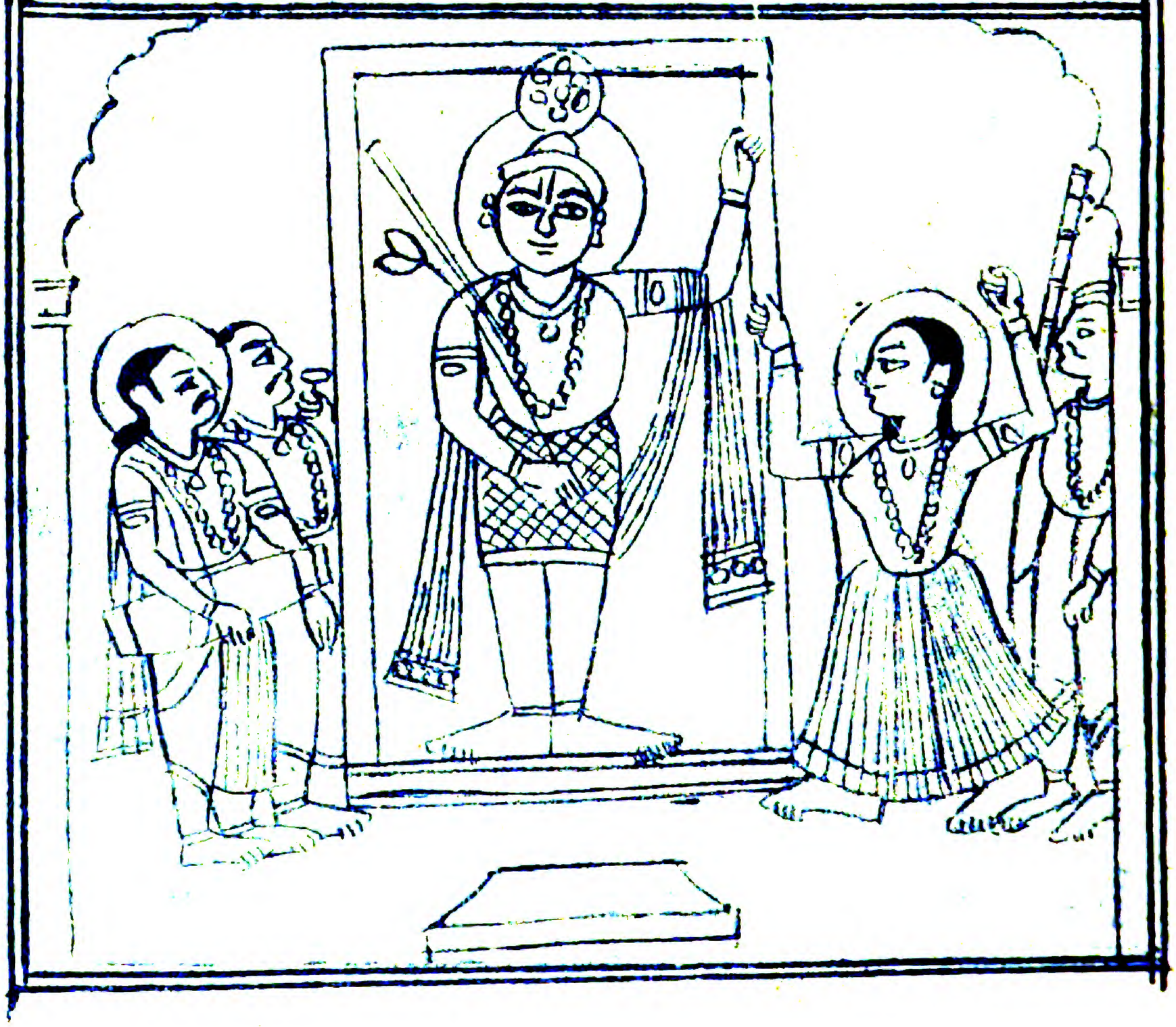

आए पाछें तीसरे दिन श्रीनाथजी द्वार आये सामग्री सब भंडार में धराई तापाछें जब उत्थापन कौ समय भयो तब कीर्तनियाकूंहू कों वागो नहीं येतब वा वेश्या कों समाज सहित लैगये श्रीगुसांईजी मन्दिर में गाडे श्रीनाथजी कों मूदा करतहैं और मणा कोठा में वेस्या कृत्य करन लागे और यह पद गायो ॥ सोपद

राग पूरवी ॥

मोमन गिरधर छवि पर अटकेयो ॥ ललित त्रभंगी अंग गन परिचलि गयो तहांई ठटकेयो ॥१॥ सजल श्याम घन चरण नील है फिर चितन्नानि तन भटकेयो ॥ कुम्भदास कियो प्राणा न्योछावरि यह तन जग सिर पटकेयो ॥ यह पद वा वेश्यानें गायो सो जब गावत २ पिछली तुक आई जो कुम्भदास कियो प्राणा न्योछावरि यह तन जग सिर पटकेयो इतनों कहत मात्र वा वेस्या के प्रान ततकाल निकसि गये और दिव्यस्वरूप धरिकें श्रीनाथजी की लीला में प्राप्त भई और वा वेस्या के समाजी हुते सो मरन लागे जो हमारी तो या तें जीविका हुती अब हम कहा खायगे तब कुम्भदास नें कह्यो जो तुम कों रोकत हो चलो नीचे खाय वे कों देउं तब उन समाजीन कों नीचे लायकें कुम्भदास नें १ सहस्र रुपैया दै विदा किये कुम्भदास नें अपने मन ते समर्पी वा ते श्रीनाथजी ने वा वेस्या कों अंगीकार करी ता ते श्री आचार्यजी महाप्रभून की कानितें सेवक की समर्पी वस्तु या भांति सों अंगीकार करतहैं ॥

वार्तोप्रसंग ४

श्रीरकृष्णदासकोंगगांवाईसोंवकृत स्नेहहतोसोश्री गुसांईजीकोंनसुहावते सोएक दिनश्री गुसांईजी श्री नाथजीकों भोग समर्पितहुते सो सामिग्रीउपरगंगा बाईकी दृष्टिपरी ताते श्री नाथ जी आरोगेनाहीं परि भोग तौ समर्योंतापाछें समय भयोतवभोग सरायें तव आरती करि अनोसरि करिकें श्री गुसांईजी आप नीचें पधारे तव सेवक आदि भीतरियासवनें प्रशाद लीयोतव श्री गुसांई जी आप तौभोजन करिकें पो दे तवश्रीनाथजीनें भीतरियाकों लात मारि कें जगायो और वासूं कहें जोहूंतौ भूखोहूंतव वाभी तरियानें कहोजो महाराज श्री गुसांईजीनें भोग सम-

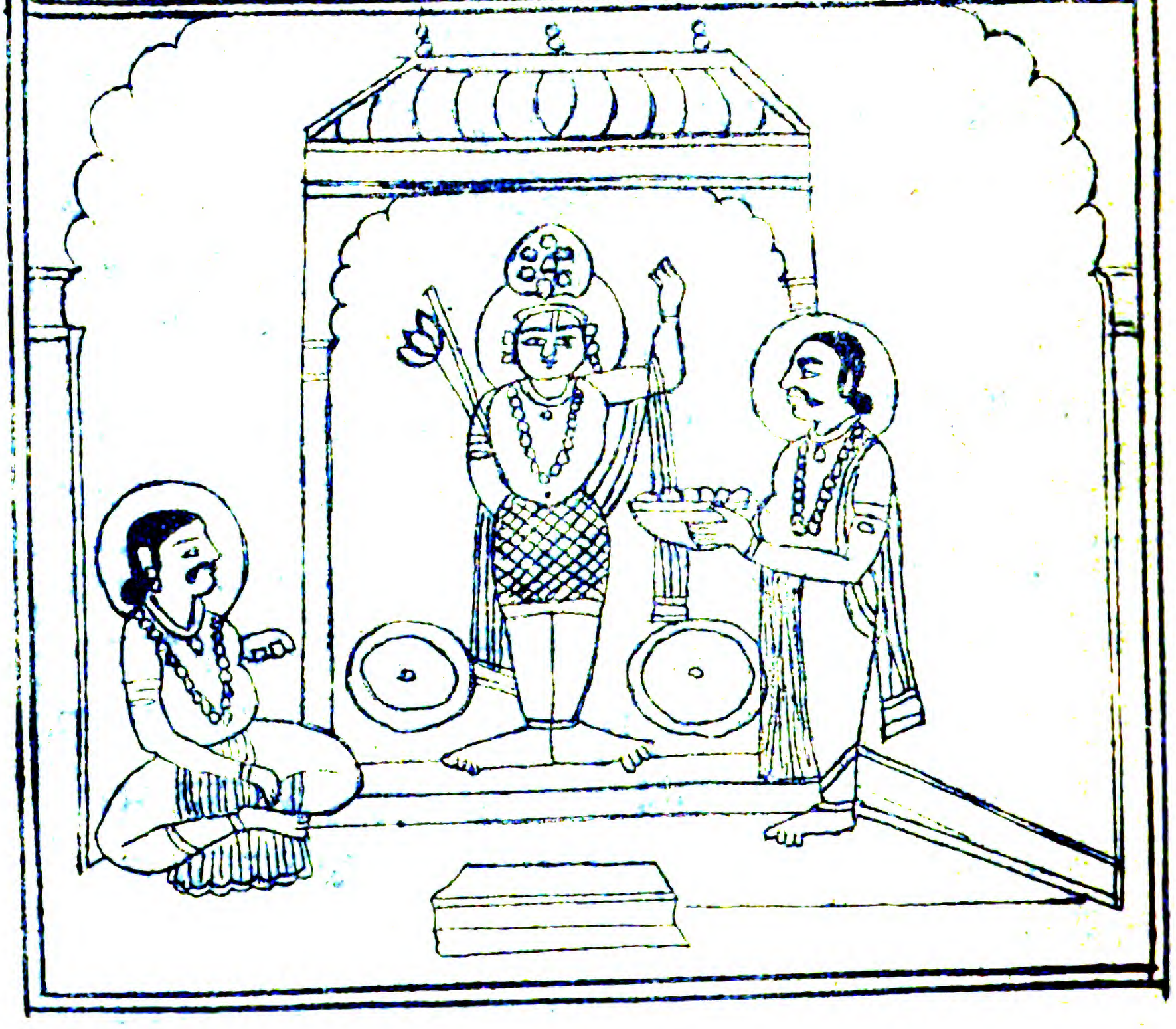

यौंहो और तुम भूखे कोंरहे तब श्री नाथजी नें कह्यो
जो राजभोग मेंतो गंगावाई कोदृष्टी परीहती तातेंरा
जभोग आरोग्यो नाहीं तब वह भीतरिया गयो श्री गु
सांई जी के पास आयो सो श्री गुसांई जी भोजन कर
कें पौढे हुते तब भीतरिया नें आय कें श्री गुसांई जी कें
चरणदाबे तब श्री गुसांई जी चौंकि उठे तब देखें तो
श्री नाथ जी कोभीतरिया है तब वाभीतरिया सों पूछे
जो यहां इतनी वेर कहां आयो हो तब वाभीतरिया
नें कह्यो जो महाराज आज श्री नाथ जी भूखे हैं मोकें
लातमारि कें जगायो और कह्यो जो आज तो मैं भूखो
हों तब मैंनें श्री नाथ जी सों कह्यो जो महाराज भोग
तो श्री गुसांई जी नें समर्प्यो हो तुम भूखे कोंरहे तब
श्री नाथजी नें कही जो सामग्री पर तो गंगावाई की दृ
ष्टि परी ताते मैं नाहीं आरोग्यो तब श्री गुसांई जी सुन
तही ततकाल स्नान करि कें पर्वत ऊपर पधारे सो व
ह भीतरिया हू स्नान करकें श्री गुसांई जी के साथ ही
आयो तब श्री गुसांई जी नें वा भीतरिया सों कही
जो भात और बडी करो जो तत्काल सिद्धि होय आवै
तब भात और बडी करीं सो तत्काल सिद्धि भयो तब
श्री नाथ जी कों भोग समर्प्यो पाछें भीतरिया सों गुसां
ई जी की आज्ञा भई जो राजभोग की सामग्री तो भई
सिद्धि ता पाछें राजभोग सैन भोग इकठे ही समर्प्यो ता
पाछे समय भयो तब भोग सराय सैन आरती करी
तब श्री नाथजी कों पौढाये भोग सरयो हो सो प्रसाद

एकडवामेंउहांई रहि गयोतब रामदासभीतरियानें
कह्यो जो पहलो भोग समर्प्यो हतो सोउहांही रहि ग
यो तब श्रीगुसांईजीडवामेंतें उलाय के लेउतरे
पाछें सब सेवकन कों वह बड़ी भातको महाप्रशाद
स्वक ० दीनों तापाछें श्रीगुसांईजी आपहू
आरोगे सो वह बड़ी भात को प्रशाद अति अद्भुत भयो
अति अलौकिक स्वाद भयो सो श्रीगुसांईजी आप
सराह्यो तब कृष्णदास ठाड़े हते तब कृष्णदासनें क
ही जो महाराज आपही करनहारे आपही आरोग
नहारे तो कौन उत्तम होय तब श्रीगुसांईजीनें हँ
सके कही जो सब तुम्हारेही कीये भोगतहैं ॥

वार्ता प्रसंग ६

अब जो यह बात श्रीगुसांईजीनें कही जोये तु
म्हारेही कीये फल भोगतहैं सो यह बात सुनि के कृ
ष्णदासनें श्रीगुसांईजी सों विगाड़ी तब श्रीगुसांई
जी सों कृष्णदासनें कह्यो जो तुम पर्वत ऊपर मति
चढ़ो तब श्रीगुसांईजी आप तो तहांते फिरे सो प
रासोली में आय रहे तब मन में विचारे जो कृष्णदा
स कहा मनें करेगो पीरे श्रीनाथजीकी इच्छा जैसी
है सो श्रीनाथजीकी इच्छा जानिके कछू बोले नाहीं
सो आप परासोली में रहे सो परासोली में ध्वजा के
सामेहैति कें विराजि रहे और श्रीगुसांईजी तीन
दिन तो श्रीगोवर्द्धन रहे और तीन दिन श्रीगोकुल
रहते तबले परासोली आय रहे तब श्रीगुसांईजी श्री
नाथजी के मन्दिर की ध्वजा की परासोली की ओर

पढ़नी ताके सांझे बैठि ते तब श्रीनाथजी आप खिर
की में आय दर्शन दे ते तब यह जानि कें कृष्णदास नें
परासौली की ओर की खिर की बनवाय दीनी तबते
श्री गुसांईजी गोकुल ते जब परासौली आवते तब
रामदास जी सब सेवक आदि दे श्रीनाथजी की राज
भोग आरती कीर कें अनोसर करिकें श्री गुसांईजी के
दर्शन कों परासौली आवते सो आय कें चरणोदक
लेय पाछें प्रसाद लेते सो कृष्णदास कों सुहावतो
नाहीं और सब सेवक श्री गुसांईजी के दर्शन विना
महाप्रशाद कैसें लेंय परि सेवकन सों कृष्णदास
की चल्ये नाहीं और श्री गुसांईजी एक पत्र लिखवें
रामदास भांतरिया कों देते और कहते जो श्रीनाथ
जी कों दे दीजो सो पत्र श्रीनाथजी कों देते श्रीनाथजी
विज्ञप्ति उत्तर लिखि कें रामदास कों देते सो रामदास
श्री गुसांईजी कों देते तब श्री गुसांईजी वा पत्र कों
वांचिकें पानी में पीजाते या भांति सों छे महीना वी
ते परि श्री गुसांईजी नें श्रीनाथजी कों अधिकारी
वैष्णव जानि कें और श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक जानि कछू न कह्यो परि श्रीनाथजी के विरह
को स्नेह बहुत करते या भांति छे महीना भए तब ए
कदिन राजा वीरवल आय निकसे तब ता दिन तो
श्री गुसांईजी परासौली हुते श्री गिरधरजी घर हुते
तब राजा वीरवल नें श्री गुसांईजी कों खबर कराई
तब पौरियान नें कही जो श्री गुसांईजी तो परासौली
हैं श्री गिरधरजी घर हैं तब राजा श्री गिरधरजी के

दर्शनकों आए तब वीरबल सोंश्रीगिरधरजीने क
हीजो कृष्णदास अधिकारी काकाजी कों श्रीनाथ
जी के दर्शननाहीं करनदेत सो काकाजी कौंखेद व
त होतहै काकाजी पासोल्ली में जाय दर्शनकरतहैं
तब वीरबलनें श्रीगिरधरजी सों कह्योजो अबहूंजा
य के कृष्णदास को काढ़ूंगा यों कहिकें राजा वीरबल
श्रीगिरधरजी सों विदाहोय के मथुरा आये और
श्रीगुसांईजी पासोली ते श्रीगोकुल आये और
वीरबलनें पांचसौ मनुष्य भेजे और कह्योजो कृष्ण
दास कों पकरिलावो सोवे मनुष्य श्रीगोवर्द्धन श्री
य के कृष्णदास को पकरि लाये सोवे वीरबल नें
कृष्णदास कों बन्दीखाने में दीनों तब श्रीगिरधरजी
सों कहवाय पठाई जो कृष्णदास को बन्दीखानेमें
दीनोंहै तब श्रीगिरधर जीनें श्रीगुसांईजी सों कह्यो
जोकृष्णदास को बन्दीखाने में दीनेंहै तब श्रीगुसांई
जीनें कह्यो जोहाय हाय श्रीआचार्यजीमहाप्रभून
कों सबकन कों ऐसोकरे तब श्रीगुसांईजीनें श्रीगि
रधरजी सों कह्योजो तुमनें कह्योहोयगो तब श्रीगि
रधरजीने कह्यो जोहमने तो वीरबल सोंसहजहीक
ह्योहतो जो काकाजी कोंदर्शन नाहीं करनदेत सो
काकाजी कों बहुतखेद होतहै तब श्रीगुसांईजी
ने कह्यो जो भोजन जब करेंगो तब कृष्णदास आ
वैगो तब श्रीगिरधरजी तत्काल घोड़ा मंगाय अस
वार होयकें मथुरा को आये तब वीरबलसों कह्यो
जोकाकाजी भोजननाहीं करत तातें कृष्णदासकों

कोऽदेउ तव राजा वीरवलनें कृष्णदास श्रीगिरधरजीके

हवालें करदीयो तव श्री गिरधरजी तत्काल सगले श्री गोकुल आये तव श्री गुसांई जीनें सुनी जो श्री गिरधर जी कृष्णदास कों साथ लेकें आवतहैं सो श्री गुसांई जी ठकुरानी घाट ऊपर पहुंचे सेाए वा सेाए ते कृष्णदास आये सो श्री गुसांई जी को दर्शन कीयो सेाए दंडोत करी सेाए एक नयो पद करिकें गायो सो पद ॥

राग केदारो

श्री विट्ठलजू के चरणकी बलि ॥ हमसे पतित उधारन कारन परम कृपालु आए आपन चलि ॥१॥ उज्जल अरुणदया रंग रंजित दशा नखचन्द्र विहरत मन निर्दलि ॥ शुभग कर सुख कर सोभन पावन भक्त मुदित

ललितकर अंजलि ॥२॥ अति सेमरकुल सुंगधसु
सीतल परत त्रिविध तापडारतमल ॥ भजिकृष्ण
दासवारणक सुधि करि तेरो कहा करेगो रिपुकल
॥३॥ *

यह पद श्री गुसांईजी के आगें गायो पाछें श्री गुसांईजी कृष्णदास कों अपने घर से आये पाछें कृष्णदास सों श्री गुसांईजीनें कह्यो जो उठो भोजन करो तब कृष्णदास नें कह्यो महाराज आप भोजन करिये पाछें मैं झूठन लेउंगो तब श्री गुसांईजी भोजन कों बैठे तब कृष्णदासने एक पद और गायो सो पद

राग कान्हरो

ताहीकों सिर नाइयेजो श्री वल्लभसुत पदरज रतिहोय ॥ कीजे कहा आनऊचे पद तिनसों कहा सगाई होय ॥१॥ सब सार विचार मतो करि श्रुति कच गोधन लियो निचोय ॥ तहां नवनीत प्रगट पुरुषोत्तम सहजहि गोरस लियो विलोय ॥२॥ जाके मन में ज्ञान भरमहै श्री विट्ठल श्री गिरधर दोय ॥ ताकों संग विषम विषहू ते भूलिहू चाखु कर हे जिन कोय ॥ जिव प्रतापदेखि अपने चख असम सामजो भिदेन तोहि ॥ कृष्णदास ते सुरते असुर भये असुरते सुर भये चरणन छोह ॥४॥

यह पद सुनि कें श्री गुसांईजी बहुत प्रसन्न भयेपा छें श्री गुसांईजी भोजन करिकें पधारे तब कृष्णदास सों कह्यो जो अबजाउ भोजन करो तब कृष्णदास भीतर गये तब श्री गिरधरजीनें श्री गुसांईजी की

झूंटन कीपातर कृष्णदास के आगे धरीतब कृष्ण
दास ने महाप्रशाद लीनों पाछें बीड़ा दोय दीये
रात्रि कों कृष्ण दास वहांई सोय रहे ना पाछें पिछ
ली रात्रि घड़ी दोय रही तब श्रीगुसांईजी उठे देह कृ
तकरिकें स्नान कीयो श्रीनवनीतप्रिया जी के मंग
ला के दर्शन करिकें बाहिर पधारे तब श्रीनाथजी हार
पधारवे की तैयारी कीये तब घोड़ा दोय मंगाये ए
क घोड़ा ऊपर श्रीगुसांईजी असवार भये एक घो
ड़ाऊपर कृष्णदास असवार कीयो और श्रीगोकु
ल तेचले सो श्रीनाथजी हार दिन पहर सवा एक
चढ़ जाय पहुंचे सो यहां श्रीनाथजी को राज भोग
आयो हतो सो श्रीगुसांईजी तत्काल स्नान करिकें
ऊपर पधारे और श्रीगुसांईजी विज्ञप्ति पत्र पारेखी
ते लिखने सो रामदास भीनरिया के हाथ पठावते ताको
प्रति उत्तर श्रीनाथजी पत्र में लिखिकें श्रीगुसांईजी
को पठावते सो श्रीगुसांईजी जल में धोर पीजाते सो
पिछले दिन को पत्र श्रीनाथजीके हस्ताक्षर को सो श्रीगु
सांईजी राखेरहते सो पत्र सायही ले आवा हुते पाछें श्री
नाथजीकों राज भोग आयोहुतो सो समय भयोतब
श्रीगुसांईजी भोग सराय वे कों पधारे तब श्रीगुसांई
जीकों देखिकें श्रीनाथजी बहुत प्रसन्न भये और पूछे
जो नीके हो तब श्रीगुसांईजी कहें जो तुम कों देखें सो
ई दिन नीके हैं पाछें परस्पर दोउ जने मुसिकाय पा
छें श्रीगुसांईजी राज भोग सरायो पाछें यह पत्र हुतो
सो झांपी में धरयो पाछें राजभोग के दर्शन खुले तब

कृष्णदासनें कीये पाछें श्रीगुसांईजी राजभोग आरती
करि अनोंसा करि नीचें पधारे पाछें रसोई करि भोग
समर्पित भोजन करि श्रीगुसांईजी पौढे सो उत्थापन
ते घडीदोय पहिलें उठे पाछें उत्थापन कौ समय भयो
राजभोग करि ऊपर पधारे सो संखनाद करवायो श्री
नाथजी के उत्थापन भए पाछें सेन आरती उपांत द
र्शन करिकें कृष्णदास कों श्रीनाथजी के सन्निधान
बुलायो और कह्यो जो कृष्णदास तुम अधिकार करौ
और श्रीनाथजी की सेवा नीकी भांति सों करियों
तब कृष्णदासनें श्रीनाथजी के सन्निधान एक पद गा
यो सोपद ॥

राग कान्हरौ

पूरन कृपाल श्री वल्लभनंदन करत कृपा निजहाथ दै
मांथे ॥ जेजन शरणा आये अनुसरही गहि सोंपति
श्रीगोवर्द्धननाथें ॥१॥ परम उदार चतुर चिंतामणिरा
खत भवधारा तेसाथें ॥ भजि कृष्णदास काज सवस
वसरहीं जो जानें श्रीविट्ठलनाथें ॥२॥

यह पद गायो और वीनती कीनी जो महाराज मेरो
अपराध क्षमा करौ तब श्रीगुसांईजीनें कह्यो तुमा
रो अपराध श्रीनाथजी क्षमा करेंगे पाछें कृष्णदास को
विदा कीयो पाछें श्रीनाथजी कों पौढाय कें श्रीगुसां
ईजी नीचें उतरे श्रीगुसांईजी परमदयाल कृष्णदास
को कृत कछुमन मेंन आनों श्रीआचार्यजी के सेव
क जानि अनुग्रह कीयो पाछें श्रीगुसांईजी दिन दो
य रहे पाछें श्रीगोकुल पधारे फिर कृष्णदास श्रीगु

सांई जीकी आज्ञाते अधिकार करन लागे ॥

वार्ताप्रसंग ॥ ७ ॥

सो वहुतवरसलों भली भांति सों अधिकार कीयो पा
छें एक वैष्णवनें कृष्णदास सों कही जो मोकों एक कू
आ वन वावनों है और मोकों अपने देश कों जानों है
तोतेद्रव्य तुम कोंदे जातहों सो तुम वनवाय दीजो तव
कृष्णदासनें कही जो आछो तववह वैष्णव तीन सौ
रुपये दैकें अपने देस को गयो तव कृष्णदास ने उन
रुपैयान मेतें एक सो रुपैया एक कूल्हरा में धरि कें आ
म के वृक्ष के नीचे गाडदीये कह्यो जो दोय सै रुपैया ला
गिचुकेंगे तव इनको कादेंगो सो आछो महूर्त देखि कें
रुद्र कुंड ऊपर कूआ खुदायो तव कितेक दिन में व
ह कूआ मोंहतांई वनिकें तैयार भयो और दोय सै
रुपैया लगे मठोठा वाकी रह्यो तव उत्थापन के दर्शन
करिकें कृष्णदास कूआदेखन कों गये सो हाथ में
आसा हतो सो आसा टेक कें कूआ के ऊपर ठाडे भ
ये सो वह आसा सरवेपो तव कृष्णदास कूआ में
जाय पडे तव तो मनुष्य दोय कूआ में उतरे सो वहुते
रो ढूंढ परि कृष्णदास को सरीर हू न पायो तव सव
मनुष्य उहांते फिर आये सो ता समय श्री गुसांई
जी श्री नाथ जी कों सेन भोग धरिकें मंजूष विराजे
हुते और रामदास श्री गुसांई जी के पास बैठे हुते ता
समय काहू नें आय कें कह्यो जो महाराज कृष्णदा
सनें कूआ वन वायो हो सो कृष्णदास देखन गये
हुते सो आसा टेकि कें कूआ के मौंहडे ऊपर ठाडे

हतेसो आमा सरकेो सो कूआ में गिर परे और मनु
ष्यदोय कृष्णदास कोढूढवे कों उतरे सो वहौतेरौ

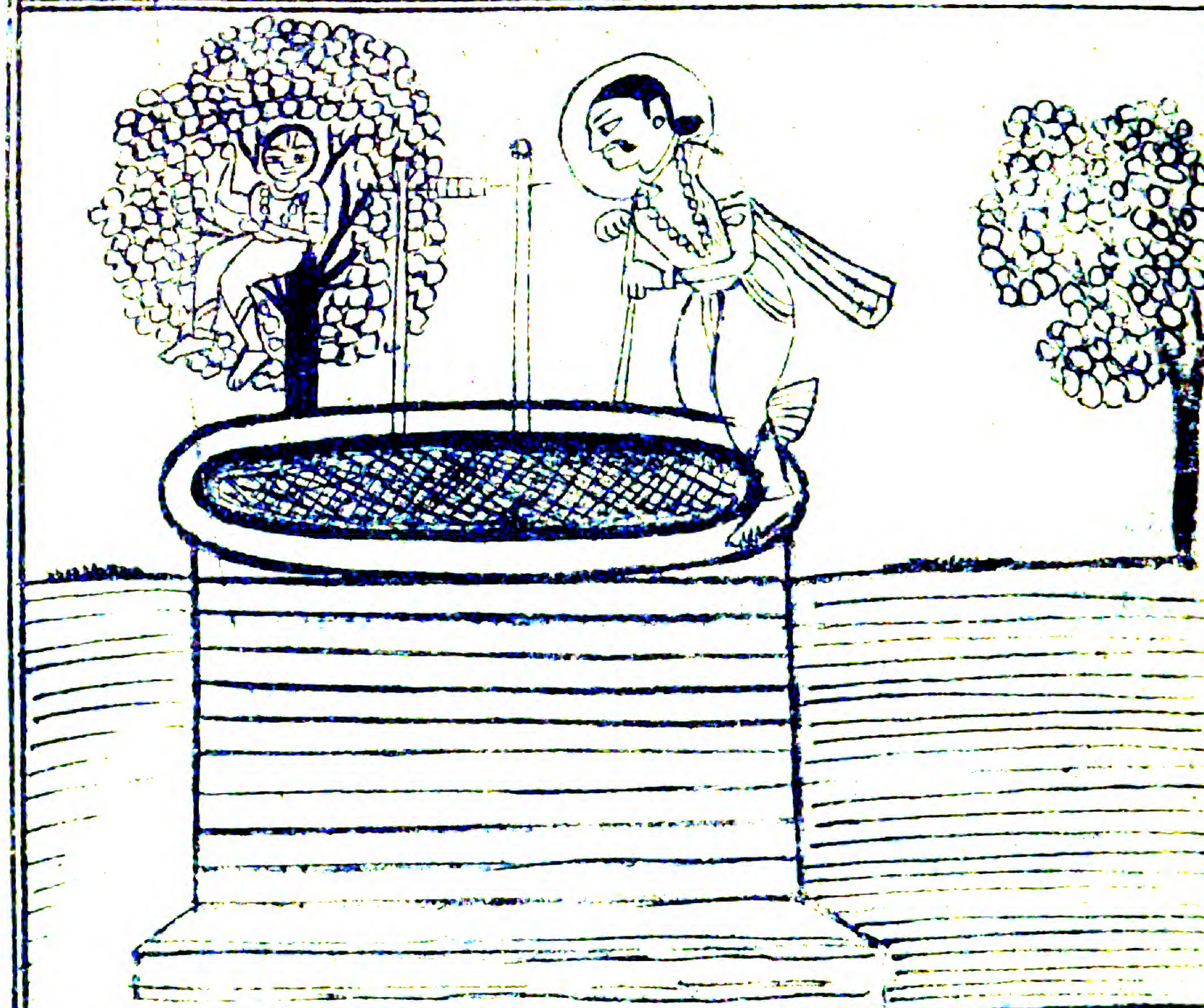

दूंढे पि मरीहून पायो कहा जानियें कहा भयो तब
रामदास जो कहें ॥ जो

ऊर्ध्वगच्छन्ति तामसाः

तब श्री गुसांई जी कहें जो रामदास ऐसें न कहि ऊ
च जो कृष्णदास कूआ में गिरे सो मरी न मिल्यो ता
को कारन कहा सो ताको कारन यह जो कृष्णदासमें
कोई अलौकिक जीव हतो सो तो श्रीनाथजी की
सेवामें प्राप्त भयो और कृष्णदासनें यासरीर सों
श्री गुसांई जी की आज्ञा करीहै जो यह सरीर अलौ
किक जीव भगवदीय हों सो कूआ में गिरत मात्र क

क्षमदास को सरीर लौकिक सद्य होयकें पूंछरी को
ओर एक वृक्ष है पीपर को तहां प्रेत होय कें रह्यो भो
गभुगतन कों ताते कृष्णदास कों सरीर कूंआ में न
[illegible]सांई जी को आवन्यो ते कृष्णदास को
यह गति भई जो प्रेत होय कें पूंछरी की ओर पीपर के
वृक्ष ऊपर बैठे रहत हैं ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ८ ॥

ओर एक समय श्री नाथ जी की भेंसि खोय गई हुती
सो गोपीनाथ ग्वाल ओर चार पांच ग्वाल पूंछरी की ओ
र ढूंढवे को गये हुते सो गोपीनाथ देखें तो पूंछरी की
ओर श्री नाथ जी खेलत हैं ओर एक पीपर ऊपर कृ
ष्णदास प्रेत हैं कें बैठे हैं तब कृष्णदास नें गोपीनाथ
ग्वाल सों कही जो ओरे भैया मेरी विनती श्री गुसांई

श्री सों करियो और कहियो जो कुंभदास नें कह्यो
हे जो हों तुम्हारो अपराधी हों ताते मेरी यह अवस्था
है हूं श्रीनाथजी के पास हूं तोहू मेरी गति होत नहीं
तातें मेरो अपराध क्षमा करौ तो मेरी गति होय औ
र बाग में एक आम के वृक्ष के नीचे कूल्हा में एक मो
रुपैया गडे हैं सो काढि के वा कृष्णा को मढोठावा
कीरहो है सो बनवाय्यो तो मेरी गति होय सो गोपी
नाथ बालनें यह बात श्री गुसांई जी के आगें कही
जो महाराज कुंभदास अधिकारीनें यह बीनती करी
है तब श्री गुसांई जीनें आम के नीचे ते रुपैया लाय
के मढोठा कृष्णा को बनवायो तब कुंभदास की ग
ति भई कुंभदास को प्रेत जोन में श्री नाथ जी दर्शन
देते ताको कारन यह जो श्री नाथ जी के सन्निधान
श्री गुसांई जीनें कुंभदास सों कह्यो जो कुंभदास
तुम अधिकार करो और श्री नाथजी की सेवा नीकी
भांति सों करियो तब कुंभदास नें कह्यो जो महाराज
मेरो अपराध क्षमा करो तब श्री गुसांई जीनें कह्यो
जो तुम्हारो अपराध श्री नाथ जी क्षमा करेंगे सो श्री
नाथजी की कृपा ते श्री नाथ जीनें अपराध क्षमा
करी सो प्रेत जोन में दर्शन देते भए स्पर्शन कियो जो
स्पर्श होय तो उद्धार होय सो उद्धार तो श्री गुसांई जी के
हा थ हे कुंभदास श्री नाथ जी सों कहते जो महाराज
तुम मोकों दर्शन देत हो मोसों बोलत हो और में पे
तहों तातें मेरो उद्धार क्यों नाहीं करत तब श्री नाथ
जीनें कह्यो तो हूं तोकों दर्शन देत हों बोलत हों सो तो

श्री गुसांई जी के वचन के लियें नाहीं तौ प्रेत जोन में
दर्शान नाहीं देतौ और बोलतौ हू नाहीं और उद्धार
तौ श्री गुसांई जी के हाथ है तेनें श्री गुसांई जी को अ
पराध कीयो है ताते श्री गुसांई जी उद्धार करेंगे तब
होयगा ता पाछें श्री गुसांई जी आप परम कृपा त
कृष्णदास के ऊपर दया आई जो अबतौ बहुत
दिन भयें हैं ताने अब उद्धार होयतौ भलो तब श्री
गुसांई जी धु व घाट ऊपर आय कें कृष्णदास कौ
कर्म करवाय उद्धार कीयो तब कृष्णदास को उद्धार
भयो और लाला में प्राप्ति भयो और श्री गुसांई जी
कहें जो कृष्णदास नें तीन बात आछी करी एक
तौ अधिकार कीयो सो ऐसो कीयो जो फेरि ऐसो
न करो दूसरें कीर्तन कीये सो अद्भुत कीये और
तीसरे श्री आचार्यजी महा प्रभून की सेवक होय
कें सेवा हू ऐसी करीजो कोउन करैगो ताते वे कृ
ष्णदास श्री आचार्यजी महा प्रभून के ऐसे परम
कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता को पार
नाहीं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिवयें ॥॥
॥प्रसंग॥ ९ ॥ सम्बन्ध ॥१८४॥ वैष्णव ॥८४॥

अब श्री आचार्यजी महा प्रभून
के सेवक परम कृपा पात्र।
चौरासी मुख्य वैष्णव
न की लिखी सो।
सम्पूर्णम् ॥

श्रीगणेशायनमः

अथ श्रीचौरासीवार्ताकेवैष्णवोंकीवार्ताओंका

सूचीपत्रलिख्यते॥

नामवैष्णव	पृष्ठ	पंक्ति	नामवैष्णव	पृष्ठ	पंक्ति
दासोड़रदासहारसानीकी	२	५	वेणीदासमाधोदासदो	७२	४
कृष्णदासमेघनक्षत्री·	१०	५	उभाईनकीवार्ता··		
रामोदरदासखम्बरुवार	१९	१	हरिवंशपाठकभारस्वत·	७५	१६
खत्री की वार्ता·			गोविंददासभट्टाकीवा·	७७	९
पद्मनाभिदासकनोजिया	३१	१३	अम्बाक्षत्राणीकीवार्ता	८१	१२
ब्राह्मण की वार्ता·			गज्जनधावनक्षत्रीकी·	८३	२४
पद्मनाभिदासकीबेटीनु	४३	२४	नारायनदासब्रह्मचारी	८७	६
रुक्माबाई की वार्ता·			सारस्वतब्राह्मणकीवार्ता		
पद्मनाभिदासकेबेटाकी	४५	२३	महावनकीवासी एक	९३	४
बहू पार्वतीताकीवार्ता·			क्षत्राणीताकीवार्ता·		
पद्मनाभिदासकोनातीपै	४७	१३	जीयदासक्षत्रीसूरकी·	९४	१८
वेनीकोबेटारघुनाथदास			देवाक्षत्रीकपूरकीवार्ता	९६	८
स्त्रीक्षत्राणीअड़ैलकी	४९	४	सेठदिनकरदासकी·	९७	१३
सेठपुरुषोत्तमदास खत्री	५१	२०	मुकन्ददासकायस्थकी·	९९	१२
बनारसकेवासीकीवार्ता			प्रभूदासजरोदाक्षत्रीसी	१००	१८
सेठपुरुषोत्तमदासकी·	६०	२५	हनंदकेवासीकीवार्ता·		
बेटीरुक्मणीकीवार्ता·			प्रभूदासभाटकीवार्ता·	१०१	९
सेठपुरुषोत्तमदासकेबे	६३	६	पुरुषोत्तमदासआगरेमें	११०	७
टागोपालदासकीवार्ता			राजघाटपैरहनेताकी·		
रामदासमारस्वतब्राह्मण	६४	१७	त्रिपुरदासकायस्थशेर	११२	१५
गदाधरदासमारस्वतब्रा	६९	७	गढ़केवासीकीवार्ता·		

पूरनमल्लस्वर्णकीवार्ता	११८	२३
यादवेंद्रदासकुम्हारकी·	१२१	२
गुसांईदासमारस्वनकी·	१२३	७
माधोदासभट्टकाग्रामांत	१२४	९९
रकेवासीकीवार्ता·		
गोपालदासकीवार्ता	१२९	२३
पद्मावलसांचोराब्राह्म	१३७	१८
णउज्जैनकेवासीकीवा·		
पुरुषोत्तमजोसीकीवार्ता	१४१	८
जगन्नाथजोसीकीवार्ता	१४४	२
जगन्नाथजोसीकीमाताकी·	१४७	११
जगन्नाथजोसीकेबड़ेभा	१५२	७
ईनरहरजोसीकीवार्ता·		
रणव्यासमांचोराब्राह्मण	१५७	२२
गोधराकेवासीकीवार्ता·		
रामदासमारस्वनब्राह्मण	१६२	२४
राजनगरकेवासीकीवार्ता		
गोविंददुबेमांचोराकीवा·	१६५	१
राजादुबेमाधोदुबेदोउ	१६९	१६
भाईनकीवार्ता·		
उत्तमश्लोकदासमांचो	१७१	५
रा ब्राह्मणकीवार्ता·		
ईश्वरदुबेमांचोराकीवार्ता	१७७	१७
वासदेवदासकुकड़ामा	१७९	१३
रस्वनब्राह्मणकीवार्ता·		

चाबावेणुओरकुम्हदास	१८७	६
घघरियानथादेवदास		
इनकीवार्ता·		
जगतानंदसारस्वतब्रा·	१८१	२
णानेश्वरकेवासीकी·		
आनंददासविश्वंभरदा	१८३	२५
सदोऊभाईक्षत्रीनकी·		
एकब्राह्मणीकीवार्ता·	१८४	२०
एकदात्राणीकीवार्ता·	१८५	८
गोरजा,समराई,सासव	२००	११
हूसीहनंदकीवासीकी·		
रुक्मनीबहूजीकीदासी	२०६	१६
कुम्मादासीकीवार्ता·		
वृलामिश्रपंडितकीवार्ता	२०८	२
मीराबाईकेपुरोहितराम	२१२	२१
दासकीवार्ता·		
रामदासचौहानकीवार्ता	२१३	२
रामानंद पंडितकीवा·	२१४	२३
विष्णुदासछीपीकीवा·	२१७	१३
जीवनदासक्षत्रीकपूर	२२१	१
सीहनंदकेवासीकीवा·		
भगवानदासस्वत·	२२३	६
ब्राह्मणकीवार्ता·		
भगवानदासश्रीनाथजी	२२४	२
केभातीरियाकीवार्ता·		

अच्युतदासजनोड़िया ब्राह्मण की वार्ता.	२२६	२२
अच्युतदास गोड़वा की	२२७	२४
अच्युतदास सारस्वत की	२२८	२२
नारायनदास अम्बाले के वासी की वार्ता.	२३१	२१
नारायनदास मांट मथुरा के वासी की वार्ता.	२३३	२३
नारायनदास चौहान. ढूंढे के वासी की वार्ता.	२३४	२३
सीहनंद की स्त्राणी की	२४०	२३
दामोदरदास कायस्थ की	२४३	४
स्त्री पुर्ष दोउ स्त्रीन की	२४४	२१
अड़ेल के सूतारि कारिगर की	२४६	८
एक अन्य मार्गीय के ले ही एक स्त्री की वार्ता.	२४७	१
लघुपुरुषोत्तमदास की	२४८	२२
कविराज भाट की वार्ता.	२४९	२३
गोपालदास गेरा के बासी की वार्ता	२५०	३
जनार्दनदास चोपड़ा की	२५०	२२
गरु स्वामी सनोड़िया की	२५२	२०
कन्हैया लाल स्त्री की	२५२	२५
नरहरदास गोड़िया की	२५३	१४
चादगयाणादास की वार्ता	२५४	२२

मधूपांडे तथा मानिकचंद्र पांडे तथा इनकी स्त्रीत. यानरोवेटी की वार्ता.	२५६	८
नरहरदास संन्यासी की.	२६२	६
गोपालदास जटाधारी श्री नाथजी की खवासी के की.	२६३	४
कृष्णदास ब्राह्मण की.	२६४	२६
संतदास चौपड़ा छात्री. आगरे के वासी की वार्ता	२७०	२७
सुन्दरदास श्रीजगन्नाथ जी के पास रहते ताकी वा.	२७४	१
मावजी पटेल तथा इनकी स्त्री विरजा की वार्ता.	२७८	८
गोपालदास गेड़ा के बासी की वार्ता	२८२	६
सूरदास जी गउघाट के वासी तिनकी वार्ता.	२८५	२०
परमानन्ददास कनोजि याज्ञब्राह्मण की वार्ता	२०४	२
कुम्भनदास गोरवा की वार्ता	३३०	१४
कृष्णदास अधिकारी की वार्ता.	३५५	८

इति सम्पूर्णम् ॥